दीनी बयानात का मजमूआ

सुकूने-दिल

तक़रीरें

हज़रत मौलाना पीर ज़ुल्फ़क़ार अहमद साहिब

दीनी बयानात का मजमूआ

सुकूने-दिल

तक़रीरें

हज़रत मौलाना पीर ज़ुल्फ़क़ार अहमद साहिब

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान क़ासमी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज

नई दिल्ली-110002

नाम किताब — सुकूने-दिल

तक़रीरें — मौलाना जुल्फ़िक़ार अहमद साहिब

हिन्दी अनुवाद — मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी

संयोजक — मुहम्मद नासिर ख़ान

Edition: **2015**

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज, नई देहली-110002

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

मुख़्तसर फ़ेहरिस्त बयानात

तमन्ना-ए-दिल

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ज़बान का सही इस्तेमाल

औ़रत का मुहाफ़िज़ इस्लाम

मौत की याद

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपने दिल की बात

पाठकों के समकक्ष प्रस्तुत किताब (सुकूने-दिल) हज़रते वाला (हज़रत मौलाना हाफ़िज़ पीर ज़ुल्फ़कार अहमद साहिब नक़्शबन्दी दामत् बरकातुहुम) के उन मवाअ़िज़ (दीनी तक़रीरों) को मजमूआ है जो मुल्क ज़ांबिया के लोसाका शहर के अन्दर आपने ख़ास तौर पर औ़रतों के लिए विभिन्न वक़्तों में इरशाद फ़रमाये। वैसे ये बयानात मर्द-औ़रत सबके लिये मुफ़ीद हैं। चूँकि हज़रते वाला पिछले कई साल से "ज़ांबिया" में रमज़ान मुबारक का एतिकाफ़ फ़रमाते हैं इसलिये यह अक्सर बयानात एतिकाफ़ की हालत में (सन् २००० ई० के रमज़ाना में) हुए हैं। हज़रते वाला मस्जिद के अन्दर होते थे और औ़रतें मस्जिद के बाहर मक्तब के हाल में पर्दे के साथ जमा हो जाती थीं। फिर हज़रते वाला बयान फ़रमाते थे जिसमें औ़रत और मर्द दोनों ही के लिए तरबियती (यानी आमाल व अख़्लाक़ को संवारने और दीनी सीख लेने वाली) बातें होती थीं। इन बयानात का असर वहाँ इतना हुआ कि अक्सर औ़रतें शरई पर्दे में आ गईं और सिलसिला-ए-बैअ़त में दाख़िल होकर अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की निकटता की मन्ज़िलें तय करने लगीं। यह अल्लाह की तरफ़ से बड़े ही फ़ज़्ल की बात है।

हज़रत से मश्विरे के बाद अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की दी हुई तौफ़ीक़ से उन मआ़विज़ (दीनी बयानात) को जमा करना शुरू किया और "सुकूने-दिल" के नाम से जो कि मेरे उस्ताज़ जनाब हज़रत मौलाना सैयद ज़ुल्फ़कार अहमद साहिब शैख़ुल्-हदीस फ़लाहे-दारैन तुरकैसर का तय किया हुआ नाम है, इसकी पहली जल्द पेशे-ख़िदमत है। औ़रतों के लिये मुफ़ीद (लाभदायक) दीनी बयानात का यह

सिलसिला कई जिल्दों तक इन्शा-अल्लाह जारी रहेगा।

बड़ी ना-इन्साफ़ी होगी अगर इस मौक़े पर जनाब हाजी यूनुस भाई और शाहनवाज़ भाई रावत का शुक्रिया अदा न करूँ, जिन्होंने इन मआ़विज़ (दीनी बयानात) को जमा करने में मेरा पूरा-पूरा सहयोग और मदद की, तथा इनके प्रकाशन के लिए जिस किसी ने भी जिस तरह की भी मदद की, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त से दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला उनको दोनों जहान की सआ़दतों से भर दे, आमीन।

यह आ़जिज़ और मिस्कीन बन्दा, अपने गुनाहों पर नादिम व शर्मिन्दा, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का बेइन्तिहा शुक्रगुज़ार है कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने महज़ अपने फ़ज़्ल व एहसान से इस मुबारक काम में लगने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायी। ऐ मेरे प्यारे रब! इस आ़जिज़ व मिस्कीन के लिए इस काम को ज़रिया-ए-निजात बना दे और क़बूल फ़रमा कर हज़रत मौलाना का फ़ैज़ आ़म व ताम फ़रमा दे। दुआ़ है कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त हज़रते वाला को सेहत व सलामती के साथ रखे और आपके फ़ैज़ को क़ियामत तक जारी रखे, आमीन या रब्बल्-आ़लमीन।

ईं सआ़दत बज़ोरे-बाज़ू नेस्त		ता न बख़्शद ख़ुदा-ए-बख़्शिन्दा

तर्जुमाः यह सआ़दत (सौभाग्य) किसी के अपने हाथ में नहीं। यह तो अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ से अ़ता होता है।

बारगाहे-इलाही में दुआ़ है कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त इन दीनी बयानात को "सुकूने-दिल" का ज़रिया बनाकर हमेशा के लिए शिफ़ा-ए-दिल (दिल को हर तरह की जिस्मानी और रूहानी बीमारियों से सेहत) नसीब फ़रमा दें। वस्सलाम

सलाहुद्दीन सैफ़ी

दारुल्-उलूम फ़लाहे दारैन तुरकैसर, सूरत, गुजरात (इन्डिया)

दिले मग़मूम को मसरूर कर दे	दिले बेनूर को पुरनूर कर दे
फरोज़ाँ दिल में शमा-ए-तूर कर दे	यह गोशा नूर से पुरनूर कर दे
मेरा ज़ाहिर संवर जाये इलाही	मेरे बातिन की ज़ुल्मत दूर कर दे
मये-ए-वहदत पिला मख़्मूर कर दे	मुहब्बत के नशे में चूर कर दे
न दिल माईल हो मेरा उनकी जानिब	जिन्हें तेरी अ़ता मग़रूर कर दे
है मेरी घात में ख़ुद नफ़्स मेरा	ख़ुदाया इसको बेमक़्दूर कर दे

किससे माँगें कहाँ जायें किससे कहें
और दुनिया में हाजत-रवा कौन है

कौन मन्ज़ूर है कौन मर्दूद है
बेख़बर क्या ख़बर तुझको क्या कौन है

जब तुलेंगे अ़मल सबके मीज़ान पर
तब खुलेगा कि खोटा खरा कौन है

सबका दाता है तू सबको देता है तू
तेरे बन्दों का तेरे सिवा कौन है

है ख़बर भी तू ही मुब्तिदा भी तू ही
नाखुदा भी तू ही है, ख़ुदा भी तू ही

रिज़्क़ पर जिसके पलते हैं शाह-व-गदा
तुझ अहद् के सिवा कौन है

सबका दाता है तू सबको देता है तू
तेरे बन्दों का तेरे सिवा कौन है

औलिया तेरे मोहताज ऐ रब्बे कुल
तेरे बन्दे हैं सब अम्बिया-व-रुसुल

उनकी इज़्ज़त का बाइस है निस्बत तेरी
उनकी पहचान तेरे सिवा कौन है

सबका दाता है तू सबको देता है तू
तेरे बन्दों का तेरे सिवा कौन है

मेरा रब सुन रहा है मेरी यह दुआ
जानता है वह ख़ामोशियों की ज़बाँ

अब मेरी राह में हाईल न हो
नामा-बर क्या बला है, सबा कौन है

औलिया, अम्बिया अहले-बैत और नबी
ताबिईन व सहाबा पर जब आ बनी

गिरके सज्दे में सबने यही अर्ज़ की
तू नहीं है तो मुश्किल-कुशा कौन है

अह्ले-फ़िक्र व नज़र जानते हैं तुझे
कुछ न होने पे भी मानते हैं तुझे

ऐ नसीर! इसको तू फ़ज़्ले-बारी समझ
वरना तेरी तरफ़ देखता कौन है

किससे माँगें कहाँ जायें किससे कहें
और दुनिया में हाजत-रवा कौन है

मुनाजात

हवा-व-हिर्स वाला दिल बदल दे
मेरा ग़फ़लत में डूबा दिल बदल दे

बदल दे दिल की दुनिया दिल बदल दे
खुदाया फ़ज़्ल फ़रमा, दिल बदल दे

गुनाहगारी में कब तक उम्र काटूँ
बदल दे मेरा रास्ता, दिल बदल दे

सुनूँ मैं नाम तेरा धड़कनों में
मज़ा आ जाये मौला, दिल बदल दे

करूँ कुर्बान अपनी सारी खुशियाँ
तू अपना ग़म अ़ता कर, दिल बदल दे

हटा लूँ आँख अपनी मा-सिवा से
जियूँ मैं तेरी ख़ातिर, दिल बदल दे

सहल फ़रमा मुसल्सल याद अपनी
खुदाया रहम फ़रमा, दिल बदल दे

पड़ा हूँ तेरे दर पर दिल शिकस्ता
रहूँ क्यों दिल शिकस्ता, दिल बदल दे

तेरा हो जाऊँ इतनी आरज़ू है
बस इतनी है तमन्ना, दिल बदल दे

मेरी फ़रियाद सुन ले मेरे मौला
बना ले अपना बन्दा, दिल बदल दे

हवा व हर्स वाला दिल बदल दे
मेरा ग़फ़लत में डूबा दिल बदल दे

इसी किताब से......

कह रहा है शोरे-दरिया से समन्दर का सुकूत
जिसका जितना ज़र्फ़ है उतना ही वह ख़ामोश है

ख़ामोश रहना तदब्बुर (ग़ौर व फ़िक्र करने) और अक़्लमन्दी की अलामत (पहचान) होती है और इनसान के समझदार होने की पहचान होती है। जबकि हर वक़्त टर-टर करते रहना यह इनसान की बेवकूफ़ी की अलामत होती है। याद रखिएगा कि "ज़बान की ग़लती और बहकना पाँव की फिसलन और बहकने से भी ज़्यादा ख़तरनाक होता है। पाँव फिसल गया तो इनसान फिर उठ सकता है, लेकिन अगर ज़बान फिसल गयी तो वह लफ़्ज़ फिर वापस नहीं आ सकता" इसलिए जिस इनसान की ज़बान बेक़ाबू हो तो उस इनसान की मौत का फ़ैसला वही करती है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर

हाफ़िज़ ज़ुल्फ़िक़ार अहमद साहिब

नक़्शबन्दी मजद्दिदी दामत् बरकातुहुम

ज़बान का सही इस्तेमाल

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الحمد للہ و کفٰی وسلام علی عبادہ الذین اصطفی.....امابعد!

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ٥ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ٥

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

یٰٓـاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَالَا تَفْعَلُوْنَ٥ کَبُـرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰہِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَالَا تَفْعَلُوْنَ٥ (سورہ صف: آیت ۲-۳)

तर्जुमाः ऐ इमान वालो! क्यों कहते हो मुँह से, जो नहीं करते हो। बड़ी बेज़ारी की बात है (यानी ऐसी बात से दूर रहना चाहिए) अल्लाह के यहाँ कि कहो वह चीज़ जो न करो।

एक दूसरी जगह पर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

یَقُوْلُوْنَ بِاَفْـوَاھِھِمْ مَّالَیْسَ فِیْ قُلُوْبِھِمْ (سورہ آل عمران: آیت ۱۶۷)

तर्जुमाः कहते हैं अपने मुँह से जो नहीं है उनके दिल में।

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

مَایَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَیْہِ رَقِیْبٌ عَتِیْدٌ٥ (سورہ ق: آیت ۱۸)

तर्जुमाः नहीं बोलता है कोई बात मगर यह कि उस पर एक फ़रिश्ता निगराँ मुक़र्रर है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पाक इरशाद है:

المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده

तर्जुमाः मुसलमान तो वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरा मुसलमान महफ़ूज़ हो।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ٥ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

तालीम व तरबियत

दो अल्फ़ाज़ एक साथ बोले जाते हैं: १. तालीम २. तरबियत। तालीम तो इनसान मदरसों से, शिक्षा-स्थानों से पा लेता है, लेकिन तरबियत उसको उन जगहों से नहीं मिलती। उसके लिए उसे कुछ शख़्सियतों की ख़िदमत में रहना पड़ता है, जो इनसानों को इनसान बनाने का काम करती हैं। इनसान का दुनिया में आना आसान है लेकिन सही मायनों में इनसान बन जाना बड़ा मुश्किल काम है। जो बनता या बनाता है वह पता पाता है। यह काम अंबिया-ए-किराम के ज़िम्मे था, जो दुनिया में इनसान को इनसान बनाने के लिए तशरीफ़ लाये थे, और जब दुनिया से पर्दा फ़रमाने लगे तो यह काम उनके वारिसों (यानी दीन के आ़लिमों और नेक लोगों) को दे दिया गया। अब क़ियामत तक ऐसे अफ़राद निस्बत का नूर दिल में लिए हुए तरबियत का काम करते रहेंगे। ये लोग देखने में एक फ़र्द नज़र आयेंगे, मगर हक़ीक़त में एक जमाअ़त से भी ज़्यादा वज़नी होंगे। जैसे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

اِنَّ اِبْرَاهِيْمَ كَانَ اُمَّةً (سورة النحل)

यानी इब्राहीम तो एक उम्मत था।

यह कुरआन मजीद की कितनी वज़नी दलील है कि देखने में तो एक फ़र्द है लेकिन अल्लाह के यहाँ उम्मत से भी ज़्यादा वज़न रखते हैं।

ज़बान से निकले अल्फ़ाज़ की अहमियत

ग़ौर कीजिए कि जब कोई काफ़िर कलिमा पढ़ता है, उसको कोई भागा-दौड़ी या वर्ज़िश नहीं करनी पड़ती, बल्कि सिर्फ़ अपनी ज़बान से कलिमे के दो अल्फ़ाज़ कहने पड़ते हैं। जिनके अदा करने से पहले वह काफ़िर होता है, कहने के बाद मुसलमान बन जाता है। पहले अल्लाह का दुश्मन था, अब अल्लाह के दोस्तों में शामिल हो जाता है। पहले शैतान का बन्दा था, अब रहमान का बन्दा बन जाता है। उसके अगर सौ साल के भी गुनाह होंगे, परवर्दिगारे आ़लम उसके सौ साल के गुनाह भी माफ़ फ़रमा देंगे। मालूम यह हुआ कि ज़बान से निकले अल्फ़ाज़ के बाद उसकी ज़िन्दगी का बिल्कुल ही रुख़ बदल जाता है। चुनाँचे ज़बान से निकले अल्फ़ाज़ की अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के यहाँ बहुत क़द्र व क़ीमत है।

दो लफ़्ज़ों का करिश्मा

जब किसी मर्द या औ़रत का निकाह होता है। उस निकाह के वक़्त जब मर्द क़बूल करता है, तो उस वक़्त उसको अपनी ज़बान से सिर्फ़ इतने ही अल्फ़ाज़ कहने पड़ते हैं कि "मैंने इस लड़की को अपने निकाह में क़बूल किया" या इतना कह दे कि "मैंने इसे क़बूल किया" इतने चन्द लफ़्ज़ कहने पर वह लड़की जो उसके लिए ग़ैर-मेहरम थी, जिसकी तरफ़ देखना उसके लिए कबीरा (बड़ा) गुनाह था। जिससे बातचीत करना उसके लिए हराम था, वह लड़की इतने अल्फ़ाज़ कहने के बाद उसके लिए मेहरम ही नहीं बनती बल्कि शरीके-हयात (जीवन-साथी) बन जाती है। अब यह उसके साथ पूरी ज़िन्दगी गुज़ारता है। तो सोचिये कि निकाह के वक़्त सिर्फ़ चन्द अल्फ़ाज़ के बोलने पर दो इनसानों में कितनी जुदाईयाँ थीं, अब वे इतना क़रीब हो गये कि कहने को तो जिस्म दो हैं मगर उन दोनों के जिस्म एक जैसे

हैं। ये ख़ुशी और ग़मी के साथी बन जाते हैं। तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के यहाँ ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ इतनी अहमियत रखते हैं कि जिस तरह चन्द अल्फ़ाज़ ने उस लड़की और लड़के के दरमियान के फ़ासलों को समेट कर रख दिया। इसी तरह अगर कोई मर्द किसी अपनी बीवी को सिर्फ़ तलाक़ के अल्फ़ाज़ कह देता है तो दो अल्फ़ाज़ के ज़बान से निकलने पर वह औरत जो उसकी जीवन-साथी थी, उसके बच्चों की माँ थी, उसके दुख-दर्द की साथी थी, अब उसके लिए अजनबी बन गयी, वह फिर उसके लिए ना-मेहरम बन गयी। तो निकाह और तलाक़ के चन्द अल्फ़ाज़ से इनसान की ज़िन्दगी में कितनी तब्दीलियाँ आ जाती हैं।

सोचने की ज़रूरत

इससे अन्दाज़ा लगाने की ज़रूरत है कि इनसान की ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के यहाँ कितना वज़न रखते हैं, और हम हैं कि ज़बान से अल्फ़ाज़ निकाले ही चले जाते हैं और एहसास भी नहीं रखते कि इन अल्फ़ाज़ का क्या मतलब है, और दूसरे पर इसके क्या असरात पड़ रहे हैं। क्या हम किसी दूसरे को तकलीफ़ तो नहीं पहुँचा रहे? हम अल्लाह की किसी मख़्लूक़ का दिल तो नहीं जला रहे? ग़ौर करना चाहिये कि हम अपनी ज़बान से ऐसे कलिमात तो नहीं निकाल रहे जो "कुफ़्र के कलिमात" कहलाते हैं। इसलिए बुज़ुर्गों के यहाँ ज़बान के सही इस्तेमाल की मुस्तक़िल मेहनत करवाई जाती है।

नेमत का इज़हार

अल्लाह का शुक्र है इस आजिज़ ने अपने बुज़ुर्गों की सोहबत में ज़िन्दगी के बाईस साल गुज़ारे, तब इस आजिज़ को ख़िलाफ़त व बैअ़त की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी। बुज़ुर्गों ने इस बात की मेहनत

करवाई कि आपकी ज़बान से झूठ नहीं निकलना चाहिये। अब बताइये कि जब ख़ानक़ाहों में पैतीस-पैतीस साल मेहनत करवाई जाती है, हर-हर बात पर अपने कान मुतवज्जह होते हैं, कि मेरी ज़बान से कोई बात हक़ीक़त के ख़िलाफ़ तो नहीं निकल रही, झूठ तो नहीं निकल रहा, तो सोचिये कि इनसान की ज़िन्दगी में किस क़द्र सच आ जाता है। जिस ज़बान से झूठ निकलना बन्द हो जाता है फिर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त इस ज़बान से निकली हुई बातों को भी रद्द नहीं फ़रमाते। इसलिए हमें चाहिये कि हम अपनी ज़बान का सही इस्तेमाल करें। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त इरशाद फ़रमाते हैं:

يَـآيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْالَا يَسْخَرْقَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰى اَنْ يَّكُوْنُوْاخَيْرًامِّنْهُمْ وَلَانِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًامِّنْهُنَّ (سورہ حجرات: آیت ۱۱)

तर्जुमाः ऐ ईमान वालो! तुम दूसरे लोगों के साथ हंसी-मज़ाक़ न करो। हो सकता है कि वे तुमसे बेहतर हों। तुम उनको बुरे नामों से न पुकारो। अपनी ज़बान से तुम बुरी बात न निकालो, कि ईमान लाने के बाद ज़बान से बुरी बात का निकालना अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के नज़दीक बहुत बुरा है।

गोया हमें अच्छे अख़्लाक़ अपनाने की तालीम दी जा रही है, और इस बात को समझाया जा रहा है कि हम ज़बान को सोच-समझकर इस्तेमाल किया करें।

देखने में छोटी, जुर्म बड़ा

ज़बान के बारे में आलिमों ने लिखा है:

جِرْمُهٗ صَغِيْرٌ وَجُرْمُهٗ كَبِيْرٌ

तर्जुमाः इसका आकार तो छोटा होता है लेकिन इससे होने वाले जुर्म बहुत बड़े हुआ करते हैं।

तो ज़बान देखने में जितनी छोटी होती है उससे निकलने वाले जुर्म उतने ही अहमियत के हामिल होते हैं। चुनाँचे इनसान ज़बान से

ग़ीबत करता है और ग़ीबत इतना बड़ा जुर्म है कि हदीस में फ़रमाया गया:

اَلْغِيبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا

तर्जुमाः ग़ीबत तो ज़िना से भी ज़्यादा बुरी चीज़ है।

ज़बान से झूठ निकलता है और इतना निकलता है कि अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं कि तुम झूठों के दफ़्तर में उस बन्दे का नाम लिख दो। चुग़लख़ोरी इनसान ज़बान से ही करता है, दूसरों पर इल्ज़ाम लगाने का काम आदमी ज़बान से ही करता है। दूसरों के दिल को तकलीफ़ पहुँचाना, दिल दुखाना जिसे कहते हैं, यह सब ज़बान ही से की जाती हैं। इसलिए याद रखना! "बीमारियों में से सबसे बुरी दिल की बीमारी और दिल की बीमारियों में से सबसे बुरी दिल दुखाना होता है" तो जब हम किसी बन्दे का दिल जला रहे होते हैं तो उसके बदले हमारे आमाल-नामे में गुनाहों के अंबार लग रहे होते हैं। इसलिए ज़बान को इनसान सही तरह इस्तेमाल करे शरीअ़त ने हमें इसकी अहमियत बतला दी है।

जन्नत की ज़मानत

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो इनसान जिस्म के दो आज़ा (अंगों) के सही इस्तेमाल करने की ज़मानत दे दे मैं उसको जन्नत की ज़मानत देता हूँ:

एक वह अंग जो दो जबड़ों के दरमियान है जिसे 'ज़बान' कहते हैं। और दूसरा वह अंग जो इनसान की दोनों रानों के दरमियान है। (इनसान के जिस्म के गुप्तांग) तो जो इनसान इन दोनों अंगों की ज़मानत दे दे, मैं उसको जन्नत की ज़मानत देता हूँ।

पते की बात

क़ियामत में जो इनसान जहन्नम में जायेंगे वे अक्सर ज़बान के

ग़लत इस्तेमाल ही की वजह से जायेंगे। यहाँ पर एक नुक्ता समझने का है कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने ज़बान को डबल प्रोटेक्शन (PROTECTION) यानी हिफ़ाज़त दी है। आप अगर ग़ौर करें तो पता चलेगा कि ज़बान के ऊपर अल्लाह ने दो कवर दे दिये हैं, एक तो उसके गिर्द दाँतों का घेरा बनाया गया, दूसरे उसके गिर्द होंठों का घेरा बनाया गया। जब ज़बान को खोलना हो तो पहले होंठ खोलते हैं, फिर दाँत खोलते हैं, तब जाकर ज़बान चलती है। इसके ज़रिये बन्दे को अल्लाह तआ़ला ने यह बतलाया कि उसको चलाने से पहले अन्जाम को सामने रखना।

इसी तरह इनसान की शर्मगाह (गुप्तांग) भी दो कपड़ों के अन्दर पोशीदा होती है। उसको भी दो कपड़ों के अन्दर आदमी छुपाकर रखता है। आ़म तौर पर आदमी जिस्म के दूसरे अंगों को तो एक कपड़े से ढाँपता है लेकिन शर्मगाह को दो कपड़ों से ढाँपता है। एक पाजामा या लुंगी वग़ैरह और दूसरे क़मीस, कि इन पर्दों और तहों को हटाने से पहले ज़रा अन्जाम को याद रख लेना कि इसकी वजह से अक्सर लोग जहन्नम में जायेंगे।

ख़ुशनसीब कौन?

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपनी ज़बान को पकड़ कर कई बार खींचते थे और फ़रमाते थे कि इसकी वजह से अक्सर लोग जहन्नम में दाख़िल होंगे। ख़ुशनसीब (भाग्यशाली) है वह इनसान जिसकी ख़ामोशी फ़िक्र के साथ हो, और उसकी गुफ़्तगू ज़िक्र के साथ हो। यानी इनसान ख़ामोश रहे तो अल्लाह की याद में लगा हो और अगर बात भी करे तो नेकी की बात करे। हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाहि अ़लैहि से किसी ने पूछा कि हज़रत! आप अक्सर ख़ामोश रहते हैं, आप कुछ नसीहत किया करें ताकि लोगों को कुछ फ़ायदा हो। हज़रत ने बहुत प्यारी बात फ़रमाई, सोने की डलियों

से भी प्यारी। फ़रमाया कि "जिसने हमारी ख़ामोशी से कुछ न पाया वह हमारी बातों से भी कुछ नहीं पायेगा"।

ख़ामोशी के फ़ायदे

बहुत सी बार ख़ामोशी भी बेहतरीन जवाब होता है। यह ज़रूरी नहीं कि शौहर ने ज़रा सी बात कही तो बीवी को भी बोलना लाज़िमी है, या बीवी ने कोई बात की तो शौहर के लिए उसका जवाब देना फ़र्ज़ है। कई बार मुख़ातिब की बात का बेहतरीन जवाब ख़ामोशी होती है। तो हम इस बात को न भूलें कि ख़ामोश रहने से भी इनसान का पैग़ाम दूसरे तक पहुँच जाता है।

कह रहा है शोरे-दरिया से समन्दर का सुकूत
जिसका जितना ज़र्फ़ है उतना ही वह ख़ामोश है

ख़ामोश रहना तदब्बुर (ग़ौर व फ़िक्र करने) और अ़क्लमन्दी की अ़लामत (पहचान) होती है और इनसान के समझदार होने की पहचान होती है। जबकि हर वक़्त टर-टर करते रहना यह इनसान की बेवकूफ़ी की अ़लामत होती है। याद रखिएगा कि "ज़बान की ग़लती और बहकना पाँव की फिस्लन और बहकने से भी ज़्यादा ख़तरनाक होता है। पाँव फिसल गया तो इनसान फिर उठ सकता है, लेकिन अगर ज़बान फिसल गयी तो वह लफ़्ज़ फिर वापस नहीं आ सकता" इसलिए जिस इनसान की ज़बान बेक़ाबू हो तो उस इनसान की मौत का फ़ैसला वही करती है।

क़ौल व अ़मल में हयादारी

एक नौजवान ने बदतमीज़ी की। एक बुज़ुर्ग ने उसे कहा ऐ नौजवान! होश कर कि तू अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के नाम कैसा ख़त भेज रहा है। इसलिए कि जो भी इनसान बोलता है वह नामा-ए-आमाल में लिखा जाता है। क़ुरआन पाक में फ़रमाया गया:

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ○

तर्जुमा: नहीं बोलता है कोई बात मगर यह कि उस पर एक फ़रिश्ता निगराँ मुक़र्रर है।

इसलिए उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि ऐ नौजवान ग़ौर कर कि तू अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के नाम कैसा ख़त भेज रहा है। इसलिए जो बन्दा अपने बोलने में एहतियात नहीं रखता वह अपने अहवाल में भी एहतियात नहीं रखता है।

एक मिसाल

चुनाँचे यहया इब्ने मुआज़ राज़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि दिल की मिसाल हंडिया की तरह है, और ज़बान की मिसाल चमचे के मानिंद है। हंडिया से तो वही कुछ चमचे में निकलता है जो हंडिया में मौजूद होता है। तो जब किसी इनसान की ज़बान से गन्दी बातें निकलें, ग़ीबत निकले, झूठ निकले, तो समझ लीजिए कि उसके दिल में यही बुराईयाँ भरी पड़ी हैं। और यह भी ज़ेहन में रखिएगा, मुहक़्क़िक़ीन ने लिखा है कि "औ़रत की ज़बान ऐसी तलवार है जिसको कभी ज़ंग नहीं लगता" आ़म तौर पर यह बात देखने में आई है कि औ़रतों की ज़बान क़ाबू में नहीं रहती और मर्दों के हाथ क़ाबू में नहीं रहते। मर्दों में यह बीमारी है कि ज़रा-ज़रा सी बात पर हाथ उठा लेते हैं और इस बात को भूल जाते हैं कि हम अपनों पर हाथ उठा रहे हैं। यह बात ज़ेहन में रख लीजिए कि जब भी अपनों से कोई क़सूर होता है, उसमें अपना भी कुछ न कुछ क़सूर होता है। इसलिए मर्द ज़रा ध्यान से इस बात पर तवज्जोह दें, लोग बच्चों पर, बीवी पर, हाथ उठाते हैं, यह हाथ उठाना अच्छी बात नहीं। हाथ इनसान उस वक़्त उठाता है जब वह हार मान लेता है कि मैं ज़बान के साथ समझाने से क़ासिर (असमर्थ) हूँ। गोया जिस बन्दे ने यह शिकस्त तस्लीम कर ली कि मैं अपनी बीवी को,

बेटी को, बच्चों को, ज़बान से समझाने की क़ाबलियत नहीं रखता, ज़बान से समझाने में मैं शिकस्त खा गया हूँ। तब वह बन्दा अपना हाथ उठाता है। तो हाथ का उठाना मर्दानगी नहीं दीवानगी होती है। शरीअ़त ने बहुत आख़िर में जाकर एक बात कही कि अगर किसी आदमी की बीवी, कोई बेहयाई का और गन्दा काम कर ले और यह तो बहुत ही कम होता है, तो अगर उसको शौहर ज़बान से समझाये, वह फिर भी बाज़ न आये तो फिर शरीअ़त ने कहा कि अब तुम उसको दो-चार थप्पड़ भी लगा सकते हो। लेकिन यह मार-पीट कोई रोज़मर्रा की बात नहीं होती, ऐसे तो बहुत कम मामलात पेश आते हैं। रोज़मर्रा में तो छोटी-छोटी बातें होती हैं जिन पर इनसान गुस्सा करता है, इसलिए जल्दी हाथ उठा देना यह मर्दों की कोताही है और ज़बान जल्दी चला देना यह औ़रतों की कोताही है। और कई घरों में तो ऐसा भी होता है कि न औ़रत की ज़बान रुकती है और न मर्द का हाथ रुकता है, फिर ये लोग पुरसुकून ज़िन्दगी कैसे गुज़ार सकेंगे।

गुर की बात

हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि अगर कोई आदमी आ़लिम के सामने बैठे तो अपनी ज़बान को संभाल कर बैठे कि अगर ज़बान से कोई लफ़्ज़ इधर-उधर का निकल गया तो वह शरीअ़त का फ़तवा उसको बता देंगे। और अगर हाकिम के सामने बैठो तो अपनी आँख को संभाल कर बैठो। अगर आँख इधर-उधर गयी तो हाकिम अपनी ताक़त का इस्तेमाल करेगा, और अल्लाह वालों के पास बैठो तो अपने दिलों को संभाल कर बैठो, इसलिए कि ये लोग दिलों के जासूस होते हैं। बन्दे के दिल की कैफ़ियत और बात अल्लाह तआ़ला उनके दिलों पर खोल देते हैं। और यह भी पक्की बात है कि लम्बी ज़बान हमेशा ज़िन्दगी को छोटा कर देती है। यानी ज़बान की वजह से आदमी ऐसी मुसीबतों और ग़मों में घिरा होता है कि वे ग़म फिर उसकी ज़िन्दगी

को कम कर देते हैं। तलवार का वार जिस्म पर पड़ता है, जबकि ज़बान का वार दिल पर पड़ा करता है। तलवार का घाव भर जाया करता है, लेकिन ज़बान से लगा ज़ख़्म जल्दी नहीं भरता। बल्कि जिन रिश्ते और नातों को तलवार नहीं काट सकती, ज़बान उन रिश्ते और नातों को एक लफ़्ज़ में काटकर रख देती है।

तो तलवार का नुक़सान इतना नहीं होता जितना ज़बान का हुआ करता है। और यह भी हक़ीक़त है कि बन्द मुँह के अन्दर मक्खियाँ नहीं घुसा करतीं, मक्खी मुँह में तब घुसेंगी जब मुँह खुलेगा। मालूम हुआ कि इनसान से ग़लती और कोताही तभी होगी जब ज़बान खुलेगी। इसलिए हमें चाहिये कि हम बात सुना ज़्यादा करें और थोड़ा बोला करें। सुनने के लिए अल्लाह ने दो कान दिये और बोलने के लिए अल्लाह ने एक ज़बान दी। किसी शायर ने इसको यूँ कहा है:

खुदा ने ज़बाँ एक दी, कान दो	कहे एक जब, सुन ले इनसान दो

चूँकि कान दो हैं इसलिए दो बातें सुनने के बाद फिर आप एक बात का जवाब दिया करें। यानी सुना ज़्यादा करें और बोला कम करें।

ज़िन्दगी की बुनियाद सच पर रखें

बहुत सी बार ज़ेहन में यह बात आती है कि हम ज़बान से सच और झूट बोलकर सब लोगों को राज़ी और मुत्मईन कर लेंगे। सच का बोल बाला होता है। झूट चाहे कितना ही तेज़ क्यों ने हो सच हमेशा उसको पकड़ लिया करता है। इसलिए ज़िंन्दगी की बुनियाद सच पर रखने की ज़रूरत है। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाया करते थे:

المرأ تحت لسانه

"इनसान अपनी ज़बान के नीचे छुपा हुआ करता है"

क्या मतलब? कि जब तक तुम बात न करो तब तक तुम उसे अक़्लमन्द ही समझोगे, बेवकूफ़ी का पता तो तब चलेगा जब बात करोगे। तो बेवकूफ़ के गले में घन्टी बाँधने की ज़रूरत नहीं होती, वह जब बोलता है तो खुद ही पता चलता है कि वह बेवकूफ़ है। इसी लिए किसी ने कहा है कि अक़्लमन्द सोचकर बोलता है और बेवकूफ़ बोलकर सोचता है। पहले ज़बान से कुछ कह दिया फिर सोचने लगा कि ओहो मैंने यह बात क्यों कह दी। इसलिए हमारे बुज़ुर्गों ने कहा है कि पहले सोच लो फिर बोलो, कि बात करने से पहले हम सोचा करें, खुद जायज़ा लें कि यह बात हमें करनी भी चाहिये कि नहीं। तो पहले सोच लो फिर बोलो।

मौक़े पर गुफ़्तगू

इसलिए कि मौक़े पर कही हुई बात सोने की डलियों की मानिन्द होती है।

हमारे इलाक़े में एक औरत गुज़री हैं, जिनको हातिम ताई की बीवी कहा जाता था। नेक और दीनदार, मालदार शौहर की बीवी थी, उनका घर जिस बस्ती में था उसके क़रीब एक आम सड़क गुज़र रही थी। देहातों के लोग अपनी बस्तियों से चलकर उस सड़क तक आते और बसों के ज़रिये फिर शहरों में जाते। कई बार ऐसा भी होता कि वे जब पहुँचते, तो बस का आख़िरी वक़्त ख़त्म हो चुका होता, रात गहरी हो चुकी होती, अब उन मुसाफ़िरों को बस न मिलने की वजह से इन्तिज़ार में बैठना पड़ता और बैठने के लिए कोई ख़ास जहग भी बनी हुई नहीं थी।

उस नेक औरत ने जिसका शौहर ख़ुशहाल था अपने शौहर को यह तजवीज़ (प्रस्ताव) पेश की कि क्यों न हम मुसाफ़िरों के लिए एक छोटा-सा मुसाफ़िर-ख़ाना बना दें ताकि वक़्त बे वक़्त लोग अगर आयें और उनको सवारी न मिले तो वे लोग एक कोने में बैठकर वक़्त

गुज़ार लें। शौहर ने मुसाफ़िर-ख़ाना बनवा दिया। लोगों के लिए बड़ी आसानी हो गयी। जब भी लोग आते तो उस कमरे में बैठकर थोड़ी देर इन्तिज़ार कर लेते, फिर उस नेक औ़रत को ख़्याल आया कि क्यों न उन मुसाफ़िरों के लिए चाय-पानी का थोड़ा सा प्रबन्ध ही हो जाये। चुनाँचे उसको जो जेब-ख़र्च मिलता था उसने उसमें से मुसाफ़िरों के लिए चाय-पानी का प्रबन्ध कर दिया। अब मुसाफ़िर और खुश हो गये और उस औ़रत को और ज़्यादा दुआ़यें देने लगे।

वक़्त के साथ-साथ लोगों में यह बात बहुत पसन्द की जाने लगी कि अल्लाह की नेक बन्दी ने लोगों की तकलीफ़ को दूर कर दिया, यहाँ तक कि उसको और चाहत हुई उसने अपने शौहर को कहा कि अल्लाह तआ़ला ने हमें बहुत कुछ दिया हुआ है, हम अगर खाने के वक़्त में इन मुसाफ़िरों को खाना भी खिला दिया करें तो इसमें कौनसी बड़ी बात है? अल्लाह के दिये हुए में से हम लगायेंगे। चुनाँचे शौहर मान गया। नेक बीवियाँ अपने शौहरों से नेकी के काम करवाया करती हैं। यह नहीं होता कि कोई तो ताज महल बनवाये और कोई गुलशन आरा का बाग़ बनवाये। यह तो बेवक़ूफ़ी की बातें हैं, कि दुनिया की चीज़ें बनवा लें। यह क्या यादगार हुई। यादगार तो वह थी जो ज़ुबैदा ख़ातून ने छोड़ी, कि जिनकी नहर से लाखों इनसानों ने पानी पिया और अपने आमाल नामे में उसका अज्र लिखा गया। तो नेक बीवियाँ अपने शौहरों से हमेशा नेक कामों में ख़र्च करवाती हैं।

चुनाँचे शौहर ने मुसाफ़िरों के लिए खाने का इन्तिज़ाम भी कर दिया, लिहाज़ा जब मुसाफ़िरों को खाना भी मिलने लगा तो बहुत से मुसाफ़िर रात में वहाँ ठहर जाते और अगले रोज़ बस पकड़ कर अपनी मन्ज़िल की तरफ़ रवाना हो जाते। यहाँ तक कि वहाँ पर सौ-पचास लोग रहने लगे। ज़रूरत से ज़्यादा ख़ैरख़्वाह भी होते हैं, जो ख़ैरख़्वाही के रंग में बदख़्वाही (बुरा चाहना) कर रहे होते हैं। दोस्ती के

रंग में दुश्मनी कर रहे होते हैं। चुनाँचे ऐसे आदमियों में से एक-दो ने उसके शौहर से बात की कि जी तुम्हारी बीवी तो फ़ुज़ूल ख़र्च करती है, सौ-पचास आदमियों का खाना रोज़ पक रहा है। ये फ़ालतू क़िस्म के लोग निखट्टू और नालायक़ क़िस्म के लोग आकर यहाँ पड़े रहते हैं। खाते रहते हैं। तुम्हें अपने माल का बिल्कुल एहसास नहीं। यह तो तुम्हें डुबोकर रख देगी। उन्होंने ऐसी बातें कहीं कि शौहर ने कहा कि अच्छा हम उनको पानी तो देंगे अलबत्ता खाना देना बन्द कर देते हैं। चुनाँचे खाना बन्द कर दिया गया।

जब औरत को पता चला तो उस औरत के दिल पर बहुत सदमा गुज़रा, मगर औरत समझदार थी। वह जानती थी कि मौक़े पर कही हुई बात सोने की डलियों के मानिन्द होती है। इसलिए मुझे अपने शौहर से उलझना नहीं, मौक़े पर बात करनी है, ताकि मैं अपने शौहर से बात कहूँ और मेरे शौहर को बात समझ में आ जाये। चुनाँचे दो-चार दिन वह ख़ामोश रही।

एक दिन वह ख़ामोश बैठी थी, शौहर ने पूछा कि क्या मामला है? ख़ामोश क्यों बैठी हो? कहने लगी कि बहुत दिन हो गये घर में बैठे हुए। सोचती हूँ कि हम ज़रा अपनी ज़मीनों पर चलें, जहाँ कुआँ है, ट्यूबवैल है, बाग़ है। कहने लगा बहुत अच्छा मैं तुम्हें लेकर चलता हूँ।

चुनाँचे शौहर अपनी बीवी को लेकर अपनी ज़मीनों पर आ गया, जहाँ बाग़ था, फल-फूल थे। वहाँ ट्यूबवैल भी लगा हुआ था। चुनाँचे वह औरत पहले तो थोड़ी देर फूलों में, बाग़ में, घूमती रही और फूल तोड़ती रही, फिर आख़िर में आकर यह कुएँ के क़रीब बैठ गयी और कुएँ के अन्दर देखना शुरू कर दिया। शौहर समझा कि वैसे ही कुएँ की आवाज़ सुन रही है, पानी निकलता देख रही है। काफ़ी देर जब हो गयी तो शौहर ने कहा कि नेक-बख़्त चलो घर चलते हैं। कहने लगी कि हाँ बस अभी चलते हैं और बैठी रही। कुछ देर के बाद उसने फिर कहा कि चलो घर चलें। कहने लगी कि हाँ बस अभी चलते हैं

और फिर बैठी रही। तीसरी बार उसने फिर कहा कि हमें देर हो रही है, मुझे बहुत से काम समेटने हैं। चलो घर चलते हैं। कहने लगी कि जी हाँ चलते हैं और कुएँ में ही देखती रही। इस पर शौहर क़रीब आया और कहा कि क्या बात है? तुम कुएँ में क्या देख रही हो? तब उस औरत ने कहा कि मैं देख रही,हूँ कि जितने डोल कुएँ में जा रहे हैं सब के सब कुएँ से भरकर वापस आ रहे हैं, लेकिन पानी जैसा था वैसा ही है। ख़त्म नहीं हो रहा। इस पर शौहर मुस्कुराया और कहने लगा कि अल्लाह की बन्दी भला कुएँ के पानी भी कभी कम हुए। यह तो सारा दिन और सारी रात भी अगर निकलता है और डोल भर-भरकर आते रहेंगे तब भी कम नहीं होगा। अल्लाह तआ़ला नीचे और भेजते रहते हैं।

जब उस मर्द ने यह बात कही तब उस समझदार औ़रत ने जवाब दिया! कहने लगी अच्छा ये इसी तरह डोल भर-भरकर आते रहते हैं और पानी वैसा ही रहता है, नीचे से और आता रहता है? शौहर ने कहा कि तुम्हें नहीं पता? बीवी ने कहा कि मेरे दिल में एक बात आ रही है, कि अल्लाह ने नेकियों का एक कुआँ हमारे यहाँ भी जारी किया था, मुसाफ़िरख़ाने की शक्ल में, लोग आते थे और डोल भर-भरकर ले जाते थे। तो क्या आपको ख़तरा हो गया था कि उसका पानी ख़त्म हो जायेगा, अल्लाह तआ़ला और नहीं भेजेगा? अब जब उसने मौक़े पर बात कही तो शौहर के दिल पर जाकर लगी, कहने लगा कि तुमने वाक़ई मुझे क़ायल कर लिया।

चुनाँचे शौहर वापस आया और उसने दोबारा मुसाफ़िरख़ाने में खाना शुरू करवा दिया और जब तक मियाँ-बीवी ज़िन्दा रहे, मुसाफ़िरख़ाने के मुसाफ़िरों को खाने खिलाते रहे। यहाँ से यह मालूम हुआ कि नेक बीवियाँ फ़ौरन तुर्की-ब-तुर्की जवाब नहीं दिया करतीं, बल्कि बात को सुनकर ख़ामोश रहती हैं। सोचती रहती हैं, फिर सोचकर बात करती हैं, अन्जाम को सामने रखकर बात करती हैं, मौक़े

पर बात करती हैं। और कई बार यह देखा गया है कि मर्द अगर ग़ुस्से में कोई बात कर भी जायेगा तो दूसरे मौक़े पर वह ख़ुद माज़िरत कर लेगा, और कहेगा कि मुझसे ग़लती हुई। लिहाज़ा अगर एक मौक़े पर आपने कोई बात कही, उस पर मर्द ने कहा कि मैं हरगिज़ नहीं करूँगा। आप ख़ामोश हो जाईये। दूसरे मौक़े पर वह ख़ुशी से बात मान लेगा। यह ग़लती हरगिज़ न करें कि हर बात का जवाब देना अपने ऊपर लाज़िम न समझें। इस ग़लती की वजह से बात कभी छोटी होती है, मगर बात का बतंगड़ बन जाता है और झगड़ा और विवाद पैदा हो जाता है और मियाँ-बीवी के अन्दर जुदाई हो जाती है। इसलिए "अक़्लमन्द औरत पहले तौलेगी और फिर बोलेगी" इसलिए कि उसे पता है कि अगर मैं मौक़े पर बात कहूँगी तो उस बात का नतीजा अच्छा निकलेगा।

घर की बात घर में

याद रखना! जो शौहर अपनी बीवी का दिल प्यार से नहीं जीत सका, वह अपनी बीवी का दिल तलवार से हरगिज़ नहीं जीत सकता। दूसरे अल्फ़ाज़ में, जो औरत अपने शौहर को प्यार से अपना न बना सकी वह तलवार से भी अपने शौहर को अपना नहीं बना सकेगी, कई बार औरतें सोचती हैं कि मैं अपने भाई को कहूँगी वह मेरे शौहर को डाँटेगा, मैं अपने अब्बू को बताऊँगी वह मेरे शौहर को सीधा कर देंगे। ऐसी औरतें इन्तिहाई बेवकूफ़ होती हैं, बल्कि परले दर्जे की बेवकूफ़ होती हैं। यह कैसे हो सकता है कि आपके भाई और आपके बाप डाँटेंगे और आपका शौहर ठीक हो जायेगा! तीसरे आदमी के दरमियान में आने से हमेशा फ़ासले बढ़ जाते हैं। जब आपने अपने और शौहर के मामले में अपने माँ-बाप को डाल दिया तो आपने तो तीसरे आदमी को दरमियान में डालकर खुद फ़ासला कर लिया। जब आप ख़ुद अपने

और अपने मियाँ के दरमियान फ़ासला कर चुकीं तो अब यह नज़दीकी कैसे होगी? इसलिए अपने घर की बातें अपने घर में समेटी जाती हैं, लिहाज़ा याद रखिये।

अपना घौंसला अपना, कच्चा हो या पक्का

शौहर के घर में अगर आप फ़ाक़े से भी वक़्त गुज़ारेंगी तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के यहाँ दर्जे और रुतबे पायेंगी। अपने वालिद के घर की आसानियों और नाज़ व नेमत को याद न करना, हमेशा ऐसा नहीं होता कि बेटियाँ माँ-बाप ही के घर में रहती हैं। आख़िरकार उनको अपना घर बसाना होता है। अल्लाह की तरफ़ से जो ज़िन्दगी की तरतीब है उसी को अपनाना होता है। इसलिए अगर शौहर के घर में रिज़्क़ की तंगी है या शौहर की आ़दतों में से कोई आ़दत ख़राब है तो सब्र व संयम के साथ उसकी इस्लाह के बारे में फ़िक्रमन्द रहें। सोच-समझकर ऐसी बातें करें, ख़िदमत के ज़रिये से शौहर का दिल जीत लें, तब आप जो भी बात कहेंगी शौहर मान लेगा।

सोचकर बोलिये

बच्चों की तरबियत का हमेशा ख़्याल रखें। कई औ़रतें बच्चों की छोटी-सी ग़लती पर बच्चों को डाँटना शुरू कर देती हैं। बहुत सी बार ऐसे लफ़्ज़ मुँह से निकालती हैं कि आदमी सोचकर हैरान रह जाता है। बहुत सी औ़रतें तो रोते हुए बच्चों को यहाँ तक बद्दुआ दे देती हैं कि इससे तो तेरा मर जाना बेहतर था। इस क़िस्म की बातें अगर माँ अपने मासूम बच्चे के बारे में ख़ुद करेगी तो गोया वह अपनी तबाही को ख़ुद दावत दे रही है।

चुनाँचे हमारे बुज़ुर्गों ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक जाहिल औ़रत थी, उसका बच्चा बीमार था, जो रोता रहता था। माँ को

जागना पड़ता था। एक बार माँ ने तंग आकर कहा कि तू अगर सो ही जाता तो अच्छा था (यानी मर जाता)। जब उसने यह बद्दुआ की तो अल्लाह तआ़ला ने उसको क़बूल कर लिया, मगर उस बच्चे को उस वक़्त मौत नहीं दी, जब बच्चा बड़ा हो गया और नेक बना, तालीम-याफ़्ता बना, अच्छा कारोबार करने वाला बना, इतना ख़ूबसूरत और नेकसीरत कि उसको देखकर लोग हसरत करते कि काश! हमारे बच्चों की जवानी भी ऐसी होती, जो भी उस नौजवान को देखता, उस नौजवान के चेहरे की चमक को देखता ही रह जाता।

जब उसकी ऐन जवानी का आ़लम था तो माँ ने उसकी शादी का इन्तिज़ाम किया, और जब शादी में चन्द दिन बाक़ी रह गये तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने उसको मौत दे दी। ऐन जवानी के आ़लम में जब वह नौजवान मरा, अब उसकी माँ पागल बन गयी, रोती फिरती है, कहती है कि मेरा बेटा जवान था, अल्लाह ने मुझसे छीन लिया। हालाँकि उसको पता नहीं कि यह तो उसकी अपनी माँगी हुई बद्दुआ़ थी, मगर अल्लाह ने फल को पकने दिया। जब फल पक गया तो उस पके हुए फल को तोड़ा, ताकि तुझे पता चले कि तूने किस नेमत की नाक़द्री की थी। इसलिए औ़रतें बहुत सी बार अपनी ज़बान से मुसीबतों को बुला बैठती हैं। हमें चाहिये कि ज़बान से जब भी कोई लफ़्ज़ निकालें ज़रा सोच-समझकर निकालें।

सख़्त-क्लामी से परहेज़

शौहर के साथ जब बात किया करें तो मुलायम बात करने की कोशिश करें, बल्कि यह बात याद रखें कि मुलायम जवाब बहुत सी बार शौहर के गुस्से को ख़त्म कर दिया करता है। सामने वाला आदमी कितने ही गुस्से में क्यों न हो अगर आप उससे मुलायम बात कहेंगी तो उसका गुस्सा फ़ौरन दूर हो जायेगा। अल्लाह तआ़ला ने ज़बान के अन्दर हड्डी नहीं बनायी, उसके अन्दर नर्म लोथड़ा

बनाया। मक़सद क्या था? ऐ मेरे बन्दे जिस तरह मैं ज़बान को नरम बना रहा हूँ उसी तरह तू अपनी गुफ़्तगू को भी नरम रखना ताकि दिल मिले रहें, दिलों के अन्दर नश्तर न चुभते फिरें। हम जब अपनी नरम ज़बान से सख़्त अल्फ़ाज़ निकालते हैं तो लोगों को तकलीफ़ पहुँचती है।

अक़्लमन्दों का क़ौल

बुद्धिजीवियों ने लिखा है कि ज़बान की शक्ल देखकर डॉक्टर को उस बन्दे के हाज़मे का अन्दाज़ा हो जाता है। बिल्कुल इसी तरह ज़बान की मिठास को देखकर बन्दे की ख़ुश-अख़्लाक़ी (अच्छे व्यवहार) का अन्दाज़ा हो जाता है। आदमी की गुफ़्तगू बता देती है कि यह कैसा इनसान है। यह संवरा हुआ इनसान है या बिगड़ा हुआ इनसान है। इसलिए हम अपनी ज़बान को अच्छे अन्दाज़ से इस्तेमाल करें।

बुराई का जवाब अच्छाई से

और अगर कोई इनसान हमें बुरी बात कह रहा हो तो हम बुराई का जवाब अच्छाई के साथ दें। अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَاالَّذِیْ بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ

(پ ۲٤ حم سجدة)

"तुम बुराई का बदला अच्छाई के साथ दो" तो इसका क्या नतीजा निकलेगा? "जो तुम्हारा जिगरी दुश्मन है, वह तुम्हारा पक्का यार बन जायेगा" यानी वह तुम्हारा दोस्त बन जायेगा।

लिहाज़ा अगर हम कोई बुरा कलिमा सुनें तो उसका जवाब न दिया करें इसलिए कि जो आदमी एक बुरा कलिमा कह सकता है वह और भी बुरे कलिमात कह सकता है।

अल्लाह तआ़ला को छह चीज़ें नापसन्द हैं

अल्लाह तआ़ला को छह चीज़ों से बहुत नफ़रत है-

१:- 'ऊँची आँखें', गली बाज़ार में चलते हुए आँखें एक दूसरे को तकती फिरें, ऐसी ऊँची आँखें अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त को नापसन्द हैं।

२:- 'झूठी ज़बान' कि जब बोले तो झूठ निकले। हदीस पाक में आता है कि जब बन्दा झूठ बोलता है तो उसके मुँह से इतनी बदबू निकलती है कि नेकियाँ लिखने वाले फ़रिश्ते उससे बहुत दूर हो जाते हैं और कहते हैं कि अल्लाह तेरा नास करे, कि तेरे मुँह से कितनी बदबू निकली।

३:- 'बुरे मन्सूबे बाँधने वाला दिल' कई बार इनसान के दिल पर ज़ुल्मत (अंधकार) इतनी होती है कि वह हर वक़्त यह मन्सूबा सोच रहा होता है कि मैं गुनाह कर सकूँ। ऐसा दिल अल्लाह तआ़ला को नापसन्द है।

४:- 'बुराई की तरफ़ चलने वाले क़दम' अल्लाह तआ़ला को नापसन्द हैं।

५:- 'बेगुनाह इनसान को दुख देने वाले हाथ' अल्लाह को बहुत नापसन्द हैं। कई बार हमने देखा कि घरों के अन्दर औ़रतें ख़िद्मत करने वाली और नेक होती हैं, और मर्द ख़ुद बुरे होते हैं और उन औ़रतों को वे छोटी-छोटी बात पर दुख दे रहे होते हैं। उन पर हाथ उठाते हैं। ऐसे लोग अल्लाह के नज़दीक इन्तिहाई बुरे होते हैं।

६:- 'जुदाई डालने वाला इनसान' कई बार देखने में आया कि कुछ औ़रतें ऐसी होती हैं कि दो इनसानों के दरमियान जुदाईयाँ डाल देती हैं। मसलन् ऐसी बात करती हैं कि बेटा अपनी माँ से जुदा हो जाये, या भाई बहन से जुदा हो जाये। तो उसने दो इनसानों के दरमियान जुदाई डाल दी। या शौहर ऐसी बात करे कि अपनी बीवी

को मेहरम रिश्तेदारों से दूर कर दे। तो गोया उसने दो इनसानों के दरमियान जुदाई डाल दी। जिन रिश्तों और नातों को अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने जोड़ने का हुक्म दिया, जो बन्दा उन रिश्तों नातों को तोड़ेगा अल्लाह के यहाँ वह बुरा इनसान होगा। चुनाँचे हदीस पाक में आता है कि शबे-क़द्र में अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त बड़े-बड़े गुनाहगारों की बख़्शिश फ़रमा देते हैं मगर चन्द गुनाहगारों की बख़्शिश नहीं करते, जिनमें से एक वह इनसान है जो दो मुसलमानों के दरमियान फूट डालने वाला होगा, जुदाई डालने वाला होगा।

लिहाज़ा अगर ऐसा है तो इस बात को सोचे कि मैंने अगर यहाँ अपने बेटे या अपनी बहू के दरमियान फ़ासला किया तो मेरी शबे-क़द्र में भी बख़्शिश नहीं होगी, तो फिर बाक़ी दिनों में मेरी बख़्शिश कैसे होगी? बीवी सोचे कि अगर मैंने बेटे को माँ से जुदा कर दिया तो शबे-क़द्र में भी मेरी बख़्शिश नहीं होगी।

झूठ के मौक़े से बचिये

कई बार औ़रतें गोल-मोल सी बातें करती हैं। गोल-मोल सी बात का मतलब झूठ होता है। ऐसा काम न करे कि जिसकी वजह से झूठ बोलना पड़े। कोई ऐसा काम न करे कि जिसकी वजह से आपको अपनी बातें छुपानी पड़ें। जब भी औ़रत कोई ऐसा काम करेगी तो उसको अपने शौहर से छुपाने की ज़रूरत महसूस होगी। वह समझ ले कि मैं इसमें कोई गुनाह कहीं न कहीं ज़रूर कर रही हूँ। और कई बार तो बच्चियाँ ऐसे रोग पाल लेती हैं कि जिनको हर एक से छुपाना पड़ता है। बार-बार झूठ बोलना पड़ता है। और अल्लाह के यहाँ झूठों में उसका नाम शुमार कर लिया जाता है। इसलिए ऐसे गुनाहों से बचना चाहिये जिनकी वजह से इनसान की सारी ज़िन्दगी में झूठ ही झूठ आ जाये। हमेशा अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की मदद सच के साथ होती है, अगरचे आप देख रही हों कि झूठ बोलने से

मुसीबत टल जायेगी, अक़्ल बता रही है कि झूठ बोलने से मामला हल हो जायेगा, मगर याद रखना कि सच का हमेशा बोलबाला होता है। आप हर हाल में सच बोलेंगी तो अल्लाह तआ़ला की मदद शामिले-हाल होगी। वह मामलात और हालात को आपके मुवाफ़िक़ कर देगी। आप ज़ाहिरी शक्ल को न देखें कि झूठ बोलकर निजात मिल गयी, बल्कि आप अल्लाह के हुक्म को देखें कि हमें सच बोलने का हुक्म मिला है, इसलिए सच बोलने वाले इनसान का मदद करने वाला परवर्दिगार खुद हुआ करता है।

काँधले का वाक़िआ़

काँधले में एक बार ज़मीन का एक टुकड़ा था। उस पर झगड़ा चल पड़ा। मुसलमान कहते थे कि यह हमारा है, हिन्दू कहते थे कि यह हमारा है। चुनाँचे यह मुक़द्दमा बन गया अंग्रेज़ की अ़दालत में पहुँचा। जब मुक़द्दमा आगे बढ़ा तो मुसलमान ने ऐलान कर दिया कि यह ज़मीन का टुकड़ा मुझे मिला तो मैं मस्जिद बनाऊँगा। हिन्दुओं ने जब यह सुना तो उन्होंने ज़िद में कह दिया कि यह टुकड़ा अगर हमें मिला तो हम इस पर मन्दिर बनवायेंगे। अब बात तो दो इनसानों की व्यक्तिगत थी, लेकिन उसमें रंग इज्तिमाई (सामूहिक) बन गया। यहाँ तक कि इधर मुसलमान जमा हो गये उधर हिन्दू खड़े हो गये और मुक़द्दमा एक ख़ास अन्दाज़ का बन गया। अब सारे शहर में क़त्ल व ग़ारत हो सकती थी, ख़ून-ख़राबा हो सकता था। लोग भी बड़े हैरान थे कि नतीजा क्या निकलेगा? अंग्रेज़ जज था वह भी परेशान था कि इसमें कोई सुलह व सफ़ाई का पहलू निकाले, ऐसा न हो कि हालात ख़राब हो जायें। यह आग अगर जल गयी तो इसका बुझाना मुश्किल हो जायेगा।

जज ने मुक़द्दमा सुनने के बजाये एक तजवीज़ पेश की कि क्या कोई ऐसी सूरत है कि आप लोग आपस में बातचीत के ज़रिये मसले

का हल निकाल लें? हिन्दुओं ने एक तजवीज़ पेश की कि हम आपको एक मुसलमान आ़लिम का नाम तन्हाई में बतायेंगे, आप अगली पेशी पर उनको बुला लीजिए और उनसे पूछ लीजिए। अगर वह कहें कि यह मुसलमानों की ज़मीन है तो उनको दे दीजिए और अगर वह कहें कि यह मुसलमानों की ज़मीन नहीं हिन्दुओं की है, तो हमें दे दीजिए। जब जज ने दोनों फ़रीक़ान से पूछा तो दोनों फ़रीक़ इस पर राज़ी हो गये। मुसलमानों के दिल में यह बात थी कि मुसलमान होगा जो भी हो तो वह मस्जिद बनाने के लिए बात करेगा, चुनाँचे अंग्रेज़ ने फ़ैसला दे दिया और महीना या चन्द दिनों की तारीख़ दे दी कि भाई उस दिन आना और मैं उस बूढ़े को भी बुलवा लूँगा।

अब जब मुसलमान बाहर निकले तो बड़ी ख़ुशियाँ मना रहे थे, सब कूद रहे थे, नारे लगा रहे थे। हिन्दुओं ने पूछा अपने लोगों से कि तुमने क्या कहा? उन्होंने कहा कि हमने एक मुसलमान आ़लिम को अपना फ़ैसल (फ़ैसला देने वाला) बना लिया है, वह अगली पेशी पर जो कहेगा उसी पर फ़ैसला होगा।

अब हिन्दुओं के दिल मुरझा गये और मुसलमान ख़ुशियों से फूले नहीं समाते थे। लेकिन इन्तिज़ार में थे कि अगली पेशी में क्या होता है, चुनाँचे हिन्दुओं ने मुफ़्ती इलाही बख़्श काँधलवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का नाम बताया, जो कि शाह अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि के शार्गिदों में से थे और अल्लाह ने उनको सच्ची-सच्ची ज़िन्दगी अ़ता फ़रमायी थी।

जब हिन्दुओं ने उनका नाम लिया तो अंग्रेज़ ने अगली पेशी के मौक़े पर उनको भी बुलवा लिया। मुसलमानों ने देखा कि मुफ़्ती साहिब तशरीफ़ लाये हैं तो वे सोचने लगे कि मुफ़्ती साहिब तो मस्जिद की ज़रूर बात करेंगे। चुनाँचे जब अंग्रेज़ ने पूछा कि बताइये मुफ़्ती साहिब! यह ज़मीन का टुकड़ा किसकी मिल्कियत है। उनको चूँकि असल हक़ीक़त का पता था, उन्होंने जवाब दिया कि यह ज़मीन का

टुकड़ा तो हिन्दुओं का है। अब जब उन्होंने यह कहा कि यह हिन्दू का है तो अंग्रेज़ ने अगली बात पूछी कि क्या अब हिन्दू लोग उसके ऊपर मन्दिर तामीर कर सकते हैं? मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया जब मिल्कियत उनकी है तो वे चाहे घर बनायें या मन्दिर बनायें, यह उनका इख़्तियार है। चुनाँचे फ़ैसला दे दिया गया कि यह ज़मीन हिन्दुओं की है, मगर अंग्रेज़ ने फ़ैसले में अ़जीब बात लिखी, फ़ैसला करने के बाद लिखा कि "आज इस मुक़द्दमे में मुसलमान हार गये मगर इस्लाम जीत गया" जब अंग्रेज़ ने यह बात कही तो उस वक़्त हिन्दुओं ने कहा कि आपने तो फ़ैसला दे दिया, हमारी बात भी सुन लीजिए। हम इसी वक़्त कलिमा पढ़कर मुसलमान होते हैं और आज यह ऐलान करते हैं कि अब हम अपने हाथों से यहाँ मस्जिद बनायेंगे।

तो अ़क़्ल कह रही थी कि झूठ बोलोगे तो मस्जिद बनेगी, मगर हज़रत मुफ़्ती साहिब ने सच बोला और सच का बोलबाला हुआ, सच्चे परवर्दिगार ने उस जगह मस्जिद बनाकर दिखला दी। तो कई बार औ़रतों को नज़र आता है कि झूठ बोलना आसान रास्ता है। झूठ बोलना आसान रास्ता नहीं, यह काँटों भरा रास्ता हुआ करता है। झूठे से अल्लाह तआ़ला नफ़रत करते हैं, इनसान नफ़रत करते हैं, इनसान एतिमाद खो बैठते हैं। एक झूठ को बोलने के लिए कई झूठ बोलने पड़ते हैं, लिहाज़ा झूठी ज़िन्दगी गुज़ारने के बजाये सच्ची ज़िन्दगी को आप इख़्तियार कीजिए इस पर परवर्दिगार आपकी मदद फ़रमायेगा।

सच काम बना देता है

चुनाँचे इस क़िस्म के कई वाक़िआत हमारे बुज़ुर्गों में गुज़रे हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का वाक़िआ है कि ईरान का एक शहज़ादा जो मुसलमानों के साथ बहुत ज़्यादा जंग करता था और मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाता था। एक बार वह गिरफ़्तार होकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने पेश किया गया। जब आपने

जल्लाद को बुला लिया, उस वक़्त शहज़ादा भी सामने खड़ा था, आपने शहज़ादे से पूछा कि तुम्हारी कोई ज़रूरत या ख़्वाहिश है? क्योंकि आम तौर पर जिस पर यह हद (सज़ा) जारी की जाती थी उससे पूछा जाता था, उसने कहा कि मुझे पानी पीने की तमन्ना हो रही है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि इसको पानी का प्याला दे दो। चुनाँचे पानी का प्याला जब उसे दिया गया तो शहज़ादा पी नहीं रहा था, हाथ काँप रहे थे। आपने फ़रमाया तू पानी क्यों नहीं पीता? वह कहने लगा मुझे इस जल्लाद की तलवार का ख़ौफ़ है कि कहीं मैं पानी पीने लगूँ और यह तलवार का वार करके मेरी गर्दन उड़ा दे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुम मुत्मईन रहो, जब तक तुम यह पानी नहीं पी लोगे तुम्हें क़त्ल नहीं किया जायेगा।

उस शहज़ादे ने चालाकी यह की कि पानी का प्याला ज़मीन पर गिरा दिया, पानी ज़मीन में जज़्ब हो गया, वह कहने लगा कि ऐ मुसलमानों के अमीर! अपने वायदे पर पक्के रहिये क्योंकि मैंने पानी नहीं पिया, अब आप मुझे क़त्ल नहीं कर सकते।

अब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने यह ऐसा मौक़ा था कि एक तरफ़ तो इस्लाम का इतना बड़ा दुश्मन खड़ा है और दूसरी तरफ़ ज़बान का क़ौल है, अ़क़्ल कहती है कि तुम इसकी बात को न सुनो और इसकी गर्दन उड़ा दो। क्योंकि यह इस्लाम को नुक़सान देने वाला आदमी है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सच्ची-सच्ची ज़िन्दगी थी आपने फ़रमाया कि तुमने ठीक कहा, मैंने क़ौल दे दिया था लिहाज़ा चूँकि वह पानी तुमने नहीं पिया हम तुम्हें क़त्ल नहीं कर सकते, इसलिए मैं तुम्हारे क़त्ल का हुक्म वापस लेता हूँ।

जब आपने क़त्ल का हुक्म वापस ले लिया तो मुसलमान बड़े हैरान हुए कि यह शहज़ादा अपनी चालाकी की वजह से फिर बच निकला। लेकिन हैरानी इस बात पर हुई कि जब उसको माफ़ी का

हुक्म नामा सुनाया तो वह कहने लगा ऐ अमीरुल-मोमीन! मैंने यह हरकत इसलिए की थी कि अगर जल्लाद को देखकर मैं कलिमा पढ़ लेता तो दुनिया कहती कि शहज़ादा था मौत के डर की वजह से मुसलमान हो गया। मैंने एक बहाना इख़्तियार किया जिससे कि अब मेरी जान बच गयी। आप मुझे क़त्ल नहीं कर सकते। अब मैं आज़ाद हूँ अपने दिल से कहता हूँ कि जिस दीन के अन्दर सच का इतना एहतिराम है, मैं भी उसी दीन को क़बूल करता हूँ। चुनाँचे वह शहज़ादा कलिमा पढ़कर मुसलमान हो गया।

किताबों मे लिखा हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु कई मामलात में उसके साथ मश्विरे करते थे। इस्लाम का वह दुश्मन फिर इस्लाम का बड़ा कमांडर बनकर ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बन गया। इस वाक़िए से हमें यह मालूम हुआ कि अ़क्ल कहती है कि झूठ बोलना आसान रास्ता है, जान छूट जायेगी। हरगिज़ नहीं! हम सच बोलेंगे, सच हमेशा आसान रास्ता होता है और सच के साथ अल्लाह तआ़ला की मदद होती है।

हज़रत कअ़ब इब्ने मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु का सच

तीन सहाबा-ए-किराम एक जिहाद में शरीक न हो सके (कुछ मुनाफ़िक़ीन भी थे जो शरीक नहीं हुए) सहाबा के दिल में था कि अभी जायेंगे, अभी जायेंगे, यहाँ तक कि लश्कर वापस भी आ गया। मुनाफ़िक़ लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आते और बहाने बना करके चले जाते। नबी अ़लैहिस्सलाम उनकी बातें सुनकर उनको जाने की इजाज़त दे देते। मुनाफ़िक़ लोग यह समझते कि हमारी जान छूट रही है, मगर ये सहाबा चूँकि सच्चे लोग थे इन्होंने दिल में सोचा कि अगर हम झूठ भी बोलेंगे तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तो थोड़ी देर के लिए मुत्मईन कर देंगे मगर हमारा मामला तो परवर्दिगार के साथ है, जो दिलों के भेद जानने वाला है।

यह झूठ हमारे लिए तबाही का कारण बन जायेगा।

चुनाँचे उन्होंने नबी अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सच्ची बात कह दीं, कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! इस वजह से नहीं जा सके। आजकल-आजकल करते रहे, नीयत ज़रूर जाने की थी मगर बस सुस्ती आ गयी, यहाँ तक कि आप जिहाद से वापस भी आ गये। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके साथ बोलचाल बन्द फ़रमा दी, और सहाबा से भी कहा कि तुम भी उनके साथ बोलचाल बन्द कर दो। यहाँ तक कि उनकी बीवियों को भी कहा कि उनके साथ बोलचाल बन्द कर दीजिए।

इस वाक़िए से बेइख़्तियार आँखों से आँसू निकल आते हैं। किस तरह से उनको आज़माईशों से गुज़रना पड़ा। मगर काफ़ी दिनों के बाद आख़िरकार वह दिन आया जब परवर्दिगार ने क़ुरआन में आयतें उतारीं:

وَعَلَى الثَّلاثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْاحَتّٰى ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَارَحُبَتْ
وَظَنُّوْآاَنْ لَّا مَلْجَاً اِلَّآ اِلَيْهِ (سورة توبة)

उनकी यह हालत बन गयी थी कि "ज़मीन अपनी फ़राख़ी के बावजूद उन पर तंग हो गयी थी" और "उनका यह गुमान था कि अब अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार और ठिकाना नहीं" उस परवर्दिगार ने मदद फ़रमाई। उनके बारे में वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) उतारी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ख़ुशख़बरी सुनाई। सहाबा फिर उनसे मुहब्बत करने लग गये और अल्लाह ने उनकी तौबा के क़बूल करने का तक़ाज़ा ख़ुद क़ुरआन पाक में फ़रमा दिया।

मालूम हुआ कि जो इनसान, झूठ बोलता है वह अल्लाह की मदद से मेहरूम होता है, और जो सच बोलता है अल्लाह तआ़ला उसकी मदद फ़रमाते हैं।

एक वाक़िआ

मेरे एक ताल्लुक़ वाले दोस्त हैं जो बैअ़त हुए और अल्लाह ने उनको नेकी की ज़िन्दगी दी। वह वकील थे और आप जानते हैं कि वकील की ज़िन्दगी में झूठ कितना ज़्यादा होता है। चुनाँचे यह बन्दा इतना बड़ा वकील था कि लाखों में खेलने वाला इनसान था। महल जैसे मकान में ज़िन्दगी गुज़ारने वाला था, ज़िन्दगी उसकी बड़ी ऐश व आराम में गुज़र रही थी। शहर के सारे वकीलों में उसकी सबसे अच्छी प्रेक्टिस थी। यह बड़ा चर्ब-ज़बान (बोलने वाला) इनसान था। ऐसी बात करता कि झूठे सच्चे सब मुक़द्दमे जीत लिया करता था। लोग उसके पास बड़ी-बड़ी फ़ीस देकर मुक़द्दमे ले जाते, और उसको अपना वकील बनाते थे।

लेकिन जब यह बैअ़त हो गया अब उसको एहसास हुआ कि नहीं! मुझे अब सच बोलना है, अल्लाह वालों की सोहबत की बरकत से वकील के दिल में यह बात पैदा हुई, हालाँकि वकील के बारे में लोग समझते हैं कि यह तो झूठे ही होते हैं। यह लोयर (LOYAR) नहीं होते यह तो लायर (LAYAR) होते हैं। बल्कि किसी ने तो यह शे'र कह दिया।

पैदा हुए वकील तो शैतान ने कहा
लो आज हम भी साहिबे-औलाद हो गये

तो लोग तो वकीलों को इतना बुरा बना लेते हैं, मगर उन वकीलों में यह भी एक वकील है कि अल्लाह वालों के साथ निस्बत जोड़ी, यह हमारे नक़्शबन्दी बुजुर्गों की निस्बत का नूर था, दिल को बदल कर रख दिया। उसने अपनी बीवी को कहा कि मैं आज के बाद झूठ नहीं बोलूँगा, न कोई झूठा मुक़द्दमा लडूँगा। बीवी भी नेक थी वह भी सिलसिले में बैअ़त थी, उसने भी कहा ठीक है, फ़ाक़े के साथ गुज़ारा कर लूँगी मगर मुझे हराम कमाई नहीं चाहिये। मैं जहन्नम का ईंधन

नहीं बनना चाहती। नेक बीवियाँ नेक काम में ऐसे ही हाथ बटाया करती हैं। शौहर को तसल्ली दिया करती हैं।

चुनाँचे उन वकील साहिब ने यह भी कहना शुरू कर दिया कि मैंने झूठ छोड़ दिया है, और उसने अपनी शक्ल व सूरत और लिबास भी नेक लोगों जैसा बना लिया। अपने चेहरे पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत (यानी दाढ़ी) सजा ली। अब पगड़ी भी बाँधने लगा। लम्बा कुरता भी पहनने लगा। शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ हर काम करने लगा।

अब जब यह इनसान अपने दफ़्तर में जाकर बैठता, लोग उसके पास मुक़द्दमा लेकर आते, यह उन्हें कहता मियाँ अगर तुम सच पर हो तो मुक़द्दमा मुझे दो और अगर झूठ पर हो तो मैं तुम्हारा मुक़द्दमा नहीं ले सकता। लोग कहते नहीं-नहीं हम सच्चे हैं। यह अगली बात करता कि अगर मुक़द्दमे की पैरवी के दौरान दूसरे फ़रीक़ की दलीलें सुनकर मुझे यह महसूस हो गया कि तुम झूठे हो तो मैं मुक़द्दमे के दरमियान पैरवी करना छोड़ दूँगा। इस पर लोग घबरा जाते कि झूठ खुल जायेगा।

चुनाँचे लोग उसके पास आने बन्द हो गये। यह सारा दिन वहाँ पर जाता और सारा दिन दफ़्तर में बैठकर आ जाता। एक आदमी भी इसके पास न आता। एक साल पूरा गुज़र गया, कोई मुक़द्दमा न आया। प्रेक्टिस ज़ीरो हो गयी। जो कुछ पैसे थे वे ख़त्म होना शुरू हो गये। लोग उनको बेवक़ूफ़ कहते। कोई कहता दिमाग़ ख़राब हो गया, कोई कहता पीरों ने इसकी ज़िन्दगी ख़राब कर दी, कोई कुछ बोलता कोई कुछ बोलता, मगर यह नौजवान इनसान, डटा रहा। किसी ने कहा कि जब झूठ नहीं बोलना तो वकालत छोड़ दो, उसके बाद तुम कोई और पेशा इख़्तियार कर लो। कहने लगा नहीं! मैं तो इसी पेशे में रहकर सच बोलना चाहता हूँ। अल्लाह ने मज़बूती बख़्शी, चुनाँचे यह भी डटा रहा और लोग भी इसके पास डर के मारे न आते, यहाँ तक

कि पूरा साल ज़ीरो उसकी कमाई रही, और जो कुछ था वह भी ख़र्च हो गया। घर में तंगी आनी शुरू हो गयी। ऐश व आराम की ज़िन्दगी, फ़क्र व फ़ाक़े की ज़िन्दगी में बदल गयी। यहाँ तक कि जजों में भी यह बात आ गयी कि इस वकील को पता नहीं क्या हो गया, अच्छी भली ज़िन्दगी थी, इसने अपने आपको मुसीबत में डाल लिया। इस बात पर लोग उसका मज़ाक़ भी उड़ाते, टोक कर जाते, ताना भी दे जाते। वह सबकी कड़वी-कसीली सुन लेता, और खुद ही सोचता, पहले ज़माने में इस्लामी ज़िन्दगी इख़्तियार करने पर पत्थर पड़ा करते थे, आज के दौर में यार-दोस्त ज़बान से गोलियाँ मारते हैं। यह मेरे लिए पत्थर की मानिन्द हैं। मुझे आक़ा की तरह इनको बरदाश्त करना है।

चुनाँचे वह उनको बरदाश्त करता रहा। एक साल में पूरे शहर में यह बात फैल गयी कि वह आदमी झूठ नहीं बोलता। वकीलों में बात फैल गयी, जजों में फैल गयी कि यह बन्दा झूठ नहीं बोलता। चुनाँचे एक साल गुज़रने के बाद आहिस्ता-आहिस्ता वे लोग जो नेकोकार थे, आ़लिम थे, नेक थे, तब्लीग़ी जमाअ़त के थे, मदरसों के थे, जब उन लोगों का कोई मुक़द्दमा होता जो जायज़ भी होता, वे लोग उनके पास आते कि जनाब हमारा ठीक मुक़द्दमा है, आप हमारे मुक़द्दमे की पैरवी कीजिए। यह ऐसे मुक़द्दमे की पैरवी करता, जब यह अ़दालत में जाता और जज देखता कि यह आदमी वकील बनकर आया खड़ा है, तो जज के दिल में यह बात आती कि इतनी तफ़तीश तो हम भी नहीं कर सकते जितनी इस वकील साहिब ने की होगी। तभी तो उसने मुक़द्दमा लिया है, चुनाँचे वकील साहिब मुक़द्दमा लेकर आते, जज साहिब जल्द उनके हक़ में फ़ैसला दे देते। उस अच्छे गुमान की वजह से जो एक साल के अन्दर उनके दिलों में उसका एहतिराम आ गया था। सुब्हानल्लाह! यहाँ तक कि एक वक़्त वह आया कि यह जो मुक़द्दमा लेकर जाता, उसी के हक़ में फ़ैसला, जो मुक़द्दमा लेकर जाता उसी के हक़ में फ़ैसला।

अब शहर के लोगों ने सोचना शुरू कर दिया। जब हम सच पर हैं, मुक़द्दमा ठीक है, हम क्यों न उससे शुरू करवायें। अब अल्लाह ने उसको इतना काम दिया कि पहले सालों में एक महीने में पाँच लाख रुपये कमाता था, अब उसको एक महीने में दस लाख की आमदनी शुरू हो गयी। उसको अल्लाह ने डबल रिज़्क़ देना शुरू कर दिया। लोग हैरान, इतनी प्रेक्टिस कभी किसी की नहीं चली जितनी इसकी चली है, सच भी बोल रहा है, दोगुना रिज़्क़ भी पा रहा है।

अल्लाह तआ़ला की शान देखिए, सच को इख़्तियार करने पर अल्लाह ने उसको इज़्ज़त भी दी, रिज़्क़ भी ज़्यादा दिया। अब फिर उसकी ज़िन्दगी उसी आराम के साथ गुज़रने लगी, इसलिए कि अब उसकी ज़िन्दगी में सच था। चुनाँचे कुछ अ़रसे के बाद हुकूमत ने ऐक तजवीज़ चलाई कि चन्द ऐसे लोगों को लिया जाये और उनको जज बना दिया जाये जो बड़े सच्चे हों, और सच का फ़ैसला करते हों। जब ऐसी तहरीक (अभियान) चली तो उन वकील साहिब का नाम आ गया। सुब्हानल्लाह! सच बोलने के सदक़े उनको जज बना दिया गया।

पहले वकील बनकर अ़दालत में नीचे खड़ा होता था, अब जज बनकर कुर्सी के ऊपर बैठता है। फिर उनके सच की उतनी शोहरत हुई यहाँ तक कि उनको अ़दालत का सबसे बड़ा जज बना दिया गया। सुब्हानल्लाह! वह जब भी कभी इस आ़जिज़ के पास मिलने के लिए आते हैं मैं हैरान हो जाता हूँ और उनको यह बात समझाता हूँ कि देखिए आप झूठ बोलते थे, अल्लाह ने आपको अ़दालत की ज़मीन पर खड़ा कर रखा था। आपने सच बोलना शुरू किया अल्लाह ने आपको उस कुर्सी पर बैठा दिया, जहाँ पर बैठकर आप लोगों के फ़ैसले करते हैं।

तो सच से इनसान को दुनिया में भी इज़्ज़त मिलती है और अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के यहाँ भी इज़्ज़त मिलती है। अल्लाह

रब्बुल्-इज़्ज़त हमें सच्च बोलने और सच्ची ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे। कई नाम के सूफ़ी ऐसे भी देखे गये हैं कि वें कारोबार में तो झूठ बोलते हैं और समझते हैं कि ज़िक्र व तस्बीहात से हमारे दिल के सफ़ाई हो जायेगी और हमारा नफ़्स गुनाहों से पाक हो जायेगा। यह ख़्याल सही नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता। झूठ ज़हर की तरह है। हमारी ज़िन्दगी में जब तक ज़हर रहेगा, तब तक हमारी ज़िन्दगी में बरकत नहीं आ सकती। ज़िन्दगी को झूठ से ख़ाली कर लीजिए, इसलिए कि जों इनसान अपने इल्म और इरादे से झूठ बोलना छोड़ देता है अल्लाह तआ़ला उसकी दुआ़ओं को रद्द करना छोड़ देता है। लिहाज़ा सच की ज़िन्दगी को अपनाकर अपने परवर्दिगार की मदद को हासिल कर लीजिए।

अगर दिल में तकब्बुर और झूठ की गिरह लगी होगी तो ज़बान से "अल्लाह-अल्लाह" कहने से क्या बनेगा। इस घुन्डी को खोल लीजिए और सच्ची तौबा कर लीजिए। फिर देखिए अल्लाह के ज़िक्र की क्या बरकतें होती हैं। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हमें अपनी ज़बान के सही इस्तेमाल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। ज़बान का इस्तेमाल भी ठीक होना चाहिये और दिल भी इनसान का नेक होना चाहिये। यह नहीं कि ज़बान तो साबिर और शाकिर की हो, ज़बान से नरम बोलता हो, यह तो मीठी छुरी के मानिन्द है। इसी लिए फ़रमाया गया कि क़ियामत के नज़दीक ऐसे लोग आयेंगे, जिनके लिबास भेड़ों के बालों से भी ज़्यादा नरम होंगे और उनकी ज़बान शहद से भी ज़्यादा मीठी होगी, मगर उनके दिल भेड़ियों से भी ज़्यादा सख़्त होंगे। अल्लाह तआ़ला दिलों की सख़्ती से बचाये। मुनाफ़कत (दोग़लेपन) की ज़िन्दगी से बचाये और हमें नेक काम करने वालों की ज़िन्दगी नसीब फ़रमाये। इसी लिए कहा कि ऐसे लोग ज़िन्दगी में बहुत थोड़े मिलते हैं, दो-चार नहीं दस-बीस नहीं, दो एक ही तो दिखला दो, ऐसे कि जो अन्दर से भी बाहर की तरह हों, अन्दर और बाहर एक जैसे रहने वाले बहुत थोड़े होते हैं। अगर

किसी को मिल जायें तो हीरे-जवाहिरात की तरह उनकी क़द्र करने की ज़रूरत है। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हमें सच्ची ज़िन्दगी इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये और अपनी ज़बान से हम झूठ को ख़त्म कर दें, ताकि ज़िक्र के असरात सामने आने शुरू हों। फ़रमायाः

बर ज़बाँ तस्बीह दर दिल गाव-ख़र
ईं चुनीं तस्बीह के दारद् असर

अल्लाह तआ़ला हमें अपने दिलों को बदलने और अपनी ज़बानों को दुरुस्त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे, और सच्चों में अल्लाह तआ़ला हमें शामिल फ़रमा दे और क़ियामत के दिन सच्चों के क़दमों में हमारा हश्र फ़रमा दे। आमीन

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

अबयाते-शौक़िया

बनाऊँगा अपने नफ़्से सरकश को, अब तो या रब ग़ुलाम तेरा
मैं छोड़कर कारोबार सारे, करूँगा हर वक़्त काम तेरा
किया करूँगा बस अब इलाही, मैं ज़िक्र ही सुबह व शाम तेरा
जमाऊँगा दिल में याद तेरी, रटूँगा दिन रात नाम तेरा
हर दम करूँगा ऐ मेरे बारी, अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
मिस्ले-नफ़स् अब रखूँगा जारी, अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
मैं ऐ ख़ुदा दम भरूँगा तेरा, बदन में जब तक जाँ रहेगी
पढूँगा हर वक़्त तेरा कलिमा, देहन में जब तक ज़बाँ रहेगी
कोई रहेगा न ज़िक्र लब पर, तेरी ही बस दास्ताँ रहेगी
न शिकवा-ए-दोस्ताँ रहेगा न ग़ीबते दुश्मनाँ रहेगी
हर दम करूँगा ऐ मेरे बारी, अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
मिस्ले-नफ़स् अब रखूँगा जारी, अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

रहा मैं दिन रात ग़फ़लतों में अ़बस, यूँ ही ज़िन्दगी गुज़ारी
किया न कुछ काम आख़िरत का, कटी गुनाहों में उम्र सारी
बहुत दिनों मैंने सरकशी की, मगर है अब सख़्त शर्मसारी
मैं सर झुकाता हूँ मेरे मौला, मैं तौबा करता हूँ मेरे बारी
हर दम करूँगा ऐ मेरे बारी, अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
मिस्ले-नफ़स् अब रखूँगा जारी, अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
मैं दीन लूँगा मैं दीन लूँगा, न लूँगा मैं ज़ीनहार दुनिया
दिखा के नक़्श व निगार अपने, लुभाये मुझको हज़ार दुनिया
इसे मैं ख़ूब आज़मा चुका हूँ, बहुत है बेएतिबार दुनिया
लगाऊँगा इससे दिल न हरगिज़, यह चार दिन की है यार दुनिया
हर दम करूँगा ऐ मेरे बारी, अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
मिस्ले-नफ़स् अब रखूँगा जारी, अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
बुताने-दिलबर तो सैकड़ों हैं, मगर कोई बा-वफ़ा नहीं है
वदूद और लायक़े-मुहब्बत, फ़क़्त है तू दूसरा नहीं है
कोई तेरे ज़िक्र के बराबर, मज़े की शै ऐ ख़ुदा नहीं है
मज़े की चीज़ें हैं गो हज़ारों, किसी में ऐसा मज़ा नहीं है
हर दम करूँगा ऐ मेरे बारी, अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
मिस्ले-नफ़स् अब रखूँगा जारी, अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

(ख़्वाजा अ़ज़ीज़ुल्-हसन मजज़ूब रहमतुल्लाहि अ़लैहि)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इसी किताब से......

इस्लाम मज़हब की यह ख़ूबी है कि जिन सुराख़ों से शैतान इनसान के दिल पर हमला कर सकता था, इस्लाम ने उन तमाम सुराख़ों को बन्द कर दिया। बल्कि जिस मन्ज़िल पर जाने से रोकना था, उस रास्ते पर पहला क़दम उठाने से भी रोक दिया।

मिसाल के तौर शिर्क से मना करना था तो तस्वीर बनाने से भी मना कर दिया। न रहे बाँस न बजे बाँसुरी। इसी तरह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने मोमिन को ज़िना से रोकना था, तो ग़ैर-मेहरम की तरफ़ नज़र उठाने से भी रोक दिया। जिस मन्ज़िल पर नहीं जाना उसका फ़ासला (दूरी) क्या मालूम करना। और उस पर पहला क़दम ही क्या उठाना। यह इस्लाम मज़हब की ख़ूबी और कमाल है कि उसने मोमिन को शर्म व हया की ज़िन्दगी गुज़ारने की तालीम दी है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर

हाफ़िज़ ज़ुल्फ़क़ार अहमद साहिब

नक़्शबन्दी मजद्दिदी दामत बरकातुहुम

हया और पाकदामनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى. اَمَّا بَعْدُ!

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً، وَسَآءَ سَبِيْلًا٥ (سورة بنى اسرآئيل)

وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اَلْحَيَآءُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْاِيْمَانِ.

وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَا اَمَانَةَ لَهٗ.

وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اَنَا اَغْيَرُ وُلْدِ اٰدَمَ وَاللّٰهُ اَغْيَرُ مِنِّىْ.

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ٥ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

मोमिन की ज़िन्दगी का मक़सद

मोमिन की ज़िन्दगी का मक़सद आख़िरत की तैयारी करना है और काफ़िर की ज़िन्दगी का मक़सद ऐश व आराम और मौज-मस्ती करना है। जैसे किसी ने कहा है:

बाबर ब-ऐश कोश कि आ़लम दोबारा नेस्त

यानी जितनी मौज-मस्ती करनी है कर लो इसलिये कि इस दुनिया में दोबारा आना नहीं होगा।

काफ़िर यह समझता है कि इसके बाद ज़िन्दगी नहीं मिलेगी,

जितना लुत्फ़ उठा लो, जितनी लज़्ज़तें उठा लो, जितनी मस्ती उड़ा लो, जितनी हिम्मतें ख़र्च कर सकते हो कर लो।

मोमिन की ज़िन्दगी का मक़सद शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार कर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की रिज़ा (प्रसन्नता) को हासिल करना है। इसकी ख़ातिर कभी उसे अपनी ख़्वाहिशों की कुरबानी देनी पड़ती है, और कभी-कभी उसे अपनी ज़रूरियात की भी कुरबानी देनी पड़ती है। लेकिन हर कुरबानी का बदला हुआ करता है। जो इनसान अपने जज़्बात को अल्लाह के लिए कुबरान करता है, फिर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त उसको सबसे बेहतर अज्र और बदला देने वाले हैं। दुनिया में इनसान किसी की ख़ातिर मज़दूरी करे तो वह उसको उजूरत दिये बग़ैर वापस नहीं भेजता, जो इनसान अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की ख़ातिर मुजाहदा (मेहनत और कोशिश) इख़्तियार करे, अपने नफ़्स को ज़ेर करने के लिए, शरीअ़त की लगाम पहनाने के लिए मेहनत करे, तो फिर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के ज़िम्मे हो जाता है अपने बन्दे को उसका बदला देना।

इस्लाम का निराला अन्दाज़े-तरबियत

इस्लाम मज़हब की यह ख़ूबी है कि जिन सुराख़ों से शैतान इनसान के दिल पर हमला कर सकता था, इस्लाम ने उन तमाम सुराख़ों को बन्द कर दिया। बल्कि जिस मन्ज़िल पर जाने से रोकना था, उस रास्ते पर पहला क़दम उठाने से भी रोक दिया।

मिसाल के तौर शिर्क से मना करना था तो तस्वीर बनाने से भी मना कर दिया। न रहे बाँस न बजे बाँसुरी। इसी तरह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने मोमिन को ज़िना से रोकना था, तो ग़ैर-मेहरम की तरफ़ नज़र उठाने से भी रोक दिया। जिस मन्ज़िल पर नहीं जाना उसका फ़ासला (दूरी) क्या मालूम करना। और उस पर पहला क़दम ही क्या उठाना। यह इस्लाम मज़हब की ख़ूबी और कमाल है कि उसने

मोमिन को शर्म व हया की ज़िन्दगी गुज़ारने की तालीम दी है।

मोमिन और काफ़िर की ज़िन्दगी में फ़र्क़

मोमिन शर्म व हया को अच्छा और ख़ूबी समझता है, ग़ैर-मुस्लिम समाज में औरत को तस्वीरों में दिखाना, स्क्रीनों पर दिखाना, स्टेज पर दिखाना, वहाँ पर रोज़मर्रा का मामूल है। (इस समाज में मियाँ-बीवी के दरमियान अ़लैहदगी के वाकिआ़त 90% से भी ज़्यादा हैं) इसी लिए पूरब के मुल्कों में मर्द और औरत के आज़ाद मेलजोल की वजह से हर वक़्त औरत के पास भी अपनी पसन्द होती है और मर्द के पास भी अपनी पसन्द होती है, बल्कि पिछले दिनों की एक ख़बर थी कि अब तो उन काफ़िरों के मुल्कों में लोगों ने शादी करना ही ख़त्म कर दी है, वैसे ही एक-दूसरे के साथ वक़्त गुज़ारना शुरू कर दिया। आंकलन पेश किया गया, तो आंकलन पेश करने वाले ने किसी लड़के से पूछा कि तुम शादी क्यों नहीं कर लेते? उसने जवाब दिया कि जब तुम्हें बाज़ार में दूध मिलता है तो फिर घर में गाय पालने की क्या ज़रूरत है। इससे पता चला कि काफ़िरों के यहाँ औरतों की कोई इ़ज़्ज़त नहीं बल्कि हक़ीक़त में तो वे औरत को ज़लील करना चाहते हैं। औरत के हुक़ूक़ का झण्डा उठाने का दावा करने वाले, औरत को आज़ादी दिलवाने वाले, औरत को घर की चारदीवारी से बाहर निकालने वाले, औरत को मर्दों के बराबर लाने वाले, दर हक़ीक़त औरत को बेलिबास (नंगा) करके उससे लुत्फ़ उठाने वाले बनना चाहते हैं।

इस्लाम में औरत का मक़ाम

मुस्लिम समाज में मर्द और औरत को शर्म व हया वाली ज़िन्दगी गुज़ारने की तल्क़ीन (हिदायत) की गयी। इनसान होने के नाते जैसे मर्द अल्लाह तआ़ला के बन्दे हैं, वैसे ही औरतें भी अ़ल्लाह की बन्दियाँ हैं। इसलिए इबादत में औरत और मर्द के हुक़ूक़ बराबर हैं।

जान, माल, इज़्ज़त, आबरू की हिफ़ाज़त में मर्द और औरत के हुक़ूक़ बराबर हैं, लेकिन सामाजिक ज़िन्दगी गुज़ारने का वक़्त आया तो शरीअत ने घर के अन्दर के सारे काम औरत को सौंप दिये कि वह घर के अन्दर रहकर अपने आपको मसरूफ़ भी रखे, बच्चों की अच्छी तरबियत करे, शर्म व हया की हिफ़ाज़त करे। और मर्द के ज़िम्मे यह लगाया कि वह घर की चारदीवारी के बाहर का बोझ उठाये।

अगर शरीअत औरत को कहती कि तुम अपनी रोज़ी खुद कमाकर खाओ तो उससे फिर आबरू की हिफ़ाज़त का मुतालबा भी नहीं कर सकती थी। इसलिए पूरी ज़िन्दगी औरत के लिए खुद कमाना फ़र्ज़ नहीं। यह अगर बेटी है तो इसका ख़र्चा बाप के ऊपर फ़र्ज़ है, बहन है तो इसका ख़र्चा भाई के ऊपर है। अगर बीवी है तो इसका ख़र्चा शौहर के ऊपर है और अगर माँ है तो इसका ख़र्चा इसके बच्चों के ऊपर फ़र्ज़ है। पूरी ज़िन्दगी औरत को कहीं यह वक़्त नहीं आता कि वह बाहर निकल कर अपनी रोज़ी कमाये।

तो जब शरीअत ने इसको बाहर की दुनिया से बेपरवाह कर दिया, इसकी ज़रूरतें घर बैठे पूरी हो रही हैं, वह अपने महल में मलिका (महारानी) की-सी ज़िन्दगी गुज़ार सकती है, तो अब शरीअत ने कहा कि तुम अपनी इज़्ज़त और आबरू की हिफ़ाज़त करो। अगर इस औरत को नौकरी करने के लिए, अपने बिज़नेस के ऑडर लेने के लिए ग़ैर-मेहरमों के पास जाना पड़ता, तो मालूम नहीं ग़ैर-मेहरम लोग किस-किस हीले और बहाने से इसके जिस्म के साथ खेलते, और इसको मजबूर होना पड़ता। नौकरी हासिल करने के लिए, बिज़नेस हासिल करने के लिए, अपनी इज़्ज़त को भी दाँव पर लगाना पड़ता। तो शरीअत ने इसकी हिफ़ाज़त इस तरह से की कि मर्द को ज़िम्मेदार बनाया और औरत के सर पर बोझ ही नहीं रखा कि वह खुद कमाये और फिर खाये।

इस्लामी शरीअ़त की ख़ूबी देखिये कि जब औ़रत को इ़ज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त का हुक्म देना था तो उसको बाहर की दुनिया से बेनियाज़ (बेपरवाह) कर दिया। फ़रमाया कि तुम घर में रहो, तुम्हारे मर्दों पर फ़र्ज़ है कि तुम्हें घर में लाकर नान व नफ़्क़ा (यानी तुम्हारा पूरा ख़र्च) देंगे।

औ़रत-मर्द के आज़ादाना मेलजोल से मनाही

फिर औ़रतों को कहा कि तुम औ़रतों में ही अपना ताल्लुक़ रखो, इसलिए मुस्लिम समाज में स्कूलों से लेकर यूनिवर्सिटी तक, औ़रतों की हो तो उसमें औ़रतें ही काम करने वाली हों, यहाँ तक कि अगर अस्पताल में वार्ड हों तो औ़रतों के अलग हों, मर्दों के अलग हों। तो मर्द और औ़रत को एक-दूसरे के साथ मेलजोल से मना कर दिया। शर्तें लगा दीं, सिवाये उन मर्दों के साथ मिलने-जुलने के जिनको मेहरम कहते हैं, जहाँ आकर दुनिया के गंदे से गंदे इनसान की नफ़्सानियत भी मर जाती है। मसलन् बेटा है, भाई है, बाप है, ये वे रिश्ते हैं कि कितनी ही गन्दी ज़ेहनियत रखने वाला मर्द क्यों न हो, इन पवित्र रिश्तों के पास आकर उसके अन्दर के जज़्बात ख़त्म हो जाते हैं। उसके अन्दर की हैवानियत ख़त्म हो जाती है और उसके ऊपर शर्म व हया का पर्दा आ जाता है।

तो शरीअ़त ने मेहरम मर्दों के साथ मिलने, बैठने की इजाज़त दी, लेकिन इनके अ़लावा जितने मर्द थे उनको ग़ैर-मेहरम कहा। निकाह के ज़रिये तो उनके क़रीब आ सकती है, निकाह के बग़ैर उनसे दूर रहने का हुक्म दिया है।

इस्लामी तदबीरें

शरीअ़त ने मर्दों को अलग हुक्म दिया कि वे अपनी निगाहों को नीचा रखें, और औ़रत को अलग हुक्म दिया कि वे अपनी निगाहों

को नीचा रखें। चुनाँचे कुरआन पाक में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوْجَهُمْ، وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ.

आप ईमान वालों से फ़रमा दीजिए कि वे अपनी निगाहों को नीचा रखें, और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। और मोमिन औरतों से कह दीजिए कि वे भी अपनी निगाहों को नीचा रखें, और वे भी अपने आबरू और अ़स्मत की हिफ़ाज़त करें। (सूरः नूर पारा १८)

तो मर्दों को अपनी निगाहें हटाने का अलग हुक्म दिया और औरतों को अपनी निग़ाहें हटाने का अलग हुक्म दिया। बल्कि जितनी एहतियाती तदबीरें हो सकती थीं, वे सारी की सारी मर्द और औरतों को समझा दीं। मिसाल के तौर पर औरत को कहाः

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى.

तुम अपने घरों ही में रहो, हाँ मजबूरी और ज़रूरत के वक़्त तुम मेहरम मर्दों के साथ बाहर निकल सकती हो और पहले वाली जाहिलिय्यत और रस्म व रिवाज की बातें न करो।

तो गोया औरत को बेपर्दा होकर बाहर निकलने से मना कर दिया। और हुक्म दिया कि रिवाजों के पीछे न भागे, बल्कि अल्लाह को राज़ी करने वाली ज़िन्दगी को इख़्तियार करे। और अगर कभी ऐसा मौक़ा हो कि मर्दों को औरत से कोई चीज़ लेनी-देनी हो, बात करनी हो, तो कुरआन पाक में फ़रमाया किः

فَسْئَلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ذٰلِكَ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ (سورة احزاب)

तुम पर्दे के पीछे से उनसे माँगो, बात करो, यह तुम्हारे दिलों की पाकी के लिए भी अच्छा है, और औरतों के दिलों के पाक रहने के लिए भी अच्छा है।

तो यहाँ कुरआन ने दोनों के दिलों के पाक रहने की बात की। कोई औरत यह नहीं कह सकती कि अगर मर्द मुझसे बात करे तो

मुझ पर असर नहीं होता। कोई मर्द नहीं कह सकता कि औरत मुझसे बात करे तो मुझ पर असर नहीं होता। अल्लाह का कुरआन सच्ची गवाही दे रहा है कि तुम पर्दे के पीछे से गुफ़्तगू करो। यह दोनों के दिलों की पाकीज़गी के लिए अच्छा है। और फिर उस पर यह बात भी फ़रमा दी कि औरत को अगर ग़ैर-मेहरम से बात करनी भी पड़े, दरवाज़े के पीछे से, या पर्दे के पीछे से, या टेलीफ़ोन के ऊपर, फ़रमायाः

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِىْ فِىْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ (سورة احزاب)

कि तुम अपनी आवाज़ों को नरम न करो। किसी क़द्र सख़्ती रखो। तेज़ी रखो कि अजनबियत सी मालूम हो। अगर तुम आवाज़ को नरम कर लोगी तो जिसके दिल के अन्दर मर्ज़ (कोई खोट) है उसके दिल के अन्दर लालच पैदा हो जायेगा।

कुरआन पाक की इस आयत से मालूम हुआ कि औरत जब ग़ैर-मेहरम के साथ मीठी बनकर गुफ़्तगू करती है, तो लाज़िमी तौर पर उस मर्द के दिल में गुनाह का इरादा पैदा होता है। इसलिए मना फ़रमा दिया कि तमाम उन कामों से बचो जिन कामों से बुराई का वजूद भी मुम्किन है।

ईमानी ग़ैरत

शरीअ़त ने तालीम दी किः

لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَا غَيْرَةَ لَهٗ

यानी जिसके अन्दर ग़ैरत नहीं उसके अन्दर ईमान नहीं।

गोया जो बेग़ैरत मर्द है या बेग़ैरत औरत है, वह अपने ईमान की ख़ैर मनाये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमयाः

اَنَا اَغْيَرُ وُلْدِ اٰدَمَ وَاللّٰهُ اَغْيَرُ مِنِّىْ

मैं तमाम इनसानों में सबसे ज़्यादा ग़ैरत वाला हूँ और अल्लाह तआ़ला मुझसे भी ज़्यादा ग़ैरत वाला है।

क्या ख़ूबसूरती है उस दीन की जिसने शर्म व हया और ग़ैरत के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने की इतनी तालीम दी। इसलिए मर्दों को हुक्म दिया कि तुम अपनी आँख को बन्द कर लो अगरचे मादा बकरी के पोशीदा आज़ा (गुप्तांग) ही क्यों न हों। और यह भी ज़ेहन में रखें कि अल्लाह तआ़ला ने आँख का पर्दा कितना छोटा बनाया, कितना हल्का बनाया, कि एक लम्हे में इनसान अपनी आँख को बन्द कर सकता है, अगर आँख को बन्द करने के लिए कोई बड़ा शटर गिराना पड़ता तो मर्द बहाना बनाते कि औ़रत की तरफ़ से नज़र हटाते-हटाते भी हमारी नज़र उस पर पड़ गयी थी (यानी यह ज़ाहिर करते कि आँख को झुकाने में देर लगी इसलिये ऐसा हुआ)। लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने आँख के पर्दे को इतना छोटा और बारीक बना दिया कि जिस वक़्त भी चाहे इनसान अपनी आँख को उसी वक़्त बन्द कर सकता है।

औ़रत को एहतियात का हुक्म

औ़रत को तालीम दी कि तुम हर उस मौक़े से बचो कि जिन मौक़ों पर किसी ग़ैर-मेहरम को तुम्हारी तरफ़ तवज्जोह हो सके। मसलन जब औ़रत अपने बाल संवारती हैं, कंघी करती हैं तो उनके जो बाल टूट जाते हैं उनको भी वे ऐसी जगह न फेकें जहाँ ग़ैर-मेहरम मर्द देख सकते हों। दीन के आ़लिमों ने औ़रतों को हुक्म दिया कि वे अपने उन टूटे हुए बालों को भी छुपाकर रखें, ताकि ग़ैर मर्द की नज़र न पड़े। अगर किसी मर्द ने किसी ख़ास बरतन में खाया पिया हो, तो औ़रत को मना किया कि तुम इरादा करके उस बरतन में मत खाओ। इसलिए कि यह मक्रूह है। अगरचे मोमिन के झूठे में शिफ़ा है, लेकिन वह और नीयत होती है, शरीअ़त ने एहतियात बता दी, इसलिए कि कभी-कभी इशारों का सिलसिला उधर से भी शुरू हो जाता है, कि क़रीबी लोग मेहमान बनते हैं और एक

दूसरे के पास बची हुई चीज़ें पहुँच जाती हैं। शरीअ़त की ख़ूबी देखिये कि उसने इससे भी मना फ़रमा दिया।

औ़रत को एक हुक्म यह भी दिया कि अगर वह गली में चले तो दरमियान रास्ते में चलने के बजाये दीवार की तरफ़ क़रीब होकर चले। ऐसा न हो कि मर्दों के साथ उसका जिस्म टकराये। हदीस पाक में आता है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बात बयान फ़रमायी तो सहाबी औ़रतें जब कभी गली में निकलतीं तो दीवार के इतनी क़रीब होकर चलती थीं कि उनके बुर्क़े और चादरें बहुत-सी बार दीवार के साथ अटक जाते थे। औ़रत अगर बाहर निकले तो अपने को हिजाब (पर्दे) में लपेट कर निकले।

कुछ औ़रतों को ग़लत-फ़हमी होती है कि जी चेहरे का हिजाब (पर्दा) नहीं। ज़रा सोचिये कि अगर चेहरा ही सामने आ गया तो बाक़ी कुछ दिखाने की ज़रूरत ही नहीं। जिस तरह किताब की फ़ेहरिस्त देखने से सब कुछ पता चल जाता है, जब आँखें खुली हैं, मुँह खुला है, तो फिर इशारे भी हो सकते हैं, बात भी हो सकती है। शरीअ़त ने फिर पर्दे के पीछे से बात करने की बात कुरआन मजीद में क्यों कही? कोई औ़रत इस आयत को कुरआन मजीद से निकाल तो नहीं सकती। जब कुरआन मजीद बता रहा है कि पर्दे के पीछे से गुफ़्तगू करो तो यह कैसे हो सकता है कि बाहर निकलते हुए चेहरे का पर्दा न हो। रह गयी यह बात कि फ़लाँ जगह नहीं होता, फ़लाँ जगह नहीं होता, यह मत कीजिए इस्लाम आज असली शक्ल में नहीं है, इसको देखना हो तो आज के दौर में कुरआन व हदीस के अन्दर देखो और पहले ज़माने में देखना हो तो सहाबा-ए-किराम (नबी पाक के साथियों) की ज़िन्दगियों में देखो।

ग़म की हालत में भी पर्दा न छूटा

हदीस पाक में आता है कि एक औ़रत थी जिसका जवान बेटा

मर गया, वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई। उदास थी, ग़मगीन थी, रो रही थी मगर बिल्कुल पर्दे के कपड़े के अन्दर लिपटी हुई थी। एक सहाबी ने यह कह दिया देखो! यह बूढ़ी औ़रत है, इसका जवान बेटा मर गया है, लेकिन यह खुद कपड़े में कितनी लिपटी बैठी है। तो वह सहाबिया उनको कहने लगीं कि मेरा बेटा ही तो मरा है, मेरी हया तो नहीं मरी, कि मैं अपने जिस्म से कपड़ा हटा दूँ। तो ऐसे वक़्त में भी जब माँ बच्चे की वजह से इतनी ग़मज़दा होती है कि उसको अपना होश नहीं रहता, सहाबियात (सहाबी औ़रतें) इस हालत में भी पर्दे का लिहाज़ करती थीं, तो फिर आ़म हालात में वे कितना लिहाज़ करती होंगी?

घर में किस तरह रहे?

शरीअ़त ने हुक्म दिया कि वे मर्द जो क़रीबी हैं, औ़रत उनसे भी अपने आपको बचाकर रखे। मिसाल के तौर पर शौहर के भाई जिन्हें देवर कहते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

الحمو موت۔

देवर तो मौत होता है।

घरेलू ज़िन्दगी में बातचीत करनी पड़ती है, मगर औ़रत को चाहिये कि अपने और उसके दरमियान एक फ़ासला रखे ताकि ज़रूरत से ऊपर एक लफ़्ज़ भी उसे कहने का मौक़ा न मिले। बल्कि ग़ैर-मेहरम से बात करते हुए यह उसूल है कि जहाँ दो लफ़्ज़ों में जवाब मुम्किन है वहाँ तीन लफ़्ज़ बोलने की इजाज़त नहीं। शरीअ़त ने यहाँ तक मना कर दिया कि अगर अपना मेहरम मर्द भी ऐसा हो जो ग़ैर-मामून हो (यानी जिस पर भरोसा न हो) यहाँ तक कि भाई है, फ़ासिक़ व फ़ाजिर गन्दी ज़ेहनियत का है, गंदे और अश्लील काम करता फिरता है, तो बहन को कहा कि तुम उससे भी अपने आपको

परे-परे (दूर-दूर) रखो।

बेपर्दा औ़रतों से एहतियात

ऐसी औ़रतें जो बाहर बेपर्दा फिरती हैं, ऐसी औ़रतों से भी हयादार औ़रतों को एहतियात और बचने का हुक्म दिया। बल्कि फ़ुक़हा (दीन के आ़लिमों) ने लिखा है कि बेपर्दा घूमने वाली औ़रत तो पर्दे वाली औ़रत के लिए ना-मेहरम मर्द के हुक्म में होती है। अक्सर ऐसा होता है कि बेपर्दा घूमने वाली और गुनाह के ताल्लुक़ात इधर-उधर क़ायम करने वाली औ़रतें ही नेक बच्चियों को गुनाह की बातें सुना-सुनाकर उधर माईल करती हैं। शैतान ख़ुद तो हमला नहीं कर सकता, वह अपनी एजेन्ट भेज देता है, सहेली की शक्ल में, अपनी पड़ोसन की शक्ल में, किसी रिश्तेदार की शक्ल में, और वह शैतान की एजेन्ट उस नौजवान बच्ची को जिन्सी (सैक्सी) बातें सुनाकर उसके दिल के अन्दर गुनाह का ख़्याल पैदा करती है।

गंदी चीज़ों से बचने का हुक्म

क़ुरआन पाक ने क्या ख़ूबसूरत लफ़्ज़ इस्तेमाल किया कि जो लोग ऐसी औ़रतों पर बोहतान लगाते हैं:

الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ

तो यहाँ पर 'ग़ाफ़िलात' का तर्जुमा मुफ़स्सिरीन ने यूँ किया कि वे औ़रतें जिनको जिन्सी (सैक्सी) या इस क़िस्म की बातों का पता ही न हो, वे ग़ाफ़िलात (यानी भोली-भाली) हैं। तो शादी से पहले बच्ची को इस क़िस्म की बेशर्मी की बातों का पता ही नहीं होना चाहिये। अल्लाह की नज़र में यह उनकी सिफ़त (ख़ूबी और कमाल) है। क़ुरआन मजीद में औ़रत की सिफ़त इसको क़रार दिया कि वक़्त से पहले उसको ऐसी बातों का पता ही नहीं, गोया यह भोली-भाली नौजवान बच्ची है। तो ऐसी भोली-भाली बच्ची अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की नज़र में बड़ी इ़ज़्ज़त

और क़द्र वाली बच्ची है। इसी लिए उलेमा ने लिखा है कि नौजवान बच्चियों को अख़बार, फ़िल्मी रिसाले देखना और उनको मैगज़ीन पढ़ना, तीन औरतें तीन कहानियाँ, अफ़साने पढ़ना, फ़िल्में देखना, गाने सुनना, और इसी तरह इन्टरनेट की वे बदमाशियाँ जो अब सामने आ चुकी हैं, इस क़िस्म की चैटिंग, हर चीज़ हराम है। अपने बच्चों और अपनी बच्चियों को इन चीज़ों से बचाने की ज़रूरत है। ये चीज़ें अश्लीलता और गंदगी फैलाती हैं और अश्लीलता अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के नज़दीक गुनाहे कबीरा (बड़ा गुनाह) है।

जिस्म के अंग भी ज़िना करते हैं

बल्कि मौसीक़ी (संगीत) के बारे में तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यहाँ तक फ़रमाया कि मौसीक़ी कानों का ज़िना है। फ़रमाया कि जिस तरह शर्मगाह (गुप्तांग) ज़िना करती है, उसी तरह आँखों का भी ज़िना हाथों का भी ज़िना होंठों का भी ज़िना होता है। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा ऐ अल्लाह के महबूब! वह कैसे? फ़रमाया आँख से ग़ैर-मेहरम को देखा तो आँख ने ज़िना किया। अगर अपने मुँह से ग़ैर-मेहरम के साथ नरम गुफ़्तगू की तो गोया उसकी ज़बान और होंठों ने ज़िना किया। अगर कान उसकी बातें सुनें तो कानों ने ज़िना किया। संगीत की आवाज़ सुनी तो कानों ने ज़िना किया। अगर हाथ किसी ग़ैर-मेहरम को लगा तो हाथ ने ज़िना किया।

एक हदीस पाक में फ़रमाया कि मेरे हाथ किसी सुअर को लग जायें यह बेहतर है इससे कि किसी ग़ैर-मेहरम को लगें। पाँव अगर किसी ग़ैर-मेहरम की तरफ़ चलकर गये तो पाँव ने ज़िना किया। इसलिए शरीअ़त ने नज़र की हिफ़ाज़त की बहुत अहमियत बयान की है। क्योंकि यह ज़िना की तरफ़ पहला क़दम है। चुनाँचे शरीअ़त का हुक्म है:

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰى (سورة بنی اسرائیل)

तुम ज़िना के क़रीब ही न जाओ।

क्या ख़ूबसूरती है और क्या बेहतरीन अन्दाज़ है क़ुरआन मजीद का। यह नहीं कहा कि तुम ज़िना का जुर्म न करो, बल्कि कहा कि तुम ज़िना के क़रीब ही न जाओ। ग़ैर-मेहरम की तरफ़ देखना, उससे बातें करना, उसकी तरफ़ पैग़ाम भेजना, उसकी तरफ़ तोहफ़े-गिफ़्ट भेजना, ख़त और पर्चे भेजना, ये तमाम चीज़ें ज़िना के क़रीब करती हैं। इनको हराम फ़रमा दिया।

"नज़र" दुश्मन का तीर है

हदीस पाक में आता है:

اَلنَّظَرُ سَهْمٌ مِنْ سِهَامِ اِبْلِيْس

नज़र शैतान के तीरों में से एक तीर है।

और एक जगह फ़रमाया:

اَلنِّسَآءُ حَبَآئِلُ الشَّيَاطِيْن

औरतें तो शैतानों की रस्सियाँ हैं।

जैसे एक इनसान रस्सी (डोरी) के ज़रिये मछलियाँ पकड़ता है। आप यूँ समझिये कि शैतान औरतों के ज़रिये से मर्दों का शिकार करता है।

एक जगह फ़रमाया कि शैतान ने कहा कि औरत मेरा वह तीर है जो कभी ख़ता नहीं जाता। (यानी यह तीर हमेशा निशाने पर लगता है)। इसलिए शरीअ़त ने ग़ैर-मेहरम मर्द और औरत को अकेले बैठने से मना फ़रमा दिया। यहाँ तक कि अगर हसन बसरी जैसे बुज़ुर्ग पढ़ाने वाले हों, और राबिया बसरिया जैसी नेक बूढ़ी औरत पढ़ने वाली हो, तो शरीअ़त ने उनको भी तन्हाई में क़ुरआन पढ़ने-पढ़ाने से मना कर दिया, तो फिर बाक़ी बातों की गुंजाईश कहाँ रह गयी?

बेपर्दा औरत की सज़ा

जब औ़रत बेपर्दा बाहर निकलती है तो मर्दों की अ़जीब हवस-भरी निगाहें उसके ऊपर पड़ती हैं। आपने देखा होगा कि छोटे बच्चों को नज़र लग जाती है तो वे बीमार हो जाते हैं। इसी तरह जब बेपर्दा औ़रत घर से निकलती है तो मर्दों की हवसनाक निगाहों के पड़ने से औ़रत रूहानी तौर पर बीमार हो जाती है। उसकी ज़िन्दगी का सुकून लुट जाता है, वह किसी न किसी तरह परेशान हो जाती है, और फिर रोती फिरती है कि पता नहीं मेरे ही ऊपर सब परेशानियाँ आ रही हैं। और वह भूल जाती है कि मैंने तो शरीअ़त के हुक्म को तोड़ा हुआ है।

इसलिए बेपर्दा औ़रत जब घर से बाहर निकलती है तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के फ़रिश्ते उस पर लानत भेजते रहते हैं, जब तक कि वह घर वापस नहीं आ जाती। यह कितनी अ़जीब बात है कि जो औ़रत दुनिया में बाहर फिरेगी उसकी सज़ा अल्लाह ने यह रखी है कि क़ियामत के दिन सब इनसानों के सामने उसको बेलिबास करके फिर जहन्नम में फेंका जायेगा।

आप सोचिये कि औ़रतें तो फिर भी शर्म व हया की पुतलियाँ होती हैं, लेकिन अगर मर्द को भी कह दिया जाये कि तुमको बेलिबास (नंगा) करेंगे, तो मर्द भी तड़प उठता है। औ़रत को अगर मर्दों और औ़रतों के सामने रुस्वा करेंगे तो यह कितनी बड़ी सज़ा है। इसलिए पर्दे का जितना ख़्याल करें उतना कम है।

हज़रत मदनी रहमतुल्लाहि अ़लैहि और अंग्रेज़

हज़रत मदनी रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक बार सफ़र कर रहे थे। एक अंग्रेज़ अपनी मेम साहिबा को लेकर आया और सामने बैठ गया। अब मेम तो बेपर्दा थी, जब उसको पता चला कि यह हज़रत मदनी हैं तो उसने छेड़ख़ानी शुरू कर दी। कहने लगा कि देखो

इस्लाम अपनी औरतों को घरों में जेल की तरह क़ैद रखता है। हम तो अपनी औरतों को आज़ादी देते हैं। देखिये यह मेरे साथ घूम-फिर रही है, ज़िन्दगी के ऐश व आराम के दिन गुज़ार रही है।

हज़रत मदनी रहमतुल्लाहि अ़लैहि पहले तो सुनते रहे, फिर आपने सोचा कि यह सीधी तरह तो मानने वाला नहीं, टेढ़ी उंगली से खीर निकालनी पड़ेगी। चुनाँचे गर्मी का मौसम था, आपका एक शागिर्द भी आपके साथ था। आपने शिकंजबीन बनाने के लिए कुछ लीमूँ वग़ैरह और चीनी अपने साथ रखवाई थी। आपने उसे इशारा किया कि ज़रा शिकंजबीन के एक-दो गिलास बनाओ, बहुत गर्मी है। उसने थर्मस से ठंडा पानी निकाला, चीनी मिलाई और लीमूँ काटा। अब जो अंग्रेज़ के सामने लीमूँ काटा तो उसके मुँह में भी पानी आ गया। वह भी बड़ी शौक़ की नज़रों से शिकंजबीन को देख रहा है।

अब उससे हज़रत मदनी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने पूछा कि क्या मामला है? आप बड़ी मुहब्बत भरी नज़रों से शिकंजबीन को देख रहे हैं? उसने कहा जी आपको पता है, गर्मी है, प्यास है, और लीमूँ तो चीज़ ही ऐसी है कि उसको देखकर मुँह में पानी आता है। अब हज़रत ने उस पर चोट लगायी कि जिस तरह गर्मी के मौसम में प्यासा लीमूँ देखे तो उसके मुँह में पानी आता है, तो जो तुम्हारी मेम साहिबा बैठी हैं इनको देख-देखकर जितने भी रेल में मर्द हैं सबके मुँह में पानी आ रहा है।

अब तो वह ऐसा शर्मिन्दा हुआ कि उसकी नज़रें नीची लग गईं। तो औ़रत यह न समझे कि मैं बेपर्दा बाहर निकलूँगी तो कुछ नहीं होगा। इससे ज़िन्दगी में बेबरकती आएगी। और हो सकता है कि कोई आदमी उसको देखे और उसके पीछे चल पड़े तो यूँ समझिये कि शेर अपने शिकार की तरफ़ चल पड़ा। बल्कि औ़रत अगर अपनी तरफ़ शेर को आता देखे तो उससे इतना डरने की ज़रूरत नहीं जितना ग़ैर-मेहरम को अपनी तरफ़ आता देखकर डरने की ज़रूरत है। शेर

आ गया तो जान चली जायेगी लेकिन ग़ैर-मेहरम अगर आ गया तो बहुत सी बार ईमान ही चला जाता है।

संगीत कानों का ज़िना है

इसी तरह एक हदीस पाक में फ़रमाया कि जिस तरह बारिश के आने से ज़मीन में खेती उगती है, इसी तरह मौसीक़ी (संगीत) सुनने से दिल में ज़िना की ख़्वाहिश उभरती है। कोई भी यह नहीं कह सकता कि हम तो केवल गाने सुनते हैं। याद रखिये ये गाने सुनने वालियाँ अपने दिलों को महफ़ूज़ नहीं रख सकतीं। उनके दिलों में वे हसरतें उठती हैं कि अगर प्लेट में रखकर उनके मेहरम मर्द को दिखा दी जातीं तो ये शर्म के मारे मर जातीं। इसलिए शरीअ़त ने शर्म व हया की तालीम दी।

सहाबा-ए-किराम के दौर में पुरसुकून समाज

कितना पुरसुकून समाज बन जाता है जब औ़रत मर्द से सुरक्षित हो जाये, और मर्द औ़रत से अमन में आ जाये। चुनाँचे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने का वाक़िआ है, एक औ़रत यमन से चली, हज़ारों मील का सफ़र किया और मदीना तैयबा पहुँची। अकेली ने सफ़र किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूछाः अल्लाह की बन्दी! तूने अकेले सफ़र क्यों किया? उसने अपना कोई उज़्र पेश किया। फिर हज़रत उमर ने पूछा कि यमन से मदीना तक तुम्हें शहरों से भी गुज़रना पड़ा, बस्तियों से भी गुज़रना पड़ा, कहीं वीरानों से भी गुज़री होंगी, ग़ैर-मेहरम मर्दों से भी तुम्हारा आमना-सामना हुआ होगा, तुम नौजवान हो, माल व दौलत तुम्हारे पास है, ज़ेवरात से लदी हुई हो, तुम्हें अपनी इ़ज़्ज़त व आबरू, जान व माल किसी का डर न रहा? ये हालात उस औ़रत से पूछे, और वाक़ई औ़रत इन चीज़ों को बहुत अच्छी तरह महसूस करती है, कि उसकी नज़र क्या कह रही है, उसके अल्फ़ाज़ के बोल में क्या इरादे छुपे हुए हैं। उसका उठने वाला

क़दम किस नीयत से उठ रहा है। औरत को सबसे जल्दी इसका अन्दाज़ा हो जाता है।

उस औरत ने अ़र्ज़ किया: ऐ अमीरुल्-मोमिनीन! मैं यमन से चली और रास्ते में मुझे हर रात कहीं न कहीं ठहरना पड़ा। कहीं किसी के घर में ठहरी, कहीं वीराने में अकेले ठहरी। दिन और रात में सफ़र करते-करते यहाँ तक पहुँची, मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि "यमन से लेकर मदीने तक एक ही माँ-बाप की औलाद बस्ती है"।

तो शरीअ़त ऐसा अमन और सुकून का समाज चाहती है कि औरत को इतना अमन नसीब हो जाये कि अगर मान लो उसको अकेले भी चलना पड़े तो उसकी जान भी महफ़ूज़ रहे, उसका माल भी महफ़ूज़ रहे और उसकी इ़ज़्ज़त भी महफ़ूज़ रहे। तो यह जो पर्दा करने का हुक्म दिया इसमें मर्दों का जहाँ फ़ायदा है, औरत का अपना फ़ायदा भी है। याद रखना! हम फ़ितनों से बचे रहेंगे, इ़ज़्ज़तें भी महफ़ूज़ रहेंगी, ईमान भी महफ़ूज़ रहेगा। दुनिया की भी ज़िल्लत से बचेंगे और आख़िरत की भी रुस्वाई से हिफ़ाज़त होगी।

पर्दे की अहमियत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे-मकतूम (मशहूर सहाबी) एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के घर तशरीफ़ लाये। यह आँखों से नाबीना थे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अन्दर आने के लिए कहा। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा छुपने के बजाये खड़ी रहीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन्हें फ़रमाया कि तुम पर्दा कर लो। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी! यह तो नाबीना (आँखों से अन्धे) हैं। आपने फ़रमाया अगर यह नाबीना हैं तो तुम तो नाबीना नहीं हो।

आप बताईये कि जब उम्मुल-मोमिनीन (तमाम मुसलमानों की माँ) को अल्लाह के महबूब यह फ़रमाते हैं तो फिर आज की औरत

क्या सोच सकती है। इसलिए मर्दों के लिए लाज़िमी है कि वे औरतों से पर्दे में रहें, और औरतों के लिए लाज़िमी है कि वे मर्दों से पर्दे में रहें। यह दोनों की ज़िम्मेदारी है और इसमें दोनों का फ़ायदा है।

औरत की हर वक़्त यह कोशिश होनी चाहिये कि वह ग़ैर-मेहरम की निगाहों से दूर रहे, बची रहे। उसको ग़ैर-मेहरम की निगाहें न समझे बल्कि शैतान की निगाहें समझे। मुम्किन है ये बातें सुनकर मर्दों को गुस्सा आये, मगर अल्लाह करे कि गुस्सा आ जाये और वे ग़ैर-मेहरम पर ऐसी हवस की निगाहें डालना छोड़ दें। इसलिए कि गुज़रने वाली किसी न किसी की बेटी होती है, किसी की बहन होती है और किसी की माँ होती है। अगर उस पर ग़लत नज़रें डाल रहे हो तो कल तुम्हारी औरतों पर भी कोई ऐसी ही नज़रें डालेगा। इसलिए शरीअ़त ने पहले क़दम की अहमियत ही बहुत ज़्यादा बयान की और पर्दे का बहुत ज़्यादा एहतिमाम करवाया।

आँख का करिश्मा

हज़रत मुजद्दिद् अल्फ़े सानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि आँख के बाद दिल की हिफ़ाज़त मुश्किल है, और दिल के बिगड़ने के बाद शर्मगाह की हिफ़ाज़त मुश्किल है। और अगर आप ग़ौर करें तो पता चलेगा कि आँख बिगड़ने ही से इनसान पर मुसीबतें आती हैं:

...... अगर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम शजरे-ममूनुआ़ (वर्जित पौधे) की तरफ़ आँख से न देखते तो न उसको खाते और न जन्नत से निकाले जाते।

...... अगर क़ाबील, हाबील की बहन की तरफ़ न देखता तो न उस पर आ़शिक़ होता और न अपने भाई को क़त्ल करने का मुजरिम बनता।

...... अगर ज़ुलैख़ा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ न देखती तो

उसे इतनी ज़िल्लत और रुस्वाई बरदाश्त न करनी पड़ती। मालूम हुआ कि आँख के देखने से ही आदमी पर मुसीबतें आती हैं।

नाजायज़ ताल्लुक़ात रुस्वाई का सामान हैं

और यह भी ज़ेहन में रखिये कि शहवत (कामवासना) वह मिठास है जो चखने वाले को हलाक कर देती है। आदमी महसूस कर रहा होता है कि मैं तफ़रीह कर रहा हूँ मगर हक़ीक़त में वह अपने आपको तबाह कर रहा होता है। और यह उसूल भी ज़ेहन में रखना कि मुहब्बत और अ़दावत (दुश्मनी) दो ऐसी चीज़ें हैं जो कभी छुपी नहीं रह सकतीं। अगर इनसान यह समझे कि मेरे फ़लाँ से ताल्लुक़ात हैं और किसी को पता नहीं, तो यह सबसे बेवक़ूफ़ इनसान है। दो दिन नहीं चार दिन नहीं आख़िर एक दिन पोल खुलनी है। और आख़िरकार शर्मिन्दगी और रुस्वाई के सिवा कुछ नतीजा नहीं निकलना। इसलिए कोई बच्ची ज़ेहन में यह न रखे कि फ़लाँ ने मेरे साथ बात की, पैग़ाम भेजा, और मैंने उसका जवाब दिया, यह किसी को पता नहीं। यह मुहब्बत या नफ़रत का ताल्लुक़ कभी छुपा नहीं रह सकता। हमेशा ज़ाहिर हो जाता है। इसलिए बच्चियाँ कभी बेवक़ूफ़ी में, नादानी में, ऐसा क़दम उठा लेती हैं और फिर उसको छुपाने के लिए झूठ बोलती फिरती हैं। ऐसा गुनाह करने की क्यों बहादुरी दिखायें कि फिर बुज़दिल बनकर उसकी हिफ़ाज़त के लिए झूठ बोलना पड़े।

बेपर्दगी तबाही का सबब

और जो औ़रतें अपने हुस्न व जमाल (सुन्दरता और ख़ूबसूरती) की नुमाईश करती फिरती हैं, वे समझ लें कि औ़रत का हुस्न ही उसकी तबाही का ज़रिया बनता है। जितने घर टूटते हैं उनमें ज़्यादातर औ़रतों से ऐसी अख़्लाक़ी ग़लतियाँ होती हैं जिनकी बिना पर हंसते-बस्ते घर तबाह हो जाते हैं। इसी लिए हज़रत उमर

फ़रमाया करते थे कि तुम शरीर औ़रतों से दूर रहो और भली-मानस औ़रतों से भी होशियार रहो।

समझ की बातें

शहवत (वासना) की शुरूआ़त एक जरासीम की मानिन्द होती है, लेकिन अगर इनसान इसका आ़दी बन जाये तो फिर उसका ख़ात्मा आज़्दहे की मानिन्द होता है। यह ज़हर की तरह बन जाता है और इनसान को तबाह करके रख देता है।

अ़जीब बात है कि ख़ूबसूरत इनसान जितना दूर से ख़ूबसूरत लगता है उतना क़रीब से नहीं होता। आवाज़ जितनी दूर से ख़ूबसूरत और सुरीली लगती है क़रीब से उतनी अच्छी नहीं होती। यूँ लगता है कि शायद हुस्न जो है वह दूर से ही अच्छा लगता है, इसलिए उससे दूर रहना ही बेहतर है।

किसी अ़क़्लमन्द ने कितनी अच्छी बात कही कि इनसान को हर जीत से ख़ुशी होती है, लेकिन जब कोई अपने आप से जीत जाया करता है तो उस ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं हुआ करता। जब नफ़्स बुराई की तरफ़ आमादा करे और इनसान उस वक़्त अपने ऊपर क़ाबू रखे और बुराई से बच जाये तो फिर उसकी ख़ुशी की कोई इन्तिहा नहीं होती।

हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि इतनी एहतियात करनी चाहिये कि शादीशुदा औ़रत अपने शौहर की बातें भी दूसरी लड़की और औ़रतों से न बताये। बल्कि एक हदीस पाक में तो यह फ़रमाया कि जो शादीशुदा औ़रत दूसरी लड़की या औ़रतों को अपनी तन्हाई की बातें बतायेगी तो वह औ़रत सुअरनी की मानिन्द है। इसी तरह जो मर्द अपनी तन्हाई की बात किसी दूसरे मर्द को बतायेगा वह सुअर (ख़िन्ज़ीर) की मानिन्द है।

दिल को काबू में करने का आज़माया हुआ अमल

हमारे बुजुर्गों ने यह भी बता दिया कि अगर किसी इनसान की कैफ़ियत ऐसी हो कि उसके दिल में किसी का ख़्याल बार-बार आये, हटाने से भी न हटे, दिल में ऐसा जम जाये कि किसी और चीज़ में दिल भी न लगे और इनसान डरे कि मैं तो गुनाह कर बैठूँगा, तो उसको एक अमल करने की इजाज़त दी गयी। जिसकी इजाज़त इस वक़्त यह नाचीज़ सब मर्दों और औरतों को दे रहा है, और वह अमल बहुत आसान है कि हर दिन में एक सौ बार यह पढ़ेः

لَا مَرْغُوْبِیْ اِلَّا اللّٰہُ، لَا مَطْلُوْبِیْ اِلَّا اللّٰہُ، لَا مَحْبُوْبِیْ اِلَّا اللّٰہُ، لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ.

ला मरग़ूबी इल्लल्लाह। ला मतलूबी इल्लल्लाह। ला महबूबी इल्लल्लाह। ला इला-ह इल्लल्लाह।

और सौ बार रोज़ाना इसकी तस्बीह पढ़ ली जाये तो हमने सैकड़ों नहीं हज़ारों बच्चे और बच्चियों को इस अमल के सदके गुनाहे-कबीरा (बड़े गुनाह) से बचकर ज़िन्दगी गुज़ारते देखा है। यह बहुत तर्जुबा किया हुआ अमल है। वे बच्चियाँ जो कहती थीं कि हम फ़लाँ के बग़ैर मर जायेंगी, और जो मर्द कहते थे कि हम फ़लाँ के बग़ैर मर जायेंगे, चन्द दिन उन्होंने यह अमल किया, कोई भी न मरा, और अल्लाह ने ईमान और आमाल की हिफ़ाज़त भी फ़रमा ली। इस अमल की भी सबको इजाज़त है। अगर ख़ुदा न करे दिल में कोई कैफ़ियत आ जाये तो दिल को साफ़ करने के लिए यह 'हार्ट-क्लीनर' की तरह है। अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी के बच्चे और बच्चियों ने इस अमल का नाम 'हार्ट-क्लीनर' (HART CLEANER) 'दिल को साफ़ करने वाला' रखा हुआ है। इसलिए जो इनसान बदकारी से बचे वह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के नज़दीक बहुत अच्छा इनसान है।

पाकबाज़ के लिए अ़र्श का साया

हदीस पाक में आता है कि अगर कोई मर्द किसी औ़रत को बुराई की दावत दे, या किसी मर्द को कोई औ़रत बुराई की तरफ़ बुलाये, और वह यह जवाब दे:

اِنِّیْ اَخَافُ اللّٰہ

मैं तो अल्लाह से डरता हूँ या अल्लाह से डरती हूँ।

इस अ़मल के सदके़ में कि़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला उसको अ़र्श का साया अ़ता फ़रमायेंगे। तो पाकबाज़ मर्द और औ़रतों के लिए दुनिया में अल्लाह की रहमत का साया है, और कि़यामत के दिन अल्लाह के अ़र्श का साया नसीब होगा।

निकाह में जल्दी का हुक्म

एक तरफ़ तो शरीअ़त ने ऐसे मौके़ से बचने की ताकीद और हुक्म किया कि जहाँ से गुनाह की संभावना थी, और दूसरी तरफ़ जैसे ही शादी की उम्र आये वैसे ही जल्दी निकाह की प्रेरणा दी। चुनाँचे फ़रमायाः

اَلنِّکَاحُ نِصْفُ الْاِیْمَان

निकाह तो आधा ईमान है।

गोया निकाह से पहले मर्द जितना नेक बनता फिरे उसके ईमान का मेयार आधा है, मुकम्मल ईमान तब होगा जब निकाह कर लेगा। और यह भी ज़ेहन में रखें कि ताले तो शरीफ़ों के लिए होते हैं, चोरों और डाकुओं के सामने तालों की क्या अहमियत होती है? लिहाज़ा जिसका दिल ही मरीज़ हो और बदमाशियों से भरा पड़ा हो, उसके लिए शादी क्या अहमियत रखती है। लेकिन शरीअ़त ने हुक्म दिया कि जब भी बच्ची के जोड़ का शौहर मिल जाये उस बच्ची का निकाह करने में देर नहीं करनी चाहिये। बच्ची कई बार सौलह साल

या इससे भी ज़्यादा उम्र की हो जाती है और माँ-बाप समझते हैं अभी तो बेबी (छोटी बच्ची) है।

एक साहिब को शाह अ़ताउल्लाह साहिब बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमायाः तुम्हारी बच्ची जवान हो गयी, शादी कर दो। कहने लगा कि जी! अभी तो उसके मुँह से दूध की महक आती है। उन्होंने कहा कि तुम्हें पता तब चलेगा जब दूध ख़राब हो जायेगा।

तो एक तरफ़ शरीअ़त ने ग़ैर-मेहरम मर्द और औ़रत को आज़ादाना मिलने-जुलने से बचने का हुक्म दिया और दूसरी तरफ़ जायज़ ज़रूरत को पूरा करने के लिए निकाह की तरग़ीब (प्रेरणा) दी। यहाँ तक फ़रमाया कि निकाह से पहले अगर एक नमाज़ पर एक नमाज़ का सवाब मिलता है तो निकाह के बाद एक नमाज़ पढ़ने पर बयालीस नमाज़ों का सवाब मिलता है। जिस तरह ग़ैर-मेहरम मर्द और औ़रतों को एक-दूसरे से कटने का हुक्म दिया, उसी तरह निकाह के बाद मियाँ और बीवी को जुड़ने का हुक्म दिया, मुहब्बत और प्यार के साथ रहने का हुक्म दिया। यहाँ तक फ़रमाया कि शौहर अपनी औ़रत को देखकर मुस्कुराये, औ़रत अपने शौहर को देखकर मुस्कुराये तो अल्लाह तआ़ला उन दोनों को देखकर मुस्कुराता है।

इस्लामी शरीअ़त की ख़ूबी और कमाल देखिये कि हराम से हमें बचाकर हलाल की तरफ़ मुतवज्जह किया। ज़िन्दगी भी आराम और सुकून से गुज़ारो और क़ियामत के दिन अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के सामने इ़ज़्ज़तों के ताज भी पहनते चले जाओ।

जवानी की तौबा

दर जवानी तौबा कर्दन शेवा-ए-पैग़म्बरीस्त
वक़्ते पीरी गर्गे-ज़ालिम मी शवद् परहेज़गार

जवानी में तौबा करना यह पैग़म्बरों का शेवा और तरीक़ा है,

बुढ़ापे में तो भेड़िया भी बड़ा परहेज़गार बन जाता है। इसलिए कि अब बकरी हाथ जो नहीं आती, तो बुढ़ापे में जाकर कोई तौबा करे, उसकी तौबा वह वक़्अत नहीं रखती जो एक जवान की तौबा अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के यहाँ दर्जा रखती है।

एक बुज़ुर्ग थे उनको जब कोई मुहिम पेश आती तो वह नेक नौजवानों से दुआ करवाते। ऐसा नौजवान जो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की इबादत में डूबा हुआ हो। किसी ने पूछा कि बड़े-बड़े बुज़ुर्ग और बड़ी उम्र के हज़रात मौजूद हैं, उनके बजाये आप नौजवानों से दुआयें करवाते हैं? उन्होंने फ़रमाया कि जो नेक नौजवान होता है, जब वह अल्लाह के सामने हाथ उठाता है तो उसके हाथ को ख़ाली लौटाते हुए अल्लाह को हया आती है। तो ऐसे नौजवान बच्चे और बच्ची की दुआ अल्लाह के यहाँ मक़बूल होती है जो गुनाहों से बचकर नेकी और परहेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

एक नुक्ता

शरीअ़त ने जब क़ुरआन पाक में कहाः

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ (سورة النور)

ज़िना करने वाली औ़रत और ज़िना करने वाला मर्द।

और जब चोरी का तज़किरा फ़रमाया तो वहाँ परः

السَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْا اَيْدِيَهُمَا (سورة مائدة)

चोर मर्द और चोर औ़रत, इनके हाथ काटो।

चोरी का मामला था तो मर्द का तज़किरा पहले किया, इसलिए कि मर्दानगी से यह बईद है कि इनसान दूसरे के माल पर हाथ डाले, चोरी करे। और जहाँ ज़िना का तज़किरा किया वहाँ फ़रमाया कि ज़िना करने वाली औ़रत और ज़िना करने वाला मर्द। औ़रत का तज़किरा पहले किया। इसलिए कि शर्म व हया की वजह से औ़रत से यह बात बईद है कि वह इस बुरे गुनाह का जुर्म करे। यहाँ से मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन

के व्याख्याकारों) ने एक नुक्ता निकाला, कि जब तक औ़रत खुद ढीली न बने ग़ैर-मर्द उस पर क़ाबू पा ही नहीं सकता। लिहाज़ा यह ज़िना का गुनाह पहले औ़रत की तरफ़ से शुरू होता है, तब मर्द उस पर क़ाबू पाता है। इसलिए शुरू ही से बचिये और शुरू ही से बुराई को ख़त्म कर दीजिए। ताकि किसी को ग़लत सोचने का मौक़ा ही न मिल सके। जो लोग पाकदामन और पाकबाज़ ज़िन्दगियाँ गुज़ारते हैं, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त उन लोगों को इस दुनिया में भी इ़ज़्ज़तें देते हैं और आख़िरत में भी इ़ज़्ज़तें देते हैं। "याद रखना लोग तलवार का मुक़ाबला तो कर सकते हैं, लेकिन किरदार का मुक़ाबला नहीं कर सकते" लिहाज़ा किरदार इनसान का असली सरमाया होता है। जिसका किरदार (चरित्र और अख़्लाक़) ही बिगड़ गया उसके पल्ले क्या रहा।

तो इस्लाम धर्म ने पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारने वालों को अल्लाह तआ़ला के अ़र्श के साये में रहने वाला बतलाया है।

पाकदामन लोगों की दुआ़यें

ऐसे कितने वाक़िआ़त हैं जिनमें पाकदामन लोगों ने अल्लाह से दुआ़ माँगी, परवर्दिगार ने फ़ौरन क़बूल फ़रमा ली। चुनाँचे शैख़ अ़ब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने लिखा है कि एक बार दिल्ली शहर में बारिश नहीं हुई। क़हत पड़ गया। उलेमा ने कहा कि बारिश नहीं हो रही है लिहाज़ा शहर के सब मर्द औ़रतें आयें और मैदान में आकर नमाज़ पढ़ें। चुनाँचे बच्चे भी औ़रतों के साथ थे, सख़्त गर्मी थी, ऊपर से धूप। बच्चे प्यास और भूख की शिद्दत से बिलक-बिलक कर रो रहे थे। मर्दों ने भी रो-रोकर दुआ़यें माँगी, औ़रतों ने भी सिसकियों से दुआ़यें माँगी, मगर बारिश बरसने के कोई आसार नहीं थे।

सुबह से लेकर अ़स्र का वक़्त हो गया। एक नौजवान ऊँट की नकेल पकड़कर करीब से गुज़रा। ऊँट के ऊपर कोई पर्दे में सवार था।

उसने ऊँट को रोका और लोगों से पूछा कि क्यों जमा हो? बताया गया कि सुबह से लेकर अब तक बारिश के लिए फ़रियादें कर रहे हैं, मगर कोई सूरत नज़र नहीं आ रही। नौजवान ने कहा कि अच्छा मैं दुआ करता हूँ। चुनाँचे वह अपनी सवारी के क़रीब आ गया और दुआ की। उसी वक़्त आसमान पर बादल आये और बारिश होनी शुरू हो गयी।

शैख़ अ़ब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि उलेमा उस नौजवान की तरफ़ भागे और पूछा कि तूने कैसी दुआ माँगी, कि हज़ारों इनसानों की दुआ पर अल्लाह ने तेरी दुआ को तरजीह दे दी। उसने कहा कि इस ऊँट के ऊपर मेरी वालिदा (माँ) सवार हैं, जिन्होंने पाकदामनी और पाकबाज़ी की ज़िन्दगी गुज़ारी है। मैं सवारी के क़रीब आया और मैंने अपनी वालिदा के दुपट्टे का किनारा पकड़कर दुआ माँगीः ऐ अल्लाह! मैं एक पाकदामन माँ का बेटा हूँ। मैं अपनी वालिदा की पाकदामनी का वास्ता देता हूँ अपनी रहमत की बारिश बरसा दीजिये। अल्लाह तआ़ला ने रहमत की बारिश बरसा दी।

तो अल्लाह तआ़ला पाकदामनी को इतना पसन्द फ़रमाते हैं।

अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रहमतुल्लाहि अ़लैहि की तौबा

अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अ़लैहि जवानी में किसी औ़रत के साथ ताल्लुक़ात बना बैठे। यहाँ तक कि उसको कहा कि मिलने के लिए कोई वक़्त निकालो। उसने रात का कोई वक़्त दिया। यह सारी रात इन्तिज़ार में रहे, मगर मुलाक़ात न हो सकी। उसी हालत में सुबह की अज़ान हो गयी। जब अज़ान हुई तो दिल पर चोट लगी कि मैं एक औ़रत की वजह से सारी रात जागता रहा, मुझे उस औ़रत का भी मिलाप नसीब न हुआ। काश! मैं अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की मुहब्बत में सारी रात जागता, तो मुझे अल्लाह अपनी विलायत

(मुहब्बत और निकटता) नसीब फ़रमा देते। यह सोचकर दिल में पक्की तौबा कर ली और इल्म हासिल करने के लिए उलेमा की एक बस्ती की तरफ़ चल पड़े। जब शहर से बाहर निकले तो देखा कि एक और बुज़ुर्ग उस बस्ती के क़रीब किसी जगह जा रहे थे। सख़्त गर्मी के आलम में यह बादल के साये में चलते रहे। यह समझते रहे कि शैख़ की यह बरकत है कि बादल का साया है, और शैख़ भी यही समझते रहे कि मुझ पर अल्लाह की रहमत हुई कि बादल का साया है। लेकिन जब अपनी-अपनी मन्ज़िल की तरफ़ जाते हुई दोनों एक-दूसरे से जुदा हुए तो उस शैख़ की हैरत की इन्तिहा न रही कि बादल का साया तो अ़ब्बदुल्लाह बिन मुबारक के सर पर था।

वह वापस लौटे और अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक को पकड़कर कहा मुझे अल्लाह के लिए बताओ कि तुमने कौनसा अ़मल किया कि अल्लाह ने गर्मी की शिद्दत से हिफ़ाज़त के लिए तेरे सर पर बादल का साया कर दिया? इनकी आँखों में आँसू आ गये। कहा कि मैंने एक गुनाह से सच्ची तौबा की, और मैं नेक बनने के लिए उलेमा की बस्ती की तरफ़ चल पड़ा। मेरा परवर्दिगार कितना क़द्रदान है कि उसने दुनिया की धूप से बचने का इन्तिज़ाम कर दिया, मैं उम्मीद करता हूँ कि वह जहन्नम की आग से भी महफ़ूज़ फ़रमा देगा।

जो परवर्दिगार इतना क़द्रदान हो कि आदमी अगर गुनाहों से सच्ची तौबा कर ले तो वह दुनिया की तपिश से बचा देता है, तो फिर जहन्नम की आग से उन्हें क्यों नहीं बचायेगा।

पाकदामनी का एक अ़ज़ीब वाक़िआ़

हज़रत शाह अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि का एक शर्गिद था। वह ख़ूबसूरत नौजवान था। वह जिस रास्ते से गुज़रता था एक औ़रत उसे देखती थी। उसके दिल में गुनाह का इरादा पैदा हुआ। एक दिन उसने अपनी नौकरानी के ज़रिये उसको हमराज़ बनाकर,

उस नौजवान को कहला भेजा कि अन्दर कोई मरीज़ है, आप अगर उसको कुछ पढ़कर दम कर दें तो उसको सेहत हासिल हो जायेगी। आपको इसका अज्र मिलेगा।

वह नौजवान अपने भोलेपन की वजह से मामले की नज़ाकत को न समझ सका, भरोसा कर बैठा।

जब घर के अन्दर दाख़िल हुआ तो दरवाज़े बन्द हो गये। फिर वह औरत बिना पर्दे के सामने आयी और उसने आकर कहा कि मैं तो तुम्हें मुद्दतों से देख रही थी, आज वक़्त मिला एक-दूसरे से मिलाप का। नौजवान समझ गया कि मैं तो इस वक़्त मुसीबत में गिरफ़्तार हो गया। लिहाज़ा उसने सोचा कि कोई बहाना मिल जाये और जान बचे। उसने कहा कि मुझे क़ज़ा-ए-हाजत (लैट्रीन में जाने) की ज़रूरत है। उसने बैतुल्-ख़ला बता दिया कि वहाँ पर है। यह नौजवान बैतुल-ख़ला में गया और बैतुल-ख़ला में जो पाख़ाना पड़ा हुआ था, वह उसने अपने हाथों और जिस्म पर लगा लिया। जब बैतुल-ख़ला (शौचालय) से बाहर निकला तो उसके जिस्म से बदबू फैल रही थी। उस औरत ने जब देखा तो कहा कि ऐ गन्दे इनसान! चले जाओ घर से, मैं तुम्हें देखना भी पसन्द नहीं करती। चुनाँचे दरवाज़ा खुला यह नौजवान अपने ईमान को बचाकर सलामत निकल आया। लेकिन परेशान दो वजह से था- एक तो यह कि बदबू लोगों को आयेगी तो वे पूछेंगे कि यह क्या मामला है? और दूसरे सबक़ में देर हो गयी है। मैं कभी देर से नहीं पहुँचा, उस्ताद भी डाँट पिलायेंगे।

चुनाँचे यह मदरसे में आया और आकर गुस्लख़ाने में जाकर गुस्ल किया, और कपड़े धोये क्योंकि उनमें भी गंदगी लगी थी, और इसी तरह गीले कपड़े पहनकर सबक़ (क्लास) में पीछे जाकर बैठ गया। थोड़ी देर के बाद हज़रत शाह अब्दुल-अज़ीज़ ने फ़रमाया अरे तुममें से आज कौन ख़ुशबू लगाकर आया है? कि पूरा कमरा महका हुआ है।

तमाम तालिब-इल्म ख़ामोश रहे। कुछ देर के बाद फिर फ़रमाया कि भाई इतनी ज़्यादा खुशबू कौन लगाकर आया है? पढ़ने वाले फिर ख़ामोश रहे। एक तालिब-इल्म ने इधर-उधर देखा और देखकर कहा कि हज़रत फ़लाँ लड़के से खुशबू आ रही है। शाह अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने जब उस बच्चे से पूछा तो नौजवान की आँखों से आँसू आ गये। उसने कहा कि हज़रत! मैंने अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करके गुनाहों से बचने की ख़ातिर अपने बदन से नजासत (गंदगी) को लगा लिया था। मेरा मालिक कितना क़द्रदान है कि मेरे जिस्म के जिस-जिस हिस्से पर नजासत (गंदगी) लगी थी, अब वहीं से खुशबू आ रही है। चुनाँचे यह नौजवान जब तक ज़िन्दा रहा उसके बदन से खुशबू आती रही। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त इतने क़द्रदान हैं कि जो इनसान शर्म व हया और पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारता है, परवर्दिगार उसके साथ अपनी मदद यूँ शामिले-हाल फ़रमाते हैं।

चुनाँचे इनसानी तारीख़ (मानव-इतिहास) में कई पाकदामन मर्दों और पाकबाज़ औ़रतों पर तोहमतें लगाई गईं, अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने उनकी पाकबाज़ी पर गवाही के लिए अपने ज़ाबते बदल डाले। सोचने की बात है, दूध पीता बच्चा बोल तो नहीं सकता, लेकिन जब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम पर तोहमत लगती है तो परवर्दिगार की रहमत जोश में आ जाती है, छोटा मासूम बच्चा भी बोलकर गवाही देता है कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम तो पाकबाज़ हैं। यह गुनाह का मामला तो औ़रत की तरफ़ से था। तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने पाकबाज़ बन्दों की गवाही के लिए ज़ाबते बदल डाले। इससे इसकी अहमियत का अन्दाज़ा लगाईये।

हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम कुरआन के आईने में

चुनाँचे कुरआन मजीद में है कि बीबी मरियम पर एक बार इसी तरह का मामला पेश आया। ज़रा कुरआन की आयतें सुन लीजिए।

क़ुरआन पाक में है, जिसकी आयतें पढ़कर दिल में ठंडक होती है। तवज्जोह से सुनिएगा अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ

कि "मरियम का किताब में तज़किरा कीजिए" आईये! बीबी मरियम का किरदार क़ुरआन के आईने में देखिये। अल्लाह पाक ने फ़रमाया:

اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝

अपने मकान की पूर्वी दिशा की तरफ़ को गयी थीं।

ग़ुस्ल करना चाहती थीं। उसी तन्हाई के आ़लम में हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम एक भरपूर मर्द की शक्ल में सामने आये:

فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا

यानी वह एक भरपूर मर्द की शक्ल में उनके सामने ज़ाहिर हुए।

अब बीबी मरियम आज के दौर की कोई बिगड़ी हुई औ़रत नहीं थी कि तन्हाई में ग़ैर-मेहरम मर्द को देखकर मुस्कुराहटों से इस्तिक़बाल करतीं। वह तो शर्म व हया की देवी थीं। चुनाँचे जब उन्होंने ग़ैर-मेहरम को देखा तो तड़प उठीं। फ़रमाने लगीं:

اِنِّىْ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا

मैं तो अल्लाह की पनाह माँगती हूँ तुझसे, अगर तेरे दिल में ज़रा भी ख़ौफ़े-ख़ुदा है।

जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम समझ गये कि बीबी मरियम तो डर गईं। लिहाज़ा उन्होंने अपने आने का मक़सद बयान किया। फ़रमाने लगे:

اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا

मैं तो आपके रब का भेजा हुआ नुमाईन्दा हूँ। ताकि आपको सुथरा नेक बेटा दिया जाये।

बीबी मरियम अ़लैहस्सलाम की परेशानी बढ़ गयी। यह बात तो पहले से भी ज़्यादा और मुसीबत वाली थी, कि मैं कुंवारी हूँ। मेरे

बेटा कैसे होगा? चुनाँचे बीबी मरियम ने फ़रिश्ते से कहाः

اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا

मेरे बेटा कैसे हो सकता है? न तो मैंने निकाह किया, और न मैं बदकार हूँ। बीबी मरियम जानती थीं कि बेटा होने के असबाब होते हैं। या तो बेटा निकाह के ज़रिये होता है या गुनाह के ज़रिये होता है। तो बीबी मरियम ने कहा कि न तो मैंने निकाह किया और न मैंने कोई गुनाह किया। जब उनकी इस बात को फ़रिश्ते ने सुना तो कहाः

قَالَ كَذٰلِكِ

अल्लाह का फ़रिश्ता भी "कज़ालि-क" यानी 'इसी तरह' की मुहर लगाता है। बीबी मरियम तुम इतनी पाकदामन हो, तुम जो भी दावा कर रही हो, तुम अपने दावे में सौ फ़ीसद सच्ची हो। मरियम के किरदार पर क़ुरआन की यह मुहर क़ियामत तक सलामत रहेगी। अल्लाह हमें भी ऐसी बेटियाँ अता फ़रमाये जो इतनी हयादार ज़िन्दगी गुज़ारने वाली हों कि फ़रिश्ते भी उनकी पाकदामनी की गवाहियाँ देते फिरें। सुब्हानल्लाह।

बीबी मरियम ने जब यह जवाब दिया तो फ़रिश्ते ने कहाः

قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ

ऐ बीबी मरियम! आपको आपके परवर्दिगार ने बेटा देना है।

(किसी ज़ुल्फ़ों वाली सरकार ने बेटा नहीं देना कि आपको नज़्र व नियाज़ की ज़रूरत पड़ेगी। आपको तो परवर्दिगार ने बेटा देना है) लिहाज़ा बीबी मरियम को गर्भ के आसार महसूस होना शुरू हो गये। वह बड़ी परेशान हुईं। बड़ी ग़मगीन हुईं। दिल उदास है। मैं कुंवारी हूँ। लोगों में मेरी इबादत के चर्चे हैं। मैंने अपनी ज़िन्दगी मस्जिद में अपने आपको वक़्फ़ करके इबादत में गुज़ारी है। एतिकाफ़ में अपनी जवानी गुज़ारी। अब जब लोगों को पता चलेगा कि कुंवारी हालत में मेरे यहाँ

बेटा हुआ तो फिर मेरी इज़्ज़त का क्या बनेगा? बीबी मरियम को सारी उम्र की कमाई ख़त्म होती नज़र आई।

चुनाँचे इस परेशानी में बीबी मरियम घर से निकलीं और घर के करीब एकान्त में आकर वह एक दरख़्त के नीचे इस तरह बैठ गईं जिस तरह कोई हारा हुआ जर्नल बैठता है। जैसा कि कुरआन में ज़िक्र है:

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ○

चुनाँचे उस वक़्त बहुत ग़मज़दा थीं। दिल-दिल में दुआयें कर रही थीं। कहने लगीं:

يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ○

ऐ काश! मैं इससे पहले मर गयी होती और मैं कोई भूली-बसरी चीज़ होती।

परवर्दिगार ने तसल्ली दी:

فَنَادٰهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ○

चुनाँचे अल्लाह तआला ने उनके नीचे एक पानी का चश्मा जारी कर दिया और फ़रमाया! बीबी मरियम! ग़मज़दा न हो, जब तुझे बच्चा होने की तकलीफ़ महसूस हो इस खजूर को हिला देना, इससे ताज़ा खजूरें गिरेंगी। वे खजूरें खा लेना और पानी पी लेना। और अगर बेटे की पैदाईश हो तो अपने बेटे को देखकर अपने जिगर के टुकड़े की पेशानी से नुबुव्वत के जमाल की किरनें फूटती देखकर, उसको चूमना। तुम्हें तसल्ली मिल जायेगी। और अगर तुम वापस क़ौम की तरफ़ जाओ और लोग तुमसे यह पूछें कि यह क्या मामला बना, तो जवाब देना:

اِنِّىْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا

मैंने तो रहमान के लिए रोज़ा रखा हुआ है। (उस वक़्त के रोज़े में बोलने की भी मनाही होती थी)।

चुनाँचे उनकी माँ ने भी यही दुआ माँगी थी।

اِنِّیْ نَذَرْتُ لَكَ مَافِیْ بَطْنِیْ

यानी मरियम अ़लैहस्सलाम की माँ ने यह दुआ माँगी थी कि जो कुछ मेरे पेट में है मैं उसे अल्लाह के लिये वक़्फ़ करती हूँ। तो माँ ने अपने वक़्त में अल्लाह की नज़्र मानी थी, आज बेटी कह रही है कि मैंने "रहमान के लिये नज़्र मानी है" मालूम हुआ जैसी मायें हुआ करती हैं ऐसी ही बेटी हुआ करती हैं। जब मायें नेक हों तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त बेटियों को भी पाकदामन ज़िन्दगी अ़ता करते हैं।

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا

तो बीबी मरियम अपने बेटे को लेकर जब क़ौम की तरफ़ आई तो क़ौम ने तानों के नश्तर लगाने शुरू कर दिये और कहने लगीः

قَالُوْا یٰمَرْیَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَیْئًا فَرِیًّا ○ یٰۤاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِیًّا ○

ऐ मरियम! तू यह क्या अ़जीब चीज़ लेकर आ गयी। ऐ हारून की बहन! न तेरे अब्बा बुरे थे, न तुम्हारी माँ बुरे किरदार वाली थी।

तो कुरआन मजीद की इस आयत से पता चला कि जब किसी औ़रत से कोई अख़्लाक़ी ग़लती होती है तो भाई पर भी इल्ज़ाम आता है, माँ और बाप की भी बदनामी होती है। जवान बच्ची हरगिज़ यह न समझे कि यह मेरी ज़ात का अ़मल है, वह समझ ले कि मेरे साथ कुछ और भी लोग हैं जिनकी ज़िन्दगी की इ़ज़्ज़तें ख़ाक में मिल जायेंगी।

चुनाँचे कुरआन से गवाही मिल रही है, जब क़ौम ने कहा "ऐ हारून की बहन" वे मरियम का नाम भी ले सकते थे, मगर नहीं! उनको नश्तर लगा रहे हैं कि सोच तू बहन किसकी है? बेटी किस माँ की है? और किस बाप की लख़्ते-जिगर है? चुनाँचे जब बीबी मरियम ने इल्ज़ाम तराशी के ये ताने सुने तो दिल तो पहले से ही दुखी था,

उनको कहने लगी:

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ

हाथ का इशारा बच्चे की तरफ़ कर दिया। गोया कहना चाहती हैं कि तुम मेरा सर मत खाओ। इसी बच्चे से पूछो कि यह कैसे हुआ।

वे (क़ौम के लोग) कहने लगे:

كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِى الْمَهْدِ صَبِيًّاo

जो छोटा बच्चा गोद में हो वह कैसे हम-कलामी (गुफ़्तगू) कर सकता है। उस वक़्त परवर्दिगार ने ज़ाबते को बदल दिया कि मेरे बन्दे ईसा! बच्चे गोद में बोला नहीं करते, मगर तेरी पाकदामन माँ पर इल्ज़ाम लग रहा है, मैं (परवर्दिगार) ज़ाबते बदल रहा हूँ। आपको बोलना होगा, और इसी बचपन में अपनी नुबुव्वत का ऐलान करना होगा।

चुनाँचे बच्चा वकीले सफ़ाई बनता है और कहता है:

اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ اٰتٰنِىَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِىْ نَبِيًّاo وَجَعَلَنِىْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ وَاَوْصٰنِىْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّاo وَّبَرًّاۢ بِوَالِدَتِىْ وَلَمْ يَجْعَلْنِىْ جَبَّارًا شَقِيًّاo

(سورة مريم)

मैं अल्लाह का ख़ास बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब (यानी इन्जील) दी और उसने मुझको नबी बनाया। और मुझको बरकत वाला बनाया मैं जहाँ कहीं भी रहूँ। और उसने मुझको नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया, जब तक मैं दुनिया में ज़िन्दा रहूँगा। और मुझको मेरी वालिदा (माँ) का ख़िदमत-गुज़ार बनाया। और उसने मुझको नाफ़रमान, बद्बख़्त नहीं बनाया।

सुब्हानल्लाह! अल्लाह की शान देखिए कि जब पाक लोगों पर इल्ज़ाम लगते हैं तो परवर्दिगार उनकी तरफ़ से गवाहियाँ दिलवाने के लिए ज़ाबतों (कुदरती नियमों) को बदलकर रख देते हैं। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को ऐसी ज़िन्दगी कितनी पसन्दीदा है। आईये आख़िरी

बात सुनकर आज की बात को किसी नतीजे तक पहुँचायें।

कुरआनी गवाही

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक बीवी साहिबा उम्मुल्-मोमिनीन, पाकदामन, अल्लाह के महबूब की महबूब हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की ज़िन्दगी का अ़जीब वाक़िआ़ है। हदीस पाक में आता है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पहली बीवी उम्मुल्-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने पैंसठ साल की उम्र में हिजरत से तीन साल पहले वफ़ात पाई। उनके बाद अल्लाह के नबी ग़मगीन रहते थे। चुनाँचे मदीना तशरीफ़ लाये। नबी अ़लैहिस्सलाम को जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की तस्वीर दिखाई कि अब अल्लाह ने आपके लिए इसको बीवी होने के लिए पसन्द फ़रमाया है। आपने पूछा कि ऐसी लड़की कौन है? पता चला कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाह अ़न्हु की बेटी आ़यशा हैं। उनसे निकाह हो गया। नबी पाक को उनसे बहुत ज़्यादा प्यार था। चुनाँचे आपने उनकी कुन्नियत "उम्मे अ़ब्दुल्लाह" रखी। जब वह अ़ब्दुल्लाह इब्ने जुबैर अपने भानजे को लेकर आपकी ख़िदमत में तशरीफ़ लाईं। और प्यार से उनको 'हुमैरा' के नाम से पुकारते थे।

मशहूर ताबिई हज़रत अ़ता इब्ने अबी रिबाह रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा अपने इल्म में और हुस्न में तमाम बीवियों पर सबक़त रखती थीं। बल्कि इमाम ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि अगर नबी पाक की तमाम पाक बीवियों के इल्म को जमा किया जाये तो हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा का इल्म उन सबसे भी ज़्यादा बढ़ जाये। चुनाँचे इस उम्मत में सबसे पहली कुरआन पाक की हाफ़िज़ा होने का सम्मान हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पाया। और इस उम्मत में सबसे ज़्यादा

हदीसों को रिवायत करने का सम्मान भी हज़रत आयशा सिद्दीक़ा को मिला। दो हज़ार दो सौ दस हदीसें रिवायत की हैं।

एक बार हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आये और उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह ने आयशा सिद्दीक़ा की तरफ़ सलाम भेजे हैं।

सुब्हानल्लाह! उनको अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के साथ कितनी मुहब्बत थी कि एक बार यह अपने दिर्‌हम व दीनार (यानी उस वक़्त के सोने-चांदी के सिक्कों) को बैठी धो रही थीं। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूछा कि क्या कर रही हो? जवाब दिया कि ऐ अल्लाह के नबी! दिर्‌हम व दीनार को धो रही हूँ। पूछा किस लिए? फ़रमाया ऐ आक़ा आपकी ही मुबारक ज़बान से यह सुना है कि जब कोई आदमी अपना माल अल्लाह के रास्ते में किसी फ़क़ीर को देता है तो वह फ़क़ीर के हाथों में पहुँचने से पहले अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के हाथों में पहुँच जाता है। मैंने जब से यह सुना तो अपने दिर्‌हम धोकर देती हूँ ताकि मेरे मालिक के हाथों में पाक और साफ़ माल पहुँचे। उनको अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त से इतनी मुहब्बत थी। और परवर्दिगार को भी इतनी मुहब्बत कि दुनिया में सलाम भेजते थे। चुनाँचे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब उनको देखते तो दुआयें दिया करते थे। एक बार दुआ दीः आयशा! अल्लाह तआ़ला तेरे चेहरे को हमेशा तरोताज़ा रखे। सुब्हानल्लाह! ऐसी दुआ अल्लाह के महबूब ने अपनी बीवी को अ़ता की।

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की ज़िन्दगी में भी एक अ़जीब वाक़िआ़ पेश आया। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की भी अ़जीब मर्ज़ी होती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ग़ज़्वा-ए-बनी मुस्तलिक़ (यह एक लड़ाई का नाम है) में तशरीफ़ ले गये। जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वहाँ से वापस आने लगे तो क़ाफ़िले को चलना था। क़ाफ़िले के लोग जैसे-जैसे तैयार होते रहते

चलते रहते थे। सैकड़ों बल्कि हज़ारों ऊँट होते थे। चलते हुए भी घन्टों लगाते थे। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने सोचा कि क़ाफ़िले में जाना है, पता नहीं सफ़र में कितना वक़्त लग जाये, क्यों न मैं पेशाब-पाख़ाने की ज़रूरत से फ़ारिग़ हो जाऊँ। वह अपनी इसी ज़रूरत के लिये खेतों में जाया करते थे। चुनाँचे आप ज़रा दूर चली गईं, ताकि फ़राग़त हासिल कर सकें। जब फ़राग़त हासिल करके वापस आईं तो आपने होदज (ऊँट पर जो बैठने का स्थान बना होता है) में बैठना था। जिसको सवारी के ऊपर रखा जाता था। इतने में आपने महसूस किया कि मैंने गले में एक हार पहना हुआ था वह कहीं टूटकर गिर गया है। सोचा कि अभी तो क़ाफ़िले के रवाना होने में वक़्त होगा, मैं जाकर हार देख लेती हूँ। आप हार ढूँढ़ने के लिए वापस तशरीफ़ ले गईं। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने सोचा कि आप तशरीफ़ तो ले आयी थीं, लिहाज़ा होदज में बैठ गयी होंगी। चार-पाँच आदमियों ने मिलकर होदज को उठाकर सवारी के ऊपर रख दिया। आपकी उम्र भी कम थी, और वज़न भी कम था, चार-पाँच आदमी उठाने वाले थे, तो उनको पता भी न चला कि आप अन्दर बैठी हुई हैं या कि नहीं।

अब क़ाफ़िले के लोग तो वहाँ से चले गये। जब आप वापस आईं तो आपने देखा कि वह जगह तो ख़ाली है, और क़ाफ़िला जा चुका है। आपको इत्मीनान था कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पता चलेगा तो किसी न किसी को भेजेंगे। चुनाँचे आप वहीं पर बैठ गईं। थोड़ी देर के बाद नींद ग़ालिब आ गयी, चुनाँचे अपने ऊपर चादर डाली और सो गईं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुबारक आ़दत यह थी कि सहाबा में से किसी एक सहाबी को हुक्म दिया जाता था कि जब सारा क़ाफ़िला चला जाये अगर रात का वक़्त हो तो सुबह के वक़्त उस जगह पर आकर देखें कि कहीं कोई चीज़ पीछे न पड़ी रह

गयी हो। चुनाँचे एक बदरी सहाबी हज़रत सफ़्वान बिन मुअ़त्तल रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो पक्की उम्र के थे, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस काम पर तैनात फ़रमाया था, वह जब उस जगह पर आये तो उन्होंने पहचान लिया कि यह तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक बीवी हैं। उन्होंने ऊँची आवाज़ में "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न" पढ़ा। उनकी आवाज़ सुनकर आपकी आँख खुल गयी। आपने जो अपने ऊपर चादर ली हुई थी, उससे अपने आपको पूरी तरह ढाँप लिया। उन्होंने आपके लिए अपने ऊँट को बैठाया, आप ऊपर बैठ गईं, उन्होंने नकेल पकड़ी और चल पड़े, यहाँ तक कि वह जब उस क़ाफ़िले के पास पहुँचे तो क़ाफ़िले में मौजूद जो मुनाफ़िक़ थे, उन्होंने देखा तो कहने लगे कि हाँ! इसमें तो कुछ न कुछ बात होगी।

वे तो पहले ही ऐसे मौक़े की तलाश में थे, जिसमें वे मुसलमानों को परेशान कर सकें, और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुँचा सकें। चुनाँचे उन्हें बातें बनाने का मौक़ा मिल गया।

चुनाँचे जब मदीना मुनव्वरा पहुँचे तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इस बात का पता चला। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बड़ा ग़म हुआ, बड़ा सदमा हुआ। लोगों में यह बात आ़म होना शुरू हो गयी। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं आकर एक महीना तक बीमार रही और कमज़ोर भी हो गयी। एक दिन मैं एक सहाबिया उम्मे मिस्तह् रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ शौच (पाख़ाने की ज़रूरत पूरी करने) के लिए रात को बाहर निकली। वह एक जगह पर क़दम उठाने लगीं तो उनको ठोकर लगी। उन्होंने अपने बेटे के बारे में बद्दुआ कर दी। मैंने कहा तुम अपने बेटे के लिए बद्दुआ क्यों कर रही हो? वह कहने लगीं कि तुम्हें पता नहीं कि वह तुम्हारे मुताल्लिक़ क्या बात कह रहा है? मैंने पूछा क्या बात

कह रहा है? उस वक़्त उन्होंने सारी तफ़सील बता दी कि आपके बारे में इस शहर में ये-ये बातें हो रही हैं।

हज़रत आ़यशा फ़रमाती हैं कि जब मैंने ये बातें सुनीं तो मेरे दिल पर बड़ा सदमा हुआ। मैं घर आई और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इन्तिज़ार करने लगी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब मस्जिद से तशरीफ़ लाये तो मैं आपके सामने आई और सलाम किया। आपने मेरे सलाम का जवाब दिया, मगर चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया। मैं दूसरी तरफ़ से आई, मगर नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी निगाहें दूसरी तरफ़ कर लीं। आपकी ख़ामोश निगाहों ने मुझे बहुत सारी बातें सिखा दीं कि उस वक़्त अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत पर बोझ है। और आप कोई बात करना नहीं चाहते।

मैंने सोचा कि चलो अपने माँ-बाप के घर चली जाती हूँ ताकि सही बात का पता चल सके। मैंने इजाज़त चाही, अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इशारे से फ़रमाया कि हाँ! चली जाओ। फ़रमाती हैं कि जब मैं वहाँ पहुँची तो मेरी वालिदा ने दरवाज़ा खोला। मैंने देखा कि मेरी वालिदा की आखें रो-रोकर सुर्ख़ हो चुकी हैं। परेशान चेहरे के साथ खड़ी हैं। मैंने पूछाः अम्मी! क्या हुआ? वालिदा ख़ामोश हैं। आँखों से आँसू टपकना शुरू हो गये। मैंने पूछा अम्मी! मेरे अब्बू किधर हैं? उन्होंने इशारा कर दिया, मैंने देखा कि चारपाई पर बैठे अल्लाह का क़ुरआन पढ़ रहे हैं। एक-एक आयत पर आँखों से आँसू टप-टप गिरते हैं, अल्लाह के हुज़ूर दुआ़यें माँग रहे हैं।

फ़रमाती हैं कि मैंने जब ग़म का माहौल देखा तो मेरी तबीयत और ज़्यादा परेशान हुई। मैंने सोचा कि मैं क्या करूँ? जिन पर मुझे मान था, जो मेरी ज़िन्दगी के रखवाले थे, वे भी मुझसे आज नाराज़ हैं। माँ-बाप भी आज जुदा हैं। मैं कहाँ जाऊँ? दिल में ख़्याल आया

कि क्यों न हो कि मैं अपने परवर्दिगार की तरफ़ मुतवज्जह हो जाऊँ।

चुनाँचे फ़रमाती हैं कि मैंने वुज़ू किया और घर के एक कोने में जाने लगी। माँ ने पूछा, आ़यशा! किधर जा रही हो? उनको डर लग गया था कि बेटी ग़मज़दा है, ऐसा न हो कि बेटी कोई संगीन फ़ैसला कर ले। फ़रमाती हैं कि उस वक़्त मैंने कहा, अम्मी! मैं अपने रब के हुज़ूर दुआ़यें करने जा रही हूँ। गोया यूँ कहना चाहती थीं कि अम्मी! हाई कोर्ट तो नाराज़ हो गये, अब मैं सुप्रीम कोर्ट का दरवाज़ा खटखटाने जा रही हूँ।

फ़रमाती हैं कि मैंने मुसल्ला बिछाया और सज्दे में सर रखकर दुआ़यें माँगनी शुरू कीं, कि ऐ मिस्कीनों के परवर्दिगार! ऐ फ़रियादियों की फ़रियाद सुनने वाले अल्लाह! ऐ मज़लूमों के परवर्दिगार! ऐ कमज़ोरों की सुनने वाले आक़ा! तेरे मक़बूल बन्दों पर जब भी कोई ऐसा वक़्त आया, ऐ अल्लाह! तूने ही उनकी मदद की। ऐ अल्लाह! यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम पर बात बनी थी तो आपने उस इल्ज़ाम से उनका बरी होना ज़ाहिर फ़रमाया। ऐ अल्लाह! मरियम अ़लैहस्सलाम पर बात बनी थी तो आपने ही उनकी पाकदामनी की गवाही दिलवाई। ऐ अल्लाह! आज तेरे महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हुमैरा तेरे दरवाज़े पर हाज़िर है। परवर्दिगार! तू हुमैरा की मदद फ़रमा। मेरे शौहर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने भी इस वक़्त मेरे साथ बात करना छोड़ दी है। ऐ अल्लाह! तेरे सिवा कोई ज़ात नहीं जो दुखी दिलों को तसल्ली दे सके, जो ग़मज़दा दिलों को इत्मीनान दे सके। रो-रोकर दुआ़यें कर रही हैं।

इधर दुआ़यें माँगी जा रही हैं और उधर आक़ा ने मस्जिदे नबवी में मश्विरे की मज्लिस क़ायम की हुई है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तो घर में थे, बाक़ी सहाबा जमा हैं। हदीस के आलिमों ने इसका अ़जीब मन्ज़र लिखा है। फ़रमाते हैं कि नबी करीम अभी ग़मज़दा बैठे थे, सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के चेहरों पर

उदासी थी, उन्होंने अपने महबूब के चेहरे को ग़मज़दा देखा, जिसकी वजह से उनकी तबीयत अ़जीब बन चुकी थी। चुनाँचे बाज़ सहाबा सिसकियाँ ले-लेकर रो रहे थे। नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस वक़्त अपने यारों से पूछाः इस मामले में तुम क्या मश्विरा देते हो? सबसे पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा, उमर! तुम इस मामले में क्या कहते हो? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आगे बढ़कर कहा, ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह तआ़ला ने आपको इ़ज़्ज़त व शराफ़त बख़्शी, आपके बदन पर कोई मक्खी भी नहीं बैठती, जब अल्लाह तआ़ला ने आपको इतना पाकीज़ा बनाया कि उस पर एक गन्दी मक्खी को बैठने की इजाज़त नहीं तो आपकी रफ़ीक़ा-ए-हयात (पाक बीवी) ऐसी कैसे हो सकती है जिसके अन्दर गुनाहों की नजासत हो? इसलिए मुझे तो यह चीज़ ठीक नज़र नहीं आती।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा, उस्मान! तुम बताओ कि मामला क्या हो सकता है? हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने नुबुव्वत की सोहबत का हक़ अदा कर दिया। अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने आपको ऐसा बनाया कि बादल आप पर साया किये रखता है। आपका साया ज़मीन पर नहीं पड़ता कि ऐसा न हो कि किसी का क़दम आपके साये पर पड़ जाये। जब अल्लाह तआ़ला ने आपके अदब का इतना लिहाज़ फ़रमाया कि किसी ग़ैर के क़दम आपके साये पर नहीं पड़ सकते तो यह कैसे मुम्किन है कि किसी को आपकी पाक बीवी पर क़ुदरत हासिल हो जाये। लिहाज़ा यह चीज़ तो हमारे वहम व गुमान से भी बाहर है।

उनकी बात सुनकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ामोश हो गये। उसके बाद नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा, अ़ली! तुम बताओ कि क्या

मामला हो सकता है? हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! एक बार आपके जूते के साथ नजासत (गंदगी) लगी हुई थी। आप चाहते थे कि पहन लें मगर अल्लाह तआ़ला ने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को भेजा था और आपको इत्तिला दे दी थी कि आपके जूते के साथ नजासत लगी हुई है। जब जूते पर नजासत लगी हुई थी तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बता दिया गया था, अगर आपके घर के साथ कोई ऐसा मामला होता तो आपको क्यों न बता दिया जाता? इसलिए यह बात मुझे ठीक नज़र नहीं आती।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फिर ख़ामोश हो गये। आपकी ग़मगीनी को देखकर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु दोबारा बोले, और कहने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! अगर आपकी तबीयत बहुत ग़मज़दा है तो आप चाहें तो तलाक़ दे दें। आपके लिए बीवियों की कौनसी कमी है? अल्लाह तआ़ला आपको कोई और रफ़ीक़ा-ए-हयात (जीवन-साथी) अ़ता फ़रमा देंगे। उनकी यह बात सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु तड़प उठे और खड़े हो गये। उन्होंने उस वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! आप यह इरशाद फ़रमाईये कि यह निकाह आपने अपनी मर्ज़ी से किया था या आपको इशारे से बता दिया गया था? यह आपकी पसन्द थी या किसी और की पसन्द थी? नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उंगली से ऊपर की तरफ़ इशारा किया कि यह तो मेरे रब की तरफ़ से इशारा था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! अब आप मुझे छोड़ दीजिए और उन मुनाफ़िक़ों को छोड़ दीजिए। मेरी तलवार जाने और मुनाफ़िक़ों की गर्दनें जानें। वे ऐसी तौहीन वाली बातें कैसे कर सकते हैं? रब्बे करीम की पसन्द पर वे ऐसी बातें कर रहे हों, यह नहीं हो सकता।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस वक़्त हज़रत

उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को प्यार की आँखों से देखा, गोया दिल से कह रहे हों कि उमर! अल्लाह तेरा निगेहबान हो, तूने मेरे ग़म को हल्का कर दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत में इत्मीनान आ गया। आप उठे और मज्लिस बर्ख़ास्त हो गयी।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के घर की तरफ़ यह मालूम करने के लिए जाते हैं कि मेरी हुमैरा किस हाल में है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दस्तक देते हैं, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बीवी ने दरवाज़ा ख़ोला। नबी पाक ने देखा कि उनका रो-रोकर बुरा हाल हो चुका है। जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की तरफ़ देखा तो उनकी आँखें भी रो-रोकर सुर्ख़ हो चुकी थीं और सूज चुकी थीं। आपने पूछा, हुमैरा नज़र नहीं आ रही, हुमैरा कहाँ है? उन्होंने कोने की तरफ़ इशारा किया। उस वक़्त हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा सज्दे में दुआ़यें माँग रही थीं। बाद में फ़रमाती हैं कि महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब तशरीफ़ लाये थे तो मेरे दिल में यह बात आई कि मैं उसी वक़्त उठकर अपने आक़ा के क़दमों के साथ चिमट जाऊँ और जी भरकर रो लूँ कि मेरे साथ यह क्या मामला पेश आया है। मगर मेरे दिल ने कहा, आ़यशा! तूने अपने रब के सामने अपनी फ़रियाद बयान कर ली है। अब अपने रब से ही माँग ले। तेरा रब तेरा निगेहबान होगा। चुनाँचे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः हुमैरा! आपकी आवाज़ सुनते ही हुमैरा ने सज्दा मुकम्मल किया और आकर चारपाई पर ख़ामोश बैठ गईं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़रीब बैठ गये, आपने प्यार से समझाया और फ़रमाया, हुमैरा! अगर तुझसे कोई ऐसी ग़लती हो गयी है तो अपने रब से माफ़ी माँग ले। रब्बे करीम गुनाहों को माफ़ करने वाले हैं।

फ़रमाती हैं कि उस वक़्त तो मैं सब्र के साथ बैठी थी, आपकी यह बात सुनकर मेरे संयम के बन्धन टूट गये, मेरी आँखों से आँसू आना शुरू हो गये। मैं रोती रही, मगर ख़ामोश थी। रोते हुए मैंने कहा, मैं वही बात कहूँगी जो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के वालिद ने कही थी:

إِنَّمَآ أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللّٰهِ

मैं अपना ग़म और शिकवा अपने रब से कहती हूँ।

फ़रमाती हैं कि मैंने ये अल्फ़ाज़ कहे और महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नूरानी चेहरे की तरफ़ देखा। आपकी पेशानी पर पसीनें के क़तरे देखे, और आपके ऊपर ग़नूदगी (ऊँघ) सी तारी होती गयी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने ऊपर चादर ले ली। फ़रमाती हैं कि मैं आराम से बैठी थी, मेरे दिल में ख़्याल था कि अल्लाह तआ़ला आपके दिल में यह बात डाल देंगे, या नींद में कोई ख़्वाब दिखा देंगे, और वज़ाहत फ़रमा देंगे। मगर मेरे बाप और मेरी माँ पर वे चन्द लम्हे पड़े अ़जीब थे। मैंने अपने वालिद को देखा कि तड़प रहे थे कि वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) नाज़िल हो रही है, पता नहीं कि मेरी बेटी की क़िस्मत का क्या फ़ैसला होता है। वालिद की आँखों में भी आँसू और वालिदा की आँखों में भी आँसू। फ़रमाती हैं कि मैं आराम से बैठी थी, थोड़ी देर के बाद मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने नूरानी चेहरे से कपड़ा हटाया तो आपका चेहरा कपड़े से ऐसे बाहर निकला जैसे बादल हटता है तो चौदहवीं का चाँद नज़र आता है।

फ़रमाने लगीं कि मैंने आपके चेहरे पर ख़ुशी देखी। मैं समझ गयी कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने रहमत फ़रमा दी है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: आ़यशा! मुबारक हो, अल्लाह का कलाम आया है। अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया है:

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ (سورة النور)

अल्लाह तआ़ला ने तेरी बराअत (हर तरह के इल्ज़ाम से बरी होना) नाज़िल फ़रमा दी। फ़रमाती हैं कि उस वक़्त मेरी वालिदा फ़रमाने लगीं, आ़यशा! उठ और नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का शुक्रिया अदा कर। फ़रमाने लगीं, मेरी तवज्जोह रब की तरफ़ गयी, फ़रमाने लगीं, मैं अपने रब का शुक्रिया अदा करती हूँ जिसने अपने महबूब की हुमैरा की फ़रियाद को क़बूल फ़रमा लिया। उसकी पाकदामनी की गवाही में कुरआन मजीद में अट्ठारह आयतें नाज़िल फ़रमा दी गईं। यही नहीं कि उनकी बराअत नाज़िल फ़रमा दी, बल्कि आगे फ़रमा दिया कि तुम्हें इतने समय तक जो परेशान रहना पड़ा, उसके बदले में तुम्हारे लिए मग़फ़िरत और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बहुत बड़ा अज्र है। किसी ने क्या ख़ूब फ़रमाया:

तेरी पाकीज़गी पर नुत्के-फ़ितरत ने शहादत दी
तुझे अ़ज़मत अ़ता की, आफ़ियत बख़्शी फ़ज़ीलत दी
खुदा-ए-लम् यज़ल् का बारहा तुझको सलाम आया
मुबारक हैं वे लब जिनपर अज़ल् से तेरा नाम आया
रसूलुल्लाह ने रखा है सिद्दीक़ा लक़ब तेरा
फ़क़त फ़र्शी नहीं अ़र्शी भी करते हैं अदब तेरा
शर्फ़ तेरे दुपट्टे ने यह जंगे-बदर में पाया
उसे परचम बनाकर रहमते-आ़लम ने लहराया
तेरा हुजरा आमीने ख़ास है ज़ाते रिसालत का
फ़र्श पर हो के भी टुकड़ा है यह बाग़े जन्नत का
उसी में रहमतुल्-लिल्आ़लमीन रहते थे, रहते हैं
तेरा हुजरा है वह जिसे गुंबदे-ख़िज़रा भी कहते हैं

शफ़ाअ़त की तेरे रहमत-कदे से इब्तिदा होगी
उसी पर उम्मतों की मग़फ़िरत की इन्तिहा होगी

जब पाकदामन इनसान को ज़िन्दगी में परेशानी आती है तो फिर अल्लाह तआ़ला खुद उनकी पुश्त-पनाही फ़रमाया करते हैं। आज भी जो इनसान नेकोकारी की ज़िन्दगी और परहेज़गारी की ज़िन्दगी बसर करेगा, अल्लाह तआ़ला की मदद व नुस्रत उसके साथ होगी।

अल्लाह के महबूब की तालीमात कितनी अच्छी हैं, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस बात से मना फ़रमाया कि कोई भी ऐसा काम न किया जाये जो हया के तक़ाज़ों के ख़िलाफ़ हो। आपने एक-एक सहाबी को हया का ऐसा नमूना बना दिया था कि उनकी निगाहें पाकीज़ा, उनके दिल पाकीज़ा और उनकी ज़िन्दगी गुनाहों से पाकीज़ा होती थी। अल्लाह तआ़ला हमें भी उनकी पाकदामनी वाली ज़िन्दगियों का नमूना अ़ता फ़रमा दे और हमें भी हया और ग़ैरत वाली ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे। आमीन।

अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाये और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये। और नेक आमाल को सबब बनाकर अल्लाह तआ़ला हमारी ज़िन्दगियों में बरकत अ़ता फ़रमा दे। और अब तक हमने जितने भी गुनाह किये, छोटे या बड़े, तन्हाई में किये या महफ़िल में किये, दिन में किये या रात में किये, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त हमारे तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे और आईन्दा हमें पाकीज़ा निगाहें अ़ता फ़रमा दे, और निगाहों की ना-मुसलमानी से महफ़ूज़ फ़रमा दे। (आमीन सुम्-म आमीन)

सुब्हानल्लाह! अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त कितने करीम हैं, पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारने वालों को दुनिया में भी अपनी रहमतों का साया

अ़ता करते हैं और क़ियामत के दिन अपने अ़र्श का साया अ़ता फ़रमायेंगे। कुरआन में अल्लाह तआ़ला उनकी अ़ज़मतों (बड़ाईयों) के तज़किरे कर देते हैं। फिर क़ियामत तक कुरआन उनकी सच्चाईयों की गवाहियाँ देता है।

इसलिए मेरी बहनो और बेटियो! आज इस महफ़िल में दिलों के इरादे पक्के कर लीजिए कि हमें सारी ज़िन्दगी अपनी इ़ज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करनी है। गुनाहे कबीरा से बचकर ज़िन्दगी गुज़ारनी है। ताकि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला हमारे पर्दे की लाज रख लें।

जब आप इस तरह नेक बनकर ज़िन्दगी गुज़ारेंगी तो परवर्दिगार की रहमतें आपके साथ होंगी। केवल सूरत को संवारने के बजाये अपनी सीरत को संवारने की फ़िक्र कर लीजिए। इसलिए कि ख़ूबसूरत औ़रत को देखने से आँखें खुश होती हैं और ख़ूबसीरत औ़रत को देखने से दिल खुश हो जाया करता है। मेरी बात याद रखना कि क़द बग़ैर ऊँची ऐड़ी के जूते के भी बड़ा नज़र आ सकता है, अगर शख़्सियत में बुलन्दी हो। आँखें बग़ैर सुर्मे के भी ख़ूबसूरत लग सकती हैं, अगर हया से भरी हुई हों। पलकें बग़ैर मस्कारे के भी दिल को लुभाने वाली हो सकती हैं अगर शर्म की वजह से झुकी हों। और पेशानी बग़ैर बिंदिया के भी ख़ूबसूरत लग सकती है अगर उस पर सज्दों के निशान हों।

तो आप नेकी और तक़वे को अपना लीजिए। ज़िन्दगी भी पुरसुकून गुज़ारिये, झूठ से बचकर सच की ज़िन्दगी नसीब होगी, और क़ियामत के दिन भी सच्चों का साथ नसीब होगा। परवर्दिगार हमें सच्ची ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे और अब तक हमने ज़िन्दगी में जितने भी गुनाह किये, जैसे भी गुनाह किये, परवर्दिगार उन सबसे हमें आज पाक फ़रमा दे और हमें आईन्दा

पाक-साफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने की हिम्मत और ताक़त अ़ता फ़रमा दे। दिलों में ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारने की हिम्मत और इरादे कर लीजिए। परवर्दिगार की रहमत होगी, रमज़ान मुबारक की ये घड़ियाँ आपके लिए बख़्शिश का सबब बन जायेंगी। परवर्दिगार उठने से पहले हम आ़जिज़ मिस्कीनों के गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे। आमीन

وَاٰخِرُدَعْوَانَآاَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَo

इसी किताब से......

इस्लाम ने औरत पर रोज़ी कमाना, ज़िन्दगी में कभी फ़र्ज़ नहीं किया। बेटी है तो बाप का फ़र्ज़ है कि वह बेटी को रोटी कमाकर खिलाये। अगर बहन है तो भाई का फ़र्ज़ है कि बहन को कमाकर खिलाये। अगर बीवी है तो शौहर का फ़र्ज़ है कि कमाकर लाये। अगर माँ है तो औलाद की ज़िम्मेदारी है कि वह कमाये और अपनी माँ को लाकर खाना खिलाये।

गोया औरत पर पूरी ज़िन्दगी में इस्लाम ने रोज़ी कमाने का बोझ नहीं डाला। बल्कि उसके क़रीबी मेहरम मर्दों की ज़िम्मेदारी लगाई कि तुमको कमाना है और इस औरत को घर में लाकर देना है। यह घर की मलिका बनकर रहेगी, बच्चों की तरबियत करेगी और घर के अन्दरूनी ज़िन्दगी के तमाम मामलात को संभालेगी।

अब बताईये कि किस समाज ने औरत को ज़्यादा आसानी की ज़िन्दगी दी, इस्लाम ने या यूरोप ने?

(अज़ इफ़ादात)

हज़रत मौलाना पीर

हाफ़िज़ ज़ुल्फ़िक़ार अहमद साहिब

नक्शबन्दी मजद्दिदी दामत बरकातुहुम

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

औरत का मुहाफ़िज़ इस्लाम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى. اَمَّا بَعْدُ!

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ o (سورة النحل) وقال الله تعالٰى فى مقام اخر: وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً، اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ o وقال الله تعالٰى فى مقام اخر: وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِىْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ.

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ o وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ o وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

औरत के बारे में ग़लत-फ़हमियाँ

आजकल इस्लाम की दुश्मन ताक़तों ने एक अजीब प्रोपैगन्डा शुरू कर दिया है, जिसकी वजह से वे मुसलमान औरतों को यह यक़ीन दिलाने की कोशिश करते हैं कि इस्लाम ने उन पर बहुत ज़्यादा पाबन्दियाँ लगा दी हैं। हमारे समाज की कई पढ़ी-लिखी औरतें और बच्चियाँ भी ग़लत-फ़हमी का शिकार हो जाती हैं और वे यह समझती हैं कि शायद हमें हमारे जायज़ हुक़ूक़ नहीं दिये गये। हालाँकि बात

हरगिज़ ऐसी नहीं है।

इस्लाम में पर्दे का हुक्म

देखिये सबसे पहली बात तो यह की जाती है कि इस्लाम ने औरत को पर्दे में रहने का हुक्म दिया है, जबकि ग़ैर-मुस्लिम समाज में औरत बेपर्दा फिरा करती है। तो यह बात समझनी बहुत आसान है कि औरत पर्दे में रहे तो उसका फ़ायदा औरत को भी है, मर्द को भी है। आईये यूरोप की बेपर्दगी के नुक़सानात पर ग़ौर कीजिये।

यूरोप की बेपर्दगी

स्वीडन बरतानिया के बिल्कुल क़रीब यूरोपी दुनिया का एक बहुत अमीर मुल्क है। हमारे मुल्कों में ख़सारे (घाटे) का बजट पेश होता है जबकि इस मुल्क में नफ़े का बजट होता है। हम यह सोचते हैं कि पैसा आयेगा कहाँ से, और वे सोचते हैं कि पैसा लगायें कहाँ पर।

इतने अमीर हैं कि अगर उस पूरे मुल्क के मर्द, औरत, बच्चे और बूढ़े काम करना छोड़ दें, सिर्फ़ खायें-पियें ऐश व अ़य्याशी करते रहें तो वह क़ौम छह साल तक अपने पड़े हुए ख़ज़ाने को खा सकती है। अगर कोई आदमी नौकरी नहीं ढूँढ़ पाता तो सिर्फ़ हुकूमत (सरकार) को इत्तिला दे दे, उसको घर बैठे हुए बीस हज़ार रुपये हर महीने मिल जाया करेंगे। हुकूमत उसको मकान लेकर देती है। बीमार होने से लेकर उसके मरने तक उसकी बीमारी पर लाख रुपये लगें या करोड़ रुपये लगें, हुकूमत की ज़िम्मेदारी है कि वह उसका इलाज करवाये।

उनके रोटी कपड़े और मकान का मसला तो हल हो गया। बाक़ी रह गई इनसान की ख़्वाहिशें, वे इस मुल्क में इस हद तक पूरी होती हैं कि उसको सैक्स फ़्री देश (Sex Free Country) कहा जाता है। वहाँ जानवरों की तरह मर्द औरत एक-दूसरे के साथ जहाँ चाहें जब चाहें मिलें उनपर कोई पाबन्दी नहीं।

अब सोचने की बात यह है कि जिनको रोटी, कपड़े, मकान की फ़िक्र नहीं, जिनकी ख़्वाहिशें मर्ज़ी के मुताबिक़ पूरी होती हों, उनको तो और कोई ग़म ही नहीं होना चाहिये, मगर दो बातें बहुत अ़जीब हैं। सबसे पहली बात यह है कि इस समाज में तलाक़ की मात्रा सत्तर फ़ीसदी से अधिक है। गोया सौ में से सत्तर से ज़्यादा घरों में तलाक़ हो जाती है। और दूसरी बात यह कि इस समाज में ख़ुदकुशी करने वालों का अनुपात पूरी दुनिया में सबसे ज़्यादा है। जितने लोग वहाँ ख़ुदकुशी करते हैं पूरी दुनिया में किसी मुल्क में नहीं करते।

अब जब रोटी, कपड़े, मकान का मसला हल हो गया तो उसके बाद ख़ुदकुशी करने का क्या मतलब? वजह यह है कि दिलों में सुकून नहीं मिलता। घरों में तलाक़ें हो जाती हैं। इस बेहयाई, बेपर्दगी की वजह से सुकून नहीं मिलता। मर्द भी बेहतर से बेहतरीन की तलाश में और औ़रत भी ख़ूब से ख़ूबतर की तलाश में। चुनाँचे सुकून की ज़िन्दगी किसी को भी नसीब नहीं होती।

जिस माहौल में सत्तर फ़ीसद से ज़्यादा औ़रतों को तलाक़ हो जाये वहाँ किसको ख़ुशी होगी? चुनाँचे आज वे ज़ेहनी तनाव (Depression) की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

पर्दे का फ़ायदा

इस्लामी शरीअ़त ने हमें जो पर्दे की पाबन्दी का हुक्म दिया है इसका फ़ायदा भी हमें ही है। अगरचे हमारे पास खाने की चीज़ों की कमी है, हमारे पास लिबास और मकान की कमी है, मगर इसके बावजूद हमारे समाज में देखें तो सौ में से दशमलव सात (Point seven Percent) भी ऐसे लोग नज़र नहीं आते जो तलाक़ वाले हों।

हम यह सुखी ज़िन्दगी क्यों गुज़ार रहे हैं? यह मियाँ-बीवी ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी क्यों गुज़ारते हैं? इसलिये कि इस्लाम में जो

बुनियादी अहकाम बताये गये हैं, आज इस गये-गुज़रे माहौल में भी कुछ न कुछ इस्लामी अहकाम की पाबन्दी फिर भी बाक़ी है जिसका फ़ायदा ख़ुद हमें मिल रहा है।

ग़ुलामी या आज़ादी

हमारी मुसलमान औरतें यह न समझें कि ग़ैर-मुस्लिम समाजों में पर्दा नहीं तो उनको आज़ादी मिल गई। नहीं! हरगिज़ ऐसी बात नहीं। मैंने यूरोप में एक फ़ैक्ट्री में देखा कि सामान उठाकर एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने के लिये चार लड़के थे। वे भी बोरियों को कमर पर रखकर लेजा रहे थे और दो लड़कियाँ थीं, उन्होंने भी कमर पर अपनी-अपनी बोरी उठाई हुई थी और वे भी चल रही थीं। मैंने उस फ़ैक्ट्री के मैनेजर से कहाः यह क्या हरकत है कि आपने लड़कियों को यह काम दे दिया। वह कहने लगा, जी अगर ये काम नहीं करेंगी तो फिर खायेंगी कहाँ से।

औरत को यह कैसी आज़ादी मिली कि अब वह बोरियाँ कमर पर उठाकर कुलियों की तरह फ़ैक्ट्री में काम कर रही है। क्या इसका नाम आज़ादी है?

देखिये! पाकिस्तान में NLC के बड़े-बड़े ट्रेलर कराची से पेशावर तक चलते हैं। इस साईज़ के बड़े-बड़े ट्रेलर यूरोप में लड़कियाँ चलाती हैं। जिस तरह ड्राईवर रास्ते में किसी जगह रात होने पर चाय-पानी पी लेते हैं और चारपाई-बिस्तर किराये पर लेकर सो जाते हैं, बिल्कुल इसी तरह चारपाई-बिस्तर किराये पर लेकर ड्राईवर लड़कियाँ सो जाती हैं। यह औरत को इज़्ज़त मिली या ज़िल्लत मिली? फ़ैसला आप ख़ुद कर लीजिये।

औरत घर की रानी

इस्लाम मज़हब की मेहरबानी देखिये कि इस्लाम ने औरत पर

रोज़ी कमाना ज़िन्दगी में कभी भी फ़र्ज़ नहीं किया। बेटी है तो बाप का फ़र्ज़ है कि वह बेटी को रोटी कमाकर खिलाये। अगर बहन है तो भाई का फ़र्ज़ है कि कमाकर लाये और बहन की रोटी का इन्तिज़ाम करे। अगर बीवी है तो शौहर का फ़र्ज़ है कि वह कमाकर लाये और बीवी को घर बैठे हुए खाना पहुँचाये। अगर माँ है तो औलाद की ज़िम्मेदारी है कि वह कमाये और अपनी माँ को लाकर खिलाये।

गोया इस्लामी शरीअ़त ने औ़रत पर पूरी ज़िन्दगी में रोज़ी कमाने का बोझ नहीं डाला। बल्कि उसके क़रीबी मेहरम मर्दों की ज़िम्मेदारी लगाई कि तुमको कमाना है और इस औ़रत को घर में लाकर देना है। यह घर की मलिका (रानी) बनकर रहेगी, बच्चों की तरबियत करेगी और घर की अन्दरूनी ज़िन्दगी के तमाम मामलात को संभालेगी।

अब बताईये कि किस समाज और किस मज़हब व सभ्यता ने औ़रत को ज़्यादा आसानी की ज़िन्दगी दी, इस्लाम ने या यूरोप ने?

इस्लाम का औ़रत पर एहसान

अगर आप ग़ौर करें तो आपको यह बात बहुत वाज़ेह (स्पष्ट) नज़र आयेगी कि औ़रत के बारे में इस्लाम ने बहुत नर्मी का मामला बरता है। इसलिये कि मर्द को अल्लाह तआ़ला ने ताक़त दी, मर्द को अल्लाह तआ़ला ने मेहनत करने की क़ुव्वत अ़ता की। औ़रत को उसके मुक़ाबले में जिस्मानी एतिबार से कमज़ोरी दी है। नज़ाकत दी है। इसलिये औ़रत की ज़िम्मेदारियाँ भी इसी तरह की हैं, जिस तरह अल्लाह ने उसका जिस्म कमज़ोर बनाया। और मर्द की ज़िम्मेदारियाँ भी इसी तरह की हैं जिस तरह अल्लाह ने उसका जिस्म सख़्त-जान बनाया है।

एक अजीब प्रोपैगन्डा

पिछले दिनों एक प्रोपैगन्डा हमारे मुल्क में भी होता रहा कि इस्लाम में औरत को आधा शहरी (नागरिक) माना जाता है। यानी औरत की 'दियत' आधी होती है और औरत की गवाही आधी होती है। यह ऐसा सवाल है कि कालिजों, यूनिवर्सिटियों और स्कूलों में लड़कियाँ एक-दूसरे से पूछती हैं। अगर आप ग़ौर करें तो यह मामला बहुत आसानी से समझ में आने वाला है। मैं इस पर थोड़ी सी रोशनी डाल देता हूँ।

देखिये! दियत क्या होती है? मैं आपको समझा देता हूँ। अगर कोई क़ातिल किसी को क़त्ल करता है इरादे के साथ तो उसे "क़त्ले अ़मद्" (यानी जान-बूझकर क़त्ल करना) कहते हैं। अगर बग़ैर इरादे के कोई आदमी किसी के किसी अ़मल से क़त्ल हो जाये तो उसे "क़त्ले ख़ता" (यानी ग़लती से क़त्ल हो जाना) कहते हैं। 'क़त्ले अ़मद' हो तो उसका क़िसास अदा करना पड़ता है और अगर क़त्ले ख़ता हो तो उसकी दियत देनी पड़ती है।

मतलब यह कि अगर शौहर मर गया, ग़लती से किसी ने मार दिया तो उसकी बीवी को उसकी दियत मिलेगी और अगर बीवी मारी गई तो शौहर को उसकी दियत मिलेगी।

दियत के बारे में शरीअ़त का हुक्म

अब शरीअ़त का हुक्म यह है कि अगर शौहर मरेगा तो बीवी को पूरी दियत अदा की जायेगी, और अगर बीवी मरेगी तो शौहर को उसका आधा अदा किया जायेगा।

इस सूरत में रोना तो मर्दों को चाहिये था कि देखो जी हमारे साथ नाइन्साफ़ी है। हम मरेंगे तो औरत को पूरा हिस्सा मिलेगा, औरत मरी तो हमें पूरा हिस्सा नहीं मिलेगा, आधा हिस्सा मिलेगा। मर्दों को

तो क्या रोना था उलटा ग़लत-फ़हमी औरतों में डाल दी गई। ओ जी! औरत की दियत आधी होती है। ओ अल्लाह की बन्दी! औरत की दियत आधी होती है। तो पैसा मिल किसको रहा है? वह तो शौहर को मिल रहा है। रोना तो शौहर को चाहिये था उसको शोर मचाना चाहिये था कि मुझे आधे पैसे क्यों मिले। जब मर्द मरा और औरत की लेने की बारी आई तो उसको पूरे पैसे मिल रहे हैं। जहाँ मर्द का मामला था उसकी कमज़ोरी का ख़्याल करते हुए कि उसका नुक़सान ज़्यादा हुआ है, उसके सर का साया चला गया इसलिये उसे मर्द से दोगुना दे दिया जाये। तो औरत के साथ तो उलटी उसकी हमदर्दी (Favour) की गई।

औरत की गवाही

इसी तरह गवाही के मामले में कहते हैं कि औरत की गवाही आधी है। हाँ जी आधी है। आपने देखा होगा लोग अपनी आँखों के सामने क़त्ल होते देखते हैं गवाह नहीं बनते। किस लिये? वे कहते हैं कि जी कौन मुसीबत में पड़े, कौन चक्कर लगाये अ़दालतों के? और फिर क़ातिलों के साथ दुश्मनी कौन ले? और देखने में आया है कि लोग तो अ़दालतों के अन्दर भी गवाहों को क़त्ल कर दिया करते हैं। उनकी जान, माल, इ़ज़्ज़त व आबरू हर चीज़ ख़तरे में होती है। गोया गवाही देना एक बोझ है इसलिये कई लोग इस बोझ को अदा करने से कतराते हैं और देखने के बावजूद ख़ामोश हो जाते हैं, किसी को कुछ नहीं कहते।

जहाँ मर्द को गवाही देनी थी तो हुक्म दिया कि तुम्हारी गवाही पूरी होगी, तुम्हारे सर पर पूरा बोझ रखा जायेगा। और जहाँ औरत को गवाही देनी थी तो फ़रमाया हम पूरा बोझ तुम्हारे ऊपर नहीं रखते। तुम दो औरतें आधा-आधा बोझ मिलकर उठा लो ताकि अगर कोई तुम्हारे साथ दुश्मनी करेगा तो वह एक ख़ानदान के साथ नहीं

बल्कि दो ख़ानदानों के साथ दुश्मनी ले रहा होगा। तुम्हारे ऊपर जो बोझ आयेगा वह आधा बोझ होगा। गोया औरत के साथ नर्मी कर दी गई। वरना अगर औरत को कह दिया जाता कि नहीं! आपको पूरी गवाही देनी है तो फिर यह रोती फिरती कि जी मेरे साथ कितनी ज़्यादती की, इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी मेरे सर पर डाल दी। बोझ उठाने का वक़्त आया तो कहा कि अब दो ख़ानदान मिलकर यह बोझ उठा लें ताकि औरत को ज़्यादा सुरक्षा मिल सके। उसकी जान, माल, इज़्ज़त, आबरू की ज़्यादा हिफ़ाज़त हो सके।

अगर इन दो मसाईल पर ग़ौर करें तो साफ़ तौर पर स्पष्ट होगा कि औरत के साथ अल्लाह तआ़ला ने नर्मी का मामला किया है।

बहुत अच्छा सवाल

एक बार नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में एक औरत आई और आकर अ़र्ज़ करने लगीः ऐ अल्लाह के नबी! मर्द तो नेकियों में हमसे बहुत आगे बढ़ गये। पूछा, कैसे? कहने लगीं कि जी ये आपके साथ जिहाद में शरीक होते हैं, सारी-सारी रात जागकर दुश्मन की सरहद पर पहरा देते हैं, और हम घरों के अन्दर उनके बच्चों की परवरिश करती रहती हैं। उनको खाना पकाकर खिलाती हैं। उनकी तरबियत का ख़्याल रखती हैं, उनके जान व माल की हिफ़ाज़त करती हैं, इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करती हैं।

हम जिहाद में दुश्मन के सामने इस तरह रातों को पहरा भी नहीं देतीं। हम उस तरह क़िताल (जंग) नहीं करतीं जिस तरह मर्द करते हैं। ये तो नेकियों में हमसे आगे बढ़ गये। ये तो मस्जिदों में जाकर जमाअ़त के साथ नमाज़ें पढ़ते हैं, हम घरों में ही पढ़ लेती हैं। हम जमाअ़त के सवाब से भी मेहरूम हो गईं।

जब उन्होंने यह सवाल पूछा तो अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सवाल पूछने वाली ने बहुत अच्छा सवाल पूछा।

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जवाब

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो औ़रत अपने घर में अपने बच्चों की वजह से रात को जागती है तो अल्लाह तआ़ला उसे मुजाहिद (अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले) के बराबर अज्र अ़ता फ़रमा देते हैं, जो सारी रात जाग कर दुश्मन की सरहद पर पहरा दिया करता है।

गोया औ़रत को घर के नरम बिस्तर पर बैठे हुए अल्लाह तआ़ला ने जिहाद का सवाब अ़ता फ़रमा दिया। और फ़रमाया कि जो औ़रत अपने घर में नमाज़ पढ़ लेती है अल्लाह तआ़ला उसे उस मर्द के बराबर अज्र अ़ता फ़रमाते हैं जो मस्जिद में जाकर जमाअ़त के साथ तकबीरे-ऊला के साथ नमाज़ पढ़ता है। औ़रत के साथ अल्लाह तआ़ला ने हर जगह नर्मी का मामला फ़रमाया है।

औ़रत के साथ इस्लाम की मेहरबानी

आईए! मैं आपको दर्जा-ब-दर्जा औ़रत की ज़िन्दगी के हालात बता देता हूँ जो विभिन्न दर्जों में होते हैं। उनमें औ़रत के अज्र व सवाब के बारे में बता देता हूँ ताकि यह वाज़ेह हो जाये कि इस्लाम ने औ़रत के साथ किस क़द्र नर्मी का मामला किया है।

लड़की की पैदाईश

शरीअ़त का हुक्म है कि जिस घर में बेटी पैदा होती है तो अल्लाह तआ़ला उस घर में रहमत का दरवाज़ा खोल देते हैं। अगर दो बेटियाँ हो गईं तो बाप के लिये दो रहमत बन गईं। कि उनका बाप जन्नत में अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इतना क़रीब होगा जैसे हाथ की दो उंगलियाँ एक दूसरे के क़रीब होती हैं।

कुंवारी लड़की का सम्मान

हदीस पाक का मफ़्हूम है कि जब कोई कुंवारी लड़की मर जाती है जो माँ-बाप के घर रहती थी, अभी शादी नहीं हुई थी। वह मर गई तो यह जब क़ियामत के दिन खड़ी की जायेगी तो अल्लाह तआ़ला उसको शहीदों की क़तार में खड़ा करेंगे। वह किस लिये? इसलिये कि यह कुंवारी थी, यह माँ-बाप के घर रह रही थी, इसने अपनी इ़ज़्ज़त व इफ़्फ़त (पाकदामनी) की हिफ़ाज़त की। अभी इसने शौहर का घर नहीं देखा, वह ऐश व आराम नहीं देखे जो शौहर के साथ मिलकर इनसान को नसीब होते हैं।

चूँकि यह मेहरूम रही इस वजह से अल्लाह तआ़ला ने इस पर मेहरबानी कर दी कि यह अगर कुंवारेपन में मर जायेगी तो इसको "आख़िरत की शहीद" का दर्जा दिया जायेगा। दुनिया में तो शहीद न कहेंगे मगर क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला शहीदों की क़तार में इसको खड़ा कर देंगे।

देखा! कितनी मेहरबानी और इनायत व रियायत की गई औ़रत के साथ।

शादीशुदा औ़रत के अज्र में इज़ाफ़ा

इससे आगे क़दम बढ़ाईये कि अगर बच्ची की शादी हो गई और अब यह अपने शौहर की फ़रमाँबरदारी करती है और साथ ही अल्लाह तआ़ला की इबादत भी करती है तो फ़ुक़हा (दीन के आ़लिमों) ने मसला लिखा है कि कुंवारी औ़रत एक नमाज़ पढ़ेगी तो एक नमाज़ का सवाब मिलेगा, और शादीशुदा होने के बाद नमाज़ पढ़ेगी तो इक्कीस नमाज़ों का सवाब अ़ता किया जायेगा।

किस लिये? इसलिये कि अब उस पर दो ख़िदमतें ज़रूरी हो गईं- एक शौहर की ख़िदमत और दूसरी अल्लाह तआ़ला की इबादत। जिसकी वजह से दो बोझ पड़ गये। जब यह शौहर की ख़िदमत करते

हुए अल्लाह की इबादत करेगी तो अल्लाह तआ़ला उसके अज्र व सवाब को बढ़ा देंगे।

देखा, नमाज़ एक पढ़ेगी मगर सवाब इक्कीस नमाज़ों का पायेगी। अल्लाह तआ़ला ने यूँ उसके साथ नर्मी और मेहरबानी फ़रमा दी।

अल्लाह तआ़ला की सिफ़ारिश

दाम्पत्य ज़िन्दगी में अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन पाक में मर्दों से औरतों के बारे में सिफ़ारिश की है, औरतों के बारे में फ़रमायाः

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ

तुम्हें औरतों के साथ अच्छे तरीक़े से ज़िन्दगी गुज़ारनी है।

देखिये! आज किसी की सिफ़ारिश उसकी बहन करती है। किसी की सिफ़ारिश उसकी माँ करती है। किसी की सिफ़ारिश उसकी ख़ाला करती है। किसी की सिफ़ारिश उसकी फूफी करती है। किसी की सिफ़ारिश उसके दूसरे रिश्तेदार और परिजन करते हैं, लेकिन औरतों की सिफ़ारिश अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त अपने क़ुरआन में फ़रमा रहे हैं। फ़रमाया ऐ मर्दो! तुम्हें औरतों के साथ अच्छे अख़्लाक़ और अच्छे अन्दाज़ के साथ ज़िन्दगी बसर करनी है।

गर्भवती औरत पर अल्लाह की मेहरबानी

अगर यह औरत अपने शौहर के साथ अच्छे अन्दाज़ में ज़िन्दगी बसर कर रही है और उसके बाद इस औरत को उम्मीद लग गई। यह गर्भवती (Pregnant) हो गई तो हदीस पाक का मफ़हूम है कि जिस लम्हे उसको हमल हुआ उसी लम्हे अल्लाह तआ़ला उस औरत के पिछले गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

किस लिये? इसलिये कि एक मुद्दत तक यह बिल्कुल बीमारी में गुज़ारेगी। चूँकि गर्भ का ज़माना औरत के लिये बीमारी का ज़माना हुआ करता है। इसलिये अल्लाह तआ़ला ने यह मेहरबानी फ़रमा दी

कि जैसे ही उसके सर पर बोझ पड़ा उसी लम्हे अल्लाह ने उसकी ज़िन्दगी के पिछले गुनाहों को माफ़ कर दिया।

गर्भ के दौरान कराहने पर अज्र

अब अगर यह अपने बच्चे को पेट में लिये हुए फिर रही है और घर के कामकाज भी कर रही है और थकन की वजह से इसकी ज़बान से कराहने की आवाज़ निकलती है जैसे "हूँ-हूँ" की आवाज़ निकलती है तो हदीस में आता है कि उसकी ज़बान से तो "हूँ-हूँ" की आवाज़ निकलेगी लेकिन अल्लाह पाक फ़रिश्तों को फ़रमाते हैं कि मेरी यह बन्दी एक बड़ा बोझ उठाये हुए है और उस बोझ उठाने की ज़िम्मेदारी को यह पूरा कर रही है, इसलिये तकलीफ़ से उसकी ज़बान से "हूँ-हूँ" की आवाज़ निकल रही है, तुम उसकी इस आवाज़ की जगह "सुब्हानल्लाह" "अल्हम्दु लिल्लाह" "अल्लाहु-अकबर" कहने का सवाब उसके नामा-ए-आमाल में लिख दो।

ज़बान से तो "हूँ-हूँ" निकलेगा मगर नामा-ए-आमाल में "सुब्हानल्लाह" "अल्हम्दु लिल्लाह" कहने का अज्र लिखा जायेगा।

पैदाईश के दर्द पर अज्र व सवाब

फिर जब बच्चे की पैदाईश का वक़्त क़रीब हुआ तो पैदाईश के दर्द महसूस हो रहे हैं। वे दर्द ऐसे होते हैं कि दर्द उठा फिर ठहर गया, फिर उठा फिर ठहर गया।

हदीस पाक में आता है कि हर बार जब भी औ़रत को दर्द महसूस होता है, उसके बदले में अल्लाह तआ़ला उसको एक अ़रबी नस्ल के गुलाम को आज़ाद करने का सवाब अ़ता फ़रमाते हैं। हर दर्द पर एक अ़रबी नस्ल का गुलाम आज़ाद करने का सवाब उसके नामा-ए-आमाल में लिखा जाता है। जबकि दूसरी हदीसों में आता है कि जिसने किसी एक गुलाम को आज़ाद किया तो अल्लाह तआ़ला उसको जहन्नम से बरी फ़रमा देते हैं।

अब देखिये कि औरत के साथ कितनी नर्मी का मामला किया गया कि हर-हर दर्द उठने पर एक अरबी नस्ल के गुलाम को आज़ाद करने का सवाब लिखा गया है।

ज़चगी के दौरान मरने वाली औरत

अगर बच्चे की पैदाईश के दौरान यह औरत मर गई तो हदीस पाक में आता है कि यह औरत शहीद मरी। क़ियामत के दिन इसको शहीदों की क़तार में खड़ा किया जायेगा।

बच्चे की पैदाईश पर माँ को इनाम

अगर बच्चा सही पैदा हो गया, ज़च्चा बच्चा ख़ैरियत से हैं तो अब हदीस पाक का मफ़हूम है कि अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को हुक्म देते हैं जो उस औरत से आकर कहता है:

"ऐ माँ! अल्लाह तआला ने तुझे गुनाहों से ऐसे पाक कर दिया जैसे तू उस दिन पाक थी जब तू अपनी माँ के पेट से पैदा हुई थी"।

देखा! अगर उसने अपने बच्चे की ख़ातिर यह तकलीफ़ उठाई, बच्चे को जन्म दिया तो अल्लाह तआला ने इसका कितना बड़ा अज्र दिया कि उसके पिछले गुनाहों को इस तरह धो दिया गया कि जिस तरह वह अपने माँ के पेट से पैदा हुई थी, और उस दिन मासूम (बेगुनाह) थी। अल्लाहु अकबर।

लफ़्ज़ "अल्लाह" सिखाने पर अज्र

अगर यह औरत अपने बच्चे की अच्छी तरबियत करती है, उसको अल्लाह-अल्लाह का लफ़्ज़ सिखाती है तो हदीस पाक का मफ़हूम है कि जो बच्चा अपनी ज़िन्दगी में सबसे पहले अपनी ज़बान से "अल्लाह" का लफ़्ज़ निकालता है तो अल्लाह तआला माँ-बाप के पिछले गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

यह कितना आसान काम है कि जब बच्चे को उठाया तो "अल्लाह" का लफ़्ज़ कहा। आज हमारी बहू-बेटियाँ बच्चे के सामने मम्मी का लफ़्ज़ कहेंगी, पापा का लफ़्ज़ कहेंगी और कोई ज़्यादा मॉडर्न होगी तो वह कहेगी: Twinkle, Twinkle Little Star.

इस मसले का पता नहीं कि अगर हम इस बच्चे के सामने "अल्लाह-अल्लाह" का लफ़्ज़ पढ़ा करेंगे और इस बच्चे ने सबसे पहले अपनी ज़बान से अल्लाह का लफ़्ज़ बोला तो अल्लाह तआ़ला हमारे पिछले तमाम गुनाहों को माफ़ कर देंगे।

बच्चे को नाज़िरा क़ुरआन पढ़ाने की फ़ज़ीलत

अगर उस औरत ने बच्चे को क़ुरआन पाक पढ़ाने के लिये भेजा यहाँ तक कि वह बच्चा क़ुरआन पाक नाज़िरा (देखकर) पढ़ गया तो जिस लम्हे वह नाज़िरा क़ुरआन पाक मुकम्मल करेगा अल्लाह तआ़ला उसी वक़्त उसके माँ-बाप के गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे।

क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ कराने की फ़ज़ीलत

अगर बेटे या बेटी को क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ करने के लिये डाला और वह हाफ़िज़ बन गया या बेटी हाफ़िज़ा बन गई तो हदीस पाक का मफ़हूम है कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसके माँ-बाप को नूर का ऐसा ताज पहनायेंगे जिसकी रोशनी सूरज की रोशनी से भी ज़्यादा होगी। बल्कि सूरज किसी घर में आ जाये तो उस घर में इतनी रोशनी नहीं होगी जितनी कि उस नूर के बने हुए ताज की रोशनी होगी।

लोग हैरान होंगे, वे पूछेंगे कि यह कौन हैं? उनको कहा जायेगा कि ये तो अंबिया भी नहीं, शहीद लोग भी नहीं, बल्कि ये वे ख़ुशनसीब (भाग्यशाली) माँ-बाप हैं जिन्होंने अपने बेटे या बेटी को क़ुरआन पाक का हिफ़्ज़ कराया था। आज अल्लाह तआ़ला ने नूर के बने हुए ताज उनके सरों पर रख दिये हैं। देखा! औरत को

क़दम-क़दम पर अज्र व सवाब मिल रहे हैं।

घरेलू कामकाज पर अज्र

औरत अपने घर के कामकाज करती है तो कामकाज करने पर भी अज्र व सवाब दिया जाता है। मिसाल के तौर पर कौनसी औरत है जो घर के अन्दर सफ़ाई का काम नहीं करती, घर के अन्दर अपने कपड़े नहीं धोती या घर के अन्दर खाना नहीं पकाती? ये काम तो सब औरतें ही घर में करती हैं। इस पर भी औरत को सवाब अता किया जाता है।

एक हदीस पाक अर्ज़ कर रहा हूँ। फ़रमाया गया कि जो औरत अपने शौहर के घर में कोई बे-तरतीब पड़ी हुई चीज़ उठाकर तरतीब के साथ रख देती है तो अल्लाह तआला एक नेकी अता फ़रमाते हैं, एक गुनाह माफ़ फ़रमाते हैं और जन्नत में एक दर्जा बुलन्द फ़रमा देते हैं। अब औरतें कितनी चीज़ों को तरतीब से घर में रखती हैं, किचन की चीज़ों को ही ले लें तो मेरा ख़्याल है कि रोज़ाना पचास चीज़ों को तो तरतीब से रखती ही होंगी।

नीयत की ख़राबी

औरतों को नीयत करने का पता नहीं होता कि हमको किस नीयत से काम करना है। आज औरतें किस नीयत से घरों को साफ़ रखती हैं? ओ जी! लोग क्या कहेंगे। ओ जी! लोग कहेंगे यह तो गन्दी ही बनी रहती है। ओ जी! लोग कहेंगे यह तो बेवक़ूफ़ सी है। ओ जी! लोग कहेंगे इसको तो यह सलीक़ा ही नहीं है। जब औरत इस नीयत के साथ घर को साफ़-सुथरा रखेगी तो उसे ज़र्रा बराबर भी सवाब नहीं मिलेगा। इसलिये कि उसने तो लोगों को दिखाने के लिये काम किया।

अपनी नीयत ठीक करें

नीयत ठीक करना, एक मुस्तक़िल मसला है। आज औरतों को

नीयत का ठीक करना ही नहीं सिखाया जाता कि किस नीयत के साथ उन्हें सफ़ाई करनी है। याद रखें कि नीयत ठीक होगी तो सवाब मिल जायेगा, नीयत ठीक नहीं होगी तो सवाब नहीं मिलेगा।

मिसाल

नीयत का ठीक करना चूँकि एक अहम मसला है इसलिये इसको एक मिसाल से वाज़ेह (स्पष्ट) किया जाता है।

उलेमा ने लिखा है कि अगर कोई आदमी घर बनाये और कमरे के अन्दर खिड़की लगवाये, रोशनदान बनवाये मगर नीयत यह हो कि मुझे इसमें से हवा आयेगी और रोशनी आयेगी। अब उस आदमी को हवा और रोशनी तो मिलेगी मगर सवाब बिल्कुल नहीं मिलेगा। इसलिये कि जब उसने नीयत ही हवा और रोशनी की की, तो वह चीज़ उसको मिल गयी।

मगर एक दूसरा आदमी अपना कमरा बनवाता है, उसमें खिड़की या रोशनदान लगवाता है और नीयत यह करता है कि मुझे इसमें से अज़ान की आवाज़ कमरे में सुनाई दिया करेगी तो उलेमा ने लिखा है कि उसको इस पर अज्र व सवाब भी मिलेगा। हवा और रोशनी तो उसको मुफ़्त में मिल जायेगी।

दूसरी मिसाल

एक और मिसाल समझें। एक औरत घर में खाना पका रही है। अब खाना बनाते हुए उसने सालन में एक घूँट ज़्यादा पानी डाल दिया तो उलेमा ने मसला लिखा है कि जितना पानी मुनासिब था घर के सब लोगों के लिये, उतना पानी डालने के बाद अगर वह एक घूँट पानी और डाल देती है, इस नीयत के साथ कि शायद कोई मेहमान आ जाये, शायद हमें किसी पड़ोसी को खाना देना पड़ जाये। इस नीयत के साथ उसने अगर एक घूँट पानी सालन में डाल दिया। कोई आये या न आये, उस औरत को मेहमान का खाना बनाने का सवाब

अ़ता कर दिया जायेगा।

अब बताईये! कौनसी औ़रत है जो यह सवाब नहीं ले सकती? यह सवाब सब ले सकती हैं, मगर दीन का इल्म न होने की वजह से ये औ़रतें सवाब से मेहरूम रह जाती हैं। इसी लिये तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ وَّمُسْلِمَةٍ

इल्म का हासिल करना हर मर्द और औ़रत पर फ़र्ज़ है।

गोया औ़रतों पर भी फ़र्ज़ है कि वे दीन का इल्म हासिल करें और ये बेचारियाँ दीन से इस क़द्र नावाक़िफ़ रह जाती हैं कि उनको गुस्ल के फ़राईज़ का भी सही पता नहीं होता। मसाईल का सही पता नहीं होता। हालाँकि इतनी अहमियत दी गई है कि जिस तरह मर्दों पर इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है उसी तरह औ़रतों पर भी दीन का इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है।

अच्छी नीयत का फल

आ़म तौर पर घर की सफ़ाई औ़रत इसलिये करती है कि जी लोग क्या कहेंगे? कि बेवक़ूफ़ सी है। लोग कहेंगे इसको ज़रा अ़क़्ल नहीं है। नहीं! अल्लाह की बन्दी! इसलिये सफ़ाई न कर, बल्कि नीयत यह कर ले कि अल्लाह तआ़ला ने ही इरशाद फ़रमाया है किः

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

बेशक अल्लाह तआ़ला तौबा करने वालों से मुहब्बत करता है और साफ़-सुथरा रहने वालों से भी मुहब्बत करता है।

क्या मतलब? मतलब यह कि तौबा करने से दिल की सफ़ाई होती है, वैसे साफ़-सुथरा रहने से बाहर की सफ़ाई होती है। गोया जो आदमी बाहर की सफ़ाई करेगा उससे भी अल्लाह राज़ी, जो दिल की सफ़ाई करेगा उससे भी अल्लाह राज़ी। तो औ़रतों को चाहिये कि अगर घर में झाड़ू दे रही हैं, सफ़ाई कर रही हैं तो नीयत यह कर

लें कि अल्लाह तआ़ला पाकीज़गी और सफ़ाई को पसन्द फ़रमाते हैं। शरीअ़त का हुक्म है कि "सफ़ाई आधा ईमान" है।

तो आप दिल में नीयत यह कर लिया करें कि इसलिये घर की सफ़ाई कर रही हूँ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि पाकीज़गी आधा ईमान है। और पाकीज़ा और साफ़ रहने वालों से अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करते हैं।

आप इस नीयत से घर को चमकाये रखें, नगीना बनाकर रखें, घर के फ़र्नीचर को चमकायें, बरतनों को चमकायें, कपड़ों को धो-धोकर रखें। आपको हर-हर काम पर अज्र व सवाब मिलता चला जायेगा। क्योंकि आपकी नीयत ठीक हो गई है कि आपने अल्लाह की रिज़ा के लिये सब कुछ किया है।

कहने का मतलब यह था कि छोटे-छोटे मसाईल का पता न होने की वजह से बड़े-बड़े अज्र व सवाब से मेहरूम रह जाती हैं। अब बताईये कि जिस औ़रत को इस मसले का इल्म होगा कि मैंने घर की पड़ी हुई किसी भी बे-तरतीब चीज़ को उठाकर तरतीब के साथ रख दिया तो मुझे एक नेकी मिलेगी, मेरा एक गुनाह माफ़ होगा, जन्नत में मेरा एक दर्जा बुलन्द होगा तो ये नेकियाँ सब औ़रतें कमा सकती हैं।

शादी के बाद माँ-बाप से मिलने की फ़ज़ीलत

वह कौनसी बेटी होगी जिसकी शादी हो और वह अपने माँ-बाप को मिलने न आये। सभी बेटियाँ आती हैं, सभी बच्चियाँ आती हैं। मगर नीयत क्या होती है? जी बस मैं अम्मी से मिलने जा रही हूँ। यह नीयत नहीं होती कि इस अ़मल से अल्लाह राज़ी होंगे।

हदीस पाक में आता है कि जिस बच्ची की शादी हो जाये और वह अपने माँ-बाप की ज़ियारत की नीयत कर ले कि मैं अपने माँ-बाप से मिलने जा रही हूँ और शौहर से इजाज़त लेकर जाये और दिल में यह हो कि इस अ़मल से अल्लाह तआ़ला राज़ी होंगे तो

अल्लाह तआ़ला हर क़दम पर उसको सौ नेकियाँ अ़ता फ़रमा देते हैं, सौ गुनाह माफ़ कर देते हैं और जन्नत में सौ दर्जे बुलन्द कर देते हैं।

अब बताईये! एक बेटी अपने माँ-बाप की ज़ियारत के लिये इस नीयत से आ रही है कि इस अ़मल से अल्लाह राज़ी होंगे तो हदीस का मफ़हूम है कि हर क़दम उठाने पर उसे सौ नेकियाँ मिलेंगी, सौ गुनाह माफ़ होंगे और जन्नत में सौ दर्जे बुलन्द कर दिये जायेंगे।

हदीस पाक में आता है कि अगर यह माँ-बाप के पास आई और उनके चेहरे पर उसने अ़क़ीदत की नज़र डाली। मुहब्बत की नज़र डाली, तो अल्लाह तआ़ला हर नज़र डालने पर उसको एक हज या उमरे का सवाब अ़ता फ़रमायेंगे। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा ऐ अल्लाह के नबी! जो आदमी अपने माँ-बाप को बार-बार मुहब्बत और अ़क़ीदत की नज़र से देखे? अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जितनी बार देखेंगे उतनी बार हज या उमरे का सवाब अ़ता किया जायेगा। ये बातें हमें मालूम नहीं होतीं इसलिये हम इनके अज्र व सवाब से मेहरूम रह जाते हैं।

बच्चों की तरबियत में कमी

आज औ़रतें मायें तो बन जाती हैं मगर उनको पता नहीं होता कि बेटे को तरबियत कैसे देनी है। माँ बन गई मगर बेटे को तरबियत कैसे देनी है इसका बिल्कुल पता नहीं होता। उसने ख़ुद ही तरबियत नहीं पाई होती अपने बेटे को क्या तरबियत देगी। आज यही एक बुनियादी वजह है कि हमारे माहौल और समाज में बच्चों की सही तरबियत (पालन-पोषण और अख़्लाक़ व आ़दात की तालीम) नहीं होती। एक वक़्त था कि जब मायें बच्चों की अच्छी तरबियत के लिये ख़ूब कोशिश करती थीं।

सोचने की बात

आज है कोई माँ जो कहे कि मैं बच्चे का यक़ीन अल्लाह के

साथ बनाती हूँ? है कोई माँ जो कहे कि मैं सुबह व शाम खाना खिलाते हुए अपने बच्चे को तर्ग़ीब (प्रेरणा) देती हूँ कि हर हाल में सच बोलना है। इन चीज़ों की तरफ़ तवज्जोह ही नहीं होती। बाप ज़रा सी नसीहत कर दे तो माँ फ़ौरन कहती है कि बड़ा होगा तो ठीक हो जायेगा। हालाँकि बचपन की बुरी आदतें पचपन में (यानी बुढ़ापे तक) भी नहीं छूटतीं। आज तरबियत न होने की वजह से ही आज औलाद जब बड़ी होती है तो वह अपने माँ-बाप से यूँ नफ़रत करती है जैसे कि पाप से नफ़रत की जाती है। माँ अपने मक़ाम को भूल गई।

एक वक़्त था कि जब औरतें सुबह की नमाज़ पढ़ा करती थीं तो बच्चों को अपनी गोद में लेकर कोई सूरः यासीन पढ़ रही होती थी। कोई सूरः वाक़िआ पढ़ रही होती थी। और उस वक़्त बच्चे के दिल में अनवारात उतर रहे होते थे। आज वे मायें कहाँ गईं जो सुबह के वक़्त बच्चे को गोद में लेकर क़ुरआन पढ़ा करती थीं।

आज तो सूरज निकल जाता है, बच्चा भी सोया हुआ है और माँ भी सोई हुई होती है। शाम का वक़्त होता है बच्चे को माँ ने गोद में डाला, उधर सीने से लगाकर दूध पिला रही है साथ ही बैठी ड्रामे देख रही होती है।

ऐ माँ! जब तू ड्रामे में ग़ैर-मेहरम मर्दों को देखेगी, संगीत और गाने सुनेगी और ग़लत काम करेगी और ऐसी हालत में बेटे को दूध पिलायेगी तो बता तेरा बेटा जुनैद बग़दादी (मशहूर बुज़ुर्ग) कैसे बनेगा? बता कि तेरा बेटा अ़ब्दुल-क़ादिर जीलानी (ग़ौसे आज़म) कैसे बनेगा?

यही वजह है कि औलाद के अन्दर नेकी के वे असरात जो माँ-बाप से मुन्तक़िल होने चाहियें, वे मुन्तक़िल नहीं होते। अल्लाह करे कभी कोई दूसरी महफ़िल तरबियत के उनवान (विषय) पर ऐसी हो जिसमें क़ुरआन व हदीस की रोशनी में ज़रा तफ़सील के साथ यह अ़र्ज़ कर दूँ कि औरतें अपने बच्चों को तरबियत कैसे दें।

एक सहाबिया का कुरआन पाक से लगाव

सुनिये और दिल के कानों से सुनिये! जिस तरह मर्द इबादत करके अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त का ताल्लुक़ हासिल कर सकता है इसी तरह औ़रत भी अगर इबादत करे तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त का ताल्लुक़ और उसकी मारिफ़त (पहचान और निकटता) हासिल कर सकती है।

एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने तन्दूर पर रोटियाँ पकाईं और उनको सर पर रखा और चलते हुए कहने लगी। ले बहन! मेरे तो तीन पारे भी मुकम्मल हो गये और मेरी रोटियाँ भी पक गईं। तब पता चला कि ये औ़रतें जितनी देर रोटी पकाने के इन्तिज़ार में बैठी रहती थीं उनकी ज़बान पर कुरआन जारी रहता था। यहाँ तक कि इस दौरान में तीन-तीन पारे कुरआन पाक की तिलावत कर लिया करती थीं।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का ज़ौक़े-इबादत

एक वक़्त था कि औ़रतें सारा दिन घर के कामकाज में मसरूफ़ रहती थीं और जब रात आती थी तो मुसल्ले के ऊपर रात गुज़ार दिया करती थीं।

सैयदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में आता है कि सर्दियों की लम्बी रात थी, इशा की नमाज़ पढ़कर दो रकअ़त नफ़िल नमाज़ की नीयत बाँध ली। तबीयत में ऐसा सुरूर था, ऐसा मज़ा था, कुरआन पाक पढ़ने में ऐसी हलावत (मिठास) नसीब हुई कि पढ़ती रहीं, पढ़ती रहीं, पढ़ती रहीं, यहाँ तक कि जब सलाम फेरा तो देखा कि अब तो सुबह होने को है। तो रोने बैठ गईं और यह दुआ़ करने लगीं ऐ अल्लाह! तेरी रातें भी कितनी छोटी हो गईं कि मैंने दो रकअ़त की नीयत बाँधी और तेरी रात ख़त्म हो गई।

एक वे औ़रतें थीं जिनको रातों के छोटे होने का शिकवा हुआ करता था, एक आज हमारी मायें-बहनें हैं जिनमें क़िस्मत वालियों को ही पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ नसीब होती है।

क़ाबिले-रश्क औ़रतें

एक वक़्त था कि जब शौहर तिजारत के लिये घर से निकला करते थे और उनकी बीवियाँ मुसल्ले पर बैठकर चाश्त की नमाज़ें पढ़ा करती थीं। उनकी बीवियाँ अपने दामन फैलाकर अल्लाह से दुआ़यें माँगती थीं: ऐ अल्लाह! मेरा मियाँ इस वक़्त हलाल रिज़्क़ के लिये मेहनत करने के लिये घर से निकल पड़ा है। उसके रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमा। उसकी सेहत में बरकत अ़ता फ़रमा। उसके काम में बरकत अ़ता फ़रमा। औ़रत रो-रोकर दुआ़ माँग रही होती थी अल्लाह तआ़ला मर्द के काम में बरकत दे देते थे।

कहाँ गईं वे औ़रतें जो घर में बैठकर अपने शौहरों की तिजारत में बरकत के लिये यूँ दुआ़ करती थीं। इस तरफ़ हमारी तवज्जोह नहीं होती। कभी गिले कर रही है, कभी शिकवे कर रही है। साहिब दुआ़ करें, हमारे रिज़्क़ में बरकत नहीं है।

औ़रत घर की ज़ीनत

मुसलमान मुआ़शरे (समाज) में औ़रत घर की मलिका (रानी) का दर्जा रखती है। लिहाज़ा घर के माहौल का दारोमदार औ़रत की दीनदारी पर निर्भर है। औ़रतें अगर नेक तबीयत की होंगी तो बच्चों को भी दीनी रंग से रंग देंगी। पस मुसलमान लड़कियों और औ़रतों की दीनी तालीम और अख़्लाक़ी तरबियत पर ख़ास तौर पर मेहनत की ज़रूरत है। किसी ने सच कहा है "मर्द पढ़ा फ़र्द पढ़ा, औ़रत पढ़ी ख़ानदान पढ़ा"। किसी अंग्रेज़ बुद्धिजीवी का क़ौल है कि "तुम मुझे अच्छी मायें दो, मैं तुम्हें अच्छी क़ौम दूँगा" उम्मते-मुस्लिमा को

आजकल मुसलमान लड़कियों की दीनी तालीम व तरबियत पर मेहनत करने की पहले के मुक़ाबले में ज़्यादा ज़रूरत है, ताकि हमारी आने वाली नस्लें माँ की गोद से ही दीन की मुहब्बत और उम्दा अख़्लाक़ की दौलत पायें, और इस जहान में चाँद-सूरज की तरह नूर बरसायें।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ٥

इसी किताब से......

इस्लाम ने आकर औरत के बारे में ऐसा ख़ूबसूरत अक़ीदा बताया, ऐसा तसव्वुर पेश किया कि लोग हैरान रह गये, फ़रमाया कि देखो!

...... अगर औरत बेटी है तो तुम्हारी इज़्ज़त है।
...... अगर बहन है तो तुम्हारी आबरू है।
...... अगर बीवी है तो तुम्हारी ज़िन्दगी की साथी है।
और अगर माँ है तो उसके क़दमों में तुम्हारे लिए जन्नत है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

जब ईंटें जुड़ती हैं तो मकान बन जाते हैं और जब दिल जुड़ते हैं तो घर आबाद हो जाते हैं। दाम्पत्य ज़िन्दगी का बुनियादी उसूल यही है कि दिल मिले रहें। दिल जुड़े रहेंगे तो घर आबाद रहेगा।

﴾ अज़ इफ़ादात ﴿
हज़रत मौलाना पीर
हाफ़िज़ ज़ुल्फ़क़ार अहमद साहिब
नक़्शबन्दी मुजद्दिदी दामत् बरकातुहुम

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

दाम्पत्य ज़िन्दगी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى. اَمَّا بَعْدُ!

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ وَمِنْ اٰيَاتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً، اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ٥ (سورة الروم)

तर्जुमाः और उसकी निशानियों में से है, यह कि बना दिये तुम्हारे वास्ते तुम्हारी क़िस्म से जोड़े कि चैन से रहो उनके पास, और रखा तुम्हारे दरमियान प्यार और मेहरबानी। बेशक इसमें बहुत सी निशानियाँ (गहरी और पते की बातें) हैं उनके लिये जो सोचते और ग़ौर करते हैं। (सूरः रूम पारा २१)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ٥ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

औरत के बारे में दुनिया की क़ौमों के अक़ीदे

दीने इस्लाम वह दीन है कि जिसने औरत को उसके खोये हुए हुकूक़ वापस दिलाये। दुनिया की तारीख़ पर नज़र दौड़ाई जाये तो यह बात खुलकर सामने आती है कि इस्लाम से पहले इनसानी समाज में औरत के हुकूक़ को पामाल किया जाता था। औरत को उसका जायज़

मक़ाम भी नहीं दिया जाता था।

☆ चुनाँचे फ़्राँस के बारे में आता है कि वहाँ के लोगों का यह अक़ीदा (नज़रिया और तसव्वुर) था कि औ़रत के अन्दर आधी रूह होती है, पूरे इनसान की रूह नहीं होती। यानी औ़रत आधा इनसान है।

☆ चीन के लोगों में औ़रत के बारे में यह तसव्वुर था कि औ़रत के अन्दर शैतानी रूह होती है इसलिये पूरे समाज में फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) की बुनियाद यही बनती है।

☆ जापान के अन्दर यह अक़ीदा था कि औ़रत नापाक होती है इसलिये इसको इबादत की जगह (यानी धार्मिक-स्थल) के अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त नहीं होती थी।

☆ ईसाईयत ने रहबानियत (दुनिया से और सामाजिक ज़िन्दगी से बिल्कुल कट जाने) को गढ़ लिया था। उनके उलेमा यह कहते थे कि दाम्पत्य ज़िन्दगी बसर करना अल्लाह की मारिफ़त (पहचान) हासिल करने में रुकावट है। चुनाँचे उनकी तालीम थी कि मर्द और औ़रत तन्हा ज़िन्दगी गुज़ारें शादी न करें और दुनियावी मामलात से बिल्कुल अलग-थलग रहें। अगर ऐसा करेंगे तो अल्लाह तआ़ला की मारिफ़त नसीब होगी। दाम्पत्य ज़िन्दगी को इस रास्ते की रुकावट समझते थे।

☆ हिन्दुस्ताना के अन्दर अगर किसी जवान औ़रत का शौहर मर जाता तो उसकी बीवी को भी अपने शौहर की लाश के साथ ज़िन्दा आग में जलना पड़ता, जिसे सती होना कहते हैं। मरा तो शौहर मगर औ़रत को ख़ुद जान-बूझकर आग में डाल देते, और उस बेचारी को भी मौत के मुँह में पहुँचा देते।

☆ अ़रब के अन्दर बेटी का पैदा होना बेइज़्ज़ती समझा जाता था। चुनाँचे वे लोग बेटी को पैदा होते ही ज़िन्दा दफ़न कर दिया करते थे।

औरत के बारे में इस्लाम की तालीमात

यह उस वक़्त समाजी ज़िन्दगी की हालत थी। जब अल्लाह के प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया में तशरीफ़ लाये और आपने आकर औरत की असल हैसियत को वाज़ेह किया।

इस्लाम ने आकर औरत के बारे में ऐसा ख़ूबसूरत अ़क़ीदा बताया, ऐसा तसव्वुर पेश किया कि लोग हैरान रह गये, फ़रमाया कि देखो!

...... अगर औ़रत बेटी है तो तुम्हारी इ़ज़्ज़त है।

...... बहन है तो तुम्हारी आबरू है।

...... अगर बीवी है तो तुम्हारी ज़िन्दगी की साथी है।

और अगर माँ है तो उसके क़दमों में तुम्हारे लिए जन्नत है।

दीन इस्लाम ने दाम्पत्य ज़िन्दगी के साथ अल्लाह तआ़ला की निकटता हासिल करने की तर्ग़ीब दी, जबकि ईयाईयत के अन्दर तो यह यक़ीन था कि अगर कोई आदमी अल्लाह तआ़ला की निकटता हासिल करना चाहता है तो उसे मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ात से पूरी तरह परहेज़ करना चाहिये। चुनाँचे औ़रतें (NUNS) बनकर रहती थीं (ग़ैर शादीशुदा)। यह गोया इस बात की अ़लामत थी कि औ़रत और मर्द का मिलाप कोई पसन्दीदा चीज़ नहीं। सारी उम्र औ़रतें कुंवारी रहतीं और यह कहा जाता कि यह मरियम-सिफ़त बनकर रह रही है और मर्द 'राहिब' बनकर रहते।

इस्लाम ने आकर कहा:

لَا رَهْبَانِيَّةَ فِى الْإِسْلَامِ

इस्लाम के अन्दर 'रहबानियत' नहीं है। कि इनसान माहौल और समाज से कटकर एक कमरे में बन्द हो जाये। मुसल्ले पर इबादतें करे और तस्बीह के दाने घुमाता रहे और समझे कि मुझे इस तरह अल्लाह की निकटता मिलेगी।

दीन इस्लाम ने कहा कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ जो रास्ता जाता है वह जंगलों और ग़ारों से होकर नहीं जाता बल्कि इन गली-कूचों, बग़ीचों और बाज़ारों से होकर जाता है। इनसान अगर समाज में रहे और उस पर जो भी दूसरों के हुक़ूक़ आयद होते हैं उनको अदा करे तो ऐसे शख़्स को अल्लाह की निकटता जल्दी नसीब होगी। चुनाँचे क़ुरआन पाक में फ़रमायाः

وَرَهْبَانِيَّةَ ، ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ

कि रहबानियत की बिदअ़त तो उन्होंने ईजाद कर ली थी, अल्लाह तआ़ला ने तो उनको हुक्म नहीं दिया था। (सूरः हदीद)

बल्कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ

ऐ महबूब! हमने आपसे पहले भी रसूल भेजे।

وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً

और हमने उनके लिए भी बीवियाँ और औलादें बनाईं।

(सूरः रअ़द)

घर कैसे आबाद होते हैं?

जब ईंटें जुड़ती हैं तो मकान बन जाते हैं और जब दिल जुड़ते हैं तो घर आबाद हो जाते हैं। दाम्पत्य ज़िन्दगी का बुनियादी उसूल यही है कि दिल मिले रहें। दिल जुड़े रहेंगे तो घर आबाद रहेगा।

अल्लाह तआ़ला ने अम्माँ हव्वा अ़लैहस्सलाम को हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के सर से नहीं बनाया कि कहीं तुम औ़रतों को सर पर न बैठा लो। और न उनको पाँव से बनाया कि तुम उन्हें पाँव की जूती समझने लग जाओ। बल्कि आदम अ़लैहिस्सलाम की पस्ली से अम्माँ हव्वा को निकाला, इसमें दो हिक्मतें थीं एक तो यह कि यह तुम्हारे दिल के क़रीब से निकाली गयी, लिहाज़ा तुम अपनी बीवी को अपने दिल के क़रीब रखो। और दूसरी हिक्मत यह कि दिल की हिफ़ाज़त

पस्लियों से होती है, तो मर्द की हिफ़ाज़त औरत की वजह से होती है। इसलिये जो हज़रात अपनी बीवियों के साथ मुहब्बत व प्यार से रहते हैं वे ग़ैर-मेहरम औरतों के फ़ितनों से महफ़ूज़ रहते हैं।

निकाह का हुक्म

तो जब अल्लाह के पैग़म्बरों ने भी बीवियाँ और औलादों के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी तो फिर बन्दा कैसे कह सकता है कि दाम्पत्य ज़िन्दगी अल्लाह की मारिफ़त हासिल करने में रुकावट होती है। चुनाँचे कुरआन मजीद में हुक्म दिया गया है:

فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ (سورة النساء)

कि तुम निकाह करो औरतों में से जो तुम्हें पसन्द हों।

और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

اَلنِّكَاحُ مِنْ سُنَّتِیْ

"निकाह मेरी सुन्नत है"

और दूसरी हदीस में फ़रमाया:

فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِیْ فَلَيْسَ مِنِّیْ

"जो मेरी सुन्नत से मुँह फेरेगा वह आदमी मुझसे नहीं होगा" यानी उम्मत से ही वह बन्दा ख़ारिज कर दिया जायेगा।

यहाँ पर एक मसला सुन लीजिए। आम तौर पर लोग कहते हैं कि जी निकाह करना तो सुन्नत है। तो देखिए जिस बन्दे को यह यकीन हो कि मैं अगर निकाह नहीं करूँगा तो ज़िना (बदकारी) का मुर्तकिब हो जाऊँगा, उस बन्दे के लिए निकाह का करना फ़र्ज़ है। सुन्नत उस बन्दे के लिए है जो बन्दा यह समझे कि अगर मैंने निकाह न भी किया फिर भी मैं गुनाह से बचकर ज़िन्दगी गुज़ार लूँगा। लिहाज़ा हम जैसे आम लोग निकाह को अपने लिए सुन्नत न समझें, बल्कि फ़र्ज़ समझें। यह सौ फ़ीसद पक्की बात है कि जहाँ निकाह नहीं होगा वहाँ ज़िना होगा। अल्लाह तआला ने इसी लिए निकाह की अहमियत

को बयान फ़रमा दिया और हुक्म दे दिया कि तुम इस पर अमल करो।

अंबिया-ए-किराम की सुन्नतें

चुनाँचे हदीस पाक में आता है कि चार चीज़ें रसूलों की सुन्नतें हैं यानी सब अंबिया ने इन पर अ़मल किया हैः

१ः- हया
२ः- खुशबू का इस्तेमाल करना
३ः- मिस्वाक का इस्तेमाल करना
४ः- और निकाह करना।

पाँच चीज़ों में जल्दी कीजिए

नबी अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को फ़रमाया ऐ अ़ली! तुम पाँच चीज़ों में जल्दी करनाः

१ः- नमाज़ का वक़्त हो जाये तो नमाज़ अदा करने में जल्दी करना। यानी उसको अपने मुस्तहब वक़्त में अदा कर लेना। आ़म तौर पर औ़रतें इसमें सुस्ती कर जाती हैं। घर के कामकाज की वजह से सोचती रहती हैं और फिर कई बार काम में ऐसी उलझ जाती हैं कि फिर ज़ेहन से बात ही निकल जाती है कि मेरी नमाज़ भी बाक़ी है। या फिर वक़्त बे वक़्त नमाज़ें पढ़ती हैं। लिहाज़ा उसूल यह बनायें कि जब नमाज़ का वक़्त हो जाये तो पहले नमाज़ पढ़ें फिर बाद में और कोई काम करें।

२ः- जब कोई आदमी मर जाये तो उसको दफ़न करने में जल्दी करना।

३ः- जब आदमी पर क़र्ज़ हो तो उसको अदा करने में जल्दी करना। आजकल कारोबारी लोग इस मामले में भी बहुत ज़्यादा गुनाह के मुर्तकिब होते हैं। वे क़र्ज़ को क़र्ज़ ही नहीं समझते, शायद माले-ग़नीमत (लूट का माल) समझते हैं।

४ः- कोई गुनाह हो जाये तो तौबा करने में जल्दी करना।

५ः- और निकाह करने में जल्दी करना।

चुनाँचे जिन कौमों में निकाह जल्दी नहीं होता उन कौमों में बदकारी और बुराई ज़्यादा होती है। इज़्ज़त और आबरू बचाने के लिए अपने वक़्त पर जल्दी शादी का हो जाना यह ज़्यादा बेहतर रहता है।

हमारे बुज़ुर्ग इसके बारे में बहुत एहतियात करते थे, बल्कि पहले ज़माने में ऐसा होता था कि अगर कोई आदमी ऐसा होता जिसके घर में जवान बेटी होती और वह उसकी शादी में टाल-मटोल कर रहा होता तो उस आदमी के कुँए से लोग पानी भी नहीं पिया करते थे, कि इसने तो जवान बेटी को घर बैठाया हुआ है। लिहाज़ा यह तो एक फ़र्ज़ है जिसका अदा करना माँ-बाप की ज़िम्मेदारी होती है। इसमें हमेशा जल्दी करनी चाहिये।

यह बात ज़ेहन में रखिये कि जब बच्चे जवान हो जाते हैं और माँ-बाप उनके निकाह में देर कर रहे होते हैं, महज़ इस वजह से कि दहेज तैयार नहीं, या फ़लाँ चीज़ तैयार नहीं, या बच्चे अभी तालीम हासिल कर रहे हैं, इन वुजूहात से अगर देर की, अब वे जवान बच्चे जो भी गुनाह करेंगे वह माँ-बाप के नामा-ए-आमाल में भी लिखा जायेगा।

पाँच नेमतें

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते थे कि जिस इनसान को पाँच नेमतें मिल गईं वह समझे कि मुझे पूरी दुनिया की तमाम नेमतें मिल गईं:

(१) शुक्र करने वाली ज़बान।
(२) ज़िक्र करने वाला दिल।
(३) मशक़्क़त उठाने वाला बदन।
(४) वतन की रोज़ी।
(५) नेक बीवी।

निकाह के उद्देश्य

शरीअ़त ने कहा कि मर्द औ़रत के ताल्लुक़ात के लिए निकाह किया जाये। इसलिए कि निकाह के ज़रिये औ़रत के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त हो जाती है।

जब कभी औ़रत का निकाह होता है तो सबसे पहले तो उसका मेहर बाँधा जाता है। गोया शौहर के ज़ेहन में यह बात हो कि औ़रत के मेरे ऊपर कुछ हुक़ूक़ हैं।

दूसरा हक़ यह कि वह औ़रत मर्द की विरासत में हिस्सा पाती है। गोया शरीअ़त ने औ़रत को यह सुरक्षा {PROTECTION} दे दी कि लोग उससे वैसे ही फ़ायदा उठाते न फिरें कि उसको कमज़ोर समझकर फ़ायदा उठा कर फिर अपने से जुदा कर दें, बल्कि यह उनकी ज़िम्मेदारी है और उनकी विरासत में औ़रत का हिस्सा हो। लिहाज़ा मर्दों को चाहिये कि ज़िम्मेदारियाँ निभायें, इसको खेल-तमाशा न समझते रहें।

जब निकाह हो तो नबी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया "तुम निकाह की आपस में ख़ूब चर्चा करो" ताकि लोगों को पता चल जाये कि आज से फ़लाँ लड़का और फ़लाँ लड़की मियाँ-बीवी बनकर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे। इसका फ़ायदा यह है कि छुपकर निकाह करने से मना कर दिया गया। इसलिए कि दौलत वाले, माल वाले, बहुत सी बार अपनी ख़्वाहिशें पूरी करने के लिए चुपके-चुपके खेल खेलते हैं। शरीअ़त ने इसको मना फ़रमा दिया कि निकाह जब करो तो उसको सब पर ज़ाहिर करो। इसलिए निकाह का इतना अज्र बताया गया कि अगर कोई आदमी अभी निकाह नहीं करता तो उसको एक नमाज़ पढ़ने पर एक नमाज़ का सवाब मिलता है, और जिसने निकाह कर लिया तो उसको अल्लाह तआ़ला एक नमाज़ पढ़ने पर इक्कीस नमाज़ों का सवाब अ़ता फ़रमाते है। बाज़ रिवायतों में है कि बयालीस नमाज़ों का

सवाब मिलता है। यह इबादत का दर्जा क्यों बढ़ गया? इसलिए कि अब शादी के बाद बीवी पर मियाँ के हुकूक़ और मियाँ पर बीवी के हुकूक़ आयद हो गये। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जब यह इनसान बन्दों के भी हुकूक़ अदा कर रहा है और मेरे भी हुकूक़ अदा कर रहा है तो मैं अपनी इबादत और बन्दगी का सवाब कई गुना ज़्यादा कर देता हूँ।

निकाह में किस चीज़ का लिहाज़ करना चाहिए

निकाह करते हुए कुछ चीज़ें लड़की में देखनी चाहियें और कुछ चीज़ें लड़के में देखनी चाहियें। शरीअ़त का यह हुस्न (ख़ूबी और कमाल) है कि हमारे दीन की उसने हर चीज़ को खुला-धुला (यानी बिल्कुल स्पष्ट) हमारे सामने रख दिया है। अगर हम उन चीज़ों को ढूँढ़ेंगे जिन चीज़ों को शरीअ़त ने बताया है तो हमारी ज़िन्दगी अच्छी गुज़रेगी। और जब उससे हटकर फ़क़त अपनी ख़्वाहिशों को पूरी करने की नज़र से ढूँढ़ेंगे तो फिर पूरी ज़िन्दगी रोते फिरेंगे।

चुनाँचे नबी अ़लैहिस्सलाम ने बीवी के बारे में फ़रमाया, इस रिवायत को इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से नक़ल किया है:

تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ لِأَرْبَعٍ لِمَالِهَا وَلِحَسَبِهَا وَلِجَمَالِهَا وَلِدِيْنِهَا فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّيْنِ تَرِبَتْ يَدَاكَ

कि औ़रत से चार वुजूहात (कारणों या ख़ूबियों) की बिना पर निकाह किया जाता है:

१:- उसके माल की वजह से कि लड़की मालदार है, उससे निकाह करके हमें भी माल मिल जायेगा।

२:- या उसके ख़ानदान की शोहरत की वजह से कि बड़े ख़ानदान की है, मेरा निकाह उससे हो जायेगा तो मुझे भी शोहरत मिल जायेगी।

३:- या उस लड़की के हुस्न व जमाल (सुन्दरता) की वजह से उससे निकाह किया जाता है।

४:- या उस लड़की की दीनदारी की वजह उससे निकाह किया जाता है। तो ये चार बातें हुई (१) माल (२) ख़ानदान और नसब (३) सुन्दरता (४) दीन। नबी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "तेरे हाथ मिट्टी से भर जायें, तू कामयाब हो जा दीनदार को कुबूल करके" लिहाज़ा अगर दीनदारी को सामने रखकर अपनी बीवी का इन्तिख़ाब (चयन) किया जायेगा तो इस पर कामयाबी का वायदा किया गया है।

नबी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

اَلدُّنْيَامَتَاعٌ وَخَيْرُمَتَاعِ الدُّنْيَا اَلْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ

कि दुनिया एक दौलत और मताअ़ है, और दुनिया की बेहतरीन नेमत और दौलत नेक बीवी है।

एक और हदीस में अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया:

مَااسْتَفَادَ الْمُؤْمِنُ بَعْدَتَقْوَاللّٰهِ خَيْرًالَّهُ مِنْ زَوْجَةٍ صَالِحَةٍ (مشكوة شريف)

कि मोमिन अल्लाह तआ़ला का तक़वा (डर और परहेज़गारी) हासिल करने के बाद सबसे ज़्यादा फ़ायदा हासिल करता है अपनी नेक बीवी से।

नेक बीवी की पहचान

१. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नेक बीवी की यह पहचान है कि "अगर शौहर उसको किसी बात का हुक्म दे तो वह औ़रत उसकी इताअ़त करे" यानी उसका हुक्म माने। ज़रा इस बात को दिल के कानों से सुनें कि नेक बीवी की पहचान नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क्या बता रहे हैं? नबी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

اِنْ اَمَرَهَا اَطَاعَتْهُ وَاِنْ نَظَرَ اِلَيْهَا اَسَرَّتْهُ وَاِنْ قَسَمَ عَلَيْهَا لَاَبَرَّتْهُ وَاِنْ غَابَ عَنْهَا نَصَحَتْهُ فِيْ نَفْسِهَا وَمَالِهَا (ابن ماجة)

यानी अगर शौहर उसकी तरफ़ देखे तो देखने से ख़ुश हो जाये। और अगर वह क़सम खाकर कोई बात करे कि तुम यह काम ज़रूर करो तो वह शौहर की क़सम को पूरा कर दे। और अगर वह अपनी बीवी से दूर जाये (यानी सफ़र में जाये, परदेस में जाये, दुकान पर जाये) तो औ़रत अपनी ज़ात (इ़ज़्ज़त व आबरू) और उसके माल की हिफ़ाज़त करे। तो गोया औ़रत की यह ज़िम्मेदारी है, ऐसा नहीं किः

जिसका था डर, वह नहीं है घर, अब जो चाहे कर

यह बात ज़ेहन में रखिये कि माल की ऊँच-नीच तो बरदाश्त हो जाती है लेकिन इ़ज़्ज़त व आबरू में शौहर,कभी ऊँच-नीच बरदाश्त नहीं कर सकता। अक्सर औ़रतों के जो घर ख़राब होते हैं वे ऐसी ही बेएहतियातियों की वजह से होते हैं, इसलिये औ़रत को चाहिये कि वह अपनी पाकदामनी का ख़्याल रखे, उसकी वजह से उसकी दुनिया भी अच्छी रहेगी और आख़िरत में भी अल्लाह तआ़ला उसको कामयाब फ़रमायेंगे।

अगर कोई औ़रत नबी अ़लैहिस्सलाम की शफ़ाअ़त चाहती है, कामयाबी चाहती है तो वह दुनिया में नेक बीवी बनकर रहे। सबसे पहली बात यह कि उसका शौहर अगर उसको किसी काम का हुक्म दे, यहाँ काम से मुराद नेकी का काम शरीअ़त की हदों के अन्दर रहते हुए है, इसका यह मतलब नहीं कि शौहर कहे कि तुम बेपर्दा फिरो तो उसकी यह इताअ़त करे, हरगिज़ नहीं। इसलिए कि बहुत से शौहर ऐसे बेग़ैरत होते हैं कि अपनी बीवियों को पर्दा नहीं करने देते, बीवियाँ तो चाहती हैं कि पर्दा करें और यह उनको बेपर्दा करके उनका हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती) लोगों को दिखाते फिरते हैं।

एक बात ज़ेहन में रखिए कि जब किसी चीज़ पर लोगों की

हवस भरी निगाहें पड़ती हैं तो उस चीज़ से बरकत उठ जाती है। जब आप अपनी बीवी को बेपर्दा लेकर जायेंगे और उस पर लोगों की हवस भरी निगाहें पड़ेंगी तो उस बीवी से बरकत निकल जायेगी। लिहाज़ा बेपर्दा औ़रतों से उनके शौहर कभी भी मुत्मईन नहीं होते (यानी संतुष्टि नहीं पाते) उनकी अपनी निगाहें भी हवस भरी होती हैं। हमेशा नेक मर्द अपनी नेक बीवियों से मुत्मईन होते हैं, उनकी हर एतिबार से तसल्ली होती है। दिल को सुकून मिलता है। तो इस बात का ख़्याल रखिये कि जिन हदों और शर्तों का अल्लाह ने हुक्म दिया है उनके अन्दर रहते हुए औ़रत अपने शौहर की इताअ़त (हुक्म का पालन) करने की पाबन्द है।

२. वह औ़रत ऐसी हो कि अगर शौहर उसकी तरफ़ नज़र करे तो वह उसके दिल को खुश कर दे। अब यहाँ से दो बातें निकलती हैं-

(१) यह कि जब इनसान ख़िदमत अच्छी करता है, इताअ़त अच्छी करता है, तो फिर बन्दा बेइख़्तियार उससे मुहब्बत करता है।

(२) औ़रत को घर के अन्दर साफ़-सुथरा अच्छा लिबास पहनकर रहना चाहिये ताकि जब शौहर की नज़र उस पर पड़े तो उसका दिल ख़ुश हो जाये। आ़म तौर पर देखा यह गया है कि औ़रतें दूसरों के घरों में जायेंगी तो दुल्हन की तरह सज-धजकर जायेंगी, और अपने घरों के अन्दर गन्दी मैली-कुचैली बनकर रहेंगी। यह चीज़ भी सुन्नत के ख़िलाफ़ है। शौहर के लिए सजने-संवरने का हुक्म है, ग़ैरों के लिए बनाव-सिंगार इख़्तियार करने का हुक्म नहीं है। इसलिए औ़रत को चाहिये कि साफ़-सुथरी बनकर इस तरह से घर में रहे कि जब भी उसके शौहर की नज़र उस पर पड़े तो उसकी ख़िदमत और वफ़ा की वजह से भी मुहब्बत हो, और उसके साफ़-सुथरा रहने की वजह से भी उसकी तरफ़ मैलान हो।

दीनदार औ़रतों की एक कोताही

आ़म तौर पर दीनदार औ़रतों के अन्दर एक कोताही यह होती है कि वे समझती हैं कि हम तो दीनदार हैं लिहाज़ा वह अपने कपड़ों का बिल्कुल ही ख़्याल नहीं रखतीं। कभी तो इतने मैले होते हैं कि शौहरों का बिल्कुल देखने को दिल नहीं करता, यह चीज़ भी ग़लत है। इसलिए कि साफ़ रहना अल्लाह तआ़ला को पसन्द है। फ़रमायाः

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ٥

अल्लाह तआ़ला तौबा करने वालों से मुहब्बत करते हैं और पाक साफ़ रहने वालों से भी मुहब्बत करते हैं।

जब आप अपने ज़ाहिर को साफ़ करेंगी तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे बातिन को भी पाक-साफ़ फ़रमा देंगे।

लिबास की क़िस्में

लिबास की तीन क़िस्में हैं:

१. ज़ैबाईश (बनना-संवरना

२. आसाईश (यानी आराम वाला लिबास)

३. नुमाईश (यानी दिखावे का लिबास)

१. यह लिबास शरीअ़त ने जायज़ क़रार दिया है।

२. यह लिबास इसलिए होता है कि इसको पहनकर सुकून मिले। ऐसा न हो कि बिल्कुल ही तंग रहे। उठना बैठना बिल्कुल मुश्किल हो जाये। तो ज़ैबाईश वाले लिबास की भी इजाज़त है और आसाईश वाले लिबास की भी इजाज़त है।

३. नुमाईश का लिबास कि जिसे दूसरों को दिखाने के लिए पहना जाये, शरीअ़त ने उसको मना फ़रमाया है कि उसको पहनकर शेख़ी बघारती फिरो। आजकल औ़रतें अपने घरों में तो भंगन की तरह रहती हैं और बाहर दुल्हन की तरह फिरती हैं, यह कितनी अ़जीब बात है।

इसको शरीअ़त ने मना ही फ़रमा दिया। चुनाँचे हुक्म दिया कि औ़रतों के अन्दर ये चन्द ख़ूबियाँ हों-

१. अगर शौहर उसको कोई हुक्म दे तो वह उसको पूरा करे।

२. अगर शौहर उसकी तरफ़ नज़र करे तो वह उसके दिल को खुश कर दे। अब इसका यह मतलब नहीं कि यह सिर्फ़ औ़रत के लिए है, बल्कि शौहर को भी घर के अन्दर साफ़-सुथरा रहना चाहिये।

शौहर को साफ़ रहने का हुक्म

शौहर को भी चाहिये कि वह घर में इस तरह बन-संवर कर रहे कि औ़रत उसकी तरफ़ देखे तो उसके दिल में मुहब्बत का जज़्बा उठे। ऐसा सड़ा हुआ बनकर घर में न रहे कि दूसरे का दिल ही जलता रहे। मर्द यह तो चाहते हैं कि औ़रत घर में साफ़-सुथरी रहे, मगर खुद यह नहीं समझते कि हमें भी ऐसा बनकर रहना चाहिये। अब जब मर्द ही ऐसा है कि उसके जिस्म से बू आती है, उसके कपड़ों से बू आती है, तो फिर औ़रत उसके साथ कैसे मुहब्बत और प्यार के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेगी। तो ये चीज़ें जहाँ औ़रतों के लिए हैं वहाँ मर्द भी यह सोचें कि हमें भी औ़रतों के लिए ऐसा बनकर रहना चाहिये कि अगर मर्द बाहर से घर में आये तो औ़रत को सुकून मिल जाये, उसको यूँ महसूस हो कि मेरे सर का साया आ गया, मेरे ऐबों को ढाँपने वाला, मेरी मुहब्बतों की मेराज, मैं जिसके साथ बेहतरीन ज़िन्दगी गुज़ार सकती हूँ वह हस्ती घर में आ गयी है।

नेक नीयती पर

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुआ़

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया। तबरानी शरीफ़ की रिवायत है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु इसको

रिवायत फ़रमाते हैं:

مَنْ تَزَوَّجَ اِمْرَأَةً لِعِزِّهَا لَمْ يَزِدْهُ اِلَّا ذِلَّةً وَمَنْ تَزَوَّجَهَا لِمَالِهَا لَمْ يَزِدْهُ اِلَّا فَقْرًا وَمَنْ تَزَوَّجَهَا لِحَسَبِهَا لَمْ يَزِدْهُ اللّٰهُ اِلَّا دَنَاءَةً وَمَنْ تَزَوَّجَ اِمْرَأَةً لَمْ يُرِدْ بِهَا اِلَّا اَنْ يَغُضَّ بَصَرَهُ وَيُحْصِنَ فَرْجَهُ وَيَصِلَ رَحِمَهُ بَارَكَ اللّٰهُ لَهُ فِيْهَا وَبَارَكَ لَهَا فِيْهِ

(१) जिसने इस नीयत के साथ किसी लड़की से निकाह किया कि उसकी इज़्ज़त बड़ी है तो अल्लाह तआ़ला नहीं बढ़ाते मगर उसकी ज़िल्लत को।

(२) और जो इसलिए उससे शादी कर रहा है कि उसके पास माल बहुत है तो अल्लाह तआ़ला नहीं बढ़ाते मगर उसके फ़क्र यानी तंगदस्ती को।

(३) और जिसने हसब और उसकी ख़ानदानी शोहरत की वजह से उससे शादी की तो अल्लाह तआ़ला नहीं बढ़ाते मगर उसके ज़लील होने को।

(४) और जिसने इसलिए औ़रत से शादी की कि वह उसके ज़रिये अपनी निगाहों को नीची रख सके और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त कर सके और रिश्ते-नातों को जोड़ सके, तो अल्लाह तआ़ला उस शौहर को बीवी में बरकत अ़ता फ़रमाये और उस औ़रत को शौहर में बरकत नसीब फ़रमाये।

तो निकाह का मक़सद यह होना चाहिये कि मैं पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारूँगा। अपनी निगाहों पर क़ाबू पाऊँगा और रिश्ते-नातों को मैं जोडूँगा जिनको शरीअ़त ने जोड़ने का हुक्म दिया है। जो इन मक़ासिद को सामने रखकर निकाह करेगा उसके लिए अल्लाह के महबूब ने दुआ़ माँगी है।

पसन्दीदा औ़रत कौन?

औ़रत की सिफ़ात में से सबसे बेहतर सिफ़त के बारे में एक बार सहाबा रजियल्लाहु अ़न्हुम में बात चल रही थी। कोई कुछ कह रहे थे,

कोई कुछ कह रहे थे। इसी दौरान हज़रत अली रज़ियल्लाहु अ़न्हु उठकर घर तशरीफ़ ले गये। वहाँ पहुँचकर हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से बात हुई। उनको भी बताया कि आज तो मस्जिद में इस विषय पर गुफ़्तगू हो रही थी। उन्होंने फ़रमाया! मैं बताऊँ कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे पसन्दीदा औ़रत कौन है? फ़रमाया बताईये! उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे पसन्दीदा औ़रत वह है जो न ख़ुद किसी ना-मेहरम की तरफ़ देखे और न कोई ग़ैर-मेहरम उसको देख सके।

यानी इतनी हया वाली हो कि उसकी अपनी ग़लत निगाहें भी ना-मेहरम पर न पड़ें और इतनी पर्दे वाली हो कि ग़ैर-मेहरम भी उसको न देख सके।

जब उन्होंने यह बताया तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु मस्जिद में तशरीफ़ लाये और अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! फ़ातिमा ने अल्लाह की पसन्दीदा औ़रत की दो सिफ़तें बताई हैं। जब उन्होंने ये सिफ़ात बयान कीं तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुस्कुराये और फ़रमायाः

فَاطِمَةُ بِضْعَةٌ مِنِّی

फ़ातिमा तो मेरे दिल का टुकड़ा है।

मालूम हुआ कि जो औ़रत ख़ुद पर्दे वाली हो कि ग़ैर-मेहरम उसको न देख सके और वह ख़ुद भी ग़ैर-मेहरम को न देखने वाली हो, यह औ़रत अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की पसन्दीदा औ़रत है।

फ़ितरी हया

आ़म तौर पर देखा यह गया है कि औ़रतें ग़ैर-मेहरम की तरफ़ ऐसी बुरी नज़र से नहीं देखतीं, जिस तरह से मर्द बुरी नज़र से आ़म औ़रतों की तरफ़ देखते हैं। अल्लाह तआ़ला ने औ़रत के अन्दर फ़ितरी हया रखी है। ज़्यादातर जो औ़रतें नेक होती हैं, दीनदार होती हैं,

उनकी निगाहें पाक होती हैं। वे मर्द की तरफ़ बुरी नज़र से नहीं देखतीं। हाँ जिसकी क़िस्मत ही अल्लाह ख़राब कर दे उसकी तो बात ही कुछ और होती है। लेकिन आ़म तौर पर यह देखा गया है कि औ़रतों के अन्दर अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने यह सिफ़त रखी है कि वे हयादार होती हैं।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी फ़रमाते हैं कि नेक औ़रतें, दीनदार औ़रतें अपनी निगाहों को बचाने वाली होती हैं। जैसे हूरों के बारे में कहा गया है कि वे अपनी निगाहों को बचाने वाली, हटाने वाली होती हैं। फ़रमाते हैं कि हूरों की यह सिफ़त अल्लाह तआ़ला ने दीनदार औ़रतों के अन्दर रखी होती है। वे आ़म तौर पर इधर-उधर नहीं देखतीं, लकिन उनको चाहिये कि वे अपने पर्दे का भी ख़्याल करें। पर्दे का ख़्याल करना मर्द की ज़िम्मेदारी से पहले औ़रत की अपनी ज़िम्मेदारी है। इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने उनको इसका हुक्म दिया है। लिहाज़ा औ़रत यह न कहे कि जी मर्द अपनी निगाहों को क्यों क़ाबू में नहीं करते? नहीं! पहले पर्दे का हुक्म तो आपको दिया जा रहा है कि आप पर्दे में रहें। क़ुरआन पाक में फ़रमाया गया:

وَقَرْنَ فِي بُيُوْتِكُنَّ

यानी औ़रतों को अपने घर में रहना चाहिये।

बेपर्दा औ़रत पर फ़रिश्तों की लानत

औ़रतों को चाहिये कि बग़ैर ज़रूरत के घर से बाहर न निकलें, घर पर ही रहें। ज़रूरत के वक़्त निकलना भी हो तो पर्दे के साथ निकलें। हदीस पाक में आता है कि जब बेपर्दा औ़रत घर से बाहर निकलती है तो अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्ते उस पर लानत करना शुरू करते हैं जब तक कि वह घर वापस नहीं आ जाती। एक तरफ़ तो बेपर्दा फिरती है और दूसरी तरफ़ कहती फिरती है कि मेरी रोज़ी में बरकत नहीं, परेशानियाँ हैं, सुकून नहीं, मैं बहुत ही तंग ज़िन्दगी गुज़ार

रही हूँ। जब तेरे ऊपर अल्लाह के फ़रिश्तों की लानत बरस रही है तो फिर सुकून कहाँ से नसीब हो सकता है? इसलिए इन बातों का बहुत ज़्यादा ख़्याल करना चाहिये।

नेक बीवी की चार सिफ़तें

उलेमा ने लिखा है कि नेक बीवी के अन्दर चार सिफ़तें होती हैं-

(१) उसके चेहरे पर हया हो। याद रखिये कि यह सुर्ख़ी-पावडर से इनसान की सुन्दरता में इज़ाफ़ा नहीं होता, इनसान की सुन्दरता में तो हया की वजह से इज़ाफ़ा होता है। तो जिसके चेहरे पर हया हो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त उसके चेहरे को पुरकशिश (आकर्षक) बना देते हैं।

(२) ज़बान के अन्दर मिठास हो। यानी नरम बोलने वाली हो। जब शौहर से बात करे तो नरम लहजे में बात करे। इसलिए कि आ़म तौर पर जब औ़रतें ग़ैरों से बात करती हैं तो सारे जहान की मिठास उनकी ज़बान में आ जाती है, और जब शौहर से बात करती हैं तो सारे जहान की कड़वाहट उनकी ज़बान में होती है। इसको शरीअ़त ने मना फ़रमा दिया। लिहाज़ा जब शौहर से बात करे तो ज़बान के अन्दर मिठास होनी चाहिये।

(३) दिल के अन्दर नेकी हो, बदी और बुराई न हो।

(४) औ़रत के हाथ हर वक़्त काम में लगे रहते हों। यानी औ़रत घर के कामकाज में, बच्चों और शौहर के कामकाज में लगी रहे। ये चार ख़ूबियाँ नेक और दीनदार औ़रत की पहचान हैं।

शौहर की चन्द सिफ़ात

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी बेटियों के लिए दो शख़्सियतों को पसन्द किया।

(१) हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को।

(२) हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु को।

अब इन दोनों हज़रात के अन्दर आपको जो सिफ़ात नज़र आयेंगी, यूँ समझ लीजिए कि दामाद के अन्दर उन सिफ़ात को देखना चाहिये।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़ूबियाँ

१. अव्वल यह कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को क़राबत-दारी (ख़ून का रिश्ता) थी। लिहाज़ा अगर अपनी बेटी के लिए रिश्तेदारों में कोई बच्चा मिल जाये तो उसको तरजीह दें। इसलिए कि अपने फिर भी अपने होते हैं। ज़िन्दगी साथ गुज़री होती है, कई तरह की रिश्तेदारियाँ होती हैं। मियाँ-बीवी को भी एहसास होता है कि मैं फ़लाँ का बेटा हूँ वह फ़लाँ की बेटी है। तो यह रिश्तेदारी कई बार बहुत से ताल्लुक़ात जुड़े रहने का भी सबब बन जाती है।

तो पहली बात क़राबत (रिश्तेदारी) को देखे, मगर कुछ लोग सिर्फ़ क़राबत ही को देखते हैं, यह भी ग़लत बात है। दीन भी देखना चाहिये और दीनदार होने के बाद चन्द अतिरिक्त सिफ़ात हैं उनको भी देखना चाहिये। तो बेहतर यह है कि अगर कई रिश्ते हों और क़रीबी रिश्ता भी हो तो क़रीबी रिश्ते को तरजीह दी जाये।

२. दूसरी ख़ूबी यह कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अन्दर इल्म था, वह 'बाबुल्-इल्म' (इल्म का दरवाज़ा) थे। इससे मालूम हुआ कि अपनी बेटी के लिए जब रिश्ता ढूँढे तो देख ले कि दामाद जाहिल और अनपढ़ न हो। इतना पड़ा-लिखा हो कि ज़िन्दगी अच्छी गुज़ार सके। बच्ची अगर तालीम-याफ़्ता (शिक्षित) है तो बच्चे को लाज़िमी तौर पर तालीम-याफ़्ता होना चाहिये। यह न हो कि बेटी तो आ़लिमा फ़ाज़िला है और उसके लिए शौहर ऐसा चुना कि जो क़ुरआन पढ़ा हुआ भी नहीं है। इस क़िस्म की बात नहीं होनी चाहिये। इसलिए कि इल्म एक ऐसी चीज़ है जिसकी वजह से इनसान अच्छी ज़िन्दगी

गुज़ारता है।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़ूबियाँ

१. हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को देखिये! अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने उनको इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई थी। इससे मालूम हुआ कि लड़का ऐसा हो कि समाज में उसकी अच्छी इ़ज़्ज़त हो, बदनाम क़िस्म का आदमी न हो।

२. अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु को ग़नी (मालदार) बनाया था। अल्लाह तआ़ला ने उनको इतना माल दिया था जिसको वह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के दीन के रास्ते में ख़र्च करते थे। तो लड़का ऐसा होना चाहिये जिसका रिज़्क़ खुला हो, ताकि बेटी की ज़िन्दगी अच्छी गुज़र सके। लिहाज़ा यह चीज़ भी सामने रहनी चाहिए।

३. हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अल्लाह ने हया (शर्म) दी थी। इतनी हया दी थी कि फ़रिश्ते भी उनसे हया करते थे। इसलिए दामाद को इस नज़र से भी देखना चाहिये कि वह नेकी की ज़िन्दगी गुज़ारने वाला हो, बेहयाईयों के काम करने वाला न हो। लिहाज़ा ये चन्द सिफ़ात अगर रिश्ता करने से पहले देख ली जायें तो बेटी की ज़िन्दगी अच्छी गुज़रेगी।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के पैग़म्बर हैं। उनकी बीवी उनके साथ सफ़र में शरीक हैं, और उम्मीद से (गर्भवती) हैं। उनको सर्दी लग रही थी, चुनाँचे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम ज़रा इन्तिज़ार करो, मैं तुम्हारे लिए आग तलाश करके लाता हूँ।

لَعَلِّیْٓ اٰتِیْکُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَی النَّارِ هُدًی

मैं आपके लिए कुछ आग ले आता हूँ या आग के बारे में कुछ मुझे रहनुमाई मिल जायेगी। (सूरः तॉहा)

मालूम यह हुआ कि शौहर को ऐसा होना चाहिये कि वह बीवी की तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझे। बीवी की तकलीफ़ पर चैन व सुकून की बाँसुरी न बजाये बल्कि जब बीवी तकलीफ़ में थी तो वक़्त के पैग़म्बर भी आग ढूँढते फिर रहे थे। तो शौहर बीवी की राहत की ख़ातिर, या बीवी की परेशानी को दूर करने के लिए अगर इस क़िस्म के काम करेगा तो उसको अंबिया-ए-किराम की सुन्नत पर अ़मल करने का अज्र मिलेगा।

मिज़ाज में संयम होना

शौहर के अन्दर सबसे बड़ी ख़ूबी की बात यह हो कि वह तहम्मुल-मिज़ाज (यानी संयम बरतने वाला) हो। इसकी वजह यह है कि अल्लाह तआ़ला ने घर के बनाने में शौहर को दूसरों के ऊपर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई है। चुनाँचे फ़रमायाः

اَلرِّجَالُ قَوَّامُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ

मर्दों को अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने औ़रतों के ऊपर सरदार बनाया है। यह उनको फ़ज़ीलत दी है।

शरीअ़त का कमाल

अब यह फ़ज़ीलत देने के पीछे हिक्मत क्या थी? मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि औ़रत ज़रा जज़्बाती होती है। आ़म तौर पर जज़्बात में आकर उलटे-सीधे फ़ैसले कर बैठती है। इसी लिए तलाक़ का हक़ भी आ़म तौर पर शौहर के हाथ में रखा जाता है। अगर यह बीवी के हाथ में होता तो नाश्ते में अ़लैहदा तलाक़ मिलती, दोपहर के खाने में दूसरी मिलती और शाम के खाने में तीसरी मिल जाती। इसलिए शरीअ़त ने यह हक़ मर्द के ज़िम्मे दिया कि ज़रा सोच-समझकर क़दम उठायेगा। अपने बच्चों के बारे में सोचेगा, अपने भविष्य के बारे में

सोचेगा। फिर सोच-समझकर फ़ैसला करेगा। तो शौहर से इस बात की आशा की जाती है कि उसके अन्दर संयम हो, बरदाश्त का माद्दा हो। तहम्मुल-मिज़ाजी हो। तहम्मुल-मिज़ाजी कहते हैं कि अगर कोई कठिनाई, दुश्वारी और मुश्किल (PROBLEM) आ जाये तो उसी वक़्त फ़ौरन फ़ैसला न ले, बल्कि सोच-समझकर क़दम उठाये।

लिहाज़ा अगर औ़रत की तबीयत के अन्दर जल्दबाज़ी है कि वह जल्दी जज़्बात में आ जाती है। तो मर्द को चाहिये कि वह तहम्मुल-मिज़ाजी (संयम) का सुबूत दे। इसका नतीजा यह होगा कि घर में खुशहाली की ज़िन्दगी नसीब होगी और मियाँ-बीवी दोनों कामयाब ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे। लिहाज़ा शरीअ़त ने दोनों के हुक़ूक़ एक-दूसरे पर आ़यद कर दिये। मियाँ के हुक़ूक़ बीवी पर और बीवी के हुक़ूक़ मियाँ पर।

आ़म तौर पर देखा गया है कि जिस महफ़िल में मियाँ-बीवी के हुक़ूक़ बयान किये जायें, वहाँ बीवी अपने हुक़ूक़ सुनती है, कि शौहर को मेरे कौनसे हुक़ूक़ पूरे करने चाहियें, और मर्द अपने हुक़ूक़ सुनता है कि बीवी को मेरे कौनसे हुक़ूक़ पूरे करने चाहियें, और घर जाकर दोनों बहस कर रहे होते हैं कि तुमने मेरा यह हक़ नहीं पूरा किया और तुमने मेरा वह हक़ पूरा नहीं किया। यह चीज़ इन्तिहाई ग़लत है, बल्कि शौहर को चाहिये कि वह अपने हुक़ूक़ सुने या न सुने अपनी बीवी के हुक़ूक़ ज़रूर सुने, ताकि उनको अच्छे अन्दाज़ से पूरा कर सके, और बीवी को चाहिये कि वह शौहर के हुक़ूक़ को ज़रूर सुने ताकि वह भी अच्छे अन्दाज़ से उनको अदा कर सके।

अल्लाह तआ़ला का क़ानून

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

فَوَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ٥ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ٥ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ٥

वैल (बड़ी ख़राबी) है नाप-तौल में कमी-बेशी करने वालों के लिए। कि जब वे लोगों से तौल कर लेते हैं तो पूरा-पूरा लेने की कोशिश करते हैं। और जब लोगों को देने का वक़्त आये तो फिर उसमें कमी करते हैं।

एक धोखा

लोग यह समझते हैं कि नाप-तौल में कमी करने वाला दुकान में बैठता है और यह कमी सिर्फ़ नाप-तौल की चीज़ों ही में होती है। नहीं! तराज़ू अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने फ़कत दुकान पर ही नहीं रखी, बल्कि इनसानों के हुकूक़ में भी रखी है। मियाँ-बीवी के हुकूक़ में भी तराज़ू है। आम तौर पर देखा यह गया है कि बीवी यह तो चाहती है कि शौहर मेरी हर ख़्वाहिश पूरी करे और जब शौहर के हुकूक़ पूरा करने का वक़्त आता है तो अगर दिल चाहता है करती है वरना नहीं करती। इसी तरह शौहर भी यही चाहता है कि बीवी मेरी ख़ातिर हर वक़्त बिछी रहे और ऐसी बनकर रहे जैसी मैं चाहता हूँ। और यह नहीं सोचता कि मुझे भी ऐसा बनकर रहना चाहिये जैसे बीवी चाहती है।

तो मियाँ-बीवी को जब एक दूसरे से हक़ लेने का वक़्त आता है तो मियाँ यह चाहता है कि यह पाकदामन बनकर रहे, बापर्दा रहे और उसकी तरफ़ कोई एक आँख भी न देख सके। लेकिन ख़ुद का हाल यह होता है कि ग़ैर-औरतों को देखते फिरते हैं। तो यह नाप-तौल में कमी-बेशी करने वाला है कि जो बीवी से पाकदामनी की उम्मीद और आशा करता है और ख़ुद ग़ैर-औरतों से संबन्ध बढ़ाता फिरता है। यह इनसान इस नाप-तौल में कमी-बेशी करने वाला है।

इसी तरह औरत शौहर से तो हर बात की आशा करती है कि वह मेरी हर ख़्वाहिश पूरी करे, अपना माल ख़र्च करे, मुझे हर तरह का ऐश व आराम पहुँचाये, मगर शौहर की फ़रमाँबरदारी नहीं करती।

पर्दादारी का ख़्याल नहीं रखती। यह औरत नाप-तौल में कमी-बेशी करने वाली है और इन दोनों के लिए अल्लाह ने अज़ाब क्या बताया? "वेल" बताया और वैल कहते हैं बरबादी को। वैल जहन्नम का एक ख़ास हिस्सा है जिसमें अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त इनसानों को अज़ाब देने के लिए आग के सतूनों के साथ बाँध देंगे, और फिर आग के अंगारे होंगे जो उठेंगे और इनसान के दिल के ऊपर बरसेंगे:

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْئِدَةِ (سورة همزة)

वह आग ऐसे चलेगी जैसे गोली जाती है। या मिज़ाईल ठीक निशाने पर जाता है। इस तरह वे अंगारे बन्दे के दिल पर जाकर लगेंगे। अल्लाह तआ़ला यह अज़ाब क्यों देंगे? इसलिए कि उसने दुनिया में दूसरों के दिल को जलाया था, अब जहन्नम में उसके दिल को जलाया जायेगा। तो वैल का तज़किरा अल्लाह तआ़ला ने दो जगह किया- एक दूसरों के ऐबों की तलाश में रहने वाले बन्दे के लिए और दूसरे नाप-तौल में कमी करने वाले के लिए, कि इसमें भी दूसरे बन्दे का दिल जल रहा होता है।

एक वाकिआ

हमने अमेरिका में एक ऐसे आदमी को भी देखा कि जो बीवी को बीच (दरिया के किनारे) ले जाता था और उसको हाथों पर दस्ताने भी चढ़वाता और पाँव के ऊपर उसको जुराबें भी पहनवाता और बाक़ायदा नक़ाब वाला बुर्क़ा पहनाता और ख़ुद उसके साथ अण्डरवेयर (नेकर) पहनकर समन्दर के किनारे वक़्त गुज़ारता।

अब यह कितना बेवक़ूफ़ है कि बीवी से तो आशा करता है कि वह ऐसी बनकर रहे और अपना हाल यह कि नेकर पहनकर दरिया पर फिर रहा है और ग़ैर-मेहरम औरतों को देखता फिर रहा है। यह भी नाइन्साफ़ी है और नाप-तौल में कमी करने वाली बात है। मर्द और औरत के दरमियान तराज़ू है, अल्लाह तआ़ला देखेंगे कि किसने

हुकूक़ की अदायेगी में शरीअ़त की रियायत की है।

जोड़े बनाने का मक़सद

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً. (سورة روم)

और अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से है कि उसने तुममें से तुम्हारे लिए जोड़े बना दिये ताकि तुम उनसे सुकून हासिल कर सको। और तुम्हारे (मियाँ बीवी के) दरमियान अल्लाह तआ़ला ने मवद्दत और रहमत रख दी।

गोया इस्लाम में यह तालीम दी जा रही है कि शादी का बुनियादी मक़सद यह है कि मर्द बीवी के ज़रिये से सुकून पाये और बीवी मर्द के ज़रिये से सुकून पाये। और अगर घर ऐसा हो कि मियाँ-बीवी एक दूसरे की शक्ल देखना भी गवारा न करें बल्कि एक दूसरे के ऐब ढूँढने में लगे रहें तो यह पुरसुकून ज़िन्दगी कैसे होगी? पुरसुकून ज़िन्दगी शरीअ़त की नज़र में कामयाब ज़िन्दगी है। लिहाज़ा हर मर्द और औ़रत देखे कि घर में पुरसुकून ज़िन्दगी है या नहीं?

लफ़्ज़ 'मवद्दत' और 'रहमत' के मायने

दो लफ़्ज़ हैं: एक 'मवद्दत' दूसरा 'रहमत'।

जवानी की उम्र में अगर मियाँ-बीवी किसी वक़्त झगड़ बैठें तो दूसरे वक़्त प्यार भी कर लें। इस मामले को 'मवद्दत' का मामला कहते हैं। लेकिन जब बूढ़े हो जायें तो अब जिन्सी (सैक्सी) तक़ाज़े तो हैं नहीं, लिहाज़ा अब आपस में 'रहमत' का मामला होना चाहिये, कि अब ज़िन्दगी के कई साल मियाँ बीवी की हैसियत से गुज़ार चुके, अब ये बच्चों के माँ-बाप हैं। अब इनको एक-दूसरे का लिहाज़ रखना चाहिये। जिस तरह किसी फ़ैक्ट्री में कोई मज़दूर काम करे।

बीस-पच्चीस साल गुज़ारने के बाद मालिक भी उसके हक़ की रियायत करता है कि उसने इतना वक़्त कारख़ाने में गुज़ारा है, लिहाज़ा उसके लिए 'इस्पेशल बेनीफ़िट्स' (विशेष फ़ायदे) होते हैं। लिहाज़ा शरीअ़त ने कहा कि मियाँ-बीवी ने इकट्ठे एक लम्बा अ़रसा गुज़ारा, अब इन दोनों को एक-दूसरे को उसका मख़्सूस हक़ देना चाहिये।

चुनाँचे बुढ़ापे में आदमी बीमार होता है, तबीयत के अन्दर कुछ जल्दबाज़ी आ जाती है, बच्चों वाला मामला हो जाता है, तो आ़म तौर पर देखा यह गया है कि बुढ़ापे में मियाँ-बीवी ज़्यादा झगड़ते हैं, बल्कि किसी ने तो अ़जीब बात कही:

"जब शादी हुई तो मैं बोलता था और बीवी सुनती थी, फिर जब औलाद हो गयी तो बीवी बोलती थी और मैं सुनता था, फिर जब हम दोनों बूढ़े हो गये, अब हम दोनों बोलते हैं और मौहल्ले वाले सुनते हैं।"

तो आ़म तौर पर बुढ़ापे में मियाँ-बीवी के झगड़े ज़्यादा होते हैं। शरीअ़त ने कहा कि उनको रहमत का ख़्याल रखना चाहिये और एक-दूसरे के साथ दरगुज़र का मामला करना चाहिये। उसकी सेहत का, बीमारी का, उसकी उम्र का लिहाज़ रखे और यह सोचे कि उसने ज़िन्दगी की जवानी मेरे लिए गुज़ार दी, अब यह औ़रत मेरे लिए क़ाबिले क़द्र है।

औ़रत यह सोचे कि शौहर ने अपनी ज़िन्दगी मेरे लिए गुज़ार दी, अब बुढ़ापे में इसे क्या तकलीफ़ दूँ। लिहाज़ा दोनों एक-दूसरे का लिहाज़ करें। इसी चीज़ को शरीअ़त ने 'रहमत' के साथ ताबीर (बयान) किया है।

मर्द औ़रत एक-दूसरे का लिबास हैं

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ (سورة بقرة)

कि मियाँ-बीवी दोनों एक-दूसरे के लिए लिबास के मानिन्द हैं। शौहर बीवी का लिबास और बीवी शौहर का लिबास। क्या मतलब? इसके कई मतलब हैं:

...... एक तो यह कि जिस तरह इनसान के जिस्म के ऐब लिबास की वजह से छुप जाते हैं, उसी तरह शौहर बीवी के ऐब छुपाये और बीवी शौहर के ऐब छुपाये।

...... दूसरा यह कि लिबास की वजह से इनसान की शख़्सियत ख़ूबसूरत मालूम होती है। एक आदमी बेलिबास हो तो वह दूसरे के सामने आते हुए शर्मायेगा, बेइज़्ज़त होगा, ज़लील होगा। तो जिस तरह लिबास की वजह से उसको इज़्ज़त मिली, शान मिली, तो गोया मियाँ-बीवी भी ऐसे हों कि शौहर की वजह से बीवी की ख़ानदान में इज़्ज़त हो और बीवी की वजह से शौहर की ख़ानदान में इज़्ज़त हो।

...... तीसरी तफ़सीर जो सबसे ज़्यादा अच्छी लगती है, वह यह है कि इनसान के जिस्म के सबसे ज़्यादा क़रीब उसका लिबास होता है। लिबास से ज़्यादा क़रीब और कोई चीज़ नहीं होती। तो यह ताबीर बताई कि जब तुम दोनों मियाँ-बीवी बन गये। अब तुम्हारी ज़ात के सबसे ज़्यादा क़रीब तुम्हारी बीवी है, और बीवी के सबसे ज़्यादा क़रीब उसका शौहर है। यानी इतना क़रीब का ताल्लुक़ है दोनों में कि जिस तरह लिबास जिस्म के क़रीब होता है, मियाँ-बीवी दोनों एक-दूसरे के क़रीब हैं। अब किसी को इजाज़त नहीं कि उन दोनों के दरमियान फ़ासले डाल सके। लिहाज़ा शरीअत ने बतलाया कि शबे-क़द्र के अन्दर हर गुनाहगार की मग़फ़िरत (बख़्शिश) हो जाती है लेकिन जो मियाँ-बीवी के दरमियान जुदाई डालने वाला आदमी होगा उस बन्दे की शबे-क़द्र में भी मग़फ़िरत नहीं होती।

डरने वाली बात

अब यह जुदाई डालने वाले कई तरह के होते हैं- मिसाल के

तौर पर कई बार शौहर की माँ, या बहनें बीवी के दरमियान जुदाई डालती हैं, और कई बार ग़ैर-मर्द ऐसे होते हैं कि औ़रत को अपनी तरफ़ माईल करके शौहर से उसको दूर कर देते हैं। और कई बार ऐसी बुरी औ़रतें होती हैं जो शादीशुदा मर्दों को अपनी तरफ़ माईल करके बीवियों से उनको जुदा कर देती हैं। जो भी मियाँ-बीवी के दरमियान एक दूसरे की जुदाई का सबब बनेगा अल्लाह तआ़ला शबे-क़द्र में भी उसकी मग़फ़िरत नहीं फ़रमायेंगे।

दुनिया में जितने मज़हब (धर्म) हैं उनमें मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ को इतना ख़ूबसूरती के साथ कहीं बयान नहीं किया गया जितना ख़ूबसूरती के साथ कुरआन मजीद की इस आयत के चन्द अल्फ़ाज़ के अन्दर बयान कर दिया गया है कि "मियाँ-बीवी एक दूसरे के लिये लिबास की तरह हैं" अ़क़्ल वालों की अ़क़्लें हैरान हैं और फ़लॉसफ़र अपने फ़ल्सफ़े पर सर धुनते हैं कि इस्लामी शरीअ़त ने मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ को इन चन्द लफ़्ज़ों में इतनी ख़ूबसूरती से बयान कर दिया कि लोगों की लिखी हुई किताबें भी उनके सामने बेमानी होकर रह गयी हैं।

कामिल मोमिन की पहचान

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

اَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَانًا اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَّاَلْطَفُهُمْ بِاَهْلِهٖ.

ईमान वालों में सबसे कामिल ईमान वाला मोमिन वह है कि जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों और वह अपने घर वालों के साथ लुत्फ़ (यानी मेरहबानी और नर्मी) से ज़िन्दगी गुज़ारने वाला हो।

यहाँ जिस लफ़्ज़ को इस्तेमाल किया गया है "मुलातफ़त" यानी नर्मी, यही मुलातफ़त का लफ़्ज़ कुरआन पाक का दरमियानी लफ़्ज़ है। कुरआन पाक में जहाँ अस्हाबे-कहफ़ का तज़किरा है वहाँ अल्लाह पाक ने फ़रमाया "वल्य-तलत्तफ़" जब अस्हाबे-कहफ़ ने अपने साथी

को खाना लेने के लिए भेजा तो उसको तल्क़ीन (हिदायत) की तुम जब बात करना तो मुलातफ़त से, नर्मी से करना। गोया क़ुरआन पाक के तमाम अल्फ़ाज़ में से सबसे मर्कज़ी (केन्द्रीय) और दरमियान का लफ़्ज़ यही है "नर्मी और मुहब्बत से बर्ताव करना" और आज का मुसलमान इसी से मेहरूम होता जा रहा है।

जहाँ दाम्पत्य ज़िन्दगी की बात आई वहाँ भी शरीअ़त ने इसी लफ़्ज़ को इस्तेमाल किया। गोया यह लफ़्ज़ क़ुरआन और हदीस से साबित है। कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए यह बुनियादी नुक्ता है। प्यार व मुहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारने को 'मुलातफ़त' कहते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दरबार में शिकायत

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक बीवी ने शिकायत की, फ़रमाया ऐ अल्लाह के महबूब! मेरा शौहर छोटी-छोटी बात पर मुझे मारता है। आपने फ़रमायाः

يذل احدكم يضرب امرأته ضرب العبد ثم يذل يعانقها ولم يستحيى

उसका चेहरा सियाह हो कि वह अपनी बीवी को मारता है एक गुलाम की तरह। फिर उसका चेहरा सियाह हो कि दूसरे वक़्त में उससे बग़लगीर होता है (यानी उसको गले लगाता है) और उसको शर्म भी नहीं आती।

अगर यह इनसान अपनी बीवी के साथ मुहब्बत व प्यार के लम्हात गुज़ारता है तो उसको शर्म नहीं आती कि वह छोटी-छोटी बात पर बीवी को मारता भी है। वह बाँदी तो नहीं है, वह बीवी है। बीवी और बाँदी में फ़र्क़ होता है। अ़क़्लमन्द को इस फ़र्क़ को समझने की ज़रूरत है। लिहाज़ा याद रखना कि बीवी को आदमी निकाह के ज़रिये ख़रीद नहीं लेता, इसलिए कि माँ-बाप ने उसको आज़ाद जन्म दिया

होता है। वह निकाह के ज़रिये मर्द के अक़्द (बन्धन) में आती है। ताकि उसके साथ ज़िन्दगी की शरीके-हयात (जीवन-साथी) बनकर ज़िन्दगी गुज़ारे। वह बाँदी नहीं बन जाती।

शरीअ़त ने मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ को आक़ा और बाँदी का ताल्लुक़ नहीं बताया, बल्कि दो अच्छे दोस्तों का ताल्लुक़ बताया है, कि मियाँ-बीवी दो मुहब्बत करने वाले दोस्तों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारें। लेकिन उनमें से शरीअ़त ने फ़ज़ीलत (बड़ाई और दर्जा) मर्द को दे दी कि जब कभी दोनों में राये का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हो जाये तो औरत शौहर की राये को अपनी राये बना ले। ताकि इख़्तिलाफ़ का हल निकल आये, लेकिन अच्छे लोग हमेशा बीवियों के साथ मश्विरे से घर के मामलात को अन्जाम देते हैं।

जज़्बात पर क़ाबू ज़रूरी है

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कितनी सख़्त बात फ़रमायी उस शख़्स के लिए जो छोटी-छोटी बातों पर बीवी पर हाथ उठा लेता है। इसी लिए कहा गया कि "जाहिल मर्द का हाथ बेक़ाबू होता है और बेवक़ूफ़ औरत की ज़बान बेक़ाबू होती है" बल्कि कहने वालों ने यह भी कहा कि "औरत की ज़बान तलवार है जो कभी ज़ंग-आलूद (कुन्द और बेकार) नहीं होती" और यह भी सुन लीजिए कि बद्ज़बान बीवी शौहर को क़ब्र तक पहुँचाने में घोड़े की डाक का काम करती है। जिसकी बीवी बद्ज़बान है तो यूँ समझ लीजिये कि उस बन्दे की ज़िन्दगी ग़मों में गुज़रती है।

यह मान लिया कि बीवी का ताल्लुक़ शौहर के साथ नाज़-व-अन्दाज़ का होता है तो कभी-कभी उसकी बातों में ऐसी बात आ जाती है, उस वक़्त शौहर को बरदाश्त भी दिल में रखनी चाहिये। लेकिन आपस में मुहब्बत व प्यार के साथ ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये।

जब शरीअ़त का ख़्याल नहीं रखते सिर्फ़ दुनियादारी का ख़्याल

होता है तो मियाँ-बीवी बजाये मुहब्बत के उलटा नफ़रत करने लग जाते हैं। इसलिए कहने वाले ने कहा कि ऐसे ख़ुशनसीब (किस्मत वाले) शौहर कम हैं जो दिन में एक बार अपनी बीवी की जान को न रोयें, और ऐसी बीवियाँ भी थोड़ी हैं जो दिन में एक बार अपने शौहर को न कोसें। जब शरीअ़त व सुन्नत का ख़्याल ही नहीं रखना तो फिर मुहब्बत व प्यार कहाँ से होगा।

इसलिए चाहिये कि बेटियों को सूरः निसा (जो चौथे पारे में है) और सूरः नूर (जो अट्ठारहवें पारे में है) की तफ़सीर पढ़ाई जाये, ताकि उनको घरों के हुक़ूक़ का पता चल जाये, और मर्दों को भी पढ़ना चाहिये ताकि उनको भी बीवी के हुक़ूक़ का इल्म हो जाये।

औ़रत पर मर्द के हुक़ूक़

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ

१. "अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने मर्दों को औ़रतों पर हाकिम और सरदार बनाया है" (सूरः निसा)

लिहाज़ा अगर घर में कोई भी मसला है और दो-तीन राये बन रही हैं, तो शरीअ़त ने औ़रत को हुक्म दिया है कि तुम अपनी राये को शौहर की राये के मुक़ाबले में ख़त्म कर दो। लिहाज़ा अगर शौहर की राये को क़बूल कर लो तो गोया आपने क़ुरआन पाक की इस आयत को क़बूल कर लिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यहाँ तक फ़रमाया कि अगर सज्दा करने की इजाज़त 'ग़ैरुल्लाह' (अल्लाह के अ़लावा किसी) को होती तो मैं बीवी को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे।

२. इसी तरह यह भी औ़रत के लिए ज़रूरी है कि अगर वह घर से बाहर निकलना चाहे तो मर्द की इजाज़त के बग़ैर न निकले, और अपने घर के अन्दर मर्द की इजाज़त के बग़ैर किसी को न आने दे।

३. माल और इज़्ज़त में ख़ियानत न करे, इसलिए कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त उससे नाराज़ होंगे।

४. औलाद की अच्छी तरबियत करना यह भी औ़रत की ज़िम्मेदारी है कि बच्चे माँ के साथ ज़्यादा वक़्त गुज़ारते हैं। इसलिए जब माँ बचपन में ही उन बच्चों की तरबियत (अच्छे अख़्लाक़ और शिष्टाचार की तालीम) करेगी तो ये बड़े होकर नेक बनेंगे। बच्चे की मिसाल पिघली हुई धात की तरह होती है, उसको आप जिस साँचे में डालेंगे उसी की शक्ल इख़्तियार कर लेगी। तो अगर माँ बचपन से उसे नेकी सिखायेगी तो बच्चे भी नेक बन जायेंगे और अगर बचपन में मुहब्बत की वजह से उनकी तरबियत न की तो फिर ये बड़े होकर किसी की भी बात नहीं सुनेंगे।

याद रखिये कि "बचपन की कोताहियाँ पचपन (यानी बुढ़ापे) में भी इनसान से दूर नहीं होतीं" इसलिए बचपन में इनसान की तरबियत का होना इन्तिहाई ज़रूरी है।

५. हदीस पाक में फ़रमाया गया कि जो औ़रत फ़राईज़ (यानी इस्लाम के जो बुनियादी फ़राईज़ हैं जैसे नमाज़, रोज़ा वग़ैरह) को पूरा करने वाली हो, यानी रोज़ा, नमाज़, अदा करने वाली हो, पर्दे का लिहाज़ करने वाली हो और वह इस हालत में मरे कि उसका शौहर उससे ख़ुश हो तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोल देते हैं। इसलिए औ़रत को चाहिये कि अपने अन्दर नेकी पैदा करे "ख़ूबसूरत औ़रत को देखने से आँख ख़ुश होती है और ख़ूबसीरत (अच्छे चरित्र और अच्छे अख़्लाक़ वाली नेक) औ़रत को देखने से दिल ख़ुश होता है"। एक हदीस पाक में यह भी फ़रमाया गया कि जिस औ़रत का शौहर उससे नाराज़ सोये, तो सुबह तक अल्लाह के फ़रिश्ते उस पर लानत करते रहते हैं।

६. शरीअ़त ने कहा कि अगर मियाँ-बीवी में कोई अनबन हो

भी जाये तो औरत को पहल करनी चाहिये कि वह शौहर को मना ले। यह बात भी ज़ेहन में रखियेगा कि औरतें ज़िद कर जाती हैं कि नहीं! शौहर ही हमें मनायेगा। शरीअत को सामने रखकर अगर ज़िद छोड़ देंगी तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की रिज़ा पायेंगी, वरना आप ज़िद पूरी करवा के अपना दिल तो राज़ी कर लेंगी मगर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त का आप पर गुस्सा होगा। तो शरीअत ने कहा है कि अगर शौहर बिला वजह भी अपनी बीवी से नाराज़गी का इज़हार करे तो बीवी को चाहिये कि वह अपने शौहर को मना ले। जब वह अपने शौहर को मना लेगी तो यूँ समझिये कि उसने अपने परवर्दिगार की रिज़ा (खुशी और प्रसन्नता) हासिल कर ली। सुब्हानल्लाह।

मर्दों पर औरतों के हुक़ूक़

मर्दों को यह हदीस तो याद होती है कि नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अगर सज्दा करने की इजाज़त ग़ैरुल्लाह को होती तो मैं बीवी को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे, और यह याद नहीं रहता कि अल्लाह ने हमें क्या हुक्म दिया है कि हम बीवियों के हुक़ूक़ कैसे अदा करें?

१. बीवी के नान-व-नफ़क़े (खाने-पीने और ख़र्च) का बोझ अल्लाह तआला ने शौहर के ऊपर रखा है इसलिए बीवी को उसके खाने-पीने और कपड़े वग़ैरह की ज़रूरत के बारे में किसी ग़ैर का मोहताज न बनाये।

बहुत से शौहर बीवी को नान-नफ़क़े (ज़रूरी ख़र्च और खाने-पीने व पहनने) के बारे में अपने माँ-बाप का मोहताज बना देते हैं, या अपने बड़े भाई का मोहताज बना देते हैं, ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिये, बल्कि नान-नफ़क़े में बीवी अपने शौहर की मोहताज रहे। हाँ ख़िदमत उनकी करे, माँ बाप की हैसियत से, दूसरों के साथ अच्छे रिश्तेदारों का ताल्लुक़ रखे मगर अपनी बीवी को दूसरों की बाँदी न

बनाये। हमने तो यहाँ तक देखा है कि कई बार शौहर बीवी को इतना ज़लील कर देते हैं कि घर के किसी फ़र्द के अगर कपड़े स्त्री नहीं किये तो उस पर भी तलाक़ की धमकियाँ दे देते हैं, ये इन्तिहाई जाहिल क़िस्म के शौहर होते हैं। जिनको शरीअ़त व सुन्नत का पता ही नहीं होता।

शरीअ़त ने कहा है कि नान-नफ़्क़े के अदा करने में बीवी का हक़ अदा करना शौहर की ज़िम्मेदारी है। चुनाँचे उसको कोई चीज़ चाहिये या ज़रूरत के लिए पैसे चाहियें तो वह शौहर से माँगे। एक दफ़ा नहीं बेशक दस दफ़ा माँगे, मगर किसी तीसरे का मोहताज बनाकर न रखे। मुहब्बत की वजह से वह किसी तीसरे को वह दर्जा दे दे कि वे माँ-बाप हैं तो और बात है, लिहाज़ा नान-नफ़्क़े (ज़रूरी ख़र्च, खाने-पीने, लिबास वग़ैरह) के मामले में बोझ शौहर के ऊपर है कि उसको ख़र्चा दे।

फ़िक़्हे का एक अहम मसला

यहाँ फ़िक़्हे (दीनी मसाईल) का एक मसला सुन लेना चाहिये। एक तो है घर की आ़म ज़रूरियात का ख़र्चा, यह एक अ़लैहदा चीज़ है। शरीअ़त ने यह हुक्म दिया कि शौहर को चाहिये कि वह अपनी बीवी का ख़र्चा माहाना अपनी हैसियत के एतिबार से कुछ मतैयन कर दे। वह हर महीने अपनी बीवी को देकर भूल जाये (सुनिये और दिल के कानों से सुनिये। शरीअ़त का हुक्म ज़िम्मेदारी से अ़र्ज़ कर रहा हूँ) उसका हिसाब उससे न माँगे।

अब औ़रत का इख़्तियार है कि वह चाहे तो अपने कपड़े और जूतों पर उसको ख़र्च करे और अगर चाहे तो अपने बच्चों पर उसको ख़र्च करे, या चाहे तो ग़रीबों पर उसको ख़र्च करे। इसलिए कि औ़रत का भी तो दिल है कि मैं अल्लाह के रास्ते में उसको ख़र्च करूँ। मुम्किन है कि वह किसी ग़रीब औ़रत की इमदाद करना चाहती हो,

कोई दुखी औरत उसके इल्म में हो, वह उस औरत को कुछ देना चाहती हो, या अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना चाहती हो।

तो औरत को फिर इख़्तियार है कि वह अपने पैसे जो जेब-ख़र्च के हैं, उनको अपनी मर्ज़ी से ख़र्च करे। आजकल चूँकि जेब-ख़र्च मुतैयन नहीं किया जाता लिहाज़ा घर के ख़र्चे को औरतें जेब-ख़र्च ही समझ लेती हैं, फिर शौहर झगड़े करते हैं कि तुमने यह पैसे किधर किये, यह किधर किये। तो बेहतर है कि हम अपनी ज़िन्दगी को शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारें।

शरीअ़त-यह नहीं कहती कि शौहर पर इतना बोझ डाले कि उठा न सके, हाँ जितना ख़र्च वह आसानी से दे सकता है उतना ख़र्च मुतैयन कर दे। मुम्किन है कि वह अपने जिस्म के लिए, कपड़ों के लिए, कुछ चीज़ें ख़रीदना चाहे तो उसको छोटी-छोटी बात में शौहर की मिन्नतें तो न करनी पड़ें। इसलिए शरीअ़त ने औरत की इ़ज़्ज़त का ख़्याल रखा कि उसकी ज़ाती ज़रूरत के लिए हर वक़्त शौहर की मोहताज न रहे, फ़क़ीरों की तरह हाथ न फैलाती फिरे।

बीवी के लिए घर

शौहर की एक ज़िम्मेदारी (हक़) यह है कि अपनी बीवी को सर छुपाने की जगह दे। मिसाल के तौर पर एक ऐसा कमरा जिसमें औरत अपना सामान रख सके, और अपने शौहर के साथ अपना वक़्त गुज़ार सके, यह शौहर के ऊपर लाज़िम है। और अगर अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने शौहर को ख़ूब दे रखा है तो बीवी को मकान बनाकर देना यह शौहर की ज़िम्मेदारी है।

हमारा तर्जुबा यह है कि शरीअ़त के इस हुक्म में इतनी अच्छाई और ख़ूबी है कि अगर माँ-बाप से अलग़ कोई अपना घर ले लिया जाये तो देखने में तो नज़र यह आता है कि माँ-बाप से अ़लैहदा हो गये, मगर मुहब्बतें सलामत रहती हैं और ज़्यादा देर तक एक-दूसरे

के साथ प्यार रहता है। एक ही घर में रहकर कई बार दिलों में नफ़रतें आ जाती हैं। इसलिए शरीअ़त ने हुक्म दिया कि तुम अपनी बीवी को सर छुपाने की जगह दे दो।

हमने तो कई जगह देखा कि निकाह शौहर से होता है और हुक्म सास का चल रहा होता है, ससुर का चल रहा होता है। अब वे बूढ़े बन्दे क्या समझें कि नौजवानों की ज़रूरियात क्या हैं? वे अपना हुक्म चलाते हैं, मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ात को नहीं देखते। बल्कि हमने तो कई जगह देखा कि सास जब देखती है कि शौहर बीवी का ज़्यादा ख़्याल करता है तो शौहर को बीवी से नफ़रत दिलाना करना शुरू कर देती है, कि यह हमसे न टूट जाये ऐसी औ़रत परले दर्जे की जाहिल होती है। वह समझती ही नहीं कि शरीअ़त ने हुक्म क्या दिया है, माँ को तो खुश होना चाहिये कि मेरा बेटा अपनी बीवी के साथ अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है।

ताल्लुक़ात में संतुलन ज़रूरी

मियाँ-बीवी अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने के साथ-साथ माँ बाप के फ़रमाँबरदार भी बने रहें। यह नहीं कि बीवी को तो वह हमेशा गुस्से में रखे और माँ-बाप की बात मानता रहे। माँ-बाप के हुक़ूक़ अपनी जगह हैं, मियाँ-बीवी की ज़िन्दगी अपनी जगह है। इसमें तवाज़ुन (संतुलन) रखने की ज़रूरत है।

आ़म तौर पर देखा यह गया है कि सास जिस लड़की को खुद पसन्द करके बहू बनाती है, जिस लम्हे वह घर आती है उसी में वह कीड़े निकालना शुरू कर देती है। कहती है जी बहू अच्छी नहीं। यह भी अ़जीब बात है। आ़म तौर पर औ़रतें कहती हैं कि जब मैं बहू थी तो सास अच्छी न मिली, और जब मैं सास बन गयी तो बहू अच्छी न मिली। इसका मतलब है कि आप ही बड़ी अच्छी हो, इसलिए माँ बाप को चाहिये कि वे बच्चों को खुश देखकर खुश हों। यह न हो कि

मियाँ-बीवी को एक-दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काना शुरू कर दें। छोटी-छोटी बातों का हव्वा बनाना शुरू कर दें।

गुस्से से बचिये

मियाँ-बीवी को चाहिये कि एक-दूसरे के मामले में गुस्से को दूर रखें, संयम से काम लें, बरदाश्त का सुबूत दें। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ۝

(سورة ال عمران)

वे गुस्से को पी जाने वाले होते हैं। इनसानों को माफ़ कर देने वाले होते हैं। अल्लाह तआ़ला ऐसे नेक काम करने वालों से मुहब्बत फ़रमाते हैं।

लिहाज़ा जो इनसान दुनिया में दूसरों के साथ नर्मी करेगा अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसके साथ नर्मी करेंगे। और जो अपने मातहतों के साथ सख़्ती करेगा अल्लाह तआ़ला उसके साथ सख़्ती फ़रमायेंगे।

माफ़ी की प्रेरणा

हदीस की किताब तबरानी शरीफ़ की रिवायत है कि जो आदमी दुनिया में दूसरों की ग़लतियों को जल्दी माफ़ करने वाला होगा, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी ग़लतियों को जल्दी माफ़ फ़रमा देंगे। एक और रिवायत में आता है कि जिसने किसी मोमिन का दिल खुश किया अल्लाह तआ़ला उस खुशी से एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमाते हैं और वह फ़रिश्ता क़ियामत तक अल्लाह का ज़िक्र करता रहता है और उसका सवाब उस खुश करने वाले बन्दे के नामा-ए- आमाल में लिखा जाता है। जब आ़म मोमिन के दिल को खुश करने का इतना अज्र है तो जो शौहर अपनी बीवी का दिल ख़ुश रखेगा तो अल्लाह

रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ से वह कितना अज्र पायेगा।

लिहाज़ा इस बात को दिलों पर लिख लीजिए कि "जो शौहर प्यार के ज़रिये अपनी बीवी का दिल न जीत सका वह तलवार के ज़रिये भी नहीं जीत सकता" इसलिए जब मुहब्बत व प्यार की बुनियाद हो तो फिर इनसान की दाम्पत्य ज़िन्दगी कामयाब होती है।

मियाँ-बीवी को परहेज़गारी का हुक्म

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने जहाँ-जहाँ मियाँ-बीवी के हुकूक़ का तज़किरा फ़रमाया वहाँ फ़रमायाः

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ (سورة بقرة)

अल्लाह से डरना और इस बात को याद रखना कि तुमको अल्लाह से मुलाक़ात करनी है।

कई बार मियाँ-बीवी के अन्दर झगड़ा किसी और बात पर होता है और लोगों के सामने स्टोरियाँ कुछ और बना देते हैं। बीवी समझ रही होती है कि मैं शौहर के साथ ज़्यादती कर रही हूँ मगर शौहर को नीचा दिखाना चाहती है। इसी तरह शौहर समझ रहा होता है कि बीवी नेक है मगर उसको नीचा दिखाने के लिए उसको तंग कर रहा होता है। जब दिल में बदनीयती हो तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ (سورة بقرة)

अल्लाह से डरना और इस बात को याद रखना कि तुमको अल्लाह से मुलाक़ात करनी है। जो तुम्हारे दिलों के भेद जानने वाला है।

तुम अगर बदनीयत बनकर अ़मल करोगे तो क़ियामत के दिन तुम्हारी नीयत तुम्हारे सामने आ जायेगी। इसलिए इनसान अपने दिल की नीयत पर नज़र रखे और दूसरों को सताने के बजाये उनके हुक़ूक़ पूरा करने वाला बन जाये।

बीवी राज़ी, अल्लाह राज़ी

हमारे मुर्शिद (हज़रत मौलाना गुलाम हबीब साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि) ने अपना वाकिआ़ एक बार मर्दों को सुनाया। इस वाक़िए को पढ़कर ज़रा समझने की ज़रूरत है। यह वाकिआ़ उनकी वफ़ात से कुछ पहले का है।

फ़रमायाः एक बार में वुज़ू कर रहा था, मेरी बीवी वुज़ू में मेरा सहयोग कर रही थी। वह पानी लोटे में लेकर आई। वह पानी डाल रही थी और मैं वुज़ू कर रहा था। उसके पानी डालने में कुछ ग़फ़लत सी हुई। फ़रमाने लगे कि मैंने उसको डाँट दिया। जब मैंने उसे डाँट दिया तो उसका दिल ज़रा उदास सा हो गया, कि एक तो मैं ख़िदमत कर रही हूँ और ऊपर से मुझे डाँट दिया गया। फ़रमाया कि मैंने वुज़ू किया और वुज़ू करके मैं मस्जिद की तरफ़ चलने लगा, अपने घर और मस्जिद के दरमियान मैं जब पहुँचा उस वक़्त मेरे दिल में अल्लाह ने यह बात डाली कि तू अपनी बीवी के दिल को तो रंजीदा कर चुका, एक मामूली सी बात पर, अब तू आकर मुसल्ले पर खड़ा होगा, तो तू मुझे कैसे राज़ी कर सकेगा? फ़रमाते हैं कि मैं वहीं से अपने घर वापस गया और अपनी बीवी से मैंने माफ़ी माँगी और जब मैंने उसके चेहरे पर खुशी के आसार देखे तब वापस आकर नमाज़ पढ़ी। अल्लाह ने दिल में यह बात डाली कि मेरे प्यारे मैं तेरे इस अ़मल की वजह से तुझसे राज़ी हो गया।

अ़जीब वाकिआ़

हज़रते अक़्दस मौलाना थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने वाकिआ़ लिखा है कि एक आदमी की बीवी से ग़लती हो गयी। उसने उसको अल्लाह की बन्दी समझ कर माफ़ कर दिया। जब यह आदमी मरा तो किसी ने उसे ख़्वाब में देखा। उसने पूछा कि क्या बना? कहने लगा कि

बाक़ी अ़मल तो काम के न निकले एक अ़मल अल्लाह को पसन्द आ गया। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तूने एक मौक़े पर अपनी बीवी को मेरी बन्दी समझकर माफ़ कर दिया था, चल आज मैंने भी तुझे अपना बन्दा समझकर माफ़ कर दिया।

अगर हम बीवी की ग़लती और कोताही से दरगुज़र करें तो अल्लाह तआ़ला उसके बदले में हमारी कोताहियों से दरगुज़र फ़रमायेंगे। इसका यह मतलब नहीं कि इस्लाह (सुधार) की घर में बात ही न करो, यह मतलब भी नहीं है कि बीवी डिश लगवाती है, केबिल लगवाती है और बदमाशियाँ करती है, अब उसको कुछ कहने से रुक जाओ। नहीं! नहीं! शरीअ़त की हदों के अन्दर तो उसको रहना ही है। हदों के अन्दर रहते हुए उसको सताना ठीक नहीं, मुहब्बत व प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारनी है।

शादी घर की आबादी का सबब

हमारा यह तर्जुबा है कि मुसलमान औ़रतों में सौ में से निन्नानवे लड़कियाँ जब शादी के वक़्त अपने घर से रुख़्सत होती हैं तो घर आबाद करने की नीयत के साथ घर से रुख़्सत होती हैं। अब यह शौहर पर निर्भर है कि अगर उसने अच्छे अख़्लाक़ का प्रदर्शन किया तो बीवी ने घर आबाद कर लिया, और अगर उसने बुरे अख़्लाक़ का प्रदर्शन किया तो घर बरबाद कर लिया। लिहाज़ा यह शौहर पर निर्भर है कि वह बीवी को कैसे डील (DEAL) करता है। इसलिए कि नेक बीवी की तो हमेशा यह ख़्वाहिश होती है।

मइय्यत गर न हो तेरी तो घबराऊँ गुलिस्ताँ में
रहे तू साथ तो सेहरा में गुलशन का मज़ा पाऊँ

अगर शौहर बीवी को प्यार देने वाला हो तो उसको तो सेहरा (जंगल) में भी गुलशन का मज़ा आयेगा।

मेरी प्यारी माँ

इस आजिज़ (मौलाना पीर जुल्फ़क़ार साहिब) की वालिदा साहिबा की वफ़ात हुई। उनकी उम्र तक़रीबन नब्बे (९०) साल हो चुकी थी। वह अपने घर में रहती थीं और इस आजिज़ का घर बिल्कुल क़रीब ही था। मेरी ख़्वाहिश यह थी कि वालिदा साहिबा को अपने पास रखूँ। इसके लिए हमेशा उनकी मिन्नत-समाजत करता रहता, कि आप मेरे साथ ठहरें, मैं आपका सबसे छोटा बेटा हूँ। मेरे ऊपर एहसान फ़रमायें। हम मियाँ-बीवी आधा-आधा घन्टा उनके पाँव दबाते रहते कि आप हमारे घर में रहें, मगर वालिदा हमारे साथ इतनी खुश, इतनी राज़ी कि दुआयें ही देती रहतीं। मगर हमारे घर रहने पर राज़ी नहीं होती थीं। हमारी पूरी उम्र इसी ख़्वाहिश और तमन्ना में गुज़र गयी, वफ़ात से कुछ अरसा पहले मैंने तन्हाई में उनकी तबीयत को खुश देखा तो उनके पाँव पकड़कर कहा कि मेरे दिल की तमन्ना है कि मुझे यह सआदत मिले कि आप मेरे साथ मेरे उस घर में रहें। उस वक़्त प्यारी वालिदा ने मुझसे अपने दिल की बात कही और मुझे हैरान कर दिया।

फ़रमाने लगीं! बेटा तुम्हारे वालिद मुझे इस घर में लेकर आये थे, अब वह इन्तिक़ाल कर गये, मेरा दिल चाहता है कि मेरा जनाज़ा इसी घर से निकले। मैं हैरान हो गया कि नब्बे साल की उम्र में भी उनको इस बात का ख़्याल था कि शौहर मुझे जिस घर में लाया था अब मेरा जनाज़ा उसी घर से बाहर निकले। तो अगर शौहर प्यार देगा तो बीवी ज़िन्दगी उस पर ख़र्च कर देगी।

चमन का रंग गो तूने सरासर ऐ ख़िज़ाँ बदला
न हमने शाख़े-गुल बदली न हमने आशियाँ बदला

इसलिए नेक बीवियाँ तो शौहर के इन्तिक़ाल होने के बाद भी उसका पास और लिहाज़ रखा करती हैं।

गुर की बात

चन्द बातें जो मियाँ-बीवी के याद रखने की हैं और इस बयान का निचोड़ हैं।

१. तहम्मुल और बुर्दबारी की वजह से ज़िन्दगी कामयाब गुज़रती है। आम तौर पर देखा गया है कि जहाँ मुहब्बत पतली हुआ करती है वहाँ ऐब मोटे नज़र आते हैं और जहाँ मुहब्बत मोटी हुआ करती है वहाँ ऐब पतले नज़र आते हैं। तो अगर शौहर को बीवी के ऐब मोटे नज़र आयें तो समझ ले कि मेरे दिल में उसकी मुहब्बत पतली है। और अगर बीवी को शौहर के ऐब मोटे नज़र आयें तो वह भी समझ ले कि मुहब्बत पतली है। जहाँ मुहब्बत मोटी हो वहाँ ऐब खुद-ब-खुद पतले हो जायेंगे।

२. मुक़ाबला आराई न करे। यानी ज़रा-ज़रा सी बात पर मोर्चा न संभाल ले। कि ज़रा सी बात हुई और उसको विषय बना लिया। अब बीवी भी ज़िद पर आ गयी और शौहर भी ज़िद पर आ गया। यह कितनी बेवक़ूफ़ी की बात है। अपनी बातों को हमेशा समझा-बुझाकर सुलझाने की कोशिश करें। किसी अच्छे वक़्त का इन्तिज़ार करें। जब बीवी का दिमाग़ ज़रा शौहर की तरफ़ मुतवज्जह होगा और बात सुनने के लिये तैयार होगी, उस वक़्त उसको बात कहें तो बात समझ लेगी। किसी अल्लाह वाले का क़ौल है:

शुनीदम कि मर्दाने राहे खुदा
दिले दुश्मनाँ हम न करदन्द तंग
तुरा के मयस्सर शवद ईं मक़ाम
कि बा दोस्तानस्त ख़िलाफ़स्त व जंग

तर्जुमा: हमने सुना है कि अल्लाह वाले दुश्मनों के दिलों को भी तंग नहीं किया करते, तुम्हें यह मक़ाम कहाँ से नसीब हो सकता है कि

तुम अपनों के साथ भी लड़ने में लगे हुए हो।

तो जो मियाँ-बीवी आपस में एक दूसरे के साथ झगड़ रहे हों उन्हें सोचना चाहिये कि अल्लाह ने हमें क्या ताल्लुक़ दिया और हम करते क्या फिर रहे हैं? तो एक-दूसरे के ख़िलाफ़ मुक़ाबले पर अतर आने से बचना चाहिये। एक दूसरे की स्तर-पोशी करना (ऐब छुपाना) चाहिये। इसलिए कि मियाँ-बीवी जो ठहरे।

हमने तो यहाँ तक सुना है कि कई बार जवान जोड़े ग़लती कर जाते हैं, शौहर अपनी बहनों में बैठकर बीवी से मज़ाक़ करता है, या बीवी अपने घर वालों के सामने शौहर से मज़ाक़ कर जाती है। यह इन्तिहाई बेवक़ूफ़ी की बात है। ये दोनों तो एक दूसरे के मुहाफ़िज़ हैं, इनको तो एक-दूसरे का ख़्याल करना चाहिये।

दुनिया की बात छोड़िये दुनिया तो ग़ैर थी
तुमने भी कुछ ख़्याल हमारा नहीं किया

तो मियाँ को बीवी का ख़्याल करना चाहिये और बीवी को मियाँ का। अगर शौहर चाहता है कि बीवी मुहब्बत से रहे तो शौहर को भी चाहिये कि वह बीवी के साथ मुहब्बत से रहे। मोमिनों के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि तुम उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक अपने भाईयों के लिए वही पसन्द न करो जो अपने लिए पसन्द करते हो। जब एक दूसरे के साथ अच्छा बनकर रहेंगे तो फिर अल्लाह तआ़ला उनके कामों में बरकत अ़ता फ़रमायेंगे।

सुकून किस जगह?

क़ुरआन पाक में तीन चीज़ों के बारे में सुकून का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है।

१. जहाँ बीवी का तज़किरा हुआ फ़रमाया:

لِتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا

"तुम उससे सुकून पाओ"

२. जहाँ पर घर का तज़किरा हुआ कुरआन पाक में वहाँ फ़रमायाः

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا

"कि तुम्हें घर में रहने से सुकून मिलता है"

३. और तीसरे जहाँ रात का तज़किरा हुआ, कुरआन मजीद में वहाँ सुकून का तज़किरा किया गया है। फ़रमायाः

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ سَكَنًا

"हमने रात को तुम्हारे लिए सुकून की चीज़ बनाया"

तो मालूम हुआ कि जो मर्द अपनी बीवियों के साथ रात गुज़ारते हैं, कुरआन के हिसाब से अल्लाह तआ़ला उन्हें तीन गुना सवाब अ़ता फ़रमाता है। और जिनको बाहर वक़्त गुज़ारने की आ़दत होती है वे सुकून से हमेशा ख़ाली रहा करते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी घराने होते हैं जहाँ पर दाम्पत्य ताल्लुक़ात कुछ अच्छे नहीं होते, कहीं बीवी की ग़लती, कहीं मियाँ की ग़लती, कहीं दोनों की ग़लती।

एक क़ीमती अ़मल

एक अ़मल की इजाज़त सब औ़रतों को दी जाती है। वह पढ़ना शुरू कर दें। जितनी औ़रतें शादीशुदा हैं वे तो ज़रूर ही पढ़ें, लेकिन जो बड़ी उम्र की बच्चियाँ हैं, समझदार हैं, वे भी पढ़ें। जब अल्लाह तआ़ला अपने वक़्त पर उनके घर को आबाद करेंगे तो इन्शा-अल्लाह उनको ख़ुशियाँ नसीब होंगी। इस अ़मल की इजाज़त एक बुज़ुर्ग ने इस आ़जिज़ को दी और अब तक हज़ारों इनसानों को यह अ़मल बताने के बाद यह आ़जिज़ इस नतीजे पर पहुँचा कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने सबकी परेशानियों को दूर कर दिया और घर में सुकून की ज़िन्दगी नसीब हो गयी। आप भी यह अ़मल शुरू कर दीजिए।

अ़मल यह है कि आप जब भी कोई नमाज़ पढ़ें, फ़र्ज़ हो, वाजिब हो, नफ़िल हो, उसकी आख़िरी अत्तहिय्यात में (यानी दो रकअ़त की तो एक ही अत्तहिय्यात होती है) लेकिन चार रकअ़त में तो दो बार अत्तहिय्यात में बैठते हैं, तो आख़िरी अत्तहिय्यात जिसमें आपको सलाम फेरना होता है, उसमें जब आप "रब्बना आतिना......" या कोई भी दुआ़ पढ़ती हैं और सलाम फेरने लगती हैं, उस वक़्त सलाम फेरने से पहले आप यह दुआ़ भी पढ़ा करें:

رَبَّنَاهَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ٥

(سورة فرقان: ٧٤)

रब्बना हब् लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र-त अअ्युनिन् वज्अ़ल्ना लिल्मुत्तक़ी-न इमामा। (सूरः फ़ुरक़ान आयत ७४)

ऐ अल्लाह! हमारी बीवियों में से हमारी औलादों में से ऐसा बना दे कि हमारी आँखों की ठन्डक बने। और ख़ुद हमें भी मुत्तक़ियों का इमाम (पेशवा) बना दे।

इस दुआ़ के पढ़ने से अल्लाह तआ़ला आपके घर के सारे अफ़राद को आपकी आँखों की ठंडक बना देंगे। इसकी इजाज़त उन तमाम औरतों को है जो यह आवाज़ सुन रही हैं। अल्लाह तआ़ला बरकतें अ़ता करे और घरों में सुख-सुकून की ज़िन्दगी नसीब करे।

कामयाबी का राज़

हौसले बड़े रखने चाहिएँ। इंग्लिश की एक कहावत है:

- To run a big show one should have a big heart.

जब बड़ा घर चलाना हो और कामयाब चलाना हो तो फिर मियाँ-बीवी दोनों को दिल बड़े रखने चाहियें। छोटी-छोटी बातों पर उलझना नहीं चाहिये।

इसमें एक उसूली बात याद रखिये कि मियाँ-बीवी दोनों को

चाहिये कि वे आपस में यह बात तय कर लें कि बीवी शौहर के रिश्तेदारों के साथ अच्छे ताल्लुक़ बनाने की ज़िम्मेदार हो और शौहर बीवी के रिश्तेदारों के साथ अच्छे ताल्लुक़ात का ज़िम्मेदार हो। यानी जहाँ शौहर के रिश्तेदारों की बात आये, उसकी बहनों की, वालिदा की, वालिद की, उसकी भाभियों की, दूसरे रिश्तेदारों की, तो बीवी अपनी ज़िम्मेदारी समझे कि मुझे शौहर के रिश्तेदारों का भला सोचना है, उनके साथ अच्छा सुलूक रखना है। उनके दिलों को ख़ुश रखना है। और जहाँ बीवी के रिश्तेदारों का तज़किरा आया, बीवी के माँ-बाप, भाई-बहन, रिश्तेदारों का, तो वहाँ शौहर अपनी ज़िम्मेदारी समझे कि मुझे उनको ख़ुश रखना है।

जब बीवी शौहर के रिश्तेदारों को ख़ुश रखेगी और शौहर बीवी के रिश्तेदारों को ख़ुश रखेगा तो अल्लाह तआ़ला उन दोनों को आपस में ख़ुश रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायेंगे।

आ़म तौर पर ग़लती यह होती है कि शौहर अपने रिश्तेदारों को तो ख़ुश रखवाता है लेकिन बीवी के रिश्तेदारों की परवाह नहीं करता। यानी बीवी को घर लेकर आया और बारह साल से बीवी को घर ही नहीं भेजा, ज़रा सोचिये कि अगर उसके अपने साथ यही होता, कि उसको कोई बारह साल तक अपने माँ-बाप से न मिलने देता तो उस पर क्या गुज़रती? बीवी तो गोया इनसान ही नहीं, उसका तो दिल ही नहीं, कि वह अपने माँ-बाप बहन-भाईयों से जाकर मिल आये। यह कितने ताज्जुब की बात है, तो इन बातों का ख़्याल रखना चाहिये।

झगड़ा क्यों होता है?

मियाँ-बीवी आ़म तौर पर एक दूसरे की वजह से नहीं लड़ते, हमेशा किसी तीसरे की वजह से लड़ते हैं। या तो शौहर के माँ-बाप बहन-भाईयों की वजह से लड़ते हैं, या बीवी के माँ-बाप बहन-भाईयों

की वजह से लड़ते हैं। कहीं बीवी की माँ उसको सिखा रही होती है और कहीं शौहर की माँ उसको सिखा रही होती है। कहीं शौहर का बाप आड़े आ रहा होता है और कहीं बीवी का बाप ज़िद करके बैठा होता है। तो मियाँ-बीवी आपस में एक-दूसरे की वजह से नहीं लड़ते, हमेशा तीसरे की वजह से लड़ते हैं। जब तुम दोनों एक-दूसरे के लिए लिबास के मानिन्द हो तो तुम तीसरे को दरमियान में आने ही क्यों देते हो? आपस में मामलात खुद तय कर लो। माँ-बाप को बताओ कि हम खुशी से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, माँ-बाप को दरमियान में आने की ज़रूरत ही पेश नहीं आयेगी। तो मियाँ-बीवी को अक़्लमन्दी के साथ ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये कि उनकी ज़िन्दगी दुनिया ही में जन्नत का नमूना बन जाये।

मियाँ-बीवी के दो-दो माँ बाप

शरीअ़त का एक मसला है कि निकाह से पहले शौहर का एक बाप और उसकी एक माँ होती है। लेकिन निकाह के बाद अब उसकी दो माँ और दो बाप हो गये। यानी उसकी सास माँ है और उसके ससुर उसके बाप के मानिन्द हैं। इसी तरह शादी से पहले लड़की की एक माँ और एक बाप, लेकिन जब निकाह हो गया अब उसके दो बाप हैं और दो मायें हैं। यानी सास और ससुर लड़की के लिए माँ और बाप की तरह हैं।

याद रखिये! जिस लड़की ने सास और ससुर को माँ-बाप की तरह देखना शुरू कर दिया उसकी कभी भी उनके साथ बात ख़राब नहीं हो सकती। बात उस वक़्त ख़राब होती है जब अपने माँ-बाप को तो माँ-बाप समझती है और शौहर के माँ-बाप को सास और ससुर समझ रही होती है। इसी तरह सास अपनी बेटी को बेटी समझ रही होती है और बहू को बहू समझ रही होती है। उसने जिस दिन बहू को अपनी बेटी की नज़र से देखना शुरू कर दिया उस दिन से घर के

झगड़े ही ख़त्म हो जायेंगे। हमने तो देखा कि माँ अपनी बेटी के ऐब तो छुपाती फिरती है और अगर वही ग़लती बहू से हो जाये तो उसको उछालती फिरती है। यह कितनी बेवकूफ़ी की बात है। बहू भी बेटी के मानिन्द होती है। लिहाज़ा माँ को चाहिये कि वह उस बेटी का भी ख़्याल करे। औरतों को देखा है कि दुखी फिर रही होती हैं कि मेरा दामाद मेरी बेटी को खुश नहीं रखता, जबकि यह खुद अपनी बहू को घर में खुश नहीं रहने देती।

जब आप अपनी बहू को अपने घर में खुश नहीं रहने देते तो अल्लाह तआला तेरे दिल को तकलीफ़ देते हैं, तेरी बेटी को नाखुश करके, जब हम दूसरों की बेटी का दिल दुखायेंगे तो फिर अल्लाह तआला हमारे दिलों को कैसे खुश रखेंगे? इसलिए जिनकी उम्रें बड़ी हों और जो माँ-बाप के दर्जे की हों उनको अपने रुतबे का लिहाज़ रखना चाहिये। तो शादी से पहले एक माँ और एक बाप और शादी के बाद दो माँ और दो बाप, हमेशा सास और ससुर को माँ बाप का रुतबा दो।

बीवी बेटी की मानिन्द

अच्छा देखिये! यही बीवी जब अपने माँ-बाप के घर में होगी और माँ उसको उलटी-सीधी बात कह दे, या थप्पड़ लगा दे, तो यह किसी को नहीं बतायेगी कि माँ ने मुझे थप्पड़ लगाया। लेकिन सास अगर नरम बात भी कर दे तो उसको वह गरम बात नज़र आयेगी। गोया उसने माँ और सास में फ़र्क़ रखा। तो लड़की को चाहिये कि वह सास को माँ का दर्जा दे और सास को चाहिये कि वह बहू को बेटी का दर्जा दे।

मियाँ-बीवी गुस्से के वक़्त क्या करें?

जब मियाँ-बीवी में से कोई एक गुस्से में हो तो दूसरे को चाहिये कि वह उस वक़्त ख़ामोशी इख़्तियार करे, क्योंकि कई बार ख़ामोशी

बेहतरीन जवाब होता है। हमेशा डटे रहने और अड़े रहने से मसले हल नहीं होते, ख़ामोश रहने से मसले जल्दी हल हो जाते हैं। और किसी वक़्त अगर बीवी गुस्से में है तो शौहर को चाहिये कि वह मौक़े की नज़ाकत को देखते हुए ख़ामोशी इख़्तियार कर ले। दूसरे वक़्त में वह ख़ुद माफ़ी माँग लेगी, दोनों का एक वक़्त में गुस्से में आ जाना यह घर बरबाद होने की निशानी होती है। इसलिए हदीस पाक में फ़रमाया कि जो शौहर अपनी बीवी की तकलीफ़ पर सब्र करे अल्लाह तआ़ला उसको सब्रे-अय्यूब (हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम के सब्र) का सवाब अ़ता फ़रमायेंगे, और और जो बीवी शौहर के तकलीफ़ देने पर सब्र करे अल्लाह तआ़ला उसको भी हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम के सब्र का अज्र अ़ता फ़रमायेंगे।

सकारात्मक और नकारात्मक सोच का फ़र्क़

और एक सबसे बड़ी बात यह कि नकारात्मक सोच से बचें, सकारात्मक सोच पर कारबन्द रहें। यह नकारात्मक सोच ज़हर की तरह है। यह इनसान के दिल को उजाड़ देती है और शैतान हमेशा मियाँ-बीवी के दरमियान नकारात्मक सोच पैदा करके ही घरों को तोड़ देने में कामयाब हो जाता है। तो आप नकारात्मक सोच न आने दें। जब आपके अन्दर नकारात्मक सोच आ गयी तो अब घर कभी आबाद नहीं हो सकता।

देखिए! एक मिसाल, एक शख़्स कहता है कि लोग परेशान होते हैं कि फूलों के साथ काँटे होते हैं, और मैं ख़ुश होता हूँ कि काँटों के साथ हमेशा फूल हुआ करते हैं। तो जिसने कहा कि फूलों के साथ काँटे होते हैं, यह नकारात्मक सोच है, और जिसने कहा कि देखो काँटों के साथ फूल भी होते हैं, यह सकारात्मक सोच है। तो हम सकारात्मक सोच रखें और नकारात्मक सोच से बचने की कोशिश करें। इसलिए कि नकारात्मक सोच घर को बरबाद कर देती है।

नकारात्मक सोच का एक वाक़िआ

अबुल-हसन ख़रक़ानी रहमतुल्लाहि अलैहि हमारे सिलसिले के एक बुज़ुर्ग थे लेकिन उनकी एक आज़माईश थी कि उनके घर में बीवी बड़ी तेज़-तर्रार थी। वह उस पर सब्र करते थे और उस सब्र पर अल्लाह ने उनको विलायत अता फ़रमा दी थी। चुनाँचे एक बार एक मुरीद उनसे मिलने के लिए आया, उसने घर जाकर पूछा कि हज़रत कहाँ हैं? बीवी ने कहा कि कौन हज़रत? कहाँ के हज़रत? उसने कहा कि जी मैं उनसे मिलने के लिए आया हूँ। जवाब दिया कि जाओ वहाँ कहीं जंगल में बैठे होंगे, वहीं मिल लो। मुरीद समझ गया कि मामला ज़रा नाज़ुक सा है। चुनाँचे वह हज़रत को मिलने जंगल में आया, मगर क्या देखता है कि हज़रत शेर के ऊपर सवार होकर आ रहे हैं। यह एक किरामत थी जो अल्लाह ने ज़ाहिर कर दी।

अब जब उसने यह देखा कि हज़रत तो जंगल में शेर पर सवारी कर रहे हैं और घर में बीवी उन पर सवारी कर रही है तो सोचने लगा कि यह क्या मामला है? जब हज़रत उसको मिले तो हज़रत ने भी पहचान लिया और फ़रमाया कि देखो मैं घर में बीवी की उस तकलीफ़ का बोझ उठाता हूँ, अल्लाह तआला इस शेर को मेरा बोझ उठाने पर लगा देते हैं। जब यह बात बताई तो वह मुरीद तो रुख़्सत हुआ लेकिन जब हज़रत घर को आने लगे तो दुआ माँगी कि ऐ अल्लाह! यह औरत बहुत ही ज़्यादा गुस्से वाली है और तेज़-तर्रार है, ऐ अल्लाह! कोई ऐसा मामला हो कि यह अक़ीदत वाली (यानी मेरी क़द्र करने वाली) बन जाये ताकि दीन के काम में रुकावट न रहे।

चुनाँचे अल्लाह तआला ने उनको एक करामत बख़्शी कि वह हवा में उड़ने लग गये और उड़ते-उड़ते अपने घर के ऊपर से गुज़रे। जब वापस घर आये तो घर में दाख़िल होते ही बीवी ने इस्तिक़बाल किया

कि बड़े बुज़ुर्ग बने फिरते हो, और बड़े वली बने फिरते हो। वली तो वह था जिसे मैंने आज हवा में उड़ते देखा। हज़रत ने उसकी बात सुनकर कहा कि अल्लाह की बन्दी वह मैं ही तो था जो यहाँ से उड़कर गुज़र रहा था। मैंने ही अल्लाह से दुआ माँगी थी।

जब बीवी ने यह सुना तो थोड़ी देर सोचकर कहने लगी अच्छा आप थे, उन्होंने कहा हाँ-हाँ मैं ही था। कहने लगी मैं भी सोच रही थी कि टेढ़ा-टेढ़ा क्यों उड़ रहा है। अब सोचिये कि घर क्योंकर आबाद हो, लिहाज़ा नकारात्मक सोच से बचने की कोशिश करें और सकारात्मक सोच रखें।

सकारात्मक सोच की एक मिसाल

अब ज़रा सकारात्मक सोच की भी एक बात याद रख लीजिए। एक हाफ़िज़े कुरआन बहुत बड़े क़ारी गुज़रे हैं। उनका चेहरा बहुत ज़्यादा काला था और शक्ल ज़रा अनोखी सी थी। मगर अल्लाह तआला ने उनको आवाज़ ऐसी दी थी कि सुब्हानल्लाह! जब वह कुरआन पढ़ते थे तो दिल हैरान हो जाते थे। एक बहुत ख़ूबसूरत लड़की थी अल्लाह पाक ने उसके सीने में कुरआन का इश्क़ रखा था। जब उसने उनका कुरआन सुना तो उसने अपने माँ-बाप से ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि मेरा निकाह उनके साथ कर दिया जाये। यह कुरआन ऐसा पढ़ते हैं कि मेरा दिल खुश हो जाता है, मैं सारी ज़िन्दगी उनकी क़द्र करूँगी, ख़िदमत करूँगी। चुनाँचे उनका निकाह हो गया। अब बीवी इतनी ख़ूबसूरत कि लाखों में एक, और शौहर की शक्ल ऐसी अनोखी कि ऐसा अनोखा भी लाखों में एक, मगर दीन की निस्बत पर रिश्ता हो गया। ज़िन्दगी गुज़रने लगी। एक मौक़े पर शौहर ने बीवी की तरफ़ देखा तो मुस्कुराया, बीवी उसको देखकर कहने लगी कि हम दोनों जन्नती हैं। उसने पूछा यह आपको कैसे पता चला, बीवी ने कहा कि जब आप मुझे देखते हैं तो खुश होते हैं,

शुक्र अदा करते हैं। और जब मैं आपको देखती हूँ तो सब्र करती हूँ। और शरीअ़त का हुक्म है कि सब्र करने वाला भी जन्नती है और शुक्र करने वाला भी जन्नती है।

मरने से पहले एक-दूसरे की क़द्र करें

तक़रीर का खुलासा यह है कि मियाँ और बीवी एक-दूसरे के क़रीब रहकर एक-दूसरे की क़द्र करें। हमने देखा है कि बीवी शौहर की बुराईयाँ करती रहती है और जब वह मर जाता है तो फिर रोती फिरती है कि बहुत अच्छा आदमी था। मेरा भी ख़्याल करता था, बच्चों का भी ख़्याल करता था। अब तारीफ़ें शुरू हो गईं। इसी तरह शौहर बीवी के क़रीब रहकर बीवी की बुराईयाँ करता रहता है और जब वही बीवी मर जाती है तो बैठकर रोता है कि बड़ी अच्छी थी, बच्चों का बड़ा ख़्याल करती थी। मेरा ख़्याल करती थी। तो मरने के बाद दूसरे की क़द्र करने के बजाये ज़िन्दगी में एक-दूसरे की क़द्र करना सीखें। इसलिए शरीअ़त ने मुहब्बत की शादी (LOVE MARRIAGE) यानी शादी से पहले मुहब्बत करने के बजाये, शादी के बाद मुहब्बत (LOVE AFTER MARRIAGE) का तसव्वुर पेश किया है। जब शादी हो गयी, निकाह हो गया, अब मियाँ-बीवी जितनी भी मुहब्बत का वक़्त गुज़ारेंगे अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से उतना ही अज्र पायेंगे।

लिहाज़ा एक नाराज़ हो जाये तो दूसरा मना ले और उस मनाने को अपनी शिकस्त न समझे बल्कि जीत समझे कि मैंने रूठे हुए को मनाकर बाज़ी जीत ली। कि अपने घर को आबाद रखा। किसी ने कितनी अच्छी बात कही है:

इतने अच्छे मौसम में रूठना नहीं अच्छा
हार जीत की बातें कल पर हम उठा रखें

आज दोस्ती कर लें, तो जब हार-जीत की बातें बाद पर छोड़ दें और मुहब्बत व प्यार की बातें करते रहें तो फिर इनसान की ज़िन्दगी अच्छी गुज़रती है।

हदीस पाक में आता है कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने घर तशरीफ़ ले गये। देखा कि हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा प्याले में पानी पी रही हैं। (दीनदार मर्द इस वाक़िए को ज़रा ग़ौर से सुनें कि नबी पाक की दाम्पत्य ज़िन्दगी कैसी थी) चुनाँचे आप मुस्कुराते चेहरे के साथ आये और दूर से फ़रमायाः ऐ हुमैरा (नाम आ़यशा था, मगर प्यार से हुमैरा कहा करते थे। यहाँ से एक मसला यह निकला कि बीवी का प्यार में कोई नाम रख लिया जाये जो बीवी को भी पसन्द हो, शौहर को भी पसन्द हो, तो यह सुन्नत है)। नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ऐ हुमैरा! थोड़ा सा पानी मेरे लिए भी बचा देना।

अब झूठा पानी अगर नबी पाक का होता और हज़रत आ़यशा पीतीं तो यह सजता था लेकिन अल्लाह के महबूब, कायनात के लिये जो रहमत बनकर आये, वह अपनी बीवी से फ़रमाते हैं कि आ़यशा तुम अपना कुछ पानी मेरे लिये बचा देना। तो उन्होंने पानी बचा दिया। नबी पाक क़रीब तशरीफ़ लाये और प्याला अपने हाथों में लिया।

हदीस पाक में आता है कि प्याला हाथ में लेकर आप रुक गये और आपने पूछाः ऐ हुमैरा! तुमने इस प्याले पर किस जगह होंठ लगाकर पिया था? हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा क़रीब आईं और उस जगह की निशानदेही की। हदीस पाक में आता है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने प्याले के रुख़ को फेरा और उस जगह अपने होंठ मुबारक लगाकर पानी पिया। अल्लाह अल्लाह!

मेरे दोस्तो! अगर शौहर बीवी को इस क़द्र प्यार देगा तो बीवी का दिमाग़ ख़राब है कि वह घर को आबाद नहीं करेगी? बल्कि वह तो घर आबाद करने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देगी। वह

मुहब्बत का जवाब मुहब्बत से, उल्फ़त का जवाब उल्फ़त से, प्यार का जवाब प्यार से और वफ़ा का जवाब वफ़ाओं से देगी। वह शौहर की मुहब्बत को दिल में बसायेगी और अंखियों के झरोंकों में उसकी तस्वीर सजायेगी। यह है दाम्पत्य ज़िन्दगी का हसीन इस्लामी तसव्वुर। हम अपने हाथों से अपने घरों को उजाड़ते हैं और शरीअ़त व सुन्नत की तालीमात को पीठ पीछे डाल देते हैं।

एक और हदीस पाक में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई शौहर अपनी बीवी को मुस्काराकर देखता है और बीवी शौहर को मुस्कुराकर देखती है तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त दोनों को मुस्कुराकर देखते हैं। अगर ये हदीसें हमारे सामने रहेंगी तो हमारा घर तो दुनिया में जन्नत का मज़ा देने लग जायेगा। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त हमें अच्छी दाम्पत्य ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये:

फ़ुरसते ज़िन्दगी कम है मुहब्बतों के लिए
लाते हैं कहाँ से वक़्त लोग नफ़रतों के लिए

यह ज़िन्दगी इतनी थोड़ी है कि प्यार में बन्दा गुज़ारना चाहे तो भी वक़्त थोड़ा है। इस थोड़े वक़्त में पता नहीं नफ़रतों के लिए कहाँ से वक़्त निकल आता है। अल्लाह तआ़ला नफ़रतों से महफ़ूज़ फ़रमाये, मुहब्बत व प्यार और उल्फ़त भरी ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाये।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ٥

इसी किताब से......

طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ وَّمُسْلِمَةٍ (حديث شريف)

इल्म का हासिल करना हर मुसलमान मर्द और हर मुसलमान औ़रत के ऊपर फ़र्ज़ है।

इल्म की तलब जिस तरह मर्द के लिए लाज़िमी है उसी तरह औ़रत के लिए भी ज़रूरी है। बल्कि यह नाचीज़ तो यूँ कहता है कि अगर किसी आदमी के दो बच्चे हों, एक बेटा और एक बेटी, और उसके संसाधन इतने हों कि दोनों में से एक को तालीम दिलवा सकता है, तो उसको चाहिये कि वह बेटी को तालीम पहले दिलवाये। इसलिए कि "मर्द पढ़ा फ़र्द पढ़ा, औ़रत पढ़ी ख़ानदान पढ़ा।"

जब औ़रतों में दीनी तालीम आ़म होगी तो फिर आने वाली नस्लों की तरबियत भी अच्छी होगी। बल्कि आप ग़ौर करें तो इस उम्मत के हर कामयाब मर्द के पीछे आपको औ़रत का किरदार (भूमिका) नज़र आयेगा। कभी बीवी की शक्ल में, कभी बहन की शक्ल में, कभी माँ की शक्ल में और कभी बेटी की शक्ल में।

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर

हाफ़िज़ ज़ुल्फ़क़ार अहमद साहिब

नक़्शबन्दी मुजद्दिदी दामत् बरकातुहुम

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इनसान की तरबियत और तरक़्क़ी में औ़रत की भूमिका

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى. اَمَّا بَعْدُ!

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ٥ (سورة النحل آيت:۹۷)

तर्जुमाः जो शख़्स कोई नेक काम करेगा चाहे वह मर्द हो या औ़रत हो, शर्त यह है कि ईमान वाला हो, तो हम उस शख़्स को लुत्फ़ वाली (यानी पुरसुकून) ज़िन्दगी देंगे। और उनके अच्छे कामों के बदले में उनका अज्र देंगे।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ٥ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

असली बन्दा कौन?

इनसान इस दुनिया में चन्द रोज़ का मेहमान है, न यह अपनी

मर्ज़ी से दुनिया में आया है और न यह अपनी मर्ज़ी से दुनिया से वापस जाता है। इसे कोई हक़ नहीं पहुँचता कि यह दरमियानी वक़्फ़े (अन्तराल) में अपनी मनमानी ज़िन्दगी गुज़ारे। जिस मालिक व ख़ालिक़ ने इसे पैदा किया, जिसके हुक्म से यह दुनिया में आया, और जिसके हुक्म से यह दुनिया से वापस जायेगा, अगर उसी के हुक्मों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा तो फ़लाह (कामयाबी) पायेगा। इसकी ज़िन्दगी का मक़सद अल्लाह तआ़ला की बन्दगी और उसकी याद है। असल मायने में बन्दा वही होता है जिसमें बन्दगी हो, वरना तो सरासर गन्दा होता है, झूठ और फ़रेब का पुलिन्दा होता है।

अल्लाह की निकटता मर्द-औ़रत दोनों के लिए

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने मर्द और औ़रत दोनों के लिए अपने क़ुर्ब (निकटता) के दरवाज़े को खोल दिया है। इरशाद फ़रमायाः

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ

(سورۃ النحل آیت:۹۷)

जो कोई भी ईमान लाये और नेक आमाल करे, हम उसको ज़रूर-बिज़्ज़रूर पाकीज़ा ज़िन्दगी अ़ता करेंगे।

आ़म तौर पर औ़रतों में यह सोच देखी गयी है, वे समझती हैं कि विलायत के दर्जों को पाना यह तो मर्दों का काम है, औ़रतें तो सिर्फ़ अपना नमाज़-रोज़ा करें, घरेलू काम में मसरूफ़ रहें, यही उनकी ज़िन्दगी है। अगर हम इस्लामी तारीख़ का अध्ययन करें तो यह बात बिल्कुल स्पष्ट होती है कि इस उम्मत की औ़रतों ने दीनी मैदान में भी बहुत तरक़्क़ी की और इल्म के मैदान में भी उन्होंने नुमायाँ कामयाबी हासिल की। औ़रतों के अन्दर दीन का काम करने में उन्होंने दिन-रात मेहनत की और विलायत के दरजे पाने में भी वे मर्दों से पीछे न रहीं। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की निकटता हासिल करना, उसकी मारिफ़त (पहचान) हासिल करना, उसकी रिज़ा हासिल करना, यह जिस तरह

मर्दों के लिए ज़रूरी है उसी तरह औरतों के लिए भी ज़रूरी है। और यह तभी मुम्मिन है जब इनसान दीन का इल्म हासिल करे और इख़्लास के साथ उस पर अमल करे।

इल्म हासिल करने का हुक्म दोनों के लिए

चुनाँचे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ وَّمُسْلِمَةٍ

इल्म का हासिल करना हर मुसलमान औरत मर्द के ऊपर फ़र्ज़ है।

इल्म की तलब जिस तरह मर्द के लिए लाज़िमी है उसी तरह औरत के लिए भी ज़रूरी है। बल्कि यह आजिज़ तो यूँ कहता है कि अगर किसी आदमी के दो बच्चे हों, एक बेटा और एक बेटी, और उसके संसाधन इतने हों कि दोनों में से एक को तालीम दिलवा सकता है, तो उसको चाहिये कि वह बेटी को तालीम पहले दिलवाये। इसलिए कि "मर्द पढ़ा फ़र्द पढ़ा, औरत पढ़ी ख़ानदान पढ़ा" जब औरतों में दीनी तालीम आम होगी तो फिर आने वाली नस्लों की तरबियत भी अच्छी होगी, बल्कि आप ग़ौर करें तो इस उम्मत के हर कामयाब मर्द के पीछे आपको औरत का किरदार (भूमिका) नज़र आयेगा। कभी बीवी की शक्ल में, कभी बहन की शक्ल में, कभी माँ की शक्ल में और कभी बेटी की शक्ल में। इस उम्मत के कामिलीन में से आप किसी की भी ज़िन्दगी को देख लीजिए। आपको हमेशा उसकी शख़्सियत के पीछे किसी न किसी औरत का सहयोग और मदद नज़र आयेगी। उसकी तरबियत नज़र आयेगी।

कामयाब मर्द के पीछे औरत का हाथ

एक कामयाब मर्द के पीछे आपको औरत का किरदार (भूमिका) नज़र आयेगा। कभी बीवी की शक्ल में, कभी माँ की शक्ल में, कभी

बहन की शक्ल में और कभी बेटी की शक्ल में। इसकी चन्द मिसालें आपके सामने पेश की जाती हैं।

मिसाल १:- नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के महबूब, अव्वल व आख़िर में आने वाले तमाम इनसानों के सरदार हैं। फ़रिश्तों के इमाम हैं। आपको अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने वह शान बख़्शी कि:

बाद अज़् ख़ुदा बुज़ुर्ग तुई किस्सा मुख़्तसर

यानी ख़ुदा तआ़ला के बाद आप ही का सबसे बड़ा दर्जा है।

लेकिन जब आप पर वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) नाज़िल हुई और आप घबराये हुए अपने घर तशरीफ़ लाये तो आपने अपनी बीवी से फ़रमाया "मुझे कम्बल उढ़ा दो, मुझे कम्बल उढ़ा दो" चुनाँचे जिब्राईल को आपने पहली बार उस शक्ल में देखा था, वह्य उतरने का पहली बार तर्जुबा हुआ था, नबी के दिल पर एक ख़ौफ़ सा तारी था। एक हैबत सी तारी थी। तो आपने फ़रमाया "मुझे तो अपनी जान का ख़तरा है" ऐसे वक़्त में आपकी बीवी साहिबा ने आपको तसल्ली की बातें कहीं और फ़रमाया "ऐ महबूब! आप तो सिला-रहमी करने वाले हैं" आपके चन्द अच्छे अख़्लाक़ गिनवा कर कहा कि जब आपके अन्दर इतने अच्छे अख़्लाक़ मौजूद हैं तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त आपको कभी ज़ाया नहीं फ़रमायेंगे। उनकी बातों को सुनकर आपके दिल को तसल्ली मिल जाती है। चुनाँचे महबूबे ख़ुदा की ज़िन्दगी में आपको औ़रत का किरदार बीवी की शक्ल में नज़र आयेगा, जो आपको मुश्किल वक़्त के अन्दर तसल्लियाँ दिया करती थी। बल्कि जब आपका निकाह हुआ तो उन्होंने अपना सारा माल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के क़दमों पर डाल दिया और आपको उनके उसी माल ने शुरू में बहुत फ़ायदा दिया।

मिसाल २:- हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के यारे-ग़ार कहलाते हैं, सफ़र

के साथी कहलाते हैं। आप उनके सफ़रे हिजरत को देखें तो उनके पीछे भी आपको एक औ़रत का, एक लड़की का किरदार (भूमिका) नज़र आयेगा।

हदीस पाक में आता है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के यहाँ तशरीफ़ ले गये तो आपने फ़रमायाः अबू बक्र! मैं तन्हाई चाहता हूँ। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! मैं हूँ, मेरी बीवी है और मेरी दो बेटियाँ हैं और तो कोई ग़ैर नहीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इत्मीनान का इज़्हार फ़रमाया, चुनाँचे आपने फ़रमाया कि हिजरत के सफ़र का हुक्म हुआ है। आपकी बड़ी बेटी हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उसी वक़्त दुपट्टे को फाड़ कर दो टुकड़े किये, एक को अपने सर पर पर्दे के लिए रख लिया और दूसरे के अन्दर उन्होंने नबी अ़लैहिस्सलाम के सामान को बाँध दिया, और सामान बाँधकर नबी करीम अ़लैहिस्सलाम को रुख़्सत फ़रमाया।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपनी बीवी से फ़रमाया कि आप खाना बना दें और अपनी बेटी (हज़रत असमा) से कहा कि तू चूँकि छोटी है, लोग तुझ पर शक भी नहीं करेंगे। तू यह खाना हमें ग़ारे-सूर में पहुँचा देना। चुनाँचे उन्होंने हामी भरी। अभी नबी अ़लैहिस्सलाम और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु रुख़्सत ही हुए थे कि असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के दादा अबू क़हाफ़ा तशरीफ़ लाये। उन्होंने आकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बारे में पूछा। बच्चों ने कहा वह तो चले गये। उनके दिल पर ज़रा घबराहट सी हुई, कहने लगे अपना माल तो सारा नहीं ले गये? हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहने लगीं मैं बच्ची थी मगर मैंने यह किया कि एक जगह पत्थर पड़े हुए थे उनके ऊपर कपड़ा डाल दिया और अपने दादा का हाथ उनपर रखवा दिया और कहा कि दादा! अब्बू के

पीछे भी बहुत कुछ है। तो दादा समझे कि शायद माल पीछे पड़ा हुआ होगा, वह मुत्मईन हो गये।

हज़रत असमा फ़रमाती हैं: मेरे वालिद तो अल्लाह के महबूब के साथ चले गये और पाँच हज़ार दिर्हम साथ लेकर गये थे, पीछे तो अल्लाह और उसके रसूल का नाम ही छोड़कर गये थे। फ़रमाती हैं कि मैं उनको खाना पहुँचाती थी। चुनाँचे जब दूसरे दिन खाना लेकर गयी तो नबी अ़लैहिस्सलाम ने देखा कि आज छोटी असमा के चेहरे पर ज़ख़्म के निशान हैं। तबीयत रन्जीदा है। आपने पूछा असमा आज क्या बात है, तू उदास नज़र आती है? हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की आँखों में आँसू आ गये। नबी अ़लैहिस्सलाम मुतवज्जह हुए पूछा असमा तू क्यों रो रही है? अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! कल जब मैं खाना देकर वापस जा रही थी तो रास्ते में अबू जहल मिल गया था, उसने मुझे बालों से मज़बूती के साथ पकड़ लिया और बालों को खींच-खींचकर कहने लगा, असमा बताओ तुम्हें पता है कि तुम्हारे वालिद कहाँ हैं? तुम्हारे पैग़म्बर कहाँ हैं? ऐ अल्लाह के महबूब! मैंने उसे सच-सच कह दिया, हाँ! मुझे पता है। वह कहने लगा फिर बताओ वे कहाँ हैं? मैंने जवाब दिया हरगिज़ नहीं बताऊँगी। उसने कहा मैं तुम्हें मारूँगा मैं सख़्त सज़ा दूँगा। ऐ अल्लाह के महबूब! मैंने उससे कहा "जो तुम कर सकते हो वह कर लो मगर मैं नहीं बताऊँगी" ऐ अल्लाह के महबूब! उसने अचानक मुझे ज़ोरदार थप्पड़ लगाया, मैं नीचे गिरी, चट्टान पर मेरा माथा लगा, मेरे माथे से ख़ून निकल आया, मेरी आँखों से आँसू आ गये। मुझे सख़्त तकलीफ़ हो रही थी। अबू जहल ने मुझे फिर बालों से पकड़कर खड़ा कर दिया, कहने लगा असमा! तुझे बहुत मारूँगा जल्दी बता दे। ऐ अल्लाह के महबूब! मैंने उसे जवाब दिया "ऐ अबू जहल मेरी जान तो तेरे हवाले मगर मैं मुहम्मदे अ़रबी को तेरे हवाले नहीं करूँगी"।

आप अन्दाजा कीजिए एक छोटी सी बच्ची है, लेकिन उसको भी

नबी के साथ इतनी मुहब्बत है, कहती है कि मेरी जान तो तेरे हवाले मगर मुहम्मदे अ़रबी को तेरे हवाले नहीं करूँगी। तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के इस कामयाब सफ़र के पीछे आपको एक औ़रत का किरदार नज़र आयेगा, बेटी की शक्ल में।

मिसाल ३:- हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु 'मुरादे-मुस्तफ़ा' कहलाते हैं। वह एक बार तलवार लेकर निकले कि नबी अ़लैहिस्सलाम को शहीद कर दें। रास्ते में एक सहाबी मिले, पूछा कहाँ का इरादा है? कहने लगे कि मैं उनको (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को) शहीद करना चाहता हूँ, कि न रहे बाँस न बजे बाँसुरी। कहने लगे सुब्हानल्लाह! तुम अपनी बहन के घर जाकर तो देखो, तुम्हारी बहन और बहनोई दोनों मुसलमान हो चुके हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बड़ा गुस्सा आया कि मेरे घर के लोग मेरी इजाज़त और इल्म के बग़ैर इस्लाम क़बूल कर लें, यह कैसे हो सकता है। वहीं से बहन के घर पहुँचे और बहन के घर पर दस्तक दी, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सुना कि वे बैठे हुए कुछ पढ़ रहे हैं। जब उन्होंने दस्तक दी तो उनकी बहन फ़ातिमा पहचान गईं कि उमर दरवाज़े पर आये खड़े हैं। चुनाँचे जो सहाबी पढ़ा रहे थे वह तो छुप गये, उन्होंने वे चीज़ें भी छुपा दीं जिन पर क़ुरआन की आयतें लिखी हुई थीं।

दरवाज़ा खोला, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु अन्दर तशरीफ़ लाये, आकर बहनोई से पूछा मैंने सुना है कि आप लोग मुसलमान हो गये? बहनोई ने जवाब दिया कि इस्लाम सच्चा दीन है, तो फिर उसको क़बूल करने में क्या रुकावट है? जब उन्होंने ये अल्फ़ाज़ कहे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने गुस्से में आकर उनको मारना शुरू कर दिया। बहन फ़ातिमा बचाने के लिए बीच में आईं। उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु जलाल में थे आपनी बहन के चेहरे पर भी एक ज़ोरदार थप्पड़ रसीद किया। फ़ातिमा नीचे गिर गईं, मगर फिर संभल

कर उठीं, उनकी आँखों में आँसू थे। उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने आकर खड़ी हो गईं और उस वक़्त ये अल्फ़ाज़ कहे:

"उमर! जिस माँ का दूध तुमने पिया है, उसी माँ का दूध मैंने पिया है। तुम मेरे जिस्म से जान तो निकाल सकते हो, तुम हमारे दिल से ईमान नहीं निकाल सकते"।

ये अल्फ़ाज़ जो उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दिल पर बिजली बनकर गिरे, दिल मोम हो गया। कहने लगे फ़ातिमा! बताओ तुम क्या पढ़ रही थीं। कहने लगीं भाई! आपका जिस्म नापाक है, शिर्क की गंदगी ने आपको नापाक कर दिया है, गुस्ल कर लीजिए ताकि आप उस पाक कलाम को सुन सकें। चुनाँचे गुस्ल करके अल्लाह का कलाम सुना, ये आयतें सुनीं:

اِنَّنِیْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ (سورة طٰه)

मैं ही अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तुम मेरी ही इबादत किया करो और मेरी ही याद की नमाज़ पढ़ा करो।

कहने लगे कि अच्छा तुम मुझे भी मुसलमान बना दो। उस वक़्त वह छुपे हुए सहाबी बाहर निकले, कहने लगे मुबारक हो उमर! नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कई दिन से दुआ़ माँग रहे थे "ऐ अल्लाह! उमर बिन ख़त्ताब के ज़रिये या उमर बिन हिशाम के ज़रिये दीन को इज़्ज़त अ़ता फ़रमा" अल्लाह के महबूब की दुआ़ तेरे हक़ में क़बूल हो गयी। आओ मैं आपको लेकर चलता हूँ। चुनाँचे दोनों हज़रात दारे-अर्क़म में आते हैं, नबी अ़लैहिस्सलाम कुन्डी लगाये बैठे हैं और मुसलमानों को दीनी तालीम दे रहे हैं।

जब दस्तक दी तो एक सहाबी ने दरवाज़े के सुराख़ में से देखा, कहा ऐ अल्लाह के महबूब! उमर खड़े हुए हैं, हाथ में नंगी तलवार है। अब पता नहीं क्या इरादा है। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु आगे बढ़े और फ़रमाने लगे खोल दो दरवाज़ा, अगर नेक इरादे से आये हैं तो उनका आना मुबारक, और अगर कोई दूसरा इरादा लाये हैं तो

उनकी तलवार होगी और उमर की गर्दन होगी। इस जगह लोग देखेंगे कि मैं उनके साथ क्या सुलूक करता हूँ।

चुनाँचे दरवाज़ा खोला, मगर उमर के तो अन्दाज़ बदले हुए थे। वह जो क़त्ल करने की नीयत से चले थे, खुद क़त्ल हो चुके थे। उनका दिल तो उस वक़्त अल्लाह के महबूब की गुलामी में आ चुका था। अदब के साथ आकर बैठते हैं, कहते हैं मैं तो आपका ख़ादिम बनने के लिए हाज़िर हुआ हूँ। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाहु अकबर के अल्फ़ाज़ कहे, उनको सुनकर मुसलमानों ने भी तकबीर का नारा बुलन्द किया। यह दीन इस्लाम में सबसे पहला तकबीर का नारा था जो लगाया गया। इनसे पहले हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु मुसलमान हुए। उनका नम्बर उन्तालीसवाँ (३९) था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु मुसलमान हुए तो इनका नम्बर चालीसवाँ था। थोड़ी देर के बाद नमाज़ का वक़्त हुआ, वहीं नमाज़ पढ़ने लगे। अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब यहाँ क्यों नमाज़ पढ़ते हो? अब तो उमर मुसलमान हो चुका, आईये मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ेंगे।

चुनाँचे मस्जिद में तशरीफ़ ले गये, ऐलान किया "ऐ कुरैशे मक्का! अगर तुममें से कोई चाहे कि अपनी बीवी को बेवा बनवाये और बच्चों को यतीम करवाये, तो उसे चाहिये कि उमर के मुक़ाबले में आ जाये। हम अब यहाँ अल्लाह की इबादत किया करेंगे" (सुब्हानल्लाह) अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने इस्लाम को इस सपूत के ज़रिये से इज़्ज़त अ़ता फ़रमाई। मगर इस सपूत को जो ईमान की नेमत मिली उसके पीछे उनकी बहन फ़ातिमा का किरदार नज़र आता है। लिहाज़ा एक और कामयाब हस्ती के पीछे एक औ़रत का किरदार एक बहन की शक्ल में नज़र आता है, और इस तरह की कितनी ही मिसालें हैं।

मिसाल ४:- हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बड़े नामवर कमांडर गुज़रे हैं, जिनके बारे में आता है कि जब फ़त्हे-मक्का हुई तो

उनको पक्का यक़ीन हो गया था कि मैंने इस्लाम के ख़िलाफ़ इतनी साज़िशें की हैं, अल्लाह के महबूब को इतनी तकलीफ़ें पहुँचाई हैं, आज तो मुझे ज़रूर क़त्ल करने का हुक्म दे दिया जायेगा। चुनाँचे यह वहाँ से भागकर कहीं दूर चल पड़े। उनकी बीवी अगले दिन मुसलमान हुई उन्होंने नबी अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! मेरे शौहर को अमन अ़ता कर दीजिए ताकि वह इस्लाम क़बूल कर सके। महबूबे-ख़ुदा ने अमन दे दिया। उनकी बीवी उनके पीछे चली यहाँ तक कि रास्ते में एक जगह दरिया था, किताबों में लिखा है कि इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु कश्ती के अन्दर बैठे, दरिया पार करके आगे जाना चाहते थे, उनकी बीवी ने भी एक कश्ती ली और तेज़ी के साथ चलकर दरिया के दरमियान में कश्ती उनके सामने लाई और अपने शौहर से कहा, कहाँ जाते हो? वापस चलिये, मक्के में ज़िन्दगी गुज़ारेंगे। शौहर ने कहा मुझे क़त्ल कर दिया जायेगा। फ़रमाने लगीं, नहीं! मैं तुम्हारे लिए अमन ले चुकी हूँ।

चुनाँचे अपने शौहर को लेकर वापस आती हैं, और फिर शौहर भी इस्लाम को क़बूल करते हैं और अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त फिर उनको इस्लाम का एक बड़ा जर्नल बनाते हैं। यहाँ भी एक और कामयाब मर्द के पीछे आपको एक औ़रत का किरदार नज़र आयेगा, एक बीवी की हैसियत से। इस क़िस्म की और कितनी ही मिसालें हैं। सहाबा किराम की ज़िन्दगियों में भी और उनके बाद भी।

मिसाल ५:- इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अ़लैहि के बारे में किताबों में लिखा है कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने उनको इमामे दारुल्-हिज्रत बनाया था। मदीना तय्यिबा के अन्दर मुक़ीम थे। उनके बारे में आता है कि जब मस्जिदे नबवी में बैठकर वह दीन सीखने वालों से हदीस पाक सुनते थे, उनकी बेटियाँ जो हदीस की आ़लिमा थीं, हाफ़िज़ा थीं, पर्दे के पीछे बैठकर वे भी उस दर्स (सबक़) में शिर्कत करती थीं। कभी इबारत को पढ़ते हुए अगर कोई मर्द ग़लती कर जाता तो ये बच्चियाँ

एक लकड़ी के ऊपर लकड़ी मारकर आवाज़ पैदा करतीं, उस आवाज़ से इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अ़लैहि को पता चल जाता कि इबारत पढ़ने वाले ने ग़लती की है, तो कई बार आप मुतवज्जह हो जाते।

इससे मालूम हुआ कि एक और कामयाब मर्द के पीछे आपको औ़रत का किरदार नज़र आयेगा। उनकी बेटियों की हैसियत से। जो उनकी तालीम में उनकी मददगार बन रही हैं। सुब्हानल्लाह! इस क़िस्म की सैकड़ों मिसालें आपको इस्लामी तारीख़ में मिल जायेंगे। इसलिए इस आ़जिज़ ने यह बात कही कि हर कामयाब शख़्सियत के पीछे आपको औ़रत का किरदार नज़र आयेगा। कभी माँ की हैसियत से, कभी बीवी की हैसियत से, कभी बहन की हैसियत से और कभी बेटी की हैसियत से। इससे आगे अगर चलें तो इस उम्मत के बुज़ुर्गों और औलिया-अल्लाह की मिसालें तो बहुत ज़्यादा हैं।

मिसाल ६:- इमाम ग़ज़ाली को अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने दीन की इतनी बड़ी शख़्सियत बनाया, उनकी ज़िन्दगी को आप देखिये, उनके पीछे उनकी माँ का किरदार (रोल) नज़र आयेगा।

मुहम्मद ग़ज़ाली और अहमद ग़ज़ाली दो भाई थे। यह अपने लड़कपन के ज़माने में यतीम हो गये थे। इन दोनों की तरबियत उनकी वालिदा (माँ) ने की, उनके बारे में एक अ़जीब बात लिखी है कि माँ उनकी इतनी अच्छी तरबियत करने वाली थीं कि वह उनको नेकी पर लाईं। यहाँ तक कि आ़लिम बन गये, मगर दोनों भाईयों की तरबियतों में फ़र्क़ था। इमाम ग़ज़ाली अपने वक़्त के बड़े वाअ़िज़ (दीनी बयान करने वाले, मुक़र्रिर) और ख़तीब थे, और मस्जिद में नमाज़ पढ़ाते थे। उनके भाई आ़लिम भी थे और नेक भी थे लेकिन वह मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के बजाये अपनी अलग नमाज़ पढ़ लिया करते थे।

एक बार इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपनी वालिदा से कहा अम्मी! लोग मुझपर एतिराज़ करते हैं कि तू इतना बड़ा ख़तीब और दीन का आ़लिम भी है और मस्जिद का इमाम है, मगर तेरा

भाई तेरे पीछे नमाज़ नहीं पढ़ता। अम्मी! आप भाई से कहिये कि वह मेरे पीछे नमाज़ पढ़ा करे। माँ ने बुलाकर नसीहत की, चुनाँचे अगली नमाज़ का वक़्त आया, इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि नमाज़ पढ़ाने लगे और उनके भाई ने पीछे नीयत बाँध ली। लेकिन अजीब बात है कि जब एक रकअत पढ़ने के बाद दूसरी रकअत शुरू हुई तो उनके भाई ने नमाज़ तोड़ दी और जमाअत में से बाहर निकल आये। अब जब इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि ने नमाज़ मुकम्मल की तो उनको बड़ी बेइज़्ज़ती महसूस हुई। वह बहुत ज़्यादा परेशान हुए लिहाज़ा ग़मज़दा दिल के साथ घर वापस लौटे। माँ ने पूछा बेटा बड़े परेशान नज़र आते हो? कहने लगे अम्मी भाई न जाता तो ज़्यादा बेहतर रहता, यह गया और एक रकअत पढ़ने के बाद दूसरी रकअत में वापस आ गया, और उसने आकर अलग नमाज़ पढ़ी। माँ ने उसको बुलाया और कहा बेटा तुमने ऐसा क्यों किया? छोटा भाई कहने लगा अम्मी! मैं उनके पीछे नमाज़ पढ़ने लगा, पहली रकअत तो इन्होंने ठीक पढ़ाई, मगर दूसरी रकअत में अल्लाह की तरफ़ ध्यान के बजाये इनका ध्यान किसी और जगह था। इसलिए मैंने उनके पीछे नमाज़ छोड़ दी और आकर अलग पढ़ ली।

माँ ने इमाम ग़ज़ाली से पूछा क्या बात है? कहने लगे कि अम्मी बिल्कुल ठीक बात है। मैं नमाज़ से पहले फ़िके (मसाईल) की एक किताब पढ़ रहा था, और निफ़ास (बच्चे की पैदाईश के बाद आने वाले ख़ून) के कुछ मसाईल थे जिन पर गहराई से ग़ौर कर रहा था। जब नमाज़ शुरू हुई पहली रकअत तो मेरी इस हालत में गुज़री कि मेरी तवज्जोह अल्लाह की तरफ़ थी। लेकिन दूसरी रकअत में वही निफ़ास के मसाईल मेरे ज़ेहन में आने लग गये। उनमें थोड़ी देर के लिए ज़ेहन चला गया इसलिए मुझसे यह ग़लती हुई। माँ ने उस वक़्त एक ठण्डी साँसी ली और कहा अफ़सोस कि तुम दोनों में से कोई भी मेरे काम का न बना।

इस जवाब को जब सुना दोनों भाई परेशान हुए। इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने तो माफ़ी माँग ली, अम्मी मुझसे ग़लती हुई मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था, मगर दूसरा भाई पूछने लगा अम्मी मुझे तो कश्फ़ (यानी भाई के दिल का हाल मुझ पर ज़ाहिर) हुआ था, उस कश्फ़ की वजह से मैंने नमाज़ तोड़ी तो मैं आपके काम का क्यों न बना? माँ ने जवाब दिया कि "तुममें से एक तो निफ़ास के मसाईल खड़ा सोच रहा था और दूसरा पीछे खड़ा उसके दिल को देख रहा था। तुम दोनों में से अल्लाह की तरफ़ तो एक भी मुतवज्जह न था, लिहाज़ा तुम दोनों मेरे काम के न बने।"

सोचने की बात है कि जब माँ ऐसी हो और तसव्वुफ़ के इतने बरीक मसाईल बच्चों को बताने वाली हो तो फिर बच्चे बड़ होकर इमाम ग़ज़ाली क्यों न बनेंगे। तो फिर एक और कामयाब मर्द के पीछे आपको औ़रत का किरदार एक माँ की हैसियत से नज़र आयेगा।

मिसाल ७:- इसी तरह शैख़ अ़ब्दुल-क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि लड़कपन में तालीम हासिल करने चलते हैं। माँ उनके कपड़ों में कुछ पैसे सी देती हैं और नसीहत कर देती हैं बेटे हमेशा सच बोलना। रास्ते में डाकुओं ने क़ाफ़िला लूट लिया। किसी ने पूछा तुम्हारे पास माल है? इन्होंने सच-सच बता दिया। उसने सरदार को बताया तो सरदार ने पास बुलाकर कहा तूने झूठ क्यों नहीं बोला? न तुझे जान की फ़िक्र न माल की फ़िक्र? कहने लगे मेरी अम्मी ने कहा था कि बेटा सच बोलना और मैंने उनसे वायदा कर लिया था, मुझे जान की परवाह न थी, मुझे अपने क़ौल का पास रखना था। डाकुओं के दिल में यह बात घर कर गयी कि जब एक बच्चा माँ से किये हुए अ़हद का इतना पास रखता है तो हमने भी तो कलिमा पढ़कर अपने रब से अ़हद किया है, हम उसका पास क्यों न करें? चुनाँचे वे अल्लाह से तौबा करते हैं और उसके बाद उनकी ज़िन्दगी में नेकोकारी आ जाती है। यह बच्चा आगे चलकर शैख़ अ़ब्दुल-क़ादिर जैलानी बना। सोचिये

एक और कामयाब मर्द के पीछे आपको औरत का किरदार माँ की शक्ल में नज़र आयेगा।

मिसाल ८:- इमाम बा-यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि के बारे में आता है, जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का क़ौल है कि जिस तरह जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों के अन्दर एक नुमायाँ शान अ़ता फ़रमाई है, उसी तरह बा-यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने औलिया-अल्लाह में एक ख़ास शान अ़ता फ़रमाई है। और यह बात कहने वाले भी जुनैद बिग़दादी हैं।

यही बा-यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि जब बचपन में यतीम हो गये, माँ ने उनको मदरसे में दाख़िल कर दिया। क़ारी साहिब से कहा कि बच्चे को अपने पास रखना, ज़्यादा घर आने की आ़दत न पड़े। ऐसा न हो कि यह इल्म से मेहरूम हो जाये। चुनाँचे यह कई दिन क़ारी साहिब के पास रहे। एक दिन उदास हो गये, दिल चाहा कि अम्मी से मिल आऊँ। क़ारी साहिब से इजाज़त माँगी, उन्होंने शर्त लगा दी, तुम इतना सबक़ याद करके सुनाओ तब इजाज़त मिलेगी। सबक़ भी बहुत ज़्यादा बता दिया, मगर बच्चा ज़हीन था, उसने जल्दी से वह सबक़ याद करके सुना दिया, इजाज़त मिल गयी। यह अपने घर वापस आये। दरवाज़े पर आकर दस्तक दी। माँ वुज़ू कर रही थी। वह पहचान गयी कि मेरे बेटे की तरह दस्तक मालूम होती है। चुनाँचे दरवाज़े के क़रीब आकर पूछा "किसने दरवाज़े को खटखटाया?" जवाब दिया बा-यज़ीद हूँ। तो माँ कहती है एक मेरा भी बा-यज़ीद था, मैंने तो उसे अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दिया, मदरसे में डाल दिया, तू कौन है जो अब खड़ा मेरा दरवाज़ा खटखटा रहा है।

जब उन्होंने ये अल्फ़ाज़ सुने तो समझ गये कि अम्मी चाहती हैं कि मेरा दरवाज़ा न खटखटाये। अब बा-यज़ीद मदरसे में अल्लाह का दरवाज़ा खटखटाये और उसी से ताल्लुक़ जोड़े। चुनाँचे वापस आये

मदरसे में रहे और उस वक़्त निकले जब आ़लिम बा-अ़मल बन चुके थे। और अल्लाह ने उनको बा-यज़ीद बना दिया था।

यहाँ एक और कामयाब शख़्सियत के पीछे आपको एक औ़रत का किरदार एक माँ की शक्ल में नज़र आयेगा।

मिसाल ९:- हज़रत ख़नसा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में आता है कि उनके चार बेटे थे। वह जब खाने पर बैठतीं तो बच्चों को कहतीं मेरे बेटो! तुम उस माँ के बेटे हो जिसने न मामूँ को रुस्वा किया न तुम्हारे बाप के साथ ख़ियानत की। जब बार-बार यह कहतीं तो एक बार बच्चों ने कहा: अम्मी आख़िर इसका क्या मतलब है? फ़रमाने लगीं मेरे बेटो! जब मैं कुंवारी थी मुझसे कोई ग़लती न हुई जिससे तुम्हारे मामूँ की रुस्वाई होती, और जब शादी हुई तो मैंने तुम्हारे बाप के साथ ख़ियानत नहीं की। मैं इतनी ग़ैरत वाली और हयादार ज़िन्दगी गुज़ारने वाली औ़रत हूँ। बच्चे पूछते! अम्मी आप क्या चाहती हैं? माँ कहती! बेटो जब तुम जवान हो जाओगे तुम सब अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना और शहीद हो जाना, और मैं आकर तुम्हें देखूँगी। अगर तुम्हारी पुश्त पर ज़ख़्म होंगे तो मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं करूँगी। बेटे पूछते अम्मी आप क्यों कहती हैं कि शहीद हो जाना, शहीद हो जाना। तब माँ समझातीं कि मेरे बेटो! इसलिए कि जब क़ियामत के दिन इन्साफ़ क़ायम होगा और अल्लाह तआ़ला पूछेंगे "शहीदों की मायें कहाँ हैं? मेरे बेटो! उस वक़्त मेरे परवर्दिगार के सामने मुझे सुर्ख़रूई नसीब होगी कि मैं भी चार शहीदों की माँ हूँ" सोचने की बात है कि ऐसे शहीदों के पीछे आपको एक औ़रत का किरदार माँ की शक्ल में नज़र आयेगा।

मिसाल १०:- अ़ल्लामा इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अ़लैहि जिन्होंने "तावीरुरुअ़्या" (ख़्वाबों की ताबीर की) किताब लिखी। उनका रुतबा अल्लाह ने बहुत बड़ा बनाया। आज भी हर आ़लिम के पास वही

किताब होती है और ख़्वाबों की ताबीर उसी में से बताई जाती है। उनकी एक बहन थीं "हफ़्सा" यह सारी क़िराअतों में इतनी माहिर थीं, इतनी अच्छी क़ारिया (कुरआन को बेहतरीन तरीक़े पर पढ़ने वाली) थीं, उनके हालात में लिखा हुआ है कि ३२ साल अपनी घर की मस्जिद में गुज़ार दिये, सिर्फ़ तहारत वग़ैरह के लिए मस्जिद से बाहर निकलतीं, बाक़ी सारा वक़्त उसी मस्जिद में बैठकर औरतों को और छोटे बच्चों को दीन की तालीम देतीं। इतनी बड़ी क़ारिया थीं कि मुहम्मद इब्ने सीरीन को ख़ुद अगर कुरआन के अल्फ़ाज़ में किसी लफ़्ज़ के तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण और सही अदायगी) के अन्दर मुश्किल पेश आती तो किसी बच्चे को भेजकर कहते कि जाओ देखो हफ़्सा इस लफ़्ज़ को किस तरह अदा करती है। फिर इस लफ़्ज़ को तुम भी वैसे ही अदा कर लेना।

चुनाँचे उनके बारे में बाज़ ताबिईन ने लिखा है कि हमने इतनी इबादत गुज़ार और इतनी इल्म वाली औरत कहीं नहीं देखी, यहाँ तक कि बाज़ ने किताबों में लिखा कि हमने ऐसी औरत इल्म वाली देखी कि जिनको अगर हम हसन बसरी पर भी चाहें तो फ़ज़ीलत दे सकते हैं। किसी ने कहा कि सईद बिन मुसैयब से भी ज़्यादा? तो जवाब दिया हाँ। किसी ने उनकी बाँदी से पूछा कि अपनी मालिकन के बारे में क्या कहती हो?

उसने बड़ी तारीफ़ें कीं और कहने लगीं, बड़ा अच्छा कुरआन शरीफ़ पढ़ती हैं। हर वक़्त इबादत करती रहती हैं। हर काम शरीअत के मुताबिक़ करती हैं। लेकिन पता नहीं उनसे कौनसा गुनाह सर्ज़द हो गया है जो इतना बड़ा है कि इशा से नमाज़ की नीयत बाँधकर रोना शुरू करती हैं और फ़ज्र तक खड़ी रोती हैं (वह बेचारी बाँदी यह समझती कि शायद यह किसी बड़े गुनाह की वजह से सारी रात रो-रोकर माफ़ियाँ माँगती हैं)।

इससे अन्दाज़ा लगाईये कि उनकी रातें कैसे गुज़रा करती थीं और इससे आप अन्दाज़ा लगाईये कि हफ़्सा बिन्ते सीरीन ने दीन की ख़िदमत कितनी ज़्यादा की। इस क़िस्म की और भी कितनी मिसालें हैं। तो बात यह चल रही थी कि हर कामयाब शख़्सियत (मर्द) के पीछे आपको औ़रत का किरदार नज़र आयेगा, किसी न किसी शक्ल में, माँ की शक्ल में, बीवी की शक्ल में, बहन की शक्ल में या बेटी की शक्ल में।

मिसाल ११:- ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने बंगाल का सफ़र किया। आपके सफ़र में कई लोग आपके हाथ पर मुसलमान हुए। कई लोगों ने तौबा पर बैअ़त की। जब आप घर तशरीफ़ लाये तो चेहरे पर ख़ुशी के आसार थे। माँ ने पूछा मुईनुद्दीन! बड़े ख़ुश नज़र आते हो? कहने लगे अम्माँ! इसलिए कि सात लाख हिन्दुओं ने मेरे हाथ पर इस्लाम क़बूल किया और सत्तर लाख मुसलमानों ने मेरे हाथ पर तौबा की बैअ़त की। इसलिए आज मेरा दिल बहुत ख़ुश है।

माँ ने कहा बेटा! यह तेरा कमाल नहीं है, यह तो मेरा कमाल है। फ़रमाया मगर माँ बतायें तो सही कैसे? माँ ने जवाब दिया कि बेटा जब तुम पैदा हुए तो मैंने कभी भी ज़िन्दगी में तुम्हें बिना वुज़ू के दूध नहीं पिलाया। आज उसकी यह बरकत है कि तुम्हारे हाथों पर अल्लाह तआ़ला ने लाखों लोगों को कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दी। तो एक कामयाब शख़्सियत के पीछे आपको एक औ़रत का किरदार नज़र आयेगा बहैसियत माँ के।

मिसाल १२:- हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अ़लैहि आज भी कुतुब-मिनार के क़रीब लेटे हुए हैं। उनके बारे में भी मशहूर वाक़िआ है। उनके नाम के साथ कुतबुद्दीन बख़्तियार "काकी" का लफ़्ज़ लगाया जाता है। यह हिन्दी का लफ़्ज़ है। इसके मायने हैं "रोटी"।

वाकिआ यह हुआ कि जब यह पैदा हुए तो उनके माँ-बाप बैठे हुए आपस में मश्विरा कर रहे थे कि हमारा बेटा नेक कैसे बने? अच्छा कैसे बने? चुनाँचे उनकी माँ ने कहा मेरे ज़ेहन में एक तजवीज़ है, कल से मैं उस तजवीज़ पर अ़मल करूँगी। अगले दिन जब बच्चा मदरसे में चला गया, माँ ने खाना बनाया और अलमारी में कहीं छुपाकर रख दिया। बच्चा आया कहने लगा अम्मी भूख लगी है, मुझे खाना दे दीजिए। माँ ने कहा बेटा हमें भी तो खाना अल्लाह तआ़ला देते हैं वही रज़्ज़ाक़ हैं, वही रिज़्क़ पहुँचाते हैं, वही मालिक व ख़ालिक़ हैं। माँ ने अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त का तआ़रुफ़ करवाया और कहा कि बेटा तुम्हारा रिज़्क़ भी वही भेजते हैं, तुम अल्लाह से माँगो। बेटे ने कहा अम्मी मैं कैसे माँगू? माँ ने कहा बेटा मुसल्ला बिछाओ। चुनाँचे मुसल्ला बिछा दिया, बेटा अत्तहिय्यात की शक्ल में बैठ गया। छोटे-छोटे मासूम हाथ उठाये। माँ ने कहा बेटा दुआ करो, बेटा दुआ कर रहा है कि ऐ अल्लाह मैं मदरसे से आया हूँ भूख लगी है। ऐ अल्लाह मुझे खाना दे दीजिए।

बेटे ने थोड़ी देर इस तरह आ़जिज़ी की। पूछने लगा अम्मी अब क्या करूँ? माँ ने कहा बेटा तुम ढूँढो अल्लाह ने खाना भेज दिया होगा। थोड़ी देर कमरे में ढूँढा आख़िरकार अलमारी में खाना मिल गया। बेटे ने खाना खा लिया। अब बेटे के दिल में एक तलब पैदा हुई वह रोज़ अल्लाह तआ़ला की बातें पूछता। अम्मी वह सबको खाना देते हैं परिन्दों को भी, हैवानों को भी? पता नहीं उनके पास कितने ख़ज़ाने हैं? वे ख़त्म नहीं होते? वह अल्लाह तआ़ला के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा मालूमात हासिल करने की कोशिश करता। माँ का दिल खुश होता कि बेटे के दिल में अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त का ताल्लुक़ बढ़ रहा है। चुनाँचे जब बच्चा महसूस करता कि सबको अल्लाह तआ़ला रिज़्क़ दे रहे हैं, तो मोहसिन (एहसान करने वाले) के साथ मुहब्बत फ़ितरी चीज़ है, बच्चे के दिल में अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत पैदा हो गयी।

वह मुहब्बत से अल्लाह तआ़ला का नाम लेता। वह सोने से पहले वालिदा से अल्लाह की बातें पूछता, माँ ख़ुश होतीं कि मेरे बेटे के दिल में अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत बस रही है।

कुछ दिन तक यह सिलसिला इसी तरह चलता रहा, मगर एक दिन यह हुआ कि माँ अपने रिश्तेदारों में किसी तक़रीब (फ़ंक्शन) में चली गयी। और वहाँ जाकर वह वक़्त का ख़्याल न रख सकीं, भूल गईं। जब ख़्याल आया तो पता चला कि बच्चे के आने का वक़्त काफ़ी देर हुई गुज़र चुका है। माँ ने बुर्क़ा लिया और अपने घर की तरफ़ तेज़ क़दमों से चली। रास्ते में रो भी रही है, दुआ़यें भी कर रही है। ऐ मेरे मालिक! मैंने तो अपने बच्चे का यक़ीन बनाने के लिए यह सारा मामला किया था, ऐ अल्लाह! अगर आज मेरे बच्चे का यक़ीन टूट गया तो मेरी मेहनत ज़ाया हो जायेगी। ऐ अल्लाह पर्दा रख लेना। ऐ अल्लाह मेरी मेहनत को ज़ाया होने से बचा लेना।

माँ दुआ़यें करती आ रही है। जब घर पहुँची तो देखती है कि बेटा आराम की नींद सो रहा है। माँ ने जल्दी से खाना पकाया और छुपाकर रख दिया। फिर आकर बच्चे के रुख़्सार का बोसा लिया, उसे जगाकर सीने से लगाया। कहने लगी बेटे आज तो तुझे बहुत भूख लगी होगी? बच्चा ख़ुशी-ख़ुशी बैठ गया। कहने लगा अम्मी! मुझे तो भूख नहीं लगी। माँ ने पूछा वह कैसे? बच्चे ने कहा अम्मी जब मैं मदरसे से आया तो मैंने मुसल्ला बिछाया और मैंने दुआ़ माँगी ऐ अल्लाह! भूख लगी हुई है, थका हुआ हूँ आज तो अम्मी भी घर पर नहीं हैं, ऐ अल्लाह मुझे खाना दे दो। अम्मी उसके बाद मैंने कमरे में तलाश किया मुझे एक जगह रोटी पड़ी मिली। अम्मी मैंने उसे खा लिया, मगर जो मज़ा मुझे आज अया अम्मी ऐसा मज़ा मुझे ज़िन्दगी में कभी नहीं आया था। सुब्हानल्लाह!

मायें बच्चों की तरबियत ऐसे किया करती थीं, और अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त उसको फिर क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी बना देते थे।

चुनाँचे यह मुग़ल बादशाहों के शैख़ और पीर बने, और अपने वक़्त में लाखों इनसान उनके मुरीद बने। तो एक और कामयाब शख़्सियत के पीछे आपको औरत का किरदार (भूमिका) माँ की शक्ल में नज़र आयेगा। ये मिसालें इतनी ज़्यादा हैं कि इनसान हैरान ही हो जाता है।

औरतें मर्दों से आगे

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक बीवी मोहतरमा उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा इस उम्मत की आ़लिमा औरतों में से एक नुमायाँ हैसियत रखने वाली ख़ातून हैं। इस उम्मत में क़ुरआन पाक की सबसे पहली हाफ़िज़ा, और यह भी अ़जीब बात है कि चन्द बातें ऐसी हैं कि जिनमें औरतें मर्दों से भी बाज़ी ले गईं।

मिसाल के तौर पर इस उम्मत में नबी अ़लैहिस्सलाम को नुबुव्वत की नज़र से देखने का गौरव सबसे पहले औरत को मिला, चुनाँचे हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा वह ख़ातून हैं जिन्होंने इस उम्मत के मर्द और औरतों में बाज़ी ले ली और पहली निगाह जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चेहरे पर पड़ी और जिस इनसान ने उनको नबी की नज़र से देखा वह हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा थीं।

औरतों में क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ करने में हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बाज़ी ले गईं। बड़ी फ़क़ीहा (मसले-मसाईल की जानने वाली) थीं। आ़लिमा थीं। अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने लिखा है कि हज़राते सहाबा किराम तो बड़े इल्म वाले थे, मगर उनमें से एक सौ उनंचास हज़रात ऐसे थे जो आ़लिम समझे जाते थे, उनके क़ौल के सामने फ़क़ीह लोग अपनी राये को छोड़ देते थे, और उनके क़ौल पर अ़मल कर लिया करते थे। यह फ़ुनून के मालिक

समझे जाते थे। ये सहाबा किराम थे और उन एक सौ उनंचास में से भी चौदह हज़रात ऐसे थे जो उनमें भी ज़्यादा ख़ास मक़ाम और शान रखते थे। यहाँ तक कि उन चौदह में से किसी एक का क़ौल सामने आता तो बक़ीया फ़ुक़हा भी अपने क़ौल से रुजू कर लेते थे। उन चौदह हज़रात के नामों में से एक नाम हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा का है। चुनाँचे बड़े-बड़े रुतबे वाले सहाबा कई मसाईल में पर्दे के पीछे बैठकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक बीवी से मसाईल पूछते और आप उनको तसल्ली-बख़्श जवाब देती थीं।

अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने आपको इतनी इल्मी शान अ़ता फ़रमाई थी, इतनी समझदार थीं, सुब्हानल्लाह कि एक बार नबी अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमायाः आ़यशा! तू मुझे खजूर और मक्खन को मिलाकर खाने से भी ज़्यादा महबूब है। जैसे ही आपने यह फ़रमाया तो आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने जवाब दिया ऐ अल्लाह के महबूब! आप तो मुझे शहद और मक्खन को मिलाकर खाने से भी ज़्यादा महबूब हैं। नबी अ़लैहिस्सलाम मुस्कुराये और फ़रमाया तेरा जवाब मेरे जवाब से बेहतर है। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने उनको इम्तियाज़ी (एक ख़ास) शान अ़ता की थी, इतनी समझदार थीं।

प्यारी माँ बेटी का मुकालमा

एक बार हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा सैयदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ बैठी थीं। अगरचे माँ बेटी का रुतबा था, लेकिन उम्रों में ज़्यादा फ़र्क़ न होने की वजह से आपस में मुहब्बत प्यार और दिल्लगी भी करती थीं। हंसी खेल भी कर लेती थीं। सैयदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा उनको देखकर मुस्कुराईं। आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा क्या बात है? कहने लगीं कि मेरे दिल में यह बात आ रही है कि आपके वालिद तो अबू बक्र सिद्दीक़ हैं जबकि मेरे वालिद मुहम्मद मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं।

बेटी की इस बात को सुनकर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा तड़प उठीं और नबी अ़लैहिस्सलाम की तारीफ़ें शरू कर दीं। कहने लगीं फ़ातिमा! आपने सच कहा हमें ईमान मिला आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सदके में, कुरआन मिला उनके सदके में, परवर्दिगार की मारिफ़त (पहचान) मिली उनके सदके में, इस्लाम मिला उनके सदके में। चुनाँचे नबी अ़लैहिस्सलाम की इतनी तारीफ़ें कीं कि बहुत ज़्यादा, जब बहुत ज़्यादा तारीफ़ें हो चुकीं तो कहने लगीं ऐ फ़ातिमा! मेरे ज़ेहन में एक बात आ रही है। पूछा कि वह कौनसी? फ़रमाने लगीं कि मेरे दिल में यह बात आ रही है, फ़ातिमा अगर आपके शौहर अ़ली मुर्तज़ा हैं तो फिर मेरे शौहर भी तो मुहम्मद मुस्तफ़ा हैं।

अब यह सुनकर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा चुप हो गईं। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फिर दूसरी बात कही कि फ़ातिमा! मेरे दिल में एक और बात आ रही है। पूछा कौनसी? फ़रमाने लगीं क़ियामत के दिन जब आप उठेंगी तो आपका हाथ अ़ली मुर्तज़ा के हाथ में होगा और फ़ातिमा जब मैं उठूँगी तो मेरा हाथ मुहम्मद मुस्तफ़ा के हाथों में होगा।

फिर थोड़ी देर चुप रहकर फ़रमाने लगीं, फ़ातिमा! मेरे दिल में एक बात और आ रही है। पूछा कौनसी? फ़रमाने लगीं कि तू 'ख़ातूने जन्नत' है, जन्नती औ़रतों की सरदार है। तू जन्नत में तख़्त पर बैठेगी तो तेरे तख़्त पर अली मुर्तज़ा होंगे, मगर फ़ातिमा जब जन्नत में मैं तख़्त पर बैठूँगी तो मेरे तख़्त पर मुहम्मद मुस्तफ़ा साथ बैठेंगे। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने उनको इतनी समझ अ़ता फ़रमाई थी। इसलिए फ़रमाया करती थीं कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने मुझको चन्द ऐसी बातें अ़ता की हैं जो किसी और बीवी को नहीं मिलीं।

सबसे पहली बात यह कि मैं सबसे पहली बीवी हूँ जो कुंवारी

नबी अ़लैहिस्सलाम के निकाह में आई और जितनी भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक बीवियाँ थीं वे या तो बेवा थीं या मुतल्लक़ा (तलाक़ पाई हुई) थीं। मैं ही एक थी जो कुंवारी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के निकाह में आई।

चुनाँचे हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आईं तो उस वक़्त अभी पूरे तौर पर बालिग़ा नहीं थीं। उम्र छोटी थी, मुहद्दिसीन ने लिखा कि अल्लाह ने उनको यह गौरव बख़्शा कि उनके बालिग़ होने के बाद उनकी सबसे पहली नज़र नबी अ़लैहिस्सलाम के मुबारक चेहरे पर पड़ी। वह ऐसी हालत में नबी अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचीं। फ़रमाया करती थीं कि बदर की रात में नबी अ़लैहिस्सलाम कुछ ढूँढ रहे थे, मैंने पूछा ऐ अल्लाह के महबूब! क्या ढूँढ रहे हैं? फ़रमाने लगे कि मैं कोई कपड़ा तलाश कर रहा हूँ ताकि इस्लाम का झण्डा बनाकर लहरा सकूँ। फ़रमाती हैं कि मेरे पास एक दुपट्टा था जिसकी ज़मीन सफ़ेद थी और उसके ऊपर काली धारियाँ थीं। फ़रमाती हैं कि मैंने वह दुपट्टा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पेश कर दिया। नबी अ़लैहिस्सलाम ने दुपट्टे को अपने हाथों से इस्लाम का झण्डा बनाकर लहराया। यह भी ऐज़ाज़ अल्लाह ने मुझे नसीब फ़रमाया।

फ़रमाती हैं एक दूसरा ऐज़ाज़ (गौरव और सम्मान) मुझे यह मिला कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला के सलाम मुझे दुनिया में पहुँचाये। और फ़रमाती थीं कि एक सम्मान मुझको यह मिला कि जब मुनाफ़िक़ों ने मुझ पर बोहतान बाँधा तो अल्लाह तआ़ला ने अपने कलामे पाक में मेरी पाकदामनी की गवाही दी, हालाँकि इससे पहले यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम पर भी इस तरह की तोहमत लगी, बीबी मरियम पर भी तोहमत लगी, मगर अल्लाह तआ़ला ने मासूम लोगों की तोहमतों को मासूम ज़बानों से रुकवाया, छोटे बच्चों ने इस बात की गवाही दी कि ये पाक लोग हैं। इस तोहमत से बरी हैं। फ़रमाती हैं

लेकिन मुझ पर जब तोहमत लगाई गयी तो अल्लाह तआला ने छोटे बच्चों से गवाही दिलवाने के बजाये अल्लाह की ज़ात ने खुद अपने कलामे मुबारक में मेरी पाकदामनी की गवाही दी। अल्लाह ने फ़रमाया:

هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ (سورة النور)

यह तो बड़ा बोहतान है।

फ़रमाती थीं कि यह गौरव और ऐज़ाज़ भी मुझे मिला। फिर फ़रमाती थीं कि एक ऐज़ाज़ मुझे और मिला वह यह कि नबी अ़लैहिस्सलाम आख़िरी बार जब बिस्तर पर बीमार थे, आपका चेहरा-ए-अनवर और सर मुबारक मेरी गोद में था, और मेरी निगाहें आपके चेहरे पर लगी हुई थीं, और आप उस वक़्त अल्लाह के हुज़ूर पेश हो रहे थे। फ़रमाती हैं कि यह ऐज़ाज़ (गौरव और सम्मान) भी मुझे मिला कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मेरी गोद के अन्दर सर रखकर दुनिया से हमेशा के लिए रुख़्सत हासिल फ़रमाई। सुब्हानल्लाह! यह किसी इनसान की कैसी खुशनसीबी है।

दो ही तो गोदें थीं जिन्हें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इज़्ज़त बख़्शी। एक सिद्दीके अकबर की गोद जिनकी गोद में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सर रखा और उनको सिद्दीक़ का मक़ाम दे दिया, और एक हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की गोद कि महबूब ने अपनी वफ़ात से पहले उस गोद में सर रखा। अल्लाह ने उनको सिद्दीक़ा का मक़ाम अ़ता फ़रमाया।

हैरान होता हूँ और कभी-कभी पूछता हूँ हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में कि ऐ उम्मुल-मोमिनीन (तमाम मोमिनों की माँ)! आपको अल्लाह ने यह ऐज़ाज़ दिया कि नबी का मुनव्वर चेहरा आपकी आँखों के सामने था। मेरे महबूब का चेहरा तो कुरआन की मानिन्द था और आप मुझे एक क़ारिया (पढ़ने वाली) नज़र आती हैं, जो बैठी हुई उस कुरआन को पढ़ रही हैं। इस हाल में नबी

अ़लैहिस्सलाम ने वफ़ात पाई।

फ़रमाया करती थीं कि एक ऐज़ाज़ (गौरव और सम्मान) मुझे यह भी मिला कि मेरा ही हुजरा था जहाँ नबी अ़लैहिस्सलाम ने आराम फ़रमाया (जो गुंबदे-ख़िज़रा बना) और क़ियामत के दिन उसी हुजरे से नबी अ़लैहिस्सलाम उठेंगे, और उम्मतों की शफ़ाअ़त फ़रमायेंगे। तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को बहुत ऐज़ाज़ दिये। चुनाँचे बहुत सारी हदीसों की रिवायत हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाई, तो उनका इल्मी रुतबा और इल्मी मक़ाम भी बहुत बड़ा था।

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः बहुत अच्छा सवाल पूछा

औ़रतों ने दीन का इल्म हासिल करने में भी कमी नहीं की बल्कि नबी अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में एक सहाबिया हाज़िर होती हैं, अ़र्ज़ करती हैं, ऐ अल्लाह के महबूब! मर्द लोग तो आमाल में हमसे आगे निकल गये। ये आपके साथ जिहाद में हाज़िर होते हैं, जनाज़े की नमाज़ पढ़ते हैं, मस्जिद में पाँच वक़्त नमाज़ें पढ़ते हैं, और हम घरों में बन्द रहती हैं, बच्चों की तरबियत करती हैं, घर के कामकाज का ख़्याल रखती हैं, तो हम वे नेकियाँ नहीं कर सकतीं जो मर्द कर सकते हैं।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया सवाल पूछने वाली ने बहुत अच्छा सवाल पूछा। फिर उसके बाद आपने फ़रमायाः बात यह है कि जो औ़रत अपने बच्चे की वजह से रात को अपने बिस्तर पर जागती है, अल्लाह तआ़ला उसको उस मर्द के बराबर अज्र अ़ता फ़रमाते हैं जो सारी रात जागकर दुश्मन की सरहद पर पहरा दिया करता है। और जो औ़रत अपने घर में नमाज़ पढ़ लेती है, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त उसे उस मर्द के बराबर सवाब अ़ता फ़रमाते हैं जो

मस्जिद में जाकर तकबीरे-ऊला के साथ नमाज़ अदा करता है। सुब्हानल्लाह। औरतें भी ऐसे प्यारे मसाईल नबी अलैहिस्सलाम से पूछा करती थीं कि नबी अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थेः सवाल पूछने वाली ने अच्छा सवाल पूछा।

इल्म हासिल करने में औरतों का शौक़

चुनाँचे एक सहाबिया आईं और कहने लगीं ऐ अल्लाह के नबी! मर्द लोग आपकी मज्लिस में बैठकर इल्म हासिल करते हैं और हम औरतें यह मौक़ा नहीं पा सकतीं। आप हमारे लिए भी कोई वक़्त मुतैयन कर दीजिए हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाया करेंगी। चुनाँचे किताबों में लिखा है कि नबी अलैहिस्सलाम ने बुध का दिन मुतैयन कर दिया था। औरतें जमा हो जाती थीं, नबी अलैहिस्सलाम पर्दे में उनको दीन की तालीम दे दिया करते थे। चुनाँचे औरतों का इल्मी रुतबा इतना बढ़ गया था कि वे मर्दों से पीछे नहीं थीं, बल्कि मर्दों के बराबर का अल्लाह ने उनको इल्म अता कर दिया था।

सहाबा के ज़माने में औरतों का इल्मी स्तर

इसके सुबूत के लिए आपको सिर्फ़ दो बातें बता देता हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़माना है। आपने एक बार यह महसूस किया कि आजकल लोग मेहर बहुत ज़्यादा बाँध देते हैं, ग़रीब लोगों की हिम्मत नहीं होती इसलिए उनको परेशानी होती है। आपने चाहा कि मैं एक रक़म मुतैयन कर दूँ ताकि किसी को परेशानी न उठानी पड़े। लिहाज़ा ग़रीबों की मदद की भावना को सामने रखते हुए आप मिंबर पर खड़े हुए, ऐलान फ़रमाया कि मैं चाहता हूँ इन्तिज़ामी मामलात को सामने रखते हुए मेहर की एक मुनासिब मिक़दार (मात्रा और हद) मुतैयन कर दी जाये, ताकि ग़रीबों के दिल परेशान और तकलीफ़ में न हों। उनको परेशानी न उठानी पड़े।

आप बयान करके नीचे उतरे इतने में औरतों की तरफ़ से एक

सहाबिया पर्दे में आईं और आकर कहने लगीं अमीरुल्-मोमिनीन! यह आपने कुरआन व हदीस से फ़ैसला दिया है या अपने इन्तिज़ामी मामलात को सामने रखकर फ़ैसला दिया है? आपने फ़रमाया मैंने इन्तिज़ामी मामलात सामने रखकर फ़ैसला किया है। वह कहने लगीं आप कैसे यह बात कर सकते हैं जबकि अल्लाह ने कुरआन मजीद में यह वाज़ेह कर दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैरान होकर पूछते हैं कैसे वाज़ेह कर दिया? उन्होंने आगे कहा अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: 'अगर तुममें से कोई अपनी बीवी को अंबार का अंबार माल दे चुके' (देखिये सूरः निसा आयत २०) तो जब अल्लाह तआला ने मेहर की मिक्दार (मात्रा) के बारे में सोने-चाँदी के ढेर का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया तो अब उमर को यह कैसे इख़्तियार है कि वह थोड़ी मिक्दार मुतैयन करे? अमीरुल्-मोमिनीन उलटे क़दमों वापस आते हैं। मिंबर पर खड़े होकर फिर लोगों से कहते हैं कि उमर से ग़लती हो गयी और एक बहन ने एहसान किया कि भाई की ग़लती की निशानदेही कर दी। लिहाज़ा उस वक़्त औरतों का इतना बड़ा इल्मी मेयार (स्तर) था। उस वक़्त बातचीत भी इल्मी हुआ करती थी।

एक बुढ़िया की इल्मी धमकी

चुनाँचे हज्जाज बिन यूसुफ़ के बारे में आता है, उसने एक बुढ़िया के बच्चे पर बहुत ज़ुल्म किया, बुढ़िया आई उसने हज्जाज बिन यूसुफ़ को डाँटा और उससे कहा हज्जाज! तू ज़ुल्म से बाज़ आ जा वरना अल्लाह पाक तुझे इस तरह मिटा देंगे जिस तरह उसने कुरआन पाक के पहले पन्द्रह पारों में से "कल्ला" का लफ़्ज़ उड़ाकर रख दिया है। हज्जाज तो ख़ुद भी हाफ़िज़ था, क़ारी था, बल्कि क़ारियों का भी उस्ताद था, और अजीब बात कि तबीयत में सख़्ती बहुत ज़्यादा थी। उसने फ़ौरन कुरआन पर नज़र डाली। पहले पन्द्रह

पारों में कहीं "कल्ला" नज़र न आया। कहने लगा अगर कहीं "कल्ला" का लफ़्ज़ मैं पा लेता तो तुझे भी सज़ा दिलवाता। सोचने की बात है कि आ़म रोज़मर्रा की गुफ़्तगू में भी औ़रतें ऐसी इल्मी बात करती थीं, जो इल्मी लताईफ़ और इल्मी मआ़रिफ़ हुआ करते थे। तो उन औ़रतों का इल्मी दर्जा इतना ज़्यादा बुलन्द हुआ करता था। सुब्हानल्लाह।

एक औ़रत जो क़ुरआनी आयतों से बात करती थी

अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने एक औ़रत का वाक़िआ बयान किया है जो क़ुरआन करीम की आयतों से बात का जवाब दिया करती थीं। इस वाक़िए की तफ़सील बयान करने से बात ज़्यादा लम्बी हो जायेगी लेकिन फ़रमाते हैं, मैं एक जगह सोया हुआ था, मैंने देखा कोई सवारी पर सवार मेरे पास आया, मैंने पूछा तू कौन है? उधर से जवाब मिलाः

سَلَامٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ

औ़रत की आवाज़ थी। जब इन अल्फ़ाज़ में सलाम किया मैंने पूछा अम्माँ किधर से आ रही हो? उधर से जवाब मिलाः

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ

मैं पहचान गया कि उमरा करके आ रही हैं। मैंने पूछा यहाँ कैसे हो?

कहने लगीः

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ

मैं समझ गया कि यह रास्ता भूल गयी हैं। मैंने पूछा अम्माँ जान! कहाँ जाना चाहती हो?

कहने लगीः

اُدْخُلُوا الْمِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ۝

मैं समझ गया कि यह शहर जाना चाहती हैं। चुनाँचे मैंने उनकी सवारी की मुहार पकड़ ली और चलना शुरू कर दिया। रास्ते में मैंने पूछना चाहा कि तुम्हारी ज़िन्दगी कैसी है? शौहर है या नहीं?

मैंने यह बात पूछी तो उन्होंने आगे आयत पढ़ीः

لَاتَقْفُ مَالَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا

जब उन्होंने यह आयत पढ़ी मैं समझ गया कि यह इस बारे में मुझसे कोई बात करना नहीं चाहतीं। मैंने कुछ अ़रबी के शे'र शुरू कर दिये। फ़रमाते हैं कि उसने आगे से क़ुरआन पढ़ाः

فَاقْرَءُوْا مَاتَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ

यानी अगर तुमको कुछ पढ़ना ही है तो क़ुरआन पढ़ो।

कहने लगे मैं क़ुरआन पढ़ता रहा, जब शहर आ गया मैंने पूछा यहाँ कौन है?

कहने लगीः

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

मैं समझ गया कि उनके बच्चे हैं। पूछा उनका नाम क्या है?

फ़रमाने लगीः

اِبْرَاهِيْمَ وَاِسْمَاعِيْلَ وَاِسْحَاقَ

मैं समझ गया कि उनके तीन बच्चे हैं और ये (इब्राहीम, इस्माईल और इस्हाक़) उनके नाम हैं। जब दरवाज़े पर जाकर आवाज़ लगाई तो तीन ख़ूबसूरत नौजवान जिनके चेहरे पर इतना नूर था, इतनी कशिश थी कि बन्दे की निगाह हटती नहीं थी। हीरे और मोती की तरह चमकते चेहरों वाले वे नौजवान आये, उनके चेहरों पर तक़्वे के आसार थे, नेकी के आसार थे। फ़रमाते हैं कि मैं तो उनके हुस्न व जमाल को देखता ही रह गया। वे आये अपनी वालिदा से मिले, वे खुश हुए अम्मी हम तो परेशान थे, आप कहाँ रह गईं। अब

उनकी माँ ने कहाः

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ

जब उन्होंने ये अल्फ़ाज़ कहे तो बच्चों ने फ़ौरन दस्तरख़्वान बिछा दिया। खाने के लिए जो कुछ पास था निकाल कर रख दिया और कहा आप खा लीजिए। मैंने इनकार किया तो कहने लगीः

اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ

मैं समझ गया कि अल्लाह की रिज़ा के लिए कुछ खिलाना चाहती हैं। मैंने खा लिया। खाने के बाद मैं एक तरफ़ को जाने लगा तो उन्होंने मुझे आख़िरी बात कही।

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا

मैं बड़ा हैरान, मैंने उनके बच्चे से पूछा आपकी माँ का अ़जीब मामला है। जब से यह मुझे मिली तब से हर बात के जवाब में कुरआन की आयत पढ़ती हैं। उन्होंने कहा हमारी वालिदा कुरआन पाक की हाफ़िज़ा हैं, हदीस की आ़लिमा हैं, उनके दिल में अल्लाह का डर इतना आ चुका है कि यह सोचती हैं कि क़ियामत के दिन जब मेरे नामा-ए-आमाल को खोला जायेगा, कहीं ऐसा न हो कि उसमें उलटी-सीधी गुफ़्तगू दर्ज हो। पिछले बीस साल से उनकी ज़बान से कुरआन की आयत के सिवा कुछ नहीं निकला। सुब्हानल्लाह

ऐसी-ऐसी औ़रतें क़ियामत के दिन अल्लाह के दरबार में पेश होंगी, और आज हमारी औ़रतें हैं जिनका वक़्त ग़ीबत व बोहतान और इल्ज़ाम लगाने में गुज़र जाता है।

फिर यह अल्लाह के सामने क्या जवाब देंगी। हम अगर हालात को देखें तारीख़ को देखें, इस उम्मत में ऐसी आ़लिमा औ़रतें गुज़रीं हैं जिन्होंने अपने बच्चों को बनाया, दीन की तालीम दी, दीन की ख़िदमत करते हुए ज़िन्दगी गुज़ारी और अल्लाह के यहाँ दरजात पा गईं। तो औरतें दीन की तालीम के हासिल करने में मर्दों से पीछे नहीं रहीं।

कुरआन की हिफ़ाज़त में औरत का रोल

चुनाँचे हकीम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिखा है कि मैंने अपने बचपन में सत्तर ऐसी औरतों से इल्म हासिल किया जो हदीस की राविया (बयान करने वाली) थीं, और उनसे बाक़ायदा हदीस आगे रिवायत की जाती थी। सुब्हानल्लाह। हर घर गुलशन बना था, बच्चियाँ उस दौर में दीन की ख़िदमत किया करती थीं। बल्कि एक अजीब बात! कुरआन की हिफ़ाज़त में भी इस उम्मत की बेटियों ने नुमायाँ काम कर दिखाया। उस ज़माने में प्रेस (Press) तो होते नहीं थे कि कुरआन मजीद प्रेस के ऊपर छाप लिये जाते, हाथ से लिखने पड़ते थे।

किताबों में लिखा है कि जब जवान उम्र की बच्चियाँ अपनी तालीम से फ़ारिग़ हो जातीं और उनके आगे निकाह में अभी कुछ वक़्त होता और भविष्य की ज़िन्दगी शुरू होने में कुछ इन्तिज़ार होता तो वे अपने माँ-बाप के घर में रोज़ाना के कामकाज समेट कर फिर वुज़ू करके मुसल्ले पर बैठ जातीं और अल्लाह का कलाम (कुरआन मजीद) बड़ी खुश-नवीसी (यानी उम्दा और बेहतरीन अन्दाज़) के साथ लिखना शुरू करतीं। रोज़ थोड़ा-थोड़ा लिखते-लिखते हर लड़की अपने लिए कुरआन मजीद लिख लेती। फिर उसके माँ-बाप उस कुरआन की सुनहरी जिल्द बनवा देते और जब बच्ची की शादी होती तो दहेज में कुरआन का वही नुस्ख़ा (प्रति) दिया जाता जिसको बच्ची ने अपने हाथ से लिखा होता।

इस उम्मत की बेटियाँ उस वक़्त अपने दहेज में अल्लाह का कलाम लेकर जाती थीं। एक तरफ़ तो अल्लाह का कलाम मिल जाता था और दूसरी तरफ़ कुरआन पाक के नुस्ख़े ज़्यादा से ज़्यादा लिखे जाते और कुरआन पाक की हिफ़ाज़त में जहाँ मर्दों ने काम किया वहाँ इस उम्मत की बेटियों ने भी काम कर दिखाया। तो दीन के

मामले में औ़रतें मर्दों से पीछे नहीं रहीं।

औ़रतों का विलायत हासिल करना

इन्होंने विलायत के भी बड़े-बड़े दर्जे हासिल किये। बड़ी-बड़ी मारिफ़त की बातें किया करती थीं। चुनाँचे राबिया बसरिया के बारे में आता है कि रात को जब देर हो जाती, तहज्जुद पढ़तीं, तहज्जुद के बाद दामन फैलाकर दुआ़ माँगतीं। उनकी दुआ़ भी अ़जीब थी। दुआ़ में ये अल्फ़ाज़ कहतीं "ऐ अल्लाह! इस वक़्त दिन जा चुका है और रात आ गयी है। हर शख़्स अपने मालिक के पास पहुँच चुका है। ऐ मेरे मालिक! मुझे तुझसे मुहब्बत है। मैं तेरे सामने दामन फैलाकर बैठी हूँ" और फिर अ़जीब बात करतीं "या अल्लाह दुनिया के बादशाहों ने दरवाज़े बन्द कर लिये हैं तेरा दरवाज़ा अब भी खुला है। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे फ़रियाद करती हूँ (और फिर दुआ़ माँगते हुए कहतीं) ऐ अल्लाह! आप वह ज़ात हैं जिसने आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोक रखा है। ऐ अल्लाह शैतान को मुझ पर मुसल्लत होने से रोक दे।"

जब इस तरह दुआ़ माँगती थीं फिर अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त उनको उलूम व मआ़रिफ़ अ़ता कर दिया करते थे। सुब्हानल्लाह। तो हमारे लिये यह कितना बड़ा सबक़ है। इससे पता चला कि इस उम्मत की औ़रतें दीन के मामले में और विलायत (अल्लाह की निकटता व पहचान हासिल करने) में मर्दों से पीछे नहीं रहीं, बल्कि मर्दों के साथ क़दम आगे बढ़ाया।

दीन के हर विभाग में औ़रतों का आगे बढ़ना

चुनाँचे इस उम्मत में अगर आपको हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु जैसे फ़क़ीह (दीनी अहकाम के माहिर) नज़र आयेंगे, तो हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा जैसी फ़क़ीहा भी नज़र आयेंगी। अगर आपको हज़रत ज़ैद बिन साबित

रज़ियल्लाहु अ़न्हु जैसे हाफ़िज़ नज़र आयेंगे, तो फिर हफ़्सा बिन्ते उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हा जैसी हाफ़िज़ा भी नज़र आयेंगी। अगर इस उम्मत में हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु जैसे "सैयदुश्शु-हदा" (शहीदों के सरदार) नज़र आयेंगे तो इस उम्मत में हज़रत सुमय्या रज़ियल्लाहु अ़न्हा जैसी शहीदा भी नज़र आयेंगी, बल्कि इस्लाम की सबसे पहली शहादत भी एक औ़रत ने पाई और इस मैदान में औ़रतें मर्दों से भी आगे निकल गईं। सुब्हानल्लाह।

इस उम्मत अगर आपको ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु जैसे जरनल नज़र आयेंगे तो फिर आपको इस उम्मत में ख़ौला भी तो नज़र आयेंगी, जो ज़िरार रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बहन थीं।

किताबों में लिखा है कि ज़िरार रज़ियल्लाहु अ़न्हु को कुफ़्फ़ार ने गिरफ़्तार कर लिया, ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैरान हैं, मुसलमानों की संख्या बहुत थोड़ी है, दुश्मन बहुत ज़्यादा हैं। उन्होंने हज़रत ज़िरार रज़ियल्लाहु अ़न्हु को घेरे में ले लिया था, और आगे चल पड़े थे। फ़रमाते हैं कि मैंने एक सवार को देखा नक़ाब पोश था, उसके हाथ में तलवार थी, तेज़ी के साथ आया और काफ़िरों को गाजर और मूली की तरह कतरना शुरू कर दिया। फ़रमाते हैं कि जिधर ज़्यादा भीड़ थी उधर जाकर उसने लाशों के पुश्ते लगा दिये। काफ़िरों पर इतना रौब बैठा कि वे ज़िरार रज़ियल्लाहु अ़न्हु को छोड़कर भाग गये। उन्होंने ज़िरार रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हथकड़ियाँ तोड़ीं और वह मुश्कें काट दीं जो बाँधी हुई थीं और उनको आज़ाद कर दिया।

जब वापस आये मैं हैरान हुआ। मैं उस मुजाहिद के क़रीब हुआ। मैंने पूछा तू कौन है? तेरे अन्दर इतनी शुजाअ़त और बहादुरी है। जवाब में एक औ़रत की आवाज़ सुनाई दी। कहने लगीं मैं ज़िरार की बहन ख़ौला हूँ। मेरे भाई को काफ़िरों ने गिरफ़्तार कर लिया था मैं समझी आज भाई को अपनी बहन की ज़रूरत है। मैंने नक़ाब बाँधा और मैं तलवार लेकर मैदान में आ गयी।

तो अगर मुसलमानों में हज़रत ख़ालिद इब्ने वलीद जैसे जवाँमर्द और बहादुर मुजाहिद नज़र आते हैं तो फिर ख़ौला रज़ियल्लाहु अ़न्हा जैसी बड़ा दिल रखने वाली मुजाहिदा भी तो नज़र आती हैं। अगर इस उम्मत में हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि जैसे बड़े-बड़े मशाईख़ (बुज़ुर्ग और अल्लाह वाले) नज़र आते हैं तो फिर राबिया बसरिया जैसी औ़रतें भी तो नज़र आती हैं। इन बातों से मालूम हुआ कि औ़रतें दीन के मामले में इस उम्मत में कभी पीछे नहीं रहीं। वे हदीस की आ़लिमा भी बनीं, वे कुरआन पाक की क़ारिया भी बनीं, और उन्होंने औ़रतों में दीन फैलाने में अपनी ज़िन्दगियाँ वक़्फ़ कर दीं।

दीन की तालीम पाने वाले अल्लाह के लाडले होते हैं

आज इस आ़जिज़ की यह ख़ुशनसीबी है कि ऐसे इदारे (संस्था) में आने की सआ़दत हासिल हुई जहाँ बच्चियों को तालीम दी जाती है। बच्चियाँ कुरआन पढ़ती हैं। अपने सीनों को नबी अ़लैहिस्सलाम की हदीसों से रोशन करती हैं। ये ख़ुशनसीब बच्चियाँ हैं जिनको अल्लाह ने दीन की तालीम के लिए चुन लिया है। ये ख़ुशनसीब बच्चियाँ हैं जिनको परवर्दिगार ने अपने दीन के लिए क़ुबूल कर लिया है।

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا (سورة فاطر)

कुरआन गवाही दे रहा है "फिर हम किताबों का वारिस बनायेंगे अपने बन्दों में से उनको जो हमारे चुने हुए बन्दे होंगे, हमारे लाडले बन्दे होंगे हमारे प्यारे बन्दे होंगे" सुब्हानल्लाह।

तो दीन का इल्म हासिल करने वाले जो तलबा व तालिबात हैं, अल्लाह के बन्दे और बन्दियाँ हैं, ये अल्लाह के प्यारे हैं। हदीस पाक में आता है, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उलेमा को खड़ा करेंगे और फ़रमायेंगे "ऐ उलेमा की जमाअ़त! मैंने तुम्हारे सीनों को इल्म के लिए चुना था, इसलिए आज मैं तुम्हें लोगों के सामने रुस्वा नहीं करना

चाहता। जाओ बग़ैर हिसाब-किताब जन्नत के दरवाज़ों को तुम्हारे लिए खोल दिया।" अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की कितनी रहमत होगी, किनता करम होगा।

हदीस पाक में आता है कि इस उम्मत के अ़वाम जब क़ियामत के दिन हौज़े-कौसर पर हाज़िर होंगे, अल्लाह के फ़रिश्ते उनको जाम भर-भरकर पिलायेंगे। लेकिन जब इस उम्मत की आ़लिमा औ़रतें और आ़लिम मर्द हौज़े-कौसर पर जायेंगे, नबी अ़लैहिस्सलाम अपने हाथों से हौज़े-कौसर का जाम अ़ता फ़रमायेंगे। यह कितनी बड़ी ख़ुशनसीबी है कि अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त के महबूब इस तरह उलेमा का सम्मान बढ़ायेंगे।

ऐसा न हो कि हमारी ज़बान तो आ़लिम हो और हमारे दिल जाहिल हों। हमारे दिमाग़ तो आ़लिम हों और हमारे जिस्म पर नबी की सुन्नतें मौजूद न हों। इस दो रंगी की ज़िन्दगी से अल्लाह महफ़ूज़ फ़रमायें, आमीन। शैतान पीछे पड़ा हुआ है, मदरसे में दाख़िला लेने के बावजूद भी जमाअ़त में आने के बावजूद भी शैतान पीछे लगा रहता है। चाहता है कि औ़रतें वक़्त ज़ाया करें, तालिब-इल्म अपने इल्म से वह फ़ायदा न उठायें। इसलिए शैतान से बचे रहिये अपने नफ़्स की शरारतों पर नज़र रखिये, जो कुछ पढ़ें उसको अपने जिस्म के ऊपर लगवा लीजिए ताकि इल्म के ज़ेवर से अल्लाह तआ़ला आपको सजा दें। आप इन बातों को ग़ौर से सुनियेगा अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त के दीन में ही हमारे लिए इज़्ज़त है।

याद रखना! इनसान का क़द बग़ैर ऊँचे जूते के भी ऊँचा नज़र आ सकता है अगर उसकी शख़्सियत के अन्दर बुलन्दी हो। इनसान की आँखें बग़ैर सुर्मे के भी ख़ूबसूरत नज़र आ सती हैं, अगर उनमें हया हो। इनसान का चेहरा बग़ैर किसी मेकअप के भी अच्छा लगता है अगर उसकी पेशानी पर सज्दों के निशान हों।

लिहाज़ा अगर आप तक़्वा और परहेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ारेंगी

तो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त दुनिया में भी इज़्ज़त देंगे और आख़िरत में भी इज़्ज़तें देंगे।

परवर्दिगारे-आलम हमें इज़्ज़तें अ़ता फ़रमाये। हमें बुरे दिन से बचाये। बुरी बातों से बचाये। बुरे कामों से बचाये। अल्लाह बुरे अन्जाम से बचाये। इज़्ज़तें मिलने के बाद ज़िल्लत से बचाये। डगमगाने से बचाए। अल्लाह हमें फिसलने से बचा ले। अल्लाह हमें अपने सीधे रास्ते से हटने से बचा ले। हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाये। हम तो कमज़ोर हैं, ऐ अल्लाह हम तो इतने कमज़ोर हैं कि हमसे तो घर की चीज़ों की भी हिफ़ाज़त नहीं हो पाती, ऐ अल्लाह ईमान की हिफ़ाज़त हम कैसे कर पायेंगे। ऐ अल्लाह! तू ही मदद फ़रमा, मौत तक हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा।

जब हम इस तरह माँगेंगे तो परवर्दिगारे-आलम हम पर रहमत फ़रमायेंगे और हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमायेंगे। परवर्दिगारे-आलम हमारी ज़िन्दगियों को दीन की ख़िदमत के लिए क़बूल फ़रमा ले और हमें मक़बूल बन्दों में शामिल फ़रमा ले।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

नोटः बयान के बाद हज़रत ने थोड़ी देर मुराक़बा कराया और इसी दौरान मुनाजात के अश्आर पढ़े। फिर ख़ूब रो-रोकर दुआ कराई।

मुनाजात

हवा-व-हिर्स वाला दिल बदल दे
मेरा ग़फ़लत में डूबा दिल बदल दे
बदल दे दिल की दुनिया दिल बदल दे
खुदाया फ़ज़्ल फ़रमा, दिल बदल दे

गुनाहगारी में कब तक उम्र काटूँ
बदल दे मेरा रास्ता, दिल बदल दे
सुनूँ मैं नाम तेरा धड़कनों में
मज़ा आ जाये मौला, दिल बदल दे

करूँ कुरबान अपनी सारी खुशियाँ
तू अपना ग़म अ़ता कर, दिल बदल दे
हटा लूँ आँख अपनी मा-सिवा से
जियूँ मैं तेरी ख़ातिर, दिल बदल दे

सहल फ़रमा मुसल्सल याद अपनी
खुदाया रहम फ़रमा, दिल बदल दे
पड़ा हूँ तेरे दर पर दिल शिकस्ता
रहूँ क्यों दिल शिकस्ता, दिल बदल दे

तेरा हो जाऊँ इतनी आरज़ू है
बस इतनी है तमन्ना, दिल बदल दे
मेरी फ़रियाद सुन ले मेरे मौला
बना ले अपना बन्दा, दिल बदल दे

हवा व हर्स वाला दिल बदल दे
मेरा ग़फ़लत में डूबा दिल बदल दे

इसी किताब से......

मौत एक अटल हक़ीक़त है......!

अगर मौत को हुकूमत के ज़रिये टाला जा सकता तो फ़िरऔन को कभी मौत न आती।

अगर मौत को विज़ारत के ज़रिये टाला जा सकता तो हामान को कभी मौत न आती।

अगर मौत को ताक़त व बहादुरी के ज़रिये टाला जा सकता तो रुस्तम व सोहराब को कभी मौत न आती।

अगर मौत को दवाओं के ज़रिये टाला जा सकता तो अफ़लातून और जालीनूस को कभी मौत न आती।

अगर मौत को हिक्मत व दानाई (अक़्लमन्दी और बुद्धि) से टाला जा सकता तो लुक़मान अ़लैहिस्सलाम को कभी मौत न आती।

अगर मौत को वफ़ाओं के ज़रिये टाला जा सकता तो कभी भी नेक बीवी अपनी आँखों के सामने अपने जवान शौहर को न मरने देती।

और अगर मौत को मुहब्बत के ज़रिये टाला जा सकता तो कभी भी माँ अपनी गोद में पड़े अपने मासूम बेटे को न मरने देती।

मौत एक अटल हक़ीक़त है।

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुल्फ़क़ार अहमद साहिब नक़्शबन्दी मुजद्दिदी दामत् बरकातुहुम

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

मौत की याद

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى. اَمَّا بَعْدُ!

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ٥ (سورة عنكبوت آيت: ٥٧)

तर्जुमाः हर शख़्स को मौत का मज़ा चखना है। फिर तुम सबको हमारे पास आना है।

अल्लाह तआ़ल दूसरी जगह फ़रमाते हैं:

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ، وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ٥

(سورة ال عمران آيت: ١٨٥)

तर्जुमाः हर जान को मौत का मज़ा चखना है। और तुमको तुम्हारा पूरा बदला क़ियामत ही के रोज़ मिलेगा। तो जो शख़्स दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया, सो वह पूरा कामयाब हुआ, और दुनियावी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं, सिर्फ़ धोखे का सौदा है।

एक दूसरी जगह पर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

اَیْنَمَا تَکُوْنُوْا یُدْرِکْکُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ کُنْتُمْ فِیْ بُرُوْجٍ مُّشَیَّدَۃٍ

(سورۃ نساء آیت:۷۸)

तर्जुमा: तुम चाहे कहीं भी हो वहाँ ही मौत तुमको आ दबायेगी, अगरचे तुम क़लई-चूने के क़िलों ही में हो।

एक दूसरी जगह पर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِیْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِیْکُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰی عٰلِمِ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَۃِ فَیُنَبِّئُکُمْ بِمَا کُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ o (سورۃ جمعۃ آیت:۸)

तर्जुमा: आप उनसे यह कह दीजिये कि जिस मौत से तुम भागते हो वह मौत एक दिन तुमको आ पकड़ेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले ख़ुदा के पास ले जाये जाओगे। फिर वह तुमको तुम्हारे सब किये हुए काम बतला देगा (और सज़ा देगा)।

एक दूसरी जगह पर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

کُلُّ مَنْ عَلَیْهَا فَانٍ o وَّیَبْقٰی وَجْهُ رَبِّکَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِکْرَامِ o

(سورۃ رحمن آیت:۲۶)

तर्जुमा: जितने रूह वाले (यानी जानदार, प्राणी) रू-ए-ज़मीन पर मौजूद हैं सब फ़ना हो जायेंगे और सिर्फ़ आपके परवर्दिगार की ज़ात जो कि बड़ाई वाली और एहसान वाली है, बाक़ी रह जायेगी।

और नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं:

کُنْ فِی الدُّنْیَا کَاَنَّکَ غَرِیْبٌ اَوْعَابِرُسَبِیْلٍ. اوکما قال علیہ الصلوۃ والسلام

तर्जुमा: आप दुनिया में इस तरह रहिये गोया आप अजनबी हैं, या राह चलते मुसाफ़िर।

سُبْحٰنَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوْنَ o وَسَلٰمٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ o وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ o اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ.
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ.

इनसान की ज़िन्दगी एक चिराग़ की तरह है

इनसान की ज़िन्दगी हवा में रखे हुए चिराग़ की तरह है। बूढ़ा आदमी अगर चिराग़े-सहर है तो जवान आदमी चिराग़े-शाम है। जिस तरह हवा के अन्दर रखा हुआ चिराग़ एक झोंके का मोहताज होता है, ऐसी ही इनसानी ज़िन्दगी भी एक पल की मोहताज होती है:

ज़िन्दगी क्या है एक थिरकता हुआ नन्हा सा दिया
एक ही झोंका जिसे आके बुझा देता है
या सरे-मुज़गाँ ग़म का थिरकता हुआ आँसू
पलक झपकना जिसे मिट्टी में मिला देता है

जिस तरह पलक का आँसू पलक झपकते ही मिट्टी में मिल जाता है ऐसे ही इनसान एक लम्हे में इस जहान से अगले जहान की तरफ़ रुख़्सत हो जाता है। ज़िन्दगी का मक़सद अल्लाह तआ़ला की बन्दगी है, सही मायने में बन्दा वही होता है जिसमें बन्दगी हो वरना सरासर गन्दा होता है। झूठ और फ़रेब का पुलिन्दा होता है। जो भी इस दुनिया में आया उसको आख़िरकार दुनिया से जाना है। अल्लाह तआ़ला ने कुरआन पाक में फ़रमायाः

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ (سورة انبياء آيت:٣٤)

तर्जुमाः (ऐ महबूब!) हमने आपसे पहले भी किसी के लिए यहाँ हमेशा रहना नहीं लिखा।

हर इनसान को आख़िरकार यहाँ से जाना है। चन्द दिनों की यह मोहलत है, जो हमें अ़ता की गयी है। इसमें हमें आख़िरत की तैयारी करनी है। तो दुनिया की मुख़्तसर सी ज़िन्दगी आख़िरत की तैयारी के लिए अ़ता की गयी है। इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ

"तुम दुनिया में ऐसे ज़िन्दगी गुज़ारो जैसे कोई परदेसी होता है"

परदेस में इनसान को कितनी ही सहूलियतें क्यों न मयस्सर हों, उसका दिल अपने बच्चों के लिए अपने माँ-बाप के लिए रिश्तेदारों के लिए हर वक़्त उदास रहता है। सोचता है कि कब मुझे मोहलत मिले कि मैं वतन वापस चला जाऊँ।

मोमिन के लिए दुनिया एक ठहरने की जगह

इसी तरह मोमिन का असली वतन जन्नत है। दुनिया इसके लिए वतने-इक़ामत (एक आ़रज़ी तौर पर ठहरने की जगह) के मानिन्द है। हम थोड़े दिन के लिए यहाँ भेजे गये हैं। आख़िरकार ज़िन्दगी गुज़ार कर हमें अपने वतन और असल़ ठिकाने की तरफ़ लौटकर वापस जाना है। दुनिया में रहते हुए हम आख़िरत की तैयारी में लगे रहें। जिस तरह मुसाफ़िर अपने सफ़र के दौरान थोड़ी देर अपने आराम के लिए ठहरता है, उसके ज़ेहन में यह बात होती है कि मुझे मन्ज़िल पर पहुँचना है। उसी तरह हमारा सफ़र "कुन्" के मक़ाम से शुरू हुआ, 'आ़लमे-अरवाह' (रूहों की दुनिया) में अल्लाह तआ़ला ने हमसे वायदा लियाः "अलस्तु बि-रब्बिकुम्" (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?) सबने जवाब दिया "बला" (क्यों नहीं) और उसके बाद परवर्दिगार ने आज़माईश के लिए दुनिया में भेजा।

दुनिया इम्तिहान की जगह है

इसलिए यह दुनिया की ज़िन्दगी आज़माईश की जगह है। यह दुनिया आरामगाह नहीं, यह सैरगाह नहीं, तमाशा-गाह नहीं, यह इम्तिहान-गाह (यानी इम्तिहान की जगह) है। अफ़सोस कि हमने इसे चरागाह (खाने-पीने की जगह) बना रखा है। हम समझते हैं कि खा-पीकर ज़िन्दगी गुज़र जायेगी, हरगिज़ नहीं! परवर्दिगारे-आ़लम फ़रमाते हैं:

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُتْرَكُوْآ اَنْ يَقُوْلُوْآ اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ٥ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ٥

(سورة عنكبوت آيت:۲،۳)

तर्जुमा: क्या इनसान यह गुमान करते हैं कि अगर वे कह दें कि हम ईमान ले आये तो हम उन्हें छोड़ देंगे। हम उनको आज़मायेंगे। हमने उनसे पहले वालों को भी आज़माया और तहक़ीक़ कि हम सच्चे और झूठे के दरमियान इम्तियाज़ (फ़र्क़) करके रहेंगे। खरे खोटे की पहचान करके रहेंगे।

देखिये हमें नेक आमाल के साथ दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारनी है, ताकि अपने परवर्दिगार को राज़ी कर लें। रब्बे करीम इरशाद फ़रमाते हैं:

اَلَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا

(سورة ملك آيت:۲)

वह ज़ात जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया, यह आज़माने के लिए कि तुममें से कौन अच्छे अ़मल करता है।

लिहाज़ा हमें दुनिया में अपनी शख़्सियत को संवारना है, अपने किरदार को बेहतर बनाना है, अपने अन्दर अच्छे अख़्लाक़ को पैदा करना है, सही मायनों में इनसान बनकर ज़िन्दगी गुज़ारनी है। और जब इनसान बनकर अल्लाह तआ़ला के सामने पेश होंगे तो फिर परवर्दिगारे-आ़लम उसकी क़द्रदानी फ़रमायेंगे। यह दुनिया तो हमारे लिए इम्तिहान की जगह की मानिन्द है। इसलिए हदीस पाक में फ़रमाया:

اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ

दुनिया तो मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है और काफ़िर के लिए जन्नत है।

इसका एक ज़ाहिरी मतलब तो यह है कि दुनिया में मोमिन के लिए शरीअ़त व सुन्नत की कुछ पाबन्दियाँ हैं। सीमाओं और क़ैदों के

साथ ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ती है। और काफ़िर के लिए तो कोई हद या क़ैद नहीं, मनमानी ज़िन्दगी गुज़ारता है। मगर हदीस शरीफ़ के व्याख्याकारों ने इसके मायने कुछ और लिखे हैं। वे फ़रमाते हैं कि इस दुनिया में कितनी ही लुत्फ़ और मज़े की ज़िन्दगी उसको क्यों न मिल जाये, जन्नत के मुक़ाबले में फिर भी उसको दुनिया की ज़िन्दगी क़ैदख़ाने की तरह नज़र आयेगी। और एक काफ़िर पर दुनिया में कितनी ही मशक़्क़तें और मुसीबतें क्यों न आयें, कितनी ही तकलीफ़ें क्यों न आ जायें, लेकिन जहन्नम के मुक़ाबले में फिर भी दुनिया उसके लिए जन्नत के मानिन्द है। सुब्हानल्लाह

मोमिन का घर जन्नत है

अल्लाह तआला ने मोमिनों के लिए जन्नत में क्या कुछ तैयार किया होगा इसका अन्दाज़ा लगाना मुश्किल है। यह बात ज़ेहन में बैठा लीजिए कि दुनिया मिट्टी की बनी हुई है और फ़ानी है, जबकि जन्नत सोने-चाँदी की बनी हुई है और बाक़ी रहने वाली है। यह तयशुदा बात है कि जो इनसान मख़्लूक़ से दिल लगायेगा वह इनसान एक न एक दिन मख़्लूक़ से जुदा कर दिया जायेगा। और जो इनसान परवर्दिगार से दिल लगायेगा एक न एक दिन अल्लाह से मिला दिया जायेगा। हमें चाहिये कि हम आख़िरत की तैयारी में लगे रहें, हर दिन को क़ीमती बनाने की कोशिश करें, दिन नेक आमाल में गुज़ारने की कोशिश करें और अपनी रातों को अपने दिन के जैसा बनाने की कोशिश करें। कोई वक़्त भी ऐसा न हो कि हमसे कोई गुनाह सर्ज़द हो। अल्लाह की नाफ़रमानी से ख़ाली ज़िन्दगी गुज़ारना हमारी ज़िन्दगी का मक़सद हो।

एक अल्लाह वाले की प्यारी बात

हमारे सिलसिला-ए-आलिया नक़्शबन्दिया के एक बुज़ुर्ग थे "ख़्वाजा अबुल-हसन ख़िरक़ानी रहमतुल्लाहि अलैहि, वह अजीब बात फ़रमाया करते थे। कि जिस इनसान ने कोई दिन गुनाहों से ख़ाली

गुज़ारा वह ऐसा ही है जैसे उसने वह दिन नबी के साथ गुज़ारा। सुब्हानल्लाह। तो हमारे दिल में यह तमन्ना हो कि कोई गुनाह हमसे न हो ताकि हमें सुन्नत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब हो। करने वालों को ये नेमतें नसीब हो जाती हैं।

इमामे रब्बानी हज़रत मुजद्दिद् अल्फ़े-सानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपने ''मकातीब'' (ख़तों) में लिखा है कि इस उम्मत में कितने ही ऐसा सुलहा (नेक लोग) और कामिलीन गुज़रे हैं कि बीस-बीस साल तक उनके गुनाह लिखने वाले फ़रिश्ते को उनके गुनाह लिखने का मौक़ा न मिला। ऐसी पाक ज़िन्दगियाँ गुज़ार कर अगर ये हज़रात अल्लाह के सामने पेश होंगे, वहाँ हम जैसे ग़ाफ़िल भी खड़े होंगे, जिन्होंने न ज़बान से एहतियात की गुफ़्तगू की होगी और न आँख से एहतियात बरती होगी। आज किसी को बेईमान कह देना, कमीना कह दना, ज़लील कह देना, यह बहुत आसान है, कल क़ियामत के दिन जब पूछा जायेगा बताओ तुमने ये अल्फ़ाज़ क्यों कहे थे तो वहाँ पर जवाब देना मुश्किल हो जायेगा। यह तो वह दिन होगा जबकि अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त के अंबिया भी थर्राते होंगे। अल्लाह तआ़ला जलाल के आ़लम में होंगे। फ़रमायेंगे:

لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ

"आज के रोज़ किसकी हुकूमत है"

फिर एक लम्बे समय के बाद ख़ुद ही फ़रमायेंगे:

لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ

बस अल्लाह ही की है जो यक्ता और ग़ालिब है।

फिर उस दिन हम कैसे जवाब देंगे, उस दिन की तैयारी करने का वक़्त आज है। इसलिए हमें चाहिये कि आख़िरत की तैयारी कर लें।

मौत बर्हक़ है, कफ़न में शक है

मौत के बारे में यह नहीं कहा कि तुम्हें एक दिन मौत आयेगी, बल्कि फ़रमायाः

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ (سورة ال عمران آيت: ١٨٥)

"तुममें से. हर एक को मौत का मज़ा चखना है।

ज़ायक़ा या तो मीठा होता है या फिर कड़वा होता है। नेक लोगों के लिए मौत मीठी होगी और बुरे लोगों के लिए सख़्त कडवी होगी। सुब्हानल्लाह। इसलिए आज इस मौत की तैयारी करने का वक़्त है। किसी बुज़ुर्ग ने क्या अच्छी बात कही। फ़रमाया करते थे, ऐ दोस्त मौत बर्हक़ है, लेकिन कफ़न के मिलने में शक है। क्या मालूम किस हाल में मौत आये? कोई कफ़न देने वाला भी पास हो कि न हो। चुनाँचे हमने एक आदमी के बारे में सुना कि उसे दुश्मनों ने क़त्ल करके नहर में फेंक दिया, बहुत दिनों तक उसकी लाश पानी में रही, फूल गयी, यहाँ तक कि लाश को जब निकाला गया तो शनाख़्त करना मुश्किल था। पुलिस वालों ने क़रीबी बस्ती वालों के हवाले कर दिया कि मुसलमान नज़र आता है तुम इसका जनाज़ा पढ़ा दो। चुनाँचे बस्ती वालों ने उसे नहला तो दिया लेकिन साथ ही यह ऐलान भी कर दिया कि एक लावारिस लाश है उसका कफ़न ख़रीदना है, उसके कफ़न में जो आदमी हिस्सा डालना चाहे वह रक़म लाये। कोई आदमी दस रुपये लाया कोई बीस लाया चुनाँचे उसके लिए कफ़न ख़रीदा गया और उसको दफ़न करने का इन्तिज़ाम किया गया।

जब दफ़न करने लगे तो कोई एक बन्दा भी नहीं रो रहा था, इसलिए कि कोई उसे पहचानता जो नहीं था। जब कुछ दिनों के बाद उसकी हक़ीक़त खुली तो पता चला कि वह एक इलाक़े का बड़ा ज़मीनदार था। बारह मुरब्बा ज़मीन का वह मालिक था। करोड़ों रुपये उसके बैंक खाते में थे। दो मुख़्तलिफ़ बड़े-बड़े शहरों में उसकी

कोठियाँ थीं। चार उसके जवान बेटे थे। कई-कई उनके घर हैं और ज़मीनें हैं, उसको क्या पता था कि जब उसकी मौत आयेगी तो उसको चन्दे का कफ़न दिया जायेगा। इसलिए किसी ने कहाः

मौत बर्हक़ है लेकिन कफ़न के मिलने में शक है

हमें चाहिये कि आज ही से मौत की तैयारी करें। यह उसूली बात याद रखिये जिसकी ज़िन्दगी अच्छी उसकी मौत भी अच्छी, और जिसकी ज़िन्दगी बुरी उसकी मौत भी बुरी। अगर हम नेकी वाली ज़िन्दगी गुज़ारेंगे तो अल्लाह तआला नेकों वाली ज़िन्दगी अ़ता फ़रमायेंगे। यह कैसे मुम्किन है कि एक आदमी फ़ासिक़ व फ़ाजिर (गुनाहगारों और बदकारों) वाली ज़िन्दगी गुज़ारे और 'बा-यज़ीद बुस्तामी' और 'जुनैद बग़दादी' (मशहूर बुज़ुर्ग गुज़रे हैं) जैसी मौत आ जाये। यह हरगिज़ नहीं हो सकता। ऐसा ख़्याल करना एक तरह का पागलपन है।

हमें आज ही अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लेने की ज़रूरत है। हम जो गुनाह करते हैं उनको छोड़ने की ज़रूरत है। मौत की तैयारी करने की ज़रूरत है।

एक मिसाल

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने एक अ़जीब अन्दाज़ से यह बात समझाई है। फ़रमाते हैं कि एक बादशाह का बड़ा बाग़ था। जिसके कई हिस्से थे। उसने एक आदमी को बुलाकर उसके हाथ में एक टोकरी थमाई और कहा कि मेरे बाग़ में दाख़िल हो जाओ और बेहतरीन फलों से टोकरी भरकर लाओ। तुमको बड़ा इनाम मिलेगा। मगर शर्त यह है कि जब अन्दर से गुज़र कर आ जाओ तो तुम्हें दोबारा वापस जाने की इजाज़त नहीं होगी। उसने कहा चलो यह तो कोई बड़ी बात नहीं। वह उस टोकरी को लेकर चल पड़ा। एक तरफ़ से दरवाज़े में दाख़िल हुआ देखा कि उसके अन्दर फल हैं मगर

पसन्द न आये। अगले दर्जे में दाख़िल हुआ यहाँ फल पहले से बेहतर थे, सोचने लगा कुछ तोड़ लूँ। कहने लगा अगले दर्जे से तोड़ लूँगा। फल यहाँ भी कुछ बेहतर थे।

फिर अगले दर्जे में बहुत बेहतर थे और उससे अगले वाले दर्जे में बहुत ही बेहतरीन थे। यहाँ दिल में ख़्याल आया कि अब तो मैं कुछ फल तोड़ लूँ। फिर सोचने लगा आगे सबसे बेहतर फल तोड़ूँगा। जब अगले और आख़िरी दर्जे में दाख़िल हुआ तो क्या देखता है कि वहाँ पर तो किसी भी दरख़्त पर फल नहीं हैं। अफ़सोस करने लगा कि ऐ काश मैंने पहले दर्जे से फल तोड़े होते तो आज मेरी टोकरी ख़ाली न होती। अब मैं बादशाह को क्या मुँह दिखाऊँगा। इमाम ग़ज़ाली फ़रमाते हैं ऐ दोस्त!

बादशाह अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की मिसाल के मानिन्द है।

और इनसान जो बाग़ में जा रहा है वह तेरी मिसाल है।

और टोकरी से मुराद तेरा नामा-ए-आमाल है।

ज़िन्दगी की मिसाल बाग़ की मानिन्द है।

और उसके मुख़्तलिफ़ हिस्से (दर्जे) तेरी ज़िन्दगी के हर दिन के मानिन्द हैं।

अब तुझे हर दिन में नेकियों के फल तोड़ने का हुक्म दिया गया लेकिन तू रोज़ सोचता है कि मैं कल नेक बन जाऊँगा। यानी अगले दर्जे से फल तोड़ूँगा। अगले दर्जे से फल तोड़ूँगा। तेरा अगला दिन न आ सकेगा, और तुझे उसी दिन अल्लाह के हुज़ूर में जाना पड़ेगा।

सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बन्जारा

खड़े पैर चल देना पड़ेगा।

فَاِذَاجَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ

(سورۃ الاعراف آیت: ۳۴)

सो जिस वक़्त उनकी निश्चित मियाद आ जायेगी उस वक़्त एक घड़ी न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की शान

हज़रत सुलैमान अल्लाह तआला के बड़े रुतबे वाले नबी हैं। इतनी शान वाले नबी कि उनको अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने नुबुव्वत की शान भी अ़ता फ़रमाई और इनसानों पर भी जिन्नों पर भी हैवानों पर भी, परिन्दों पर भी इतनी बड़ी बादशाही अ़ता की। सुब्हानल्लाह। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः न उनसे पहले दुनिया की वह बादशाही किसी को मिली थी और न बाद में मिलेगी। सुब्हानल्लाह। अल्लाह तआ़ला ने उनको ऐसी शान अ़ता फ़रमाई कि बैतुल-मक़्दिस बनवा रहे हैं, उसकी तामीर के लिए उन्होंने जिन्नों को लगा दिया। खुद अपने लिए शीशे का कमरा बनवाया कि मैं इसकी निगरानी करूँगा। अब अल्लाह के एक नबी हैं इतने शर्फ़ वाले, इतने मक़ाम वाले इतनी शान वाले हैं, और मस्जिद बनाने के काम में लगे हुए हैं, अल्लाह का घर बना रहे हैं, बल्कि परवर्दिगार ने उनको भी उसी हालत में बुला लिया, और अपने घर को मुकम्मल कराने की शक्ल यह निकाली कि वह जहाँ खड़े थे उसी तरह उनकी लाश खड़ी रह गयी। जिन्नात काम करते रहे। जब काम मुकम्मल हो गया, उनके अ़सा (लाठी) को उस वक़्त दीमक ने खा लिया, तब उनकी लाश ज़मीन पर आयी, उस वक़्त जिन्नों को पता चला कि उनकी मौत वाक़ई हो गयी है। तो वक़्त के एक नबी अल्लाह का घर बनानें जैसे अ़मल में मशग़ूल हैं, उनकी मौत का वक़्त आ जाता है तो उनको भी मोहलत नहीं दी जाती, बल्कि अपने पास बुला लिया जाता है।

हमें किस चीज़ ने मौत से ग़ाफ़िल किया?

मेरी बहनो बेटियो! अगर हम आज ग़ौर करें हम किन कामों में लगे हुए हैं? हमारी क्या औक़ात है? हम किसी खेत की गाजर मूली हैं। जब हमारी मौत का वक़्त आयेगा, फिर उसे कहाँ पीछे हटाया जायेगा। हमें तो उसी वक़्त पहुँचना होगा। किसी भी तैयारी का वक़्त

नहीं मिलेगा। यह जो ज़िन्दगी है यही तो तैयारी का वक़्त है। कोई अलैहदा से वक़्त नहीं दिया जायेगा। इस वक़्त को ग़नीमत समझ लीजिए। कितने जनाज़े बच्चों के हाथ में लेकर क़ब्रिस्तान जाते हुए हमने लोगों को देखा, कितने जवानों के जनाज़े कन्धे प लेकर क़ब्रिस्तान में छोड़ आये। कितने जनाज़े बड़ी उम्र वालों के थे। इस बात से पता चलता है कि उम्र के किसी भी मर्हले (चरण) में हमारी मौत आ सकती है। इसलिए हर एक को तैयारी करने की ज़रूरत है। कोई नहीं जानता कि मौत कब आयेगी, हाँ एक दिन बुलावा आ जायेगा।

यह तो ऐसी बात हुई जिसने मौत की तैयारी नहीं की कि बारात वाले घर आ चुके और घर वाले लड़की के कान छिदवाने कहीं लड़की को ले गये। उनको कितनी शर्मिन्दगी होगी कि उन्होंने कोई तैयारी की ही नहीं थी, बिल्कुल इसी तरह हम अगर मौत की तैयारी न कर सके तो जब मलकुल-मौत (मौत का फ़रिश्ता) आयेंगे उस वक़्त शर्मिन्दा होकर कहेंगे:

قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ o لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا.

(سورۂ مومنون آیت: ۱۰۰)

ऐ अल्लाह! हमें एक बार और मोहलत दे दे, हम नेक काम करेंगे। मगर कहा जायेगा "हरगिज़ नहीं" चुनाँचे मौत की तैयारी आज करने की ज़रूरत है, यह ऐसा अमल है जो हममें से हर एक के पेशे-नज़र (आँखों के सामने) है।

उनके यहाँ मौत की याद के लिए आदमी मुक़र्रर था

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु कितनी बड़ी शान वाले सहाबी हैं। उन्होंने एक आदमी को अपने साथ लगा रखा था और उसको यह कह रखा था कि तुम मुझे वक़्त वक़्त पर (यानी कभी-कभी) मौत की याद दिलाते रहना। चुनाँचे मुख़्तलिफ़ महफ़िलों में

वह मौत का तज़किरा करते रहते थे। एक दिन आपने उन्हें फ़रमाया अब आप कोई दूसरा काम कर लीजिए। कहने लगे कि हज़रत! क्या अब मौत याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है? आपने अपनी दाढ़ी मुबारक की तरफ़ इशारा किया जिसमें कुछ सफ़ेद बाल आ गये थे। फ़रमाया ये सफ़ेद बाल मुझे मौत की याद दिलाने के लिए काफ़ी हैं। मुझे इनको देखकर मौत की याद आती रहेगी।

मौत का पैग़ाम

नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मलकुल-मौत! तू अपने आने से पहले कोई पैग़ाम या कोई क़ासिद भेज दिया कर। उसने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! कई पैग़ाम आते हैं मगर लोग समझते नहीं। किसी आदमी का बुढ़ापे में पहुँच जाना यह भी मौत का पैग़ाम है। किसी की बीनाई (आँखों की रोशनी) का कमज़ोर हो जाना यह भी मौत का पैग़ाम है। किसी के दाँत में सुराख़ हो जाना और दाँत टूट जाना यह भी मौत का पैग़ाम है। जिस्म में जवानी की ताक़त का न रहना यह भी मौत का पैग़ाम है। बीमारियों का आना यह भी पैग़ाम है, लेकिन वाक़ई हम अन्धे बने हुए हैं, हमें आख़िरत के बजाये दुनिया की रंगीनी अपनी तरफ़ खींच लेती है और हम आख़िरत से ग़ाफ़िल होकर ज़िन्दगी गुज़ार बैठते हैं। इसलिए हमें चाहिये कि मौत के लिए हर वक़्त तैयार रहें। मालूम नहीं किस हाल में हमारी मौत आ जाये। हमने कई बार देखा कि आदमी जवानी के आ़लम में भी मर जाता है, मुख़्तलिफ़ सूरतें उसकी बन जाती हैं।

मौत अटल हक़ीक़त है

मौत को अगर हुकूमत के ज़रिये टाला जा सकता तो फ़िरऔ़न को कभी मौत न आती।

अगर मौत को विज़ारत के ज़रिये टाला जा सकता तो हामान को कभी मौत न आती।

अगर मौत को ताक़त व बहादुरी के ज़रिये टाला जा सकता तो रुस्तम व सोहराब को कभी मौत न आती।

अगर मौत को दवाओं के ज़रिये टाला जा सकता तो अफ़लातून और जालीनूस को कभी मौत न आती।

अगर मौत को हिक्मत व दानाई (अ़क्लमन्दी और बुद्धि) से टाला जा सकता तो लुक़मान अ़लैहिस्सलाम को कभी मौत न आती।

अगर मौत को वफ़ाओं के ज़रिये टाला जा सकता तो कभी भी नेक बीवी अपनी आँखों के सामने अपने जवान शौहर को न मरने देती।

और अगर मौत को मुहब्बत के ज़रिये टाला जा सकता तो कभी भी माँ अपनी गोद में पड़े अपने मासूम बेटे को न मरने देती।

मगर हमने कितनी मर्तबा देखा कि एक जवान आदमी एक जवान लड़का चारपाई पर लेटा हुआ होता है, सारे घर वाले पूछते हैं आपको क्या हुआ, वह ख़ामोश होता है, कोई जवाब नहीं देता। उसकी बेटी आगे बढ़ती है, कहती है मेरे अब्बू मुझे बतायें तो सही आपको क्या हुआ, मैं आपकी ख़िदमत के लिए हाज़िर हूँ। जिस चीज़ की ज़रूरत होगी फ़ौरन तैयार करके पेश कर दूँगी। मुझे तो बता दीजिए। बाप ख़ामोश होता है, बेटी रो रही होती है कि अब्बू मेरे सर पर शफ़क़त का हाथ अब कौन रखेगा? मुझे क्यों नहीं बता देते? मगर बाप ख़ामोश होता है।

बहन आगे बढ़ती है, भाई मुझे बताओ तो सही आपको क्या हुआ? मगर भाई ख़ामोश होता है। कहती है मैं तुम्हारी बहन बोल रही हूँ। मुझे बताओ तो सही किस चीज़ की ज़रूरत है? कोई ज़रूरत हो तो मैं अभी पूरी कर दूँगी। मैं रातों को आपकी ख़िदमत के लिए जागूँगी, मैं आपकी बहन हूँ। मैं आपकी ख़ातिर आराम कुरबान कर दूँगी। लेकिन वह जवाब नहीं देता।

फिर उसकी बीवी आगे बढ़ती है। कहती है ऐ मेरे हमदम

हमराज़! मेरे सरताज! मुझे बताईये तो सही आपको क्या हुआ? शौहर कोई जवाब नहीं देता। बीवी की आँखों से सावन-भादों की बरसात बरस रही होती है। बार-बार कहती है आप ख़ामोश क्यों हैं? आपने तो मेरे साथ खुशी और ग़म में साथ रहने का अ़हद किया था, हमारी ज़िन्दगी एक थी हम तो एक दूसरे के जीवन-साथी थे। आप तो मेरे सामने अपने सीने के ग़म खोल दिया करते थे। आप तो दिल की बातें बता दिया करते थे, आज क्या हुआ कि मुझे कुछ नहीं बता रहे! बोलिये तो सही बात तो करें! मगर शौहर कोई जवाब नहीं देता। बीवी कहती है आप तो मेरी आवाज़ पहचानते थे मेरी आँखों का इशारा पहचानते थे, आज मुझसे क्यों ख़फ़ा हैं। अगर कोई ग़लती हुई हो तो मैं पाँव पकड़कर मना लेती हूँ मगर शौहर कोई बात नहीं करता। बीवी रोती रह जाती है।

उसके बाद माँ आगे बढ़ती है। कहती है मेरे बेटे! मेरे नूरे-नज़र! मेरे जिगर के टुकड़े! मुझे बताओ तो सही तुम्हें क्या हुआ? बेटे मैं तुम्हारी अम्मी बोल रही हूँ। मगर बेटा कोई जवाब नहीं देता। माँ पूछती रहती है, बेटा मैं अपना माल ख़र्च कर दूँगी। मैंने तुम्हारे भाई को डाक्टर बुलाने के लिए भेजा है, मैं तुम्हारा अच्छा इलाज करवाऊँगी। बेटा कहीं दर्द है तो बता दो, और कोई तकलीफ़ हो तो बता दो। माँ पूछती रह जाती है बेटा ख़ामोश होता है। माँ पूछती है, बेटा तुमने तो मेरी आवाज़ पर हमेशा लब्बैक कहा, मेरा हर काम सुनते थे, मेरा हर हुक्म मानते थे, आज क्या बात है कि अपनी माँ की बात भी नहीं सुनते? कोई जवाब भी नहीं देते? माँ अपनी दुनिया में गुम हो जाती है। मेरे बेटे जब मेरी शादी हुई थी तो मुझे उम्मीद भी नहीं थी कि मुझे अल्लाह तआ़ला औलाद की नेमत से नवाज़ेंगे। मेरे बेटे! मैं कभी नमाज़ पढ़ती और औलाद की दुआ़यें माँगती, तहज्जुद पढ़ती औलाद की दुआ़ माँगती। बेटे! मैं हज पर गयी तवाफ़ करके औलाद की दुआ़यें माँगीं। मक़ामे-इब्राहीम पर औलाद की दुआ़यें

माँगीं। बेटा! कोई मौक़ा आता, मुबारक रातों में औलाद की दुआयें माँगती। बेटा! तिलावत करती औलाद की दुआयें माँगती, बेटा कोई नेक महफ़िल होती अल्लाह वालों की, वहाँ जाकर भी औलाद की दुआयें माँगती। मेरी साथी दूसरी लड़कियाँ भी मुझे कहतीं कि अल्लाह तआला ने तुझे मुहब्बत करने वाला शौहर दिया, अल्लाह तआला ने तुम्हें खुला रिज़्क़ दिया, अच्छा घर दिया, ज़िन्दगी का हर आराम तुम्हें मुहैया किया है, क्यों परेशान रहती हो?

तुम्हें अल्लाह ने अच्छी शक्ल दी, अक़्ल दी, हर नेमत से नवाज़ा। तुम तो हज़ारों में एक हो, मगर मेरा दिल उदास रहा, मैं कहती मेरा बेटा होता, मेरे घर में खेलता मुझे उससे ख़ुशी होती, बेटे मैं तुम्हारे लिए उदास रहती थी। बेटे मैंने न इलाज में कमी की, न दुआओं में कमी की और बेटे जिस दिन तुम पैदा हुए मेरी ख़ुशियों की इन्तिहा न रही, तुम्हारे चेहरे को देखती, मुहब्बत मेरे दिल में ठाठें मारती, मेरी ज़िन्दगी के ग़म दूर हो जाते। बेटे! मैंने तुम्हें कितनी मुहब्बतों से पाला, मेरे बेटे मैं पहले तुम्हें पिलाती बाद में ख़ुद पीती थी, पहले तुम्हें खिलाती थी बाद में ख़ुद खाती थी, पहले तुम्हें सुलाती बाद में ख़ुद सोया करती थी। मैंने इतनी मुहब्बतों से पाला।

तुम्हारी पैदाईश से पहले अगर मेरा शौहर मुझे बाज़ार लेकर जाता मैं अपने कपड़े चूड़ी ख़रीद कर लाती थी, लेकिन जब से तुम्हारी पैदाईश हुई मैं जब कभी बाज़ार जाती हूँ छोटी-छोटी चीज़ें तलाश करती हूँ। मेरे बेटे का फ़ीडर ऐसा हो, मेरे बेटे के कपड़े ऐसे हों, उसके लिए झूला ऐसा हो। बेटे मैं तुम्हारी चीज़ें लेकर आती। बेटे मैं तो अपने आपको भूल ही गयी। हर वक़्त तुम्हारी ख़िदमत में मसरूफ़ होती। बेटे अगर तुम रोते तुम्हें सीने से लगाकर लोरियाँ देती थी। मैं दिन रात तुम्हारे लिए जागती थी और कोई काम ही नहीं था। बेटे अगर मेरी बहनें भी तुमसे प्यार न करतीं तो मैं उन्हें अपना ग़ैर समझती और जो तुमसे प्यार करता मैं उसे अपना समझती।

मेरे रिश्तों के पैमाने बदल गये, जो तुम्हें अपना समझता मैं उसे अपना समझती, जो तुमसे मुहब्बत न रखता मैं उसे अपना ग़ैर समझती। बेटे मैं कभी थकी हुई होती और तुम मेरे सामने आते तो तुम्हारे चेहरे को देखकर मेरी थकन दूर हो जाती। कई बार ऐसा हुआ कि तुम कमरे में सोते होते मैं किचन (Kitchen) में काम कर रही होती, मेरे हाथ काम में होते, मेरे कान तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होते। ज़रा खड़का होता मैं भागी-भागी चली आती, तुम्हें आकर देखती। अगर जागे होते तो फ़ीडर (दूध दानी) वग़ैरह दे देती। और अगर सोये हुए होते तो फिर वापस चली जाती थी। बेटे मैंने तुम्हें इतनी मुहब्बतों से पाला। तुमने तालीम हासिल की, तुमने अच्छा कारोबार शुरू कर दिया, हमारे नाम को चार चाँद लगा दिये। बेटे मुझे तुमसे इतनी मुहब्बत थी कि मैं रोज़ाना मुसल्ले पर बैठी घण्टों तुम्हारे लिए दुआयें माँगती थी। जब कभी रात के वक़्त तुम देर से आते किसी सफ़र की वजह से, सारे घर वाले सो जाते तुम्हारी माँ जागती होती। मैं करवटें बदलती नींद न आती। मैं दिल ही दिल में दुआयें माँगती, ऐ अल्लाह मेरे बेटे की ख़ैर हो! ऐ अल्लाह तू हिफ़ाज़त फ़रमा, मेरे बेटे को हिफ़ाज़त से घर पहुँचा देना।

मेरे बेटे तुम अगर आधी रात भी वापस आते और दरवाज़े को खटखटाते मैं दरवाज़े को खोलकर तुम्हें गरम खाना देती। मैंने इतनी मुहब्बतों से तुम्हें पाला। बेटे तुम वही बेटे हो और मैं वही माँ हूँ आज क्या हुआ मेरी बात का जवाब नहीं देते? मुझे बताओ तो सही तुम्हें क्या हुआ? माँ रो रही है बेटा कोई जवाब नहीं देता, बल्कि बेटे का आख़िरी वक़्त आता है। उसकी आँखें ऊपर को लग जाती हैं, रूह निकल रही होती है, माँ-बाप सब खड़े रो रहे होते हैं, कोई कुछ नहीं कर सकता। कुरआन ने पहले ही मन्ज़र बता दिया:

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ٥ وَأَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ٥ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ

وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ٥ (سورة واقعة)

सो जिस वक़्त रूह हलक़ तक आ पहुँचती है और तुम उस वक़्त तका करते हो, और हम उस वक़्त उस मरने वाले शख़्स के तुमसे भी ज़्यादा नज़दीक होते हैं, लेकिन तुम समझते नहीं हो।

मकीन चला जाता है मकान बाक़ी रह जाता है

चुनाँचे बात ऐसी ही है, रूह निकल जाती है माँ देखती है कि बेटे की रूह निकल गयी, आँखें खुली रह गईं। अपने काँपते हाथों के साथ अपने अंगूठे बेटे की आँखों पर रखकर बन्द कर देती है। वह जानती है कि ये आँखें आज के बाद कभी नहीं खुलेंगी। फिर उसका मुँह भी बन्द कर देती है, समझती है कि यह तूती हमेशा के लिए ख़ामोश हो चुका। अब कभी नहीं बोलेगा। थोड़ी देर के बाद चादर ऊपर डाल देते हैं। सब कहते हैं: मय्यित को जल्दी नहलाओ, थोड़ी देर पहले वह किसी का बाप था किसी का भाई और बेटा था, किसी का शौहर था, अब क्या बना? सबने मय्यित-मय्यित की रट लगाना शुरू कर दी। सब कहेंगे असल इनसान तो चला गया यह तो इनसान का फ़क़त जिस्म बाक़ी है। मकीन (मकान में रहने वाला) चला गया यह मकान बाक़ी है। इसको भी असली घर की तरफ़ पहुँचायेंगे।

चुनाँचे जिस्म से कपड़े हटाये जायेंगे, नहला कर कफ़न में लपेट दिया जाता है, और उस घर से ले जाने की तैयारी की जाती है। कोई पूछे तो सही कहाँ लेकर जाते हो? कहते हैं इसको असली घर की तरफ़ लेकर जाते हैं। अरे जिस घर में यह बड़ा हुआ है, इसने इसका नक़्शा खुद बनवाया, अपनी पसन्द की चीज़ खुद लगवाई। अभी तो दीवारें भी मैली नहीं हुईं, तुम इस घर से क्यों लेकर जाते हो? सब कहेंगे यह तो इसका आरज़ी (अस्थाई) मकान था, एक ख़ामोश नगर में भी इसका मकान बना हुआ है, वहाँ इसको लेकर जायेंगे।

दो गज़ ज़मीन का टुकड़ा छोटा सा तेरा घर है

वहाँ इसको लेकर जायेंगे। दरवाज़े पर रिश्तेदार जमा होते हैं, उनसे कोई पूछे कि आप कौन हैं? क्या इसके दुश्मन हो जो इसे घर से निकालने आ गये? वे जवाब देंगे हम तो रिश्तेदार हैं, इसका भला चाहने वाले और ख़ैरख़्वाह हैं। हम इसको इसके असली घर पहुँचाने आये हैं। चुनाँचे उसको कन्धों पर उठा लिया जाता है। जनाज़ा पढ़कर उसको क़ब्रिस्तान पहुँचा दिया जाता है। उसके क़द के एतिबार से एक क़ब्र खोदी जाती है, शरीअ़त का यह हुक्म है कि जो मय्यित का क़रीबी रिश्तेदार हो वह उसको क़ब्र के अन्दर उतारे। हमने कई बार देखा कि जवान बेटे को बाप क़ब्र में उतारता है, और बाप को बेटा उतार रहा होता है।

जब बाप नीचे उतरता है और नौजवान बेटे को अपने हाथों से ज़मीन पर लिटा देता है, यह बाप वह था जो बेटे के जिस्म पर मैला कपड़ा बरदाश्त नहीं करता था, आज अपने बेटे को ज़मीन पर लिटा रहा है। नीचे कोई गद्दा भी न बिछाया, कोई क़ालीन भी न बिछाया, वैसे ही कफ़न के साथ ज़मीन पर रख दिया। फिर वहाँ ऐयर-कन्डीशन की डपटिंग भी नहीं, कोई लाईट का इन्तिज़ाम भी नहीं, बल्कि ऊपर से मिट्टी डाल देते हैं। जो बाप अपने बेटे के जिस्म पर धूल बरदाश्त नहीं करता था आज वही मिट्टी डाल रहा है। और यह हौसले भी अल्लाह ने मर्दों को दिये हैं कि उनके ज़िम्मे दफ़नाने का हुक्म है, अगर फ़र्ज़ करो औरतों को हुक्म दिया जाता कि वे दफ़न करें और माँ को बेटा दफ़न करना पड़ता तो शायद माँ ख़ुद भी साथ ही दफ़न हो जाती। अल्लाह ने मर्दों को ये हौसले दिये हैं। क्या गुज़रती होगी उस बाप पर जो अपने जवान बेटे को ज़मीन पर लिटाकर उस पर मिट्टी डाल रहा होता है। मनों मिट्टी में उसको दफ़न कर देते हैं और फिर खड़े होकर कहते हैं:

ले भाई तुझे रब के हवाले किया!

ऐ बहन! तू जीते जागते अपने आपको रब के हवाले कर दे तो अल्लाह तुझे अपने पसन्दीदा बन्दों में शामिल फ़रमायेंगे। और अगर तू अपने आपको जीते जागते अल्लाह के हवाले नहीं करेगी तो फिर मरकर तो हवाले होना ही है। फिर मुजरिम बनाकर पेश करेंगे, कि बताओ तुम दुनिया में मेरी तरफ़ मुतवज्जह न हुई आख़िरकार मेरे पास तो आना पड़ा। इसलिए हमें चाहिये कि गुनाहों और बुराईयों से बचकर ज़िन्दगी गुज़ारें। औरतें फ़राईज़ व वाजिबात व सुन्नत की रियायत करते हुए ज़िन्दगी गुज़ारें। अल्लाह तआला हमें दुनिया में मौत की तैयारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें।

कपकपा देने वाली बात

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने एक अ़जीब बात लिखी है फ़रमाते हैं "ऐ दोस्त! तुझे क्या मालूम कि बाज़ार में वह कपड़ा पहुँच चुका हो जिसे तेरा कफ़न बनना है" हम तो मौत को भूल ही जाते हैं लेकिन मौत हमें नहीं भूलती। मालूम नहीं किस वक़्त मौत आ जायेगी। इनसान आज शादी में मशग़ूल हो चुका है, और मौत उसके क़रीब पहुँच चुकी होती है। इसलिए हर दिन को ज़िन्दगी का आख़िरी दिन समझते हुए गुज़ारें।

मौत का ध्यान

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक बार एक जगह क़ज़ा-ए-हाजत (पाख़ाने की ज़रूरत) से फ़ारिग़ हुए और तयम्मुम फ़रमाया हालाँकि आप दरिया के किनारे पर थे। एक सहाबी ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! सामने तो दरिया है, आपने फिर तयम्मुम क्यों फ़रमाया? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब दियाः मैंने इसलिए तयम्मुम किया कि अब मैं दरिया पर वुज़ू के लिए जा रहा हूँ। पता नहीं दरिया पर पहुँच सकूँगा या नहीं, और मौत आ जाये? अल्लाह के महबूब का यह हाल था।

एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने साथियों से पूछा कि तुम मौत के बारे में क्या जानते हो? एक ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! सुबह उठता हूँ तो यक़ीन नहीं आता कि शाम भी आयेगी या नहीं आयेगी। दूसरे ने कहा कि ऐ अल्लाह के महबूब मैं चार रकअ़त की नीयत बाँधता हूँ तो मुझे यक़ीन नहीं होता कि चारों पढ़ भी सकूँगा या नहीं। नबी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरा तो यह हाल है कि नमाज़ी नमाज़ पढ़ते हुए जब एक तरफ़ सलाम फेरता है तो उसको यह भी पता नहीं होता कि मैं दूसरी तरफ़ भी सलाम फेर सकूँगा या नहीं।

जब मौत का यह मामला है तो फिर क्यों न हम उसके लिए हर वक़्त तैयार रहें। आख़िर मौत तो आनी ही है।

मोमिन की मौत पर ज़मीन व आसमान भी रोते हैं

हदीस पाक का मफ़हूम है कि जब कोई नेक इनसान मरता है तो अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त के फ़रिश्ते जन्नत की ख़ुशबूयें लेकर आते हैं और वे उसके सीने पर रूमाल रखते हैं। रूह को इतनी आसानी से क़ब्ज़ करते हैं जिस तरह मक्खन में से बाल निकाल लेते हैं। उसके बाद मुर्दे के कफ़न-दफ़न की तैयारी की जाती है।

रिवायत में आता है कि आसमान के वे दरवाज़े उसकी मौत पर रोते हैं जहाँ से उसका रिज़्क़ उतारा जाता था, ज़मीन के वे टुकड़े रोते हैं जहाँ बैठकर वह अल्लाह की इबादत किया करता था। सुब्हानल्लाह! नेक लोगों की जुदाई पर ज़मीन व आसमान भी रोते हैं।

और काफ़िर लोग जब मरते हैं तो आसमान और ज़मीन को उन पर रोना नहीं आता, इसलिए क़ुरआन पाक में फ़रमाया:

فَمَابَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ (سورة دخان)

सो न तो उनपर आसमान और ज़मीन को रोना आया।

इस आयत के तहत मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि मोमिनों की मौत

पर उनकी जुदाई पर अल्लाह का अ़र्श भी रोता है।

सहाबी के जनाज़े में फ़रिश्तों की भीड़

एक हदीस पाक में आया है। हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु एक सहाबी थे, उनका इन्तिक़ाल हो गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनके जनाज़े के लिए चल रहे हैं और पन्जों के बल चल रहे हैं। एक सहाबी ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! पहले तो कभी आपको ऐसे चलते नहीं देखा, फ़रमाया सअ़द के जनाज़े में शिर्कत के लिए आसमान से इतने फ़रिश्ते उतर आये कि मुझे ज़मीन पर पाँव रखने की पूरी जगह नहीं मिल रही थी।

जब आपनें दफ़न फ़रमा दिया तो कुछ समय के बाद फ़रमाया कि सअ़द की जुदाई में अल्लाह का अ़र्श भी तीन दिन तक रोता रहा। सुब्हानल्लाह। अल्लाह के नबी बताते हैं कि अ़र्श भी सअ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु की जुदाई में तीन दिन तक रोता रहा। तो नेक लोगों की जुदाई में आसमान और ज़मीन भी रोते हैं।

फ़रिश्तों का स्वागत करना

किताबों में लिखा है कि जब नेक आदमी का जनाज़ा क़ब्रिस्तान की तरफ़ चलता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों को हुक्म फ़रमाते हैं कि तुम रास्ते के दोनों तरफ़ उसके इस्तिक़बाल (स्वागत) के लिए खड़े हो जाओः

आ़शिक़ का जनाज़ा है ज़रा धूम से निकले

मोमिन का जनाज़ा निकल रहा है, अल्लाह के फ़रिश्ते रास्ते के दोनों तरफ़ खड़े होते हैं, यहाँ तक कि जब उसको क़ब्र में लिटा देते हैं, रिवायत में आता है कि अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं: मेरा यह बन्दा दुनिया से थका-मान्दा आया है, इसे कह दोः

نَمْ كَنَوْمِ الْعُرُوْسِ

अल्लाह की तरफ़ से हुक्म दिया जाता है, मेरे बन्दे तू नेकी कर-करके थक गया "तू अब दुल्हन की नींद सो जा"

यहाँ हदीस के आ़लिमों ने एक नुक्ता लिखा है। फ़रमाते हैं, यह क्यों न कहा कि तू मीठ नींद सो जा, राहत की नींद सो जा। बल्कि यह कहा तू दुल्हन की नींद सो जा। इसमें नुक्ता यह है कि दुल्हन सोती है तो उसको वही जगाता है जो उसका शौहर उसका महबूब होता है। यह मोमिन आज क़ब्र में सो रहा है, क़ियामत के दिन इसको वही जगायेगा जो इसका असली महबूब होगा। दुल्हन की आँख खुलती है तो उसके शौहर के चेहरे पर उसकी नज़र पड़ती है, क़ियामत के दिन जब मोमिन की आँख खुलेगी तो उसकी नज़र के सामने परवर्दिगार (अल्लाह तआ़ला) का जलवा होगा।

चुनाँचे हदीस पाक में आता है, कई मोमिन ऐसे भी होंगे जो इस हाल में उठेंगे कि वे अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त को देखकर मुस्कुरायेंगे, अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त उनको देखकर मुस्कुरायेंगे। आवाज़ आती होगी:

يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ○ ارْجِعِىْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ○ فَادْخُلِىْ فِىْ عِبٰدِىْ وَادْخُلِىْ جَنَّتِىْ ○

ऐ इत्मीनान वाली रूह! तू अपने परवर्दिगार की रहमत (यानी अल्लाह की निकटता) की तरफ़ चल, इस तरह से कि तू उससे खुश और वह तुझसे खुश। फिर उधर चलकर तू मेरे ख़ास बन्दों में शामिल हो जा, कि यह भी रूहानी नेमत है, और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।

अल्लाह तआ़ला हमें भी मौत की तैयारी करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये और आने वाली ज़िन्दगी को गुज़री हुई ज़िन्दगी से बेहतर गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आने वाले वक़्त को गुज़रे हुए वक़्त से बेहतर बना दे और हमें तक़वा व तहारत (यानी नेकी और परहेज़गारी) पर ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे। हमने जितने भी गुनाह किये सच्चे दिल से अल्लाह तआ़ला से माफ़ी माँगें

और आईन्दा नेकी की ज़िन्दगी गुज़ारने का दिल में पुख़्ता और पक्का इरादा करें। अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त हमें आईन्दा नेकोकारी की (यानी नेक कामों वाली) ज़िन्दगी नसीब फ़रमा कर आज की इस महफ़िल से उठने से पहले पिछले गुनाहों से हमें माफ़ फ़रमा दें और आईन्दा नेकी करने में हमारी मदद फ़रमायें, और हमें नेक बनकर रहना आसान फ़रमा दें। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

इसी किताब से......

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाया कि जहन्नम के सात दरवाज़े हैं। (देखिये सूरः हिज्र आयतः ४४) और हदीस पाक में बताया गया कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं।

अब इसमें उलेमा ने एक नुक्ता लिखा है कि जिस तरफ़ से ज़्यादा लोगों को आना होता है उस तरफ़ के रास्ते को बड़ा बनाया जाता है। आपने देखा होगा कि घर का एक मैन गेट (मुख्य द्वार) होता है और एक छोटा सा गेट पीछे की तरफ़ औरतें अपने लिए बना लेती हैं। तो जहाँ से बन्दों को ज़्यादा आना होता है वहाँ ज़्यादा आदमियों के आने की गुन्जाईश बनाई जाती है। और जहाँ से थोड़ों को आना होता है वहाँ थोड़ी गुन्जाईश रखी जाती है।

तो उलेमा ने नुक्ता लिखा कि अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम के सात दरवाज़े बनाये, जन्नत के आठ दरवाज़े बनाये। इसमें अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की मन्शा यह है कि मेरे ज़्यादा बन्दे जन्नत में चले जायें। तो जिस परवर्दिगार ने जन्नत के दरवाज़ों को पहले ही ज़्यादा और बड़ा कर दिया है नीयत उसकी यह है, चाहत उसकी यह है कि मेरे बन्दे नेकी करें। ये जहन्नम में जाने की बजाये जन्नत में ज़्यादा जाने वाले बन जायें।

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुल्फ़कार अहमद साहिब
नक़्शबन्दी मुजद्दिदी दामत् बरकातुहुम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जन्नत का शौक़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى. اَمَّا بَعْدُ!

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ (سورة التوبة) وقال الله تعالٰى فى مقام اٰخر: وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلَامِ (سورة يونس) وقال الله تعالٰى فى مقام اٰخر: وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ (سورة اٰل عمران)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ٥ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

नेकियों का मौसम

रमज़ान मुबारक का महीना अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की रहमतों का ख़ज़ाना है। इसकी बरकतों का अन्दाज़ा इससे लगायें कि इसकी पहली रात में अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त जन्नत के सब दरवाज़ों को खोल

देते हैं। जन्नत को ख़ुशबुओं की धूनी दी जाती है। जन्नत को ज़्यादा ख़ूबसूरत बनाया जाता है, सजाया जाता है और इस महीने में मोमिनों की जन्नत में अलाटमेंट की जाती है। (यानी जन्नत को उनके नाम किया जाता है)।

इसकी मिसाल आप यूँ समझिये कि जैसे मुल्क के अन्दर रोज़ाना कहीं न कहीं दरख़्त लगाये जा रहे होते हैं, मगर एक मौसम ऐसा आता है जिसमें "शजर-कारी" (पेड़ लगाने का काम) की जाती है। जब पेड़ लगाने का मौसम हो तो हुकूमत हर शहर के अन्दर छोटे-छोटे केन्द्र बना देती है। जहाँ लोगों को पौधे दिये जाते हैं ताकि हज़ारों नहीं बल्कि लाखों की तायदाद में पौधे लगाये जा सकें।

इसी तरह जन्नत तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हर रोज़ अलाट करते (यानी अपने नेक बन्दों के नाम करते) हैं, उस बन्दे को जो गुनाहों से तौबा करके तायब हो जाता है। मगर रमज़ान मुबारक का महीना जन्नत की अलाटमेंट का ख़ुसूसी महीना है, चुनाँचे इसी लिए जन्नत के दरवाज़ों को खोलते हैं और उसे सजाया जाता है।

दुनिया वतने-इक़ामत

दुनिया हमारे लिए वतने-इक़ामत (अस्थाई तौर पर रहने की जगह) है। और जन्नत हमारा असली वतन है। जैसे यहाँ से एक आदमी दक्षिण अफ़्रीक़ा चला जाए और वहीं कारोबार कर ले, मगर घर बीवी-बच्चे यहाँ हों, तो दक्षिण अफ़्रीक़ा रहने की वजह से उसका वतने-इक़्मात बन गया। इसलिए कि वहाँ कारोबार है उसके लिए वहाँ रहना ज़रूरी है, मगर आख़िरकार उसको लौटकर घर आना पड़ता है, अब इस घर की जगह को वतने-असली कहते हैं।

तो हमारा असली वतन जन्नत है, हम जन्नत के रहने वाले थे, अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने हमें अपनी बन्दगी के लिए दुनिया में भेजा है, जब हम दुनिया से लौटकर जायेंगे तो हमें अपने घर में अल्लाह

रब्बुल्-इज़्ज़त रहने की जगह अ़ता फ़रमायेंगे।

एक ख़ास दुआ़

हदीस पाक में आता है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि रमज़ान मुबारक के अन्दर यह दुआ़ कसरत से (यानी ख़ूब ज़्यादा) माँगा करोः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल्-जन्न-त व अऊज़ु बि-क मिनन्नारि

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से जन्नत को तलब करता हूँ और मैं आग से आपकी पनाह माँगता हूँ।

जहन्नम से पनाह माँगने का हुक्म दिया और जन्नत को तलब करने का हुक्म दिया, जन्नत को तलब करना यह हमारी ज़रूरतों में से एक बड़ी ज़रूरत है।

राबिया बसरी रह. का ग़लबा-ए-हाल

यहाँ कई बार एक ग़लत-फ़हमी आ जाती है। किताबों में औलिया-अल्लाह (अल्लाह के वलियों और नेक बन्दों) के वाकिआत पढ़ते हैं कि राबिया बसरी चली थीं एक हाथ में पानी लेकर और दूसरे हाथ में आग लेकर और कह रही थीं कि "आग से मैं जन्नत को जलाऊँगी और पानी से मैं जहन्नम को बुझाऊँगी ताकि लोग जन्नत और जहन्नम की वजह से इबादत न करें" अल्लाह की मुहब्बत में इबादत करें।

यह राबिया बसरी का ग़लबा-ए-हाल का वाकिआ़ है। (यानी उस वक़्त वह दुनिया के एतिबार से अपने होश में नहीं थीं)।

हज़रत मुजद्दिद् अल्फ़े-सानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

"अगर राबिया बेचारी भेद से वाकिफ़ होतीं तो वह ऐसा काम न

करतीं। इसलिए कि अल्लाह पाक ख़ुद जन्नत की तरफ़ बुला रहे हैं:

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلَامِ (سورة يونس:٢٥)

यानी अल्लाह जन्नत की तरफ़ बुलाता है।

और जिसकी तरफ़ अल्लाह बुलाएँ उसकी तरफ़ जाना ऐन मन्शा-ए-ख़ुदावन्दी होती है। तो इसलिए ऐसे अल्लाह वालों का अल्लाह की मुहब्बत के ग़लबे में ऐसी बातें कर जाना यह मुहब्बत की वजह से होता है।

शौके दीदार

इब्ने तारद रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। मौत के वक़्त उन्हें मनज़िर (दृश्य) दिखाये गये। तो किताबों में लिखा है कि उन्होंने जन्नत से रुख़ फेर लिया और एक शे'र पढ़ाः

ان كان منزلتى فى الحب عندكم

ماقدرأيتُ فقد ضيعتُ ايامى

तर्जुमाः ऐ अल्लाह अगर तेरी नज़र में सारी ज़िन्दगी की इबादतों का बदला यह था तो फिर क्या, मैंने तो अपनी ज़िन्दगी को ज़ाया कर दिया।

मकसद क्या था? उनमें अल्लाह की मुहब्बत का इतना ग़लबा था कि वह तो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त का दीदार चाहते थे।

दीदारे इलाही का मज़ा

इसी तरह हज़रत ममशाद दैनूरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। मौत के वक़्त किसी ने उनको दुआ दी कि अल्लाह आपको जन्नत की नेमतें अ़ता फ़रमाये।

किताबों में लिखा है कि उन्होंने जवाब दिया कि बीस साल से जन्नत पूरी आराईश के साथ (यानी सज-धजकर) मेरे सामने पेश होती रही है, मैंने अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ से निगाह हटा कर एक

लम्हे के लिए भी जन्नत की तरफ़ नहीं देखा। तुम मेरे लिए क्या जन्नत की दुआयें करोगे।

तो इस क़िस्म के जो अल्लाह वालों के वाक़िआत हैं वे मुहब्बत के ग़लबे में हैं। लेकिन जन्नत को तलब करना यह मोमिन का काम है। यह मोमिन की तमन्ना होनी चाहिए।

किस लिए? नीयत यह न हो कि जन्नत के अन्दर खाने पीने की चीज़ें होंगी, रहने की जगह होगी, नेमतें होंगी। नहीं! नीयत यह हो कि जन्नत वह जगह है जहाँ मोमिनों को अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का दीदार नसीब होगा। हम अगर जन्नत में पहुँच जायेंगे तो हम आ़जिज़ मिस्कीनों को भी अल्लाह का दीदार नसीब हो जायेगा। तो इसलिए हर मोमिन को अपने दिल में जन्नत मिलने की तमन्ना रखना यह नेकी का काम है।

हर आदमी के दो मकान

अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने हर इनसान के लिए एक मकान जन्नत में बनाया है और एक मकान जहन्नम में बनाया है। अगर वह नेक आदमी है तो मौत के वक़्त उसको पहले जहन्नम का मकान दिखाते हैं और अल्लाह पाक फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे बन्दे! अगर तू बुराईयाँ करता तो तेरा यह ठिकाना होता। अब चूँकि तूने नेकी पर ज़िन्दगी गुज़ारी है लिहाज़ा तेरा ठिकाना जन्नत में है।

जब उसको जन्नत का ठिकाना दिखाते हैं तो उसको इतनी खुशी होती है कि वह मौत की तकलीफ़ भी भूल जाता है।

और अगर वह बन्दा गुनाहगार हो तो उसको फ़रिश्ते पहले जन्नत का मकान दिखाते हैं और उससे कहा जाता है कि अगर तू नेकियाँ करता तो तुझे अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त यह मकान देते। लेकिन चूँकि तूने बुराईयाँ कीं, गुनाह किये, और तूने तौबा भी न की और अब तेरी मौत कुफ़्र पर आ रही है, शिर्क पर आ रही है, मुनाफ़कत पर आ

रही है, इसलिए अब तुझे जहन्नम में डालेंगे। यह सुनकर उसके दिल में हसरत बढ़ जायेगी और कहेगा काश! मैं भी इस्लाम क़बूल कर लेता तो आज मैं भी नेक होता, मुझे भी जन्नत मिल जाती। आज मैं जन्नत से मेहरूम न होता। इसी ख़ौफ़ और हसरत के माहौल में जब उसे मौत आयेगी तो उसकी मौत की तकलीफ़ और भी ज़्यादा हो जायेगी, और इसी हाल में उसकी रूह को क़ब्ज़ कर लिया जायेगा।

रहमत की वुस्अ़त

अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाया कि जहन्नम के सात दरवाज़े हैं (देखिये सूरः हिज्र आयतः ४४) और हदीस पाक में बताया गया कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं।

अब इसमें उलेमा ने एक नुक्ता लिखा है कि जिस तरफ़ से लोगों को ज़्यादा आना होता है उस तरफ़ से दरवाज़े को बड़ा बना दिया जाता है। आपने देखा होगा कि घर का एक मैन गेट (मुख्य द्वार) होता है और एक छोटा सा गेट पीछे की तरफ़ औरतें अपने लिए बना लेती हैं। तो जहाँ से बन्दों को ज़्यादा आना होता है वहाँ ज़्यादा आदमियों के आने की गुन्जाईश बनाई जाती है। और जहाँ से थोड़ों को आना होता है वहाँ थोड़ी गुन्जाईश बनाई जाती है।

तो उलेमा ने नुक्ता लिखा कि अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम के सात दरवाज़े बनाये और जन्नत के आठ दरवाज़े बनाये। इसमें अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की मन्शा यह है कि मेरे ज़्यादा बन्दे जन्नत में चले जायें। तो जिस परवर्दिगार ने जन्नत के दरवाज़ों को पहले ही ज़्यादा और बड़ा कर दिया है, नीयत उसकी यह है, चाहत उसकी यह है कि मेरे बन्दे नेकी करें। ये जहन्नम में जाने की बजाये जन्नत में ज़्यादा जाने वाले बन जायें।

जन्नत क्या है?

आज की इस महफ़िल में चन्द बातें आप से कही जायेंगी।

जन्नत अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की बनाई हुई एक जगह है जिसके बारे में आता है:

ما لا عين رأت ولا اذن سمعت ولا خطر على قلب بشر

तर्जुमाः वह ऐसी जगह है जिसे किसी आँख ने देखा नहीं, किसी कान ने उसके बारे में सुना नहीं, किसी इनसान के दिल पर उसका ख़्याल तक नहीं गुज़रा।

तो गोया जन्नत हमारे ख़्वाब व ख़्याल से भी ज़्यादा हसीन और ख़ूबसूरत जगह है। यह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के नेक बन्दों के रहने की जगह है। अल्लाह तआ़ला का अ़र्श जन्नत की छत होगी, और अ़र्श के बिल्कुल नीचे यह जन्नत होगी। मगर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त फ़रमाते हैं:

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ٥ (سورة ذاريٰت:)

और आसमान को जब हमने बनाया तो उसको विस्तार बख़्शा, यह हर वक़्त फैल रहा है।

इस पर उलेमा ने मसला लिखा कि जिस तरह आसमान हर वक़्त फैल रहा है उसी तरह जन्नत भी हर वक़्त फैल रही है। जैसे एक कमान से तीर निकलने के बाद तेज़ी के साथ सफ़र करता है, उससे ज़्यादा तेज़ी के साथ जन्नत फैलती चली जा रही है। और अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की रहमत दम-ब-दम उसके बन्दों पर बढ़ रही है। और यह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की मेहरबानी है। यह उसका करम है कि उसने इनाम वाली जगह को हर वक़्त फैलते रहने का हुक्म अ़ता फ़रमा दिया।

जन्नतियों का इस्तिक़बाल

क़ियामत के दिन जो बन्दे होंगे उनको अल्लाह तआ़ला प्रोटोकोल (PROTOCOL) अ़ता फ़रमायेंगे। दुनिया के अन्दर ख़ास मेहमान का स्वागत किया जाता है, प्रोटोकोल दिया जाता है। प्रोटोकोल का

क्या मतलब? जब किसी को अपने घर बुलाना हो तो उसको अपना ड्राईवर और सवारी भेजकर बुलवा लेते हैं। एक तो वैसे ही उनको बुला लेते कि आप घर आ जाईये। लेकिन इज़्ज़त बढ़ाना इसमें होता है कि मेहमान बहुत सम्मानीय हो तो अपना आदमी भेज देते हैं कि जाओ मेहमान को लेकर आओ।

अल्लाह तआ़ला भी जन्नत में क़ियामत के दिन प्रोटोकोल अ़ता फ़रमायेंगे। फ़रिश्तों को भेजेंगे और उनको कहेंगे कि मेरे बन्दों को मेरे पास ले आओ। तो वह फिर जन्नतियों को जमाअ़त की शक्ल में साथ लेकर जायेंगे। कुरआन पाक में फ़रमायाः

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا...... (سورة المومن:٧٣)

यानी जन्नती लोग क़ियामत के दिन जन्नत की तरफ़ चलेंगे ज़माअ़त बनकर।

और जब वे जमाअ़त बनकर चलेंगे और जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचेंगे तो फ़रिश्ते उनसे कहेंगेः

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ٥ (سورة المومن:٧٣)

तुम्हारे ऊपर सलामती हो। खुश रहो और हमेशा के लिये इस जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

यानी वहाँ उनको सलाम भी पेश किया जायेगा।

وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ٥ (سورة رعد:٢٣)

हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास दाख़िल होंगे और उनको कहेंगे "सलामुन् अ़लैकुम्" (तुम पर सलामती हो)। सलाम के मायने एक तो सलामती है और अगर समझना चाहें तो एक इसका मतलब शाबाश है। यानी फ़रिश्ते यूँ कहेंगेः "तुम पर सलामती हो, तुम्हें शाबाश हो, तुम जीते रहो"। जैसे आदमी किसी को खुश होकर कहता है, इसी तरह फ़रिश्ते खुश होकर कहेंगे, तुम जीते रहो, तुम्हें शाबाश हो, तुम पर सलामती हो।

بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ

तुमने दुनिया के अन्दर रहते हुए सब्र किया, गुनाहों से अपने नफ़्स को बचा लिया, देखो तुम्हें कितना अच्छा ठिकाना अल्लाह ने अ़ता फ़रमाया। तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त उस दिन जन्नतियों को बहुत इक्राम (सम्मान और इ़ज़्ज़त) अ़ता फ़रमायेंगे।

एक हदीस पाक में आता है कि जब भी जन्नती जन्नत में दाख़िल होगा और फ़रिश्ते उसको सलाम करेंगे और फिर वह अपने घर की तरफ़ जायेगा तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त हर-हर जन्नती मर्द और औ़रत को सलाम फ़रमायेंगे।

अब यह कितना ऐज़ाज़ (सम्मान) है कि हर जन्नती मर्द और हर जन्नती औ़रत को अल्लाह तआ़ला सलाम कहेंगे। यह ऐसा ही है जैसे किसी के घर में आप जायें तो घर की औ़रत घर के दरवाज़े पर आपका स्वागत करती है, और आपको सलाम करती है, तो यह जो घर वालों ने सलाम किया, यह आपका इक्राम हुआ करता है। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त भी जन्नत में जन्नतियों का इक्राम फ़रमायेंगे। (ख़्याल रहे कि यह बयान औ़रतों की मज्लिस में हो रहा है)

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के उम्मतियों की तायदाद

हदीस पाक में आता है कि नबी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन जन्नतियों की एक सौ बीस सफ़ें होंगी जिनमें से अस्सी सफ़ें मेरी उम्मत की होंगी और चालीस सफ़ें बाक़ी तमाम नबियों की उम्मतों की होंगी। सुब्हानल्लाह! अल्लाह तआ़ला के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को क्या इ़ज़्ज़त मिली, कि सारे नबियों की उम्मतें मिलकर जो बनीं वे चालीस सफ़ें और अल्लाह तआ़ला के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत की जो सफ़ें बनीं वे

अस्सी होंगी। यानी उनसे दोगुना होंगी। यूँ कहिये जिस तरह मीरास तक़सीम होती है, उसमें आधा हिस्सा बेटी को मिलता है और बेटे को दोगुना हिस्सा मिलता है। तो जन्नत आदम अ़लैहिस्सलाम की मीरास थी वह जब तक़सीम हुई तो अल्लाह ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तो मर्द वाला हिस्सा अ़ता फ़रमाया और बाक़ी तमाम अंबिया-ए-किराम को मिलाकर औ़रतों वाला हिस्सा अ़ता फ़रमाया।

उम्मत के लिए

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुआ़

एक रिवायत में आता है कि नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम तीन दिन तक सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से अलग रहे, हुजरे में अपने आप बन्द रहे और सिर्फ़ नमाज़ों के लिए तशरीफ़ लाते। फिर बग़ैर सलाम-कलाम किये ख़ामोशी से वापस तशरीफ़ ले जाते। फिर नमाज़ के लिए आते तो वापस चले जाते। आपने तन्हाई इख़्तियार कर ली तीन दिन के लिए। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम बड़े हैरान हुए।

तीसरे दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से आकर मिले तो उन्होंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! आपने तीन दिन क्यों तन्हाई इख़्तियार फ़रमाई? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया! मैं अल्लाह तआ़ला से दुआ़यें माँग रहा था। मैं तीन दिन अल्लाह के सामने रोता रहा और अपने रब से माँगता रहा। मेरे रब ने मुझसे वायदा फ़रमा लिया कि वह मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार बन्दों को बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत अ़ता फ़रमायेंगे। और उनमें से हर-हर बन्दा अपने साथ सत्तर हज़ार आदमियों को जन्नत में लेकर जायेगा।

अब सत्तर हज़ार तो बग़ैर हिसाब जाने वाले, और हर एक

अपने साथ सत्तर हज़ार को लेकर जाएगा, तो यह अरबों की तायदाद में लोग होंगे उम्मते मुहम्मदिया के जो बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में जायेंगे।

मिसाल के तौर पर इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़र्ज़ करो उनमें से एक हैं। उनके साथ सत्तर हज़ार की उनको इजाज़त होगी। तो इसलिए हमारे जो बड़े अकाबिर (बुज़ुर्ग हज़रात) गुज़रे हैं अगर हम उनके साथ रूहानी तौर पर जुड़े हुए रहेंगे तो वे जब बेहिसाब किताब जायेंगे और उनको अल्लाह तआ़ला बन्दों में से चुनने का इख़्तियार अ़ता करेंगे कि अपने साथ सत्तर हज़ार को लेकर जाओ तो सुब्हानल्लाह मुम्किन है कि हम पर भी किसी बुज़ुर्ग की नज़र पड़ जाए और क़ियामत के दिन हमको भी बिना हिसाब-किताब जन्नत में जाने की तौफ़ीक़ मिल जाए।

जन्नत का सबसे पहला खाना

जब जन्नती लोग जन्नत में दाख़िल होंगे तो जैसे घर में मेहमान आते हैं तो उनके सामने फ़ौरन ही कोई मिठाई या कोई खाना रख देते हैं, या मेवा रख देते हैं कि जैसे ही आकर बैठें तो कुछ खा लें। तो जन्नती भी जैसे ही जन्नत में दाख़िल होंगे, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से एक रोटी उनको दी जाएगी। बाज़ रिवायात में मछली या उसके कबाब भी आए हैं। और जन्नती जब उसको खायेंगे तो दुनिया के तमाम खानों और फलों के जितने मज़े थे, उनको उस एक रोटी में मिल जायेंगे। और उस रोटी को खाकर उनको कुछ देर तक नींद सी महसूस होगी। यानी जैसे एक इनसान किसी चीज़ को खाकर एक नशा सा महसूस करता है। ऐसा नशा उनको महसूस होगा।

यह जन्नत का स्वागत है कि हर-हर लुक़्मे में सारी दुनिया की नेमतों का मज़ा उनको मिल रहा है।

जन्नतियों के मकानात

उसके बाद जन्नत में हर एक का अपना-अपना मकान होगा। वह मकान कैसा होगा? वह मकान हर इनसान अपनी इबादत के ज़रिये ख़ुद बनाता है।

हदीस पाक में आता है कि जन्नत में फ़रिश्ते हैं जो जन्नती इनसान का मकान बना रहे होते हैं। जो इनसान बैठा ज़िक्र कर रहा होता है, तो उधर जन्नती फ़रिश्ते उसका मकान बना रहे होते हैं। जब यह ज़िक्र करना ख़त्म कर देता है यानी नेक अ़मल करना ख़त्म कर देता है तो फ़रिश्ते मकान बनाना रोक देते हैं।

दूसरे फ़रिश्ते पूछते हैं कि तुमने मकान का काम बन्द क्यों कर दिया? वे जवाब देते हैं कि हमारे पास ईंट गारा ख़त्म हो गया। यानी जितनी देर हम इबादत करते हैं उतनी देर हमारा मकान बनता है।

अब औ़रतें दिल में यह बात सोच लें कि जितना वक़्त वे इबादत पर लगायेंगी, तिलावत में लगायेंगी, नमाज़ों में लगायेंगी, तस्बीहात पढ़ने में लगायेंगी, अपने दिल में अल्लाह को याद करने में लगायेंगी, उतनी ही देर जन्नत में उनका मकान बनता रहेगा। यहाँ तक कि एक बार अगर कोई बन्दा सुब्हानल्लाह कह देता है तो अल्लाह तआ़ला उस सुब्हानल्लाह कहने के बदले में एक दरख़्त जन्नत में लगवा देते हैं। वह दरख़्त इतना बड़ा होगा कि अ़रबी नस्ल का घोड़ा सत्तर साल अगर उसके नीचे दौड़े तब कहीं जाकर उसका साया ख़त्म हो। तो इतने बड़े-बड़े दरख़्त लगेंगे। इतना बड़ा ऐरिया होगा जैसे दुनिया के अन्दर एक तो छोटे मकान होते हैं, एक होते हैं फ़ील्ड हाऊस दस ऐकड़ के अन्दर एक घर, चारों तरफ़ बाग़ होते हैं। तो जन्नत के अन्दर ऐसे ही फ़ील्ड हाऊस अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमायेंगे। कि घर होगा महल की मानिन्द और उसके इर्द-गिर्द दरख़्तों के बाग़ लगे होंगे।

जन्नत के मकान के बारे में हदीसों में आता है कि कुछ लोगों के मकान सोने और चाँदी की ईंटों से बने होंगे। जैसे दुनिया में टाईलें लगा देते हैं घर में तो कितनी ख़ूबसूरत लगती हैं। आजकल तो जिस घर में भी जाओ एक से बढ़कर एक टाईल का काम हुआ होता है। कई जगहों पर मार्बल लगा देते हैं, उसकी अपनी ख़ूबसूरती होती है। तो जन्नत के जो मकान बनेंगे उन मकानों की ईंटें सोने और चाँदी की बनी हुई होंगी, और जो गारा इस्तेमाल किया जाएगा वह मुश्क का होगा।

यह मुश्क की खुशबू ऐसी होती है कि अगर आदमी उसको हाथ पर लगा ले तो पूरे दिन उसके हाथ से खुशबू आती रहती है। आप सोचिए कि जिस मकान के गारे में से मुश्क की खुशबू आएगी वह मकान कैसा महकता हुआ होगा।

बाज़ जन्नती ऐसे होंगे जिनको अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त सुर्ख़ याकूत का महल अ़ता फ़रमायेंगे। सोने चाँदी की ईंटें नहीं होंगी, सुर्ख़ याकूत का महल होगा। और बाज़ ऐसे लोग होंगे जिनको अल्लाह तआला हीरे का मकान अ़ता फ़रमायेंगे जो बेजोड़ होगा, कहीं जोड़ नहीं होगा, पूरे का पूरा मकान ही हीरे का बना होगा।

जब हीरे के मकान होंगे, सुर्ख़ याकूत के मकान होंगे, तो सोचिए कि उनकी ख़ूबसूरती फिर कैसी होगी। फिर उस मकान के अन्दर गुलशन होंगे, बाग़ होंगे, फल होंगे, फूल होंगे, सब्ज़ा होगा और इस क़द्र ख़ूबसूरत परिन्दे होंगे कि इनसान को अपने घर के अन्दर बैठे हुए ऐसा मज़ा आएगा कि वह खुशियाँ मनाएगा।

जन्नत के दरख़्त

जन्नत के दरख़्त ऐसे होंगे कि जब इनसान के दिल में ख़्याल आएगा कि मैं फ़लाँ पेड़ का फल खाऊँ, तो उस पेड़ की शाख़ (टहनी) उसके करीब हो जाएगी और फल उसके मुँह के पास आ जाएगा, और जन्नत के दरख़्त का फल लेटा हुआ बन्दा भी हासिल

कर सकेगा। बैठा हुआ भी हासिल करेगा, खड़ा हुआ भी हासिल करेगा। अल्लाह तआ़ला कुरआन पाक में फ़रमाते हैं कि बन्दा जिस हाल में भी होगा वह फल उसे वहीं मिल जाएगा।

दुनिया के दरख़्तों के फल तोड़ने के लिए तो जाना पड़ता है। दरख़्त पर चढ़ना पड़ता है या नीचे से कोई चीज़ लेकर मारना पड़ता है। लेकिन जन्नत के दरख़्तों के फल जहाँ इनसान होगा वहीं उसको मिल जायेंगे। और फिर दरख़्त भी अ़जीब होंगे, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

فِيهِمَا مِن كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ٥

हर फल के जोड़े होंगे।

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ٥ فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيٰنِ ٥ فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ٥

वहाँ हर तरह के फल होंगे। नहरें भी जारी होंगी।

कहीं फ़रमायाः वे दोनों बाग़ बहुत ज़्यादा शाख़ों वाले होंगे। कहीं फ़रमायाः उन दोनों बाग़ों का फल बहुत नज़दीक होगा। कहीं फ़रमायाः वे दोनों बाग़ गहरे सब्ज़ होंगे। और आख़िर में फ़रमायाः तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों को झुठलाओगे। (तफ़सील के लिये देखिये सूरः रहमान)

तो सोचिये जन्नत के बाग़ात के बारे में अल्लाह तआ़ला ने इतनी तफ़सील बताई तो वह कितनी ख़ूबसूरत जगह होगी। बाज़ रिवायात में आता है कि हर दरख़्त के ऊपर फलों के साथ घुंघरूओं की जैसी कुछ चीज़ें लगी हुई होंगी। जब जन्नत में हवा चलेगी तो दरख़्तों की टहनियाँ हिलेंगी तब वे घुंघरू बजेंगे, और उनमें से इतनी ख़ूबसूरत आवाज़ पैदा होगी जैसे संगीत की होती है। जिसको सुनकर इनसान यह तमन्ना करेगा कि मैं इस आवाज़ को सुनता रहूँ। गोया अल्लाह तआ़ला ने जन्नत के दरख़्तों को ऐसा बनाया कि वे फल भी देंगे और उनमें से ऐसी आवाज़ें निकलेंगी कि इनसान उन आवाज़ों को सुनकर उन पर मस्त होगा।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत है कि जन्नती का घर आसमान के सितारों से भी ज़्यादा चमकदार होगा। जैसे चमकता हुआ हीरा, बल्कि हीरे की चमक भी कम होती है, सितारे की चमक ज़्यादा होती है तो सितारे के साथ तश्बीह (मिसाल) दी कि जन्नती बन्दे का मकान आसमान के सितारों से भी ज़्यादा चमकदार होगा, और उसमें एक ख़ास बात यह होगी कि अगर एक घर में इनसान रहता है तो एक ही तरह का फ़र्नीचर और सामान देख-देखकर उकताहट सी हो जाती है।

इसलिए कई औ़रतों को देखा है कि वे साल दो साल के बाद घर की सैटिंग बदलती रहती हैं। कभी फ़र्नीचर बदल दिया, कभी सैटिंग बदल दी, कभी कुछ बदल दिया, इसलिये कि अ़रबी की कहावत मशहूर है "कुल्लु जदीदुन् लज़ीजुन्" (हर नई चीज़ में लज़्ज़त होती है) तो जन्नती मकान के अन्दर अल्लाह तआ़ला ने यह ख़ूबी रख दी कि उस मकान का डिज़ाईन रोज़ बदला करेगा। हर सुबह जन्नती जैसा चाहेंगे उनके मकान का डिज़ाईन वैसा ही बन जाया करेगा।

औ़रतें चाहती हैं कि यहाँ फूल हों, यहाँ फ़लाँ चीज़ हो, यहाँ फ़लाँ चीज़ हो। तो जैसे ये चाहेंगी जन्नत के मकान का डिज़ाईन रोज़ बदलेगा। ख़ूबसूरती रोज़ बदलेगी। जैसे उनके दिल की तमन्ना होगी वैसे ही अल्लाह तआ़ला उस मकान की ख़ूबसूरती को बना दिया करेंगे।

तो सोचिए कि वह कैसी जगह होगी कि हमारे ज़ेहन में तसव्वुर आयेगा कि ऐसा मकान हो और इस सोचने पर वह मकान वैसा ही बन जायेगा। आज तो औ़रतें जिस मकान में रहती हैं ये बेचारियाँ उसकी सफ़ाई पर दो-दो घण्टे रोज़ लगा देती हैं। कभी खिड़कियों के शीशे साफ़ हो रहे हैं, कभी फ़र्नीचर साफ़ किया जा रहा है, कभी कारपेट साफ़ हो रहा है। मगर सब कुछ करके भी घर वही रहता है।

सारी ज़िन्दगी उसी घर में गुज़ारनी है। अच्छा बन गया तो भी और अगर कोई चीज़ अच्छी न बनी तो भी गुज़ारा करना है। मगर जन्नत का मकान तो कुछ और ही होगा, कि जिसका डिज़ाईन अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त बन्दे की ख़्वाहिश के मुताबिक़ रोज़ बदल दिया करेंगे। सोचिए कि उस घर में रहने में कितना मज़ा आएगा।

जन्नत के स्वीमिंग पुल

दुनिया के अन्दर जिस तरह लोगों के घरों के अन्दर Swimming pool (नहाने के तालाब) होते हैं, और लोग उसके अन्दर नहाना भी पसन्द करते हैं, इसी तरह जन्नत के हर घर भी Swimming pool होगा। चुनाँचे हदीस पाक में आता है कि एक नहर है जिसका नाम नहरे-रहमत है। वह तमाम जन्नतों में से गुज़रेगी। यानी हर-हर जन्नती के घर के क़रीब से बहती हुई आएगी। उसकी शाख़ें इतनी होंगी कि हर मकान के अन्दर Swimming pool होगा जिसके अन्दर अगर वे नहाना चाहें तो उसमें नहाने की सहूलियत मौजूद होगी।

जन्नत की क़िस्में

अल्लाह तआ़ला ने कई जन्नतें बनाई हैं- उनमें से एक जन्नत का नाम दारुल्-जलाल है, एक का नाम दारुस्सलाम है, एक का नाम जन्नतुल्-मअ्वा है, एक का नाम जन्नतुल्-ख़ुल्द है, एक का नाम जन्नतुन्-नईम है, एक का नाम जन्नतुल्-करार है, एक का नाम जन्नतुल्-फ़िरदौस है।

यह जन्नतुल्-फ़िरदौस वह जन्नत है जिसमें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त मकान अ़ता फ़रमायेंगे। और एक का नाम है जन्नते-अ़द्न है। हदीस पाक में आता है कि जन्नतुल्-फ़िरदौस तक जितनी जन्नतें थीं उनको तो अल्लाह ने फ़रिश्तों के हाथों से बनवाया मगर जन्नते-अ़द्न को अल्लाह ने ख़ुद बनाया।

यह वह जन्नत होगी कि जहाँ पर जन्नतियों को अल्लाह का दीदार नसीब होगा।

अल्लाह तआ़ला को क्योंकि अपने बन्दों को जलवा अ़ता फ़रमाना था जैसे किसी मेहमान को कोई बुलाए तो उसके लिए घर की सैटिंग ख़ुद करता है।

इसी तरह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त को अपने महबूब बन्दों को अपने आ़शिक़ों को चूँकि अपना दीदार करवाना था इसलिए जन्नतुल्-अ़द्न को अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने ख़ुद बनाया।

हदीसों में आता है कि इस जन्नत का गारा यानी सिमेंट मुश्क का होगा, उसका घास ज़ाफ़रान का होगा और उसके जो पत्थर होंगे वे मोतियों के होंगे, और उसकी मिट्टी अंबर की होगी। अब सोचिए कि वह जन्नते-अ़दन कैसी होगी जिसको अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने सजाया? अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त फ़रमाते हैं:

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

(سورة الم سجدة:١٧)

यानी कोई भी यह नहीं जानता कि उनकी आँखों की ठंडक के लिए अल्लाह ने क्या-क्या तैयार कर रखा है। यह बदला है जो वे नेक आमाल करते थे। (सूरः सज्दा आयतः १७)

जन्नतियों का फ़र्नीचर

हर मकान के अन्दर फ़र्नीचर होता है, जिसको औ़रतें अपनी पसन्द का लाती हैं। अच्छे से अच्छा फ़र्नीचर लाती हैं। जन्नत के मकानों के अन्दर भी फ़र्नीचर होंगे, वहाँ अल्लाह तआ़ला मज्लिसें बना देंगे। मिम्बर होंगे, बैठने के लिए कुर्सियाँ होंगी। बैठने के लिए गाव-तकिये लगे होंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝ (سورة واقعة:١٥)

ऐसे तख़्त होंगे कि जिन पर सोने का काम किया हुआ होगा। अब सोचिए जो तख़्त सोने का बना हुआ हो, जिस पर सोने का काम किया गया हो, यह कितना अच्छा फ़र्नीचर होगा, और उसके अन्दर फिर लोग एक दूसरे के आमने सामने महफ़लें सजाकर बैठेंगे। ख़ादिम (ख़िदमतगार) होंगे, नौकर चाकर होंगे:

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَO (سورة دهر:١٩)

लड़के उनके गिर्द फिरेंगे कि कोई हुक्म हो तो हमें बता दीजिए।

ये जन्नती ख़ादिम हैं, उनका नाम ग़िलमान है। कुरआन मजीद में फ़रमाया किः

لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا (سورة دهر:١٩)

जैसे चमकते हुए मोती होते हैं इस तरह वे ख़ादिम ख़ूबसूरत होंगे, कि घर के अन्दर बिखरे हुए मोतियों की तरह ख़ूबसूरत वे ख़ादिम लगेंगे।

हदीस पाक में आता है, एक सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जब यह आयत पढ़ी तो उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के महबूब! जन्नती ख़ादिमों के बारे में अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि वे बिखरे हुए मोतियों की तरह ख़ूबसूरत होंगे, तो फिर जन्नत के वारिस, जो जन्नत के हक़दार बनेंगे उनके हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती और रूप-रंग) का क्या आ़लम होगा।

जन्नत के दस्तरख़्वान की तरतीब

उन ख़ादिमों के पास बरतन होंगे, चुनाँचे कुरआन मजीद में दस्तरख़्वान लगाने की तरतीब भी बता दी गई।

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ. (سورة واقعة:١٨)

उनके पास बरतन होंगे। अबारीक़ कहते हैं वह बरतन जिसमें पकड़ने के लिए हल्क़ा (पकड़ने का दायरा) भी बना हुआ और टूँटी

भी हो, और वह बिजली की तरह चमकने वाला हो। ऐसे बरतनों को अगर कलई करवा दें तो वह कितना चमकता है। इसी तरह जो जन्नती बरतन होंगे, वे बिजली की तरह चमकने वाले होंगे। यानी वे चमकते हुए होंगे और उनमें पकड़ने के लिए हैंडल (दस्ते) भी लगे हुए होंगे और कुछ "अकवाब" होंगे। अकवाब कहते हैं उन बरतनों को जिनमें पकड़ने के लिए जगह नहीं बनी होती, जैसे प्याला, उसमें हैंडल नहीं होता। इस तरह दो क़िस्म के बरतनों का ज़िक्र किया गया। अकवाब और अबारीक़।

اَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ (سورة واقعة)

और फिर ऐसे बरतन होंगे, जाम होंगे जिनके अन्दर मश्रूबात (यानी पीने की चीज़ें) होंगे।

لَا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ○ (سورة واقعة)

वह ऐसी शराब होगी जिसे "शराबे तहूरा" कहते हैं। कि पियेंगे मगर उसकी वजह से नशा नहीं होगा। तो वे दस्तरख़्वान के ऊपर आकर पहले बरतन रखेंगे, बरतन रखने के बाद फिर दूसरा काम यह होगा:

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ○

फिर उनके आगे मेवे रख दिये जाएँगे। जब मेवे रख दिये गये तो तीसरा काम क्या होगा:

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ○ (سورة واقعة)

फिर उनके पास उनकी पसन्द के परिन्दों का भुना हुआ गोश्त आ जाएगा।

तो गोया हमें दस्तरख़्वान की जन्नती तरतीब बता दी गई। औरतें भी घरों में इसी तरह दस्तरख़्वान लगाया करें। पहले दस्तरख़्वान बिछा दिया फिर उसके ऊपर बरतन रख दिये फिर बरतनों के बाद मश्रूबात (पीने की चीज़ें पानी वग़ैरह) रख दिये, मश्रूबात के बाद मेवे रख दिये

और मेवे के बाद पका हुआ भुना हुआ खाना रख दिया, यह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने जन्नत के दस्तरख़्वान की तरतीब जो कुरआन में बताई, अगर आप इस पर अ़मल करेंगी तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ से आपको अज्र मिलेगा। और जब आप अभी से इस तरह दस्तरख़्वान लगाने की आ़दत बना लेंगी तो अल्लाह तआ़ला आख़िरत में आपको इससे मेहरूम नहीं फ़रमाएँगे।

फिर जब जन्नती खाना खाने बैठेंगे:

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا

हदीस पाक में आता है कि खाना इतना होगा कि हर बन्दा खा सकेगा, मगर शौक़ की वजह से मुहब्बत की वजह से, एक दूसरे के साथ दिल्लगी की वजह से, एक दूसरे से छीन कर खाएँगे। यानी एक बरतन के अन्दर खाना रखा हुआ होगा अब कई औ़रतें बैठी हैं तो एक पहले हाथ डालेगी कि मैं पहले उठा लूँ। दूसरी हाथ डालेगी कि मैं उठा लूँ। वे **Enjoy** (लुत्फ़ हासिल) करने के लिए गोया उसमें से खाना निकालने में पहल करेंगी।

हालाँकि खाना इतना होगा कि वह खाना सब खा सकती हैं, मगर अल्लाह की तरफ़ से उनको लुत्फ़ उठाने का मौक़ा दिया जायेगा।

जन्नत के ज़ायके

जन्नत के जितने फल होंगे दुनिया के फ़लों के हम-शक्ल होंगे मगर उनकी लज़्ज़तें बहुत ही आला दर्जे की और अ़जीब होंगी। और इससे भी अ़जीब बात यह कि हर-हर फल की लज़्ज़त दूसरे से अलग होगी। जब जन्नती फल खायेगा तो उसको हर-हर लुक़्मे पर अलग मज़ा आयेगा और ये खाने उसके लिये लुत्फ़ लेने का सबब बन जायेंगे। और लुत्फ़ की बात यह है कि जितना भी खायेंगे खाने के बाद मुश्क की डकार आएगी उससे ख़ुशबू फैल जाएगी। और वह खाना हज़म हो जाएगा। फिर दोबारा भूख लगेगी और जन्नती फिर खाना शुरू कर देगा।

एक दूसरे की मेहमान-नवाज़ी

जन्नती अपने घर में दूसरों की मेहमान-नवाज़ी भी करेगा। चुनाँचे कुछ औ़रतें जन्नत में ऐसी भी होंगी, वे तमन्ना करेंगी कि हम तो बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की दावत करेंगी। चुनाँचे ख़ातूने जन्नत उनके घर में दावत के लिए तशरीफ़ लायेंगी। कुछ कहेंगी कि हम तो सैयदा आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रफ़ीक़ा-ए-हयात (जीवन साथी) थीं उनकी दावत करेंगी। चुनाँचे सैयदा आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा उनकी दावत पर आयेंगी।

कुछ औ़रतें बीबी मरियम अ़लैहस्सलाम की दावत करेंगी। कुछ औ़रतें बीबी आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा की दावत करेंगी। तो यह जन्नत के अन्दर जो सम्मानित औ़रतें होंगी, उनकी दावतें होंगी। नेक औ़रतें जो दुनिया में एक दूसरे की दोस्त रही होंगी और नेकी पर एक दूसरे को बढ़ाती रही होंगी वे भी एक दूसरे की दावतें करेंगी।

अब सोचिए कि दावत का कितना मज़ा आएगा कि जिसमें वक़्त की कोई पाबन्दी नहीं और ज़रूरियात की कोई कमी नहीं। चाहत के मुताबिक़ हर चीज़ मौजूद है।

जब जन्नती औ़रत नीयत करेगी कि मुझे फ़लाँ की दावत करनी है तो उसको कोई तैयारी ख़ुद नहीं करनी पड़ेगी। दुनिया में तो दावत देकर औ़रतें दिल के अन्दर अफ़सोस करती हैं कि दावत तो दे बैठी मगर अब पूरा दिन हमें काम करना पड़ेगा, किचन के अन्दर हमें खड़ा होना पड़ेगा, मगर जन्नत की दावत कुछ और होगी, जन्नती औ़रत दावत तो देगी मगर इन्तिज़ाम नहीं करना पड़ेगा।

यह अपने घर के लाऊँज को या अपने घर के बाग़ीचे को जैसा तसव्वुर करेंगी कि सैटिंग ऐसी होनी चाहिए उसकी सैटिंग वैसे ही हो जाएगी। फिर एक बादल आयेगा और उस बादल के अन्दर से एक

दस्तरख़्वान लगा दिया जाएगा। फिर उस बादल के अन्दर से उसके ऊपर बरतन रख दिए जायेंगे। फिर उसके ऊपर मशरूबात (पीने की चीज़ें) होंगे, जो ग़िलमान (जन्नत के ख़ादिम) लाकर रख देंगे। फिर उसके ऊपर मेवे रखे जायेंगे। फिर उसमें भुने परिन्दों के गोश्त रख दिए जायेंगे। और उसके बाद सब औ़रतें उसमें बैठकर खाना खाएँगी।

फिर एक दूसरे के साथ तज़किरे करेंगी कि दुनिया में हम यूँ प्रोग्रामों में जाया करती थीं। हम इस तरह रमज़ान मुबारक की रातों में जागा करती थीं और यूँ सलातुत्तस्बीह पढ़ा करती थीं। यूँ कुरआन पाक पढ़ा करती थीं। एक दूसरे के साथ दुनिया के तज़किरे करके ख़ुश होंगी। उन वक़्तों को याद करेंगी और कहेंगी कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने हम पर कितना एहसान किया कि हमारे अ़मलों को कु़बूल करके अल्लाह तआ़ला ने हमें ऐसी जगह अ़ता फ़रमा दी। तो जन्नत की जो दावतें होंगी उनका अपना ही कुछ रंग होगा।

जन्नत का लिबास

जन्नत के अन्दर जो लिबास मिलेगा, उसकी अपनी तरतीब होगी। दुनिया के अन्दर तो औ़रतों ने अपनी एक ख़ास अलमारी बनाई होती है, और उस अलमारी के अन्दर अपने सारे कपड़े रख दिये हैं। कई बार कपड़े ज़्यादा और अलमारी छोटी लेकिन सब कपड़े ठूँस देती हैं, मगर जन्नत में मामला ऐसा नहीं होगा।

हदीस पाक में आता है कि एक अनार का दरख़्त होगा, उसका हर-हर अनार उनके लिए उनके कपड़े रखने के लिए अलमारी बन जाएगी। तो यह उस अनार को खोलेंगी और अनार के अन्दर से उनको जोड़े मिल जायेंगे। सुब्हानल्लाह! अल्लाह की तरफ़ से वह दरख़्त लगेगा, दरख़्त के ऊपर अनार के फल होंगे। हर-हर अनार के अन्दर उनके लिए ख़ूबसूरत जोड़े होंगे।

आज तो कपड़े धुलवाने पड़ते हैं और उनको स्त्री (प्रेस) करवा कर रखना पड़ता है, और तब जाकर ये किसी मुनासिब मौक़े पर किसी कपड़े को पहन लेती हैं। मगर जन्नत में तो हर दिन उनको नये कपड़े मिलेंगे, धोने और स्त्री करने की तो बात ही नहीं। और वे तैयार किस फ़ैक्ट्री में होंगे? अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के मुताबिक़ अनार की इस फ़ैक्ट्री के अन्दर तैयार होंगे। हर एक जोड़ा दूसरे से अलग और भिन्न होगा, और उसकी ख़ूबसूरती की इन्तिहा नहीं होगी।

हदीस पाक में फ़रमाया कि जन्नती औ़रत के लिबास में सत्तर हज़ार रंग झलकेंगे। अब दुनिया में औ़रतें जो कपड़े पहन लेती हैं इन बेचारियों को मैचिंग का बड़ा शौक़ होता है। कपड़ों में ज़्यादा से ज़्यादा पाँच सात रंग इकट्ठे कर लेती हैं वरना तो दो-चार रंगों से मैचिंग हो जाती है।

उन सत्तर हज़ार रंगों में से भी उसके रंग की ख़ूबसूरती ज़ाहिर हो रही होगी। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त जन्नती औ़रत को ऐसे ख़ूबसूरत कपड़े अ़ता फ़रमायेंगे। जन्नती मर्द को अल्लाह तआ़ला रेशम के कपड़े अ़ता फ़रमायेंगे। और जन्नती मर्द को अल्लाह तआ़ला सोने के कंगन पहनायेंगे।

आजकल के नौजवानों को जब बतलाते हैं कि जन्नत में अल्लाह तआ़ला मर्दों को कंगन पहनायेंगे तो ये बेचारे परेशान होकर पूछते हैं "मर्दों को सोने के कंगन पहनायेंगे?" और अपनी हालत यह होती है कि राडो की घड़ी पहनकर अपना हाथ हिला-हिलाकर लोगों को दिखाते फिरते हैं।

मियाँ! जब रोडो की घड़ी तुम्हारे हाथ पर इतनी अच्छी लगती है, तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से बने हुए कंगन तुमको अच्छे नहीं लगेंगे?

दुनिया में औ़रत धुले हुए कपड़े पहनती थी मगर आख़िरत के

अन्दर नये कपड़े पहनेंगी। आ़म तौर पर औ़रतों की तमन्ना होती है कि पार्टी में, मुलाक़ात में हर बार नया जोड़ा पहन कर जायें। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने उनकी तमन्ना को दुनिया में नहीं बल्कि आख़िरत में पूरा फ़रमा दिया।

जब भी यह कपड़ें पहनेंगी नये होंगे। एक दिन में अगर सत्तर बार भी लिबास बदलना चाहेंगी तो अल्लाह तआ़ला उनको सत्तर नये जोड़े अ़ता फ़रमा देंगे। अब घर में रहते हुए तो दिन में एक ही बार कपड़े बदल सकती हैं। बहुत ही कोई शाहाना ज़िन्दगी गुज़ारने वाली हुई तो सुबह व शाम कपड़े बदल लेंगी। मगर जन्नत के अन्दर सुब्हानल्लाह! रोज़ाना सत्तर बार भी अगर नये कपड़े बदलना चाहेगी तो उसको नये रेशमी कपड़े मिल जायेंगे। हर-हर लिबास में से सत्तर हज़ार रंग झलकते होंगे।

जन्नत की सवारियाँ

फिर दुनिया के अन्दर लोगों के पास सवारियाँ होती हैं, उनके पास Toyota कार और किसी के पास GMC जितनी बड़ी और क़िमती गाड़ी हो तो औ़रतों को बड़ी ख़ुशी होती है। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने उनके लिए जन्नत में सवारियों का इन्तिज़ाम किया होगा।

हदीस पाक में आता है कि मर्दों के लिए अल्लाह ने जन्नत में अब्लक़ घोड़े बनाये हुए होंगे। अब्लक़ ऐसे हीरे को कहते हैं जिसमें सफ़ेदी हो और थोड़ी सी उसमें एक काली लकीर हो। जब सफ़ेदी हो और हल्की सी काली लकीर हो तो यह हीरा बड़ा ख़ूबसूरत लगता है। इस रंग के उनके घोड़े होंगे जो उनको अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त सवारी के लिए अ़ता फ़रमायेंगे।

औ़रतों के लिए अल्लाह तआ़ला ने नजीब ऊँटनियाँ बनाई होंगी। ऊँटनियों के ऊपर कजावे सजे होंगे जो सोने के बने हुए होंगे और

उन कजावों के ऊपर गद्दे लगे हुए होंगे और उन गद्दों के ऊपर ये आराम से बैठेंगी।

घोड़े पर सवारी भी ज़रा सख़्ती का काम है। इसलिये अल्लाह पाक ने यह मामला मर्दों के लिए कर दिया और औ़रतों को अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने और ज़्यादा आरामदेह और नरम जगह अ़ता फ़रमा दी, चुनाँचे ऊँटनियाँ होंगी, ऊँटनियों पर कजावे होंगे, और कजावे के अन्दर औ़रतें होंगी। यूँ समझिये कि दुल्हन की तरह सज-धजकर उसमें बैठेंगी।

और हदीस पाक में फ़रमाया गया कि जब ये ऊँटनियाँ आवाज़ निकालेंगी या घोड़े हिनहिनायेंगे तो उनकी आवाज़ें दुनिया के आ़म जानवरों की तरह नहीं होंगी, बल्कि उनके हिनहिनाने से इतनी ख़ूबसूरत म्यूज़िकल साउण्ड (संगीत की आवाज़) निकलेगी कि जन्नती चाहेंगे कि ये बार-बार हिनहिनाएँ और हम इनकी आवाज़ को बार-बार सुनते रहें। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ऐसी सवारियाँ उनको अ़ता फ़रमायेंगे।

ख़ुशी का एक और सामान

दुनिया में हमने देखा कि औ़रतों ने घर के अन्दर टेपरिकार्डर रखे हुए होते हैं। अपने कामकाज में मसरूफ़ होती हैं, कभी किसी का बयान सुन लिया, कभी कुरआन पाक की तिलावत सुन ली, कभी किसी की नअ़त सुन ली। उनको कामकाज के दौरान कुछ न कुछ सुनने को मिल जाये तो फिर ये बड़ी ख़ुश रहती हैं। यह और बात है कि यह हर एक की सुनना चाहती हैं सिवाए शौहर के, उसको यह सुनना नहीं चाहती हैं और बाक़ी सारी दुनिया की सुनना चाहती हैं, लेकिन इनको सुनने का शौक़ होता है।

जन्नत में अल्लाह तआ़ला ने औ़रतों के लिए टेपरिकार्डर का इन्तिज़ाम कर दिया। हदीस पाक में आता है कि सैकड़ों की तायदाद में हूरें होंगी, सब की सब लाईन से खड़ी होंगी। जन्नती औ़रत जब

अपने महल की सैर करेगी तो यह जहाँ-जहाँ से गुज़रेगी जन्नती हूरें कुरआन पाक की तिलावत कर रही होंगी। यह अपने ख़ाविन्द (पति) के साथ बैठी हुई बातें कर रही है, और दूर वे जन्नती हूरें सफ़ बाँधकर खड़ी हैं और अल्लाह के कुरआन की तिलावत कर रही हैं। यानी यह टेपरिकार्डर अल्लाह ने उनके घर के अन्दर बजा दिया है।

जन्नत की सुबह व शाम

वक़्त की बात रह गयी तो अ़ल्लमा कुर्तबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने लिखा है कि जैसे अ़स्र का वक़्त होता है, कि न बहुत रोशनी होती है और न अंधेरा, ऐसा वक़्त जन्नत के अन्दर होगा। लेकिन जन्नतियों को वक़्त का एहसास कैसे हो सकेगा।

हदीस पाक में यह फ़रमा दिया कि जन्नत के अन्दर चूँकि जन्नत की छत अल्लाह तआ़ला का अ़र्श है और अल्लाह तआ़ला के अ़र्श के परदे दिन के वक़्त उठा लिए जायेंगे और रात के वक़्त गिरा दिये जायेंगे। तो जब फ़रिश्ते पर्दे हटाएँगे और पर्दे गिरायेंगे इससे जन्नतियों को दिन और रात के होने का अन्दाज़ा हो जाएगा।

फिर कुछ वक़्त ऐसे आयेंगे कि जन्नत में दरख़्तों में से अचानक 'अल्लाहु अकबर' 'अल्लाहु अकबर' की आवाज़ें निकलनी शुरू हो जायेंगी और जन्नती फ़रिश्ते भी 'अल्लाहु अकबर' कहना शुरू कर देंगे।

हदीस पाक में आता है कि जैसे ही अल्लाहु अकबर की आवाज़ें निकलेंगी तो जन्नती लोग समझ लेंगे कि इस वक़्त हम दुनिया में नमाज़ पढ़ा करते थे। गोया हर दिन में पाँच बार जन्नत के दरख़्तों में से उनको अल्लाहु अकबर की आवाज़ सुनाकर आज़ान की अवाज़ याद दिलायी जाएगी।

फिर जुमा के दिन का उनको इस तरह से पता चलेगा कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हर जुमा के दिन जन्नतियों को अपना दीदार अ़ता फ़रमायेंगे, तो जिस दिन उनको अल्लाह का दीदार नसीब होगा

जन्नती समझ लेंगे कि यह जुमा का दिन है। गोया एक हफ़्ता गुज़र गया और जन्नती लोग जुमा के इन्तिज़ार में रहेंगे।

और हर महीने के ख़त्म होने का पता उनको इस तरह चलेगा कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ से उनको तोहफ़ों के पैकिट मिलेंगे। जैसे ईद होती है तो दोस्त दोस्तों को ईद के ऊपर तोहफ़े भेजते हैं। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त भी हर महीने के अंत पर अपने बन्दों को तोहफ़े भेजेंगे।

बात भी समझ में आती है कि दुनिया में कोई आदमी किसी का नौकर हो, उसकी ख़िदमत करता हो तो महीने के आख़िर में उसका मालिक उसको तन्ख़्वाह देता है। तो जैसे दुनिया का मालिक महीने के बाद तन्ख़्वाह देता है इसी तरह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की जिन्होंने बन्दगी की है और अब उन्होंने रिटायर्मेन्ट की ज़िन्दगी गुज़ारनी शुरू कर दी और उनको जन्नत में अल्लाह ने ऐश व आराम दिया, रिटायर्मेन्ट में भी तो ऑफ़िस वाले कुछ तोहफ़े भेज देते हैं, तो अल्लाह तआ़ला हर महीने अपने जन्नती बन्दों को तोहफ़े भेजेंगे। ये तोहफ़े पैक किये हुए होंगे। हर बन्दे के दिल में यह शौक़ व जुस्तजू रहेगी कि देखें मुझे अल्लाह की तरफ़ से कौनसा तोहफ़ा मिलता है।

तो शौहर अपना तोहफ़ा खोलेगा, देखकर ख़ुश होगा। बीवी अपना तोहफ़ा देखकर ख़ुश होगी। बच्चे अपना तोहफ़ा देखकर ख़ुश होंगे। हर एक को इन्तिज़ार होगा कि महीने के बाद अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते फिर तोहफ़े लेकर आयेंगे।

सोचिए तो सही किसी दोस्त की तरफ़ से पैक किया हुआ गिफ़्ट आता है तो कितनी ख़ुशी होती है। जब परवर्दिगारे आ़लम की तरफ़ से तोहफ़े मिलेंगे तो ये कितने ख़ूबसूरत होंगे और उनको देखकर और वसूल करके इनसान को कितना मज़ा आएगा।

ईद का पता

ईद का पता जन्नतियों को इस तरह चलेगा कि साल में एक बार अल्लाह तआ़ला जन्नतियों को ईद के मौक़े पर दावत के लिए बुलाएँगे। तो जब अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त जन्नतियों को दावत का पैग़ाम पहुँचायेंगे तो जन्नती समझ जायेंगे कि हमारी ईद का वक़्त आ गया।

दुनिया में तो ईद हम ऐसे मनाते हैं कि ज़्यादा से ज़्यादा चन्द स्वीट डिश बना लीं या कुछ और खाने बना लिये, लेकिन आख़िरत के अन्दर जन्नत में हर ईद के दिन अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को ख़ुद दावत खिलायेंगे।

अब सोचिए कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त दावत करने वाले होंगे और जन्नती खाने वाले होंगे। फिर उस दावत का क्या मज़ा होगा। हम तो इसको अपने दिमाग़ से सोच भी नहीं सकते। तो वक़्त का जन्नतियों को ऐसे पता चलेगा।

हुस्न व वक़ार

अब एक और अहम चीज़ की तरफ़ आईये जिसका औ़रतों को हर वक़्त बड़ा ख़्याल रहता है। उसको कहते हैं, हुस्न व जमाल। ये औ़रतें हुस्न व जमाल की शैदाई हैं। ख़ूबसूरत मकान देखें वे इन्हें पसन्द, ख़ूबसूरत लिबास देखें वे इन्हें पसन्द, कोई भी ख़ूबसूरत चीज़ देखें इनका दिल चाहता है कि हम इसे हासिल कर लें। अपने बारे में उनके दिल में तमन्ना होती है कि मैं ऐसी हसीन व ख़ूबसूरत बन जाऊँ। उनके दिल की यह तड़प होती है। और अल्लाह तआ़ला ने उनको हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती) अ़ता भी किया है। इसलिए क़ुरआन पाक में फ़रमायाः

وَلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ

यानी अगरचे तुम्हें उनका हुस्न पसन्द आये।

तो हुस्न के लफ़्ज़ की निस्बत कुरआन ने औ़रतों की तरफ़ की। दो लफ़्ज़ याद रखना एक लफ़्ज़ "हुस्न" है और एक लफ़्ज़ "वक़ार" है। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने हुस्न औ़रत को अ़ता किया, और वक़ार मर्दों को अ़ता किया। तो मर्दों की शख़्सियत के अन्दर वक़ार होता है और औ़रतों की शख़्सियत के अन्दर हुस्न होता है। और दोनों की अपनी-अपनी कशिश होती है।

यहाँ एक तालिब-इ़ल्माना सवाल हो सकता है कि औ़रतों को अल्लाह तआ़ला ने हुस्न में क्यों आगे बढ़ा दिया? तो इसका जवाब मुफ़स्सिरीन (कुरआन के व्याख्याकारों) ने यह लिखा कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को खनकती मिट्टी से बनाया, लेकिन अम्माँ हव्वा को अल्लाह तआ़ला ने आदम अ़लैहिस्सलाम की पसली से निकाला। यह डायरेक्ट मिट्टी से नहीं बनीं बल्कि यह आदम अ़लैहिस्सलाम की पसली से बनाई गई हैं।

यूँ समझिये कि यह साफ़ किया हुआ मटैरियल था जो अल्लाह पाक ने हज़रत आदम की पसली से निकाला। तो चूँकि रिफ़ाईन्डमेन्ट के बाद बनीं इसलिए अल्लाह ने उनमें नज़ाकत और हुस्न व जमाल को रख दिया, लेकिन मर्दों में अल्लाह ने वक़ार को रखा और औ़रतों में अल्लाह ने हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती) को रखा।

तो जन्नत के अन्दर औ़रतों को हुस्न व जमाल (सुन्दरता) कैसा अ़ता होगा? अक्सर औ़रतों के ज़ेहन में ये सवालात होते हैं मगर वे किसी से पूछ नहीं सकतीं?

सुनिए......! अल्लाह तआ़ला ने एक बात बता दी कि जन्नती ख़ादिमायें (सेविकायें यानी हूरें) कैसी होंगी, और उसके बाद जन्नती औ़रतों के हुस्न का कुछ और इन्तिज़ाम कर दिया। अभी यह बात आपको अच्छी तरह समझ में आ जाएगी।

जन्नती जो ख़ादिमाएँ होंगी उनके हुस्न को तो बड़ी तफ़सील से

अल्लाह ने ज़िक्र फ़रमा दिया लेकिन जन्नती औ़रत के हुस्न के तज़किरे इतने ज़्यादा नहीं किये। इसमें भी राज़ है। इसमें भी अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ से एक बात है।

जो परवर्दिगार यह चाहता है कि तुम अपनी औ़रतों के तज़किरे दूसरों के सामने न करो वह खुद कहाँ पसन्द करेगा कि जन्नती औ़रतों के तज़किरे वह कुरआन में सबके सामने खोलता फिरे। लिहाज़ा उन्होंने जन्नत की ख़ादिमाओं के हुस्न के तज़किरे तो कर दिए कि जन्नती हूरें ऐसी होंगी लेकिन औ़रतों का तज़किरा नहीं किया।

मेरे गुलिस्ताँ से ही मेरी बहार का अन्दाज़ा लगा लीजिये

आज लोगों को धोखा लग गया, वे समझते हैं कि जन्नत में सिर्फ़ हूरें ही होंगी। हालाँकि ये हूरें तो वहाँ की नौकरानियाँ होंगी, ख़ादिमाएँ होंगी, ख़ादिमाओं में और घर की मालकिन के अन्दर फ़र्क़ तो होता है।

अब एक महल है जिसके अन्दर एक रानी ज़िन्दगी गुज़ार रही है। तो रानी तो वह होती है जो सारी क़ौम में से हुस्न का नमूना होती है। उसको रानी बनाया जाता है और उस रानी की वजह से जो महल के अन्दर है किसी बदसूरत लड़की को नहीं रखा जाता है। बल्कि लड़कियों में से चुन-चुनकर ख़ूबसूरत लड़कियों को महल में रखा जाता है। कि ये महल की ख़ादिमाएँ बनेंगी। तो महल की ख़ादिमाएँ भी ख़ूबसूरत होती हैं मगर रानी का हुस्न तो सबसे ज़्यादा होता है।

बिल्कुल इसी तरह जन्नत में हूरें ख़ादिमाएँ हैं, अल्लाह तआ़ला ने उनके हुस्न के तज़किरे बहुत फ़रमा दिये और यह कहा कि इससे तुम अन्दाज़ा कर लो कि जन्नती औ़रत का हुस्न कैसा होगा।

हूर का लफ़्ज़ी मतलब

हूर का लफ़्ज़ी मतलब यह है कि जिसकी आँख की सफ़ेदी ज़्यादा सफ़ेद हो और सियाही ज़्यादा सियाह हो। उलेमा ने लिखा है कि जिस्म के कुछ हिस्से ऐसे हैं कि जो सफ़ेद अच्छे लगते हैं और कुछ हिस्से ऐसे हैं कि जिन पर सियाही अच्छी लगती है।

मिसाल के तौर पर सर के बाल जितने काले होंगे उतने ज़्यादा अच्छे लगेंगे। पलकें जितनी ज़्यादा काली होंगी उतनी ज़्यादा अच्छी लेगेंगी। आँखों के अन्दर सुर्मा जितना ज़्यादा काला होगा उतना ज़्यादा अच्छा लगेगा। जिस्म जितना ज़्यादा गोरा होगा ख़ूबसूरत होगा, उतना ज़्यादा अच्छा लगेगा। तो हूर उसको कहते हैं कि जिसके जिस्म की जो सफ़ेद जगहें होती हैं वे बहुत ज़्यादा सफ़ेद हों और जो काली जगहें अच्छी लगती हैं वे ज़्यादा काली हों, उसको हूर कहते हैं।

गोया अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने नाम ही ऐसा रख दिया कि नाम से ही हुस्न व जमाल (सुन्दरता) का अन्दाज़ा हो जाता है। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने कुरआन पाक में फ़रमायाः

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ٥ (سورة رحمن:٥٨)

कि ये हूरें ऐसी होंगी जैसे याकूत और मर्जान (क़ीमती मोती) होते हैं।

उलेमा ने लिखा है कि याकूत की तरह साफ़-सुथरी होंगी और मर्जान की तरह सफ़ेद होंगी। कहीं फ़रमायाः

فِيْهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ٥ (سورة رحمن:٧٠)

उनमें ख़ूबसूरत और ख़ूबसीरत औ़रतें होंगी।

और जन्नती औ़रतों के बारे में फ़रमायाः 'क़ासिरातुत्तर्फ़" निग़ाहें हटाने वालियाँ ग़ैर से।

और जन्नती हूरों के बारे में फ़रमाया

كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ٥ (سورة صافات:٤٩)

वे तो इस क़िस्म की होंगी जैसे अण्डों के अन्दर महफ़ूज़ होती हैं। इस तरह से होंगी।

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّO (سورۃ رحمن: ۷۴)

वे बाकिरा (कुंवारी) होंगी। उनसे पहले उनको न किसी इनसान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न ने।

चुनाँचे हदीस पाक का मफ़हूम है कि जन्नती मर्द को अल्लाह तआ़ला हुस्ने यूसुफ़ (यानी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम जैसा हुस्न) अ़ता फ़रमायेंगे। लह्ने-दाऊदी (यानी हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम जैसी आवाज़) अ़ता फ़रमायेंगे और ख़ुल्के-मुहम्मदी (यानी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जैसे अख़्लाक़ और आ़दतें) अ़ता फ़रमायेंगे।

जन्नती मर्द को अल्लाह तआ़ला ये नेमतें अ़ता फ़रमायेंगे। और जन्नती औ़रतों को अल्लाह पाक एक इंचार्ज अ़ता फ़रमायेंगे, जिसको हूरे-ऐन कहते हैं। बड़ी-बड़ी ख़ूबसूरत आँखों वाली हूर। चुनाँचे फ़रमायाः

وَحُوْرٌ عِيْنٌ O كَاَمْثَالِ لُؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِO (سورۃ واقعۃ)

वे बड़ी-बड़ी आँखों वाली औ़रतें यानी हूरें होंगी, जैसे हिफ़ाज़त से रखा हुआ मोती।

ख़ादिमाओं के ऊपर जैसे सुपरवाईज़र होती हैं इसी तरह वे सुपरवाईज़र होंगी। चुनाँचे हूरे-ऐन के साथ सत्तर हज़ार हूरें होंगी। ये हूरे-ऐन दीगर हूरों के साथ मिलकर फिर जन्नती औ़रतों की ख़िदमत करेंगी।

जन्नती औ़रतों का हुस्न

जन्नती औ़रतों के हुस्न के बारे में आता है कि उनके कानों में एक हज़ार बालियाँ होंगी। उनके सर पर सोने के ताज होंगे। अब सोने का ताज कहना आसान है। लेकिन अल्लाह ने जिसको बनाया

होगा वह कितना ख़ूबसूरत होगा। यह ताज हूरों को नहीं मिलेगा, यह सिर्फ़ जन्नती औ़रतों के सर पर रखा जाएगा।

मालूम यह हुआ कि उसका घर महल की मानिन्द होगा और जन्नती औ़रत को रानी और शहज़ादी बनाकर रखा जाएगा। रानी के सर पर ताज हुआ करता है और फिर उसके बैठने के लिए एक तख़्त बनाया जाएगा जो सोने का होगा।

जन्नती मर्द की उम्र बत्तीस साल होगी और जन्नती औ़रत की उम्र अट्ठारह साल होगी। चूँकि अट्ठारह साल की उम्र में लड़की की जवानी भरपूर होती है, और ये औ़रतें बाकिरा (कुंवारी) होंगी, कुंवारी रहेंगी, अपने शौहर से मेलजोल (संभोग) करेंगी लेकिन इसके बावजूद कुंवारियाँ रहेंगी। यानी कुंवारी लड़की के जिस्म की बनावट और होती है, बच्चे होने के बाद जिस्म की बनावट और हो जाती है, इसलिए बता दिया गया कि वहाँ पर उनको जिस्म की जो ख़ूबसूरती मिलेगी वह ख़ूबसूरती कभी ख़त्म नहीं होगी।

उनको यह डर नहीं रहेगा कि मैं खाना खाऊँगी तो मोटी हो जाऊँगी, बेचारियाँ डाईटिंग (DIETING) (वज़न कम करती) फिरती हैं, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया कि ये कुंवारियाँ ही रहेंगी यहाँ तक कि सारी ज़िन्दगी उनका हुस्न व जमाल बढ़ता रहेगा।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः ये अपने शौहरों की शैदाई (दीवानी) होंगी। जन्नती लोग जितने भी होंगे अल्लाह तआ़ला उनके दिलों से रन्जिशों को निकाल देंगे। गिले को निकाल देंगे, कीने को निकाल देंगे। एक दूसरे के साथ मुहब्बतें ही मुहब्बतें होंगी और एक दूसरे के साथ बैठेंगी।

चुनाँचे जन्नती औ़रतों के बारे में फ़रमा दिया गया कि ये अपने शौहरों से इश्क़ करने वाली होंगी। दुनिया के अन्दर तो ये शौहरों से बेवफ़ाई भी कर जाती हैं। बहुत सी बार तबीयतें नहीं मिलतीं, मगर जन्नत का मामला और होगा। फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला मियाँ-बीवी में

ऐसी मुहब्बत पैदा कर देंगे कि ये औ़रतें अपने शौहरों की शैदाई होंगी, इश्क़ करने वाली होंगी। न उनको हैज़ (माहवारी) होगा, न गर्भ होगा, न निफ़ास (बच्चे की पैदाईश के बाद आने वाला ख़ून) होगा। इस क़िस्म की कोई चीज़ नहीं होगी बल्कि सीने बे-कीना होंगे और अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त उनको वहाँ पर रानियों जैसी ज़िन्दगी अ़ता फ़रमायेंगे।

जो उनके दिल की ख़्वाहिश और तमन्ना होगी, अल्लाह तआ़ला उनकी ख़्वाहिश और तमन्ना को पूरी कर देंगे।

जन्नत का सिंगारदान

दुनिया के अन्दर औ़रतों ने अपने बैडरूम के अन्दर एक मेज़ सजाई हुई होती है जिसके अन्दर अपनी आराईश (सजने संवरने) के लिए कुछ सामान रखा होता है। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त जन्नत में उनको इस चीज़ से बेपरवाह फ़रमा देंगे।

जन्नत में एक जगह है जिसमें अल्लाह तआ़ला हुस्न का बाज़ार लगायेंगे। सोचिए और ज़रा ग़ौर कीजिए। जिस तरह दुनिया के अन्दर ब्यूटी पार्लर होते हैं। वहाँ लेजाकर दुल्हन को सजाते हैं। वहाँ पर औ़रतें होती हैं जिनको सजाने की महारत होती है। वे लड़की को ऐसी ख़ूबसूरत दुल्हन बना देती हैं कि इनसान उनकी महारत को देखकर हैरान ही रह जाता है।

तो दुनिया के अन्दर जैसे ब्यूटी पार्लर होते हैं, अल्लाह तआ़ला ने जन्नत में भी ब्यूटी पार्लर बनाए होंगे। यह गोया बाज़ारे हुस्न होगा जन्नती औ़रत वहाँ जाएगी और वहाँ जाकर जैसा चाहेगी उसकी अपनी शख़्सियत वैसी ही बन जाएगी।

तो अब देखिए! बात समझ में आई कि जन्नती औ़रतों के हुस्न को अल्लाह ने इसलिए ज़्यादा खोलकर बयान नहीं किया कि उनको तो अल्लाह को ऐसा बना देना है जैसा ये खुद चाहेंगी। हूरों को तो अल्लाह ने हुस्न दे दिया लेकिन इनको हुस्न वह मिलना था जो इनको पसन्द हो, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया:

وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِيٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَاتَدَّعُوْنَ٥ (سورة حم السجدة)

तुम्हें वहाँ वह मिलेगा जो तुम्हारा दिल चाहेगा।

औरतों का मिज़ाज यह है कि ये जिस चीज़ को देखती हैं वह इन्हें पसन्द आ जाती है। बेचारी किसी का कपड़ा देखती हैं कहती हैं मैं इस जैसा लिबास बनाऊँगी। किसी को देखती हैं कि उसने ऐसा मेकअप किया हुआ है सोचती हैं मैं भी ऐसा ही मेकअप करूँगी। किसी को देखती हैं उसने ऐसा ज़ेवर पहना है, सोचती हैं मैं भी ऐसा ज़ेवर पहनूँगी। सोचती हैं कि फ़लाँ की घड़ी ऐसी है, मैं भी ऐसी ही पहनूँगी। फ़लाँ ने ऐसे मैचिंग की हुई है मैं भी ऐसी ही मैचिंग करूँगी। तो औरतों की यह फ़ितरत है, ये किसी ख़ूबसूरत चीज़ को देखती हैं तो अपनाने की कोशिश करती हैं। चूँकि दुनिया में यह उनकी चाहत रहती है, अल्लाह तआ़ला ने इसलिए जन्नत में उसको अपनी मर्ज़ी का हुस्न देने की बजाय उनकी मर्ज़ी पर बात छोड़ दी।

जन्नत में अल्लाह तआ़ला ने ब्यूटी पार्लर बना दिये वहाँ जाकर इन्हें अल्लाह तआ़ला ऐसा बनने का मौक़ा देंगे जैसा ये ख़ुद चाहती हैं। चुनाँचे ये वहाँ जायेंगी, इनका दिल चाहेगा ऐसा मेरी आँख का सुर्मा हो, वह ऐसा हो जाएगा। ऐसी मेरी पलकें हों, पलकें वैसी हो जाएँगी। ऐसे मेरे बाल हों, वे वैसे हो जाएँगे। ऐसी मैं पोशाक पहनूँ वह वैसे हो जाएगी। मेरे नाख़ून ऐसे ख़ूबसूरत लगें वे उसी तरह के बन जाएँगे। ये दिल में सोचती चली जाएँगी और उनकी वह चीज़ वैसी बनती चली जाएगी।

अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त जन्नती औ़रत को उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ हुस्न अ़ता फ़रमायेंगे। अब सोचिए यह कितना बड़ा सम्मान और इ़ज़्ज़त है अल्लाह की तरफ़ से कि हर औ़रत को उसकी अपनी मर्ज़ी का हुस्न मिलेगा। यहाँ तक कि यह दूसरी औ़रतों की चीज़ भी देखेगी और उसको पसन्द करेगी तो इसकी अपनी चीज़ वैसी ही बन

जायेगी।

अब बताईये कि हुस्न की कोई हद नहीं जिसको इनसान मुतैयन कर सके, इसलिए अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने एक बात फ़रमा कर वज़ाहत कर दी कि उनको हम वह अ़ता करेंगे जिसको उनका जी चाहेगा।

नूर की बारिश

जब जन्नती लोग जन्नत में जायेंगे तो पहली नज़र जब वहाँ की मख़्लूक़ पर डालेंगे, हूरों को देखेंगे, ग़िलमान को देखेंगे, तो उनके हुस्न से ये इतने प्रभावित होंगे कि ये सत्तर साल तक उनके हुस्न व जमाल को हैरान होकर देखते खड़े रह जायेंगे और उनको पता भी नहीं चलेगा कि इतना वक़्त गुज़र गया।

जैसे बहुत ही ख़ूबसूरत चीज़ को आदमी देखे तो थोड़ी देर हैरान होकर देखता रहता है। तो जब जन्नती मख़्लूक़ के हुस्न को देखेंगे तो सत्तर साल तक टकटकी बाँधकर उसको देखते रहेंगे। इतना उनका हुस्न व जमाल (सुन्दरता) होगा।

लेकिन फिर एक वक़्त आयेगा जिसमें अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त अपने बन्दों को अपना दीदार अ़ता फ़रमायेंगे। जब दीदार होगा तो हदीस पाक में आता है कि नूर की बारिश होगी। अब नूर की बारिश की वजह से जन्नतियों के चेहरों पर नूर की ऐसी चमक आ जाएगी और उनके चेहरे इतने ख़ूबसूरत हो जायेंगे कि जब जन्नती लोग लौटकर अपने घरों में वापस आयेंगे तो उनका हुस्न इतना बढ़ चुका होगा कि जन्नती हूर और ग़िलमान सत्तर साल तक टकटकी बाँधकर उनके हुस्न को देखते रह जायेंगे। नौकर, नौकर होते हैं। घर के मालिक घर के मालिक हुआ करते हैं।

अगर हूर व ग़िलमान इतने ख़ूबसूरत हैं तो सोचिए कि घर के मालिक कितने ख़ूबसूरत होंगे।

उलेमा की अहमियत

अल्लाह के दीदार के बारे में उलेमा ने लिखा है कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त जन्नतियों को फ़रमायेंगे कि ऐ जन्नतियो! तुम्हें किसी चीज़ की कमी है? जन्नती कहेंगें ऐ अल्लाह! हर चीज़ हमारे पास मौजूद है। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि तुम अपने आ़लिमों से जाकर पूछो। हदीस पाक में आता है कि लोगों को जिस तरह दुनिया में उलेमा की ज़रूरत है उसी तरह उनको जन्नत में भी उलेमा-ए-किराम की ज़रूरत पड़ेगी।

इसलिये उलेमा-ए-किराम की बड़ाई और रुतबे को पहचानिये। दुनिया में भी हम इनके मोहताज और आख़िरत में भी हमें इनकी ज़रूरत होगी।

लोग उनसे जाकर पूछेंगे कि अल्लाह तआ़ला पूछ रहे हैं कि तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है? हमने कहा है कि हमारे पास तो सब चीज़ें मौजूद हैं। उलेमा फ़रमायेंगे कि हर चीज़ अपनी जगह पर लेकिन अल्लाह ने फ़रमाया है (व-लदैना मज़ीद्) मैं तुम्हें अपना दीदार कराऊँगा, हमें अभी तक अल्लाह तआ़ला का दीदार नहीं हुआ। यह चीज़ अभी तक बाक़ी है। उस वक़्त जन्नतियों को पता चलेगा, वे कहेंगे कि ऐ अल्लाह हमें सब नेमतों के मज़े आ गये अब हमें आपका दीदार करना है।

दीदारे इलाही

अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे: अच्छा मेरे बन्दो! मैं तुम्हें जन्नते-अ़द्न में अपना दीदार कराऊँगा। चुनाँचे उनको वक़्त दिया जाएगा। ये सब जन्नती बाज़ार में जायेंगे और वहाँ जाकर इस फंकशन (इस पार्टी) के लिए तैयारियाँ करेंगे। औरतें जैसी चाहेंगी उनकी वैसी शख़्सियतें बन जायेंगी। अच्छे लिबास पहन लेंगी। ये अपनी मन-मर्ज़ी के हुस्न व जमाल के साथ तैयार हो जायेंगी। उसके

बाद उनको जन्नत की तरफ़ बुलाया जाएगा।

सबसे पहले हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम अपनी उम्मत को लेकर निकलेंगे। फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपनी उम्मत को लेकर निकलेंगे। फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम, फिर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम। ये सब के सब मिलकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के महल की तरफ़ आयेंगे। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने उम्मतियों को लेकर निकलेंगे और ये सब जन्नती जन्नते-अ़द्न की तरफ़ चलेंगे। उनके ईर्द-गिर्द फ़रिश्ते होंगे जो उनके लिए ख़ादिमों की हैसियत से होंगे। और सब के सब जन्नते-अ़द्न में पहुँचेंगे।

हदीस पाक में आता है, अल्लाह तआ़ला ने अंबिया-ए-किराम के लिए नूर के मिंबर बनाए हुए होंगे। अंबिया नूर के मिंबरों पर बैठ जायेंगे। सिद्दीक़ीन के लिए नूर के तख़्त बनाए होंगे। सिद्दीक़ीन उन तख़्तों पर बैठ जायेंगे। शहीद हज़रात के लिए अल्लाह ने नूर की कुर्सियाँ बनाई हुई होंगी वे नूर की कुर्सियों पर बैठ जायेंगे। मगर नेक लोग 'सालिहीन' के लिए अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने मुश्क के गद्दे बनाये हुए होंगे वे उन गद्दों पर बैठ जायेंगे।

जब सब उस जगह आ जायेंगे सबसे पहले अल्लाह तआ़ला उनके लिए खाने की दावत फ़रमायेंगे। दस्तरख़्वान लगेगा सबके सामने खाने आयेंगे।

हदीस पाक में है कि सबसे कम दर्जे वाला जो जन्नती होगा उसके सामने भी सत्तर हज़ार प्लेटों के अन्दर खाना रखा जाएगा। अब मालूम नहीं उनके क्या ज़ायके होंगे। हर खाने का ज़ायक़ा अलग होगा। हर मश्रूब (पीने की चीज़) का ज़ायक़ा अलग होगा। जब सबसे कम दर्जे वाले जन्नती के सामने सत्तर हज़ार प्लेटें लगेंगी तो सोचिए दूसरे जन्नतियों के सामने कितना कुछ होगा। यह अल्लाह तआ़ला की

तरफ़ से इक्राम (सम्मान) होगा। हर लुक़्मे का मज़ा अलग (भिन्न) होगा।

जब ये सब लोग खाना खा चुकेंगे तो अल्लाह तआला फ़रमायेंगे: मेरे बन्दो! तुम मेरे पास आये हो, अब मैं तुम्हें अपनी पोशाक और जोड़ा पहनाता हूँ। जो मेरी मुहब्बत की पोशाक है। तुमने दुनिया में मुझे खुश कर दिया, आज मैं तुम्हें खुश करूँगा।

चुनाँचे अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमायेंगे कि यह बनी हुई पोशाक मेरे बन्दों को पहना दो। वहाँ पर अल्लाह तआला की तरफ़ से एक़ पोशाक होगी, अल्लाह ने बनाई होगी, उसकी ख़ूबसूरती का तो हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते। वे फ़रिश्ते उस पोशाक को उन लोगों को पहना देंगे।

पोशाक पहनाने की तक़रीब (मजलिस) पूरी हो जाएगी उसके बाद एक हवा चलेगी जिसका नाम 'मुबश्शिरा' होगा और उस हवा से जन्नतियों के लिबास के अन्दर खुशबू आ जाएगी। इसको आप यूँ समझें जैसे प्रफ़्यूम (इत्र) की शीशी होती है। आप उसको पम्प करती हैं तो उसके ज़र्रात आपके कपड़ों पर आकर लगते हैं तो कपड़ों में खुशबू आ जाती है। यह तो थोड़ी सी प्रफ़्यूम थी जो आपके जिस्म पर लगी, अल्लाह तआला की तरफ़ से एक हवा चलेगी वह प्रफ़्यूम की हवा होगी और उसकी खुशबू जन्नतियों के तमाम कपड़ों में रच-बस जाएगी।

ऐसी खुशबू उनको लगा देंगे कि महफ़िल खुशबू में भर जायेगी। लोग इन्तिज़ार में बैठे होंगे, देखिए अब आगे क्या होता है। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे ऐ मेरे बन्दे दाऊद! मेरे बन्दों को मेरा कलाम सुना दो। चुनाँचे दाऊद अ़लैहिस्सलाम सुनायेंगे:

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍo فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍo يَلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ

وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَo (سورة دخان)

बेशक खुदा से डरने वाले अमन (चैन) की जगह में होंगे। यानी बाग़ों में और नहरों में। और वे लिबास पहनेंगे बारीक और मोटे रेशम का, आमने-सामने बैठे होंगे।

वह जन्नत के बारे में यह मन्ज़र खींचेंगे तो जन्नती लोग वज्द (मस्ती) में आ जायेंगे कि यह वाक़िआ हम कुरआन में पढ़ा करते थे कि ऐसी महफ़िल होगी और आज अल्लाह ने हमें ऐसी महफ़िल अ़ता फ़रमा दी है। उस परवर्दिगार की महफ़िल होगी, जन्नती उसमें होंगे, यह उनके लिए कितने बड़े सम्मान और गौरव की बात होगी।

यहाँ तक कि हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की तिलावत पर जन्नती दो सौ साल तक वज्द (बेखुदी) की कैफ़ियत में रहेंगे। जब ज़रा ठीक होंगे फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे मेरे बन्दो! तुमने इससे बेहतर आवाज़ भी सुनी है? वे कहेंगे, ऐ अल्लाह! हमने इससे बेहतर आवाज़ नहीं सुनी। फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगेः मैं तुम्हें सुनवाता हूँ। फिर अल्लाह तआ़ला नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़रमायेंगे ऐ मेरे महबूब! इन बन्दों को सूरः तॉहा और सूरः यासीन पढ़कर सुना दीजिए।

हदीस पाक में आता है कि अल्लाह तआ़ला नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम से भी सत्तर गुना ज़्यादा बेहतरीन आवाज़ अ़ता फ़रमायेंगे और अल्लाह के महबूब बहुत ही ख़ूबसूरत आवाज़ के साथ अल्लाह का कुरआन पढ़ेंगे। पाँच सौ साल जन्नतियों के ऊपर वज्द की कैफ़ियत रहेगी।

फिर जब कुछ ठीक होंगे तो अल्लाह तआ़ला पूछेंगेः ऐ मेरे बन्दो! तुमने इससे पहले इससे भी ज़्यादा कभी अच्छी आवाज़ सुनी? वे कहेंगे ऐ अल्लाह! कभी नहीं सुनी। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे मैं तुम्हें सुनाता हूँ। चुनाँचे अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त सूरः रहमान की ख़ुद तिलावत फ़रमायेंगे। सुब्हानल्लाह!

परवर्दिगार पढ़ने वाले होंगे और सूरः रहमान की तिलावत पढ़

रहे होंगे, और जन्नती सुन रहे होंगे। कितना मज़ा आएगा।

जब अल्लाह तआला जन्नतियों को तिलावत सुनायेंगे तो जन्नत में एक हवा चलेगी जिससे जन्नत के दरवाज़े खिड़कियाँ बजेंगे। दरख़्तों में से आवाज़ें आयेंगी। ऐसी अ़जीब आवाज़ें, धुनें होंगी, सुर होंगे कि जन्नती धुनों और सुरों की वजह से अ़जीब नशे के से आ़लम में होंगे। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला उनको इस क़द्र लज़्ज़तें अ़ता फ़रमायेंगे। आख़िरकार इस कैफ़ियत से लुत्फ़ उठाने वाले हो चुके होंगे।

फिर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त अपने हिजाब (पर्दे) को अपने ऊपर से, जो अपनी सिफ़ात का हिजाब है, पर्दे हैं, उनको हटा देंगे। और अपने चेहरे का दीदार अ़ता फ़रमायेंगे। वह दीदार कैसे होगा, बे-जेहत होगा, बे-कैफ़ियत होगा, बे-शुब्हा होगा, बे-मिस्ाल होगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे मेरे बन्दो! तुम रातों को मेरी याद में जागते थे, तुम दिनों को मेरी मुहब्बत में नेक अ़मल में लगे रहते थे, तुम्हें लोग बुराई की तरफ़ बुलाते थे, मगर तुम मेरी मुहब्बत की वजह से बुराई से बचते थे।

तुम्हारी निगाहें झुकी रहती थीं, तुम अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों को काबू में रखते थे, तुम किसी की तरफ़ आँख उठाकर नहीं देखते थे, तुम्हारे दिल में मेरे दीदार का शौक़ था, मेरी मुलाक़ात की तमन्ना थी, तुमने बुरे दोस्तों को छोड़ दिया, बुरे कामों को छोड़ दिया, तुमने बुराईयों से अपने आपको बचा लिया, तुम मेरी मुहब्बत में ज़िन्दगी गुज़ारते थे।

मेरे बन्दो! तुमने मेरे हुस्न व जमाल को देखना पसन्द किया, आज मैं तुम्हें अपना दीदार अ़ता करता हूँ। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला जन्नतियों को अपना दीदार अ़ता फ़रमायेंगे। यह दीदार ऐसा होगा कि जन्नत में नूर की बारिश होगी और वह बारिश जन्नतियों के कपड़ों

और चेहरों पर पहुँचेगी।

इसकी मिसाल यूँ समझिये कि जैसे आँधी आती है तो बाहर जितने लोग होते हैं उनके चेहरों पर मिट्टी की तह आ जाती है। इसी तरह यह नूर की आँधी होगी जन्नतियों के चेहरों पर नूर की एक तह आ जाएगी और उनका हुस्न इतना बढ़ जाएगा कि अब वे कई साल तक अल्लाह तआ़ला के हुस्न का लुत्फ़ और मज़ा लेंगे। और आख़िरकार वे वापस लौटेंगे।

उनका हुस्न इतना बढ़ चुका होगा कि अब जन्नती मख़्लूक़ सत्तर साल तक टकटकी बाँधकर उनके हुस्न को देखती रह जाएगी। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से फिर जन्नतियों को हुक्म होगा, मेरे बन्दो! यह तुम्हें मेरा पहली बार दीदार हुआ। अब वक़्फ़े-वक़्फ़े से (यानी थोड़े-थोड़े समय के अंतराल से) होता रहेगा। कुछ जन्नतियों को जुमा के दिन होगा। कुछ लोगों को साल के बाद होगा। कुछ ऐसे लोग होंगे जिनको रोज़ाना होगा।

जन्नत में जो एक दूसरे की इ़ज़्ज़त होगी या सम्मान होगा या रुतबा होगा वह अल्लाह तआ़ला के दीदार की वजह से बनेगा। जिसको जितनी ज़्यादा बार दीदार नसीब होगा वह जन्नत में उतना ही ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाला इनसान होगा।

अल्लाह के दीदार का पैमाना

मगर अल्लाह की तरफ़ से यह दीदार कैसा होगा? इसके बारे में भी सुन लीजिए। हदीस पाक में आता है कि वह अन्धा जिसको अल्लाह ने अन्धा पैदा किया और उसने सब्र, शुक्र और हिफ़ाज़त की ज़िन्दगी गुज़ारी, यह अन्धा जब जन्नत में जाएगा तो अल्लाह तआ़ला उसको यह इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमायेंगे कि यह टकटकी बाँधकर अल्लाह का दीदार करेगा। कभी भी अल्लाह का दीदार उसकी नज़र से ओझल नहीं होगा।

यह क्यों होगा? अल्लाह फ़रमायेंगे कि यह मेरा वह बन्दा है जिसने दुनिया में कभी किसी ग़ैर को मुहब्बत की नज़र से नहीं देखा इसलिए अब यह हर वक़्त मेरा ही दीदार करता रहेगा। तो गोया दीदार का पैमाना यह होगा कि जो ग़ैर-मेहरम को मुहब्बत की नज़र से देखता होगा वह अल्लाह के दीदार से मेहरूम होगा।

इसलिए सोच लीजिए कि दुनिया में जब किसी मर्द ने ग़ैर-औ़रत के हुस्न की तरफ़ मुहब्बत की नज़र डाली, या औ़रत ने किसी ग़ैर-मर्द की तरफ़ नज़र डाली। हर-हर नज़र के बदले यह अल्लाह के दीदार से मेहरूम कर दिये जाएँगे। सोचिए कितनी बड़ी मेहरूमी है, आज औ़रतें बन-संवर कर निकलती हैं, बाज़ारों में बेपर्दा निकलती हैं।

सुनिये हदीस पाक में आता है कि जो औ़रत इसलिए बनती और संवरती है कि उसको ग़ैर-मेहरम मर्द देखकर ख़ुश हों। चाहे उसका कज़िन (चचाज़ाद, मामूँज़ाद, तायाज़ाद, फूफीज़ाद, ख़ालाज़ाद भाई या और कोई) हो। चाहे उसका पड़ोसी हो। चाहे कोई अजनबी हो। हदीस पाक का मफ़हूम है कि जो औ़रत इसलिए बनती-संवरती है कि उसके ऊपर कोई ग़ैर-मेहरम मर्द मुहब्बत की नज़र डाले, अल्लाह तआ़ला उस बनने और संवरने की वजह से फ़ैसला कर लेते हैं कि मैं क़ियामत के दिन इस औ़रत को मुहब्बत की नज़र से नहीं देखूँगा। इसलिए कि यह चाहती है कि ग़ैर-मर्द देखें। ऐसी औ़रत को मैं नहीं देखूँगा।

अब सोचिए कितना बड़ा नुक़सान है कि जों जवान लड़कियाँ अपने आपको बना-संवार कर जाती हैं कि ग़ैर-मर्द देखेंगे गोया ये अल्लाह की मुहब्बत भरी नज़रों से मेहरूम हो जाएँगी। इसलिए जो पर्दे का एहतिमाम करती हैं, हिजाब पहनती हैं, ये नेक बच्चियाँ हैं, ये अच्छी बच्चियाँ हैं, ख़ुशनसीब हैं। ये अपने को ग़ैर-मेहरम से बचाती

हैं। इसके बदले क़ियामत के दिन अल्लाह उनको मुहब्बत की नज़र से देखेंगे।

अब फ़ैसला आपके इख़्तियार में है कि दुनिया के मर्दों की कमीनी निगाहें आप अपने जिस्म पर डलवाना चाहती हैं या अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की पाक नज़रें डलवाना चाहती हैं।

दुनिया की ये लज़्ज़तें थोड़े वक़्त की हैं। हमेशा-हमेशा की लज़्ज़तें आख़िरत की हैं। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हमें अपने दीदार की लज़्ज़त से मेहरूम न फ़रमाए और अपनी मुहब्बत की नज़रों से हमें मेहरूम न फ़रमाए।

वह कितना बदनसीब इनसान है जिसके बारे में अल्लाह फ़ैसला कर ले कि मैं उसकी तरफ़ मुहब्बत की नज़र से नहीं देखूँगा। क़ुरआन पाक में फ़रमायाः

وَلَا يَنظُرُ إِلَيْهِمْ

अल्लाह उनकी तरफ़ मुहब्बत की नज़र से नहीं देखेगा।

जब अल्लाह ही मुहब्बत की नज़र से नहीं देखेगा तो सोचिए फिर इनसान ने क्या कमाया और क्या ज़िन्दगी गुज़ारी। इसलिए हमें चाहिए कि हम दुनिया में पर्दे का ख़्याल रखें। मर्द औरतों की तरफ़ से निगाहों का परहेज़ करें और औरतें मर्दों की तरफ़ से निगाहों का परहेज़ करें। औरतें बने-संवरें अपने शौहरों के लिए जो शरीअत ने इजाज़त दी है, या फिर अपने दिल में यह तमन्ना रखें कि मैं चाहती हूँ कि क़ियामत के दिन मेरा मालिक मुझे मुहब्बत की नज़र से देख ले।

इसलिए अगर पर्दा करने वाली बच्चियों से दूसरी उनकी हम-उम्र बच्चियाँ मज़ाक़ करें और कहें कि तुम तो पर्दे में यूँ नज़र आती हो, तुम पर्दे में यूँ लगती हो। उनके साथ मज़ाक़ करें, ये अपने दिल को बता दें कि यह चाहे मज़ाक़ करती रहें मगर मैं चाहती हूँ कि मैं

ग़ैर-मेहरम से अपने आपको बचाऊँ ताकि क़ियामत के दिन अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त मुहब्बत की नज़र से मुझे देखें। यही मेरी कामयाबी होगी और यही मेरी ज़िन्दगी का मक़सद है जिसके लिए मैंने अपने आपको पर्दे में रखा।

क़ियामत के दिन जिस पर अल्लाह की मुहब्बत की नज़र पड़ गई वह ख़ुशनसीब औ़रत है। अल्लाह तआ़ला हमें ऐसा बनने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे और क़ुरआन मजीद में जिस तरह जन्नत के तज़किरे किये गये हैं, अल्लाह तआ़ला अपनी यह पसन्दीदा जगह हमें भी अ़ता फ़रमा दे। आमीन।

घर औ़रत की ज़रूरत

सोचने की बात है कि औ़रतें दुनिया के अन्दर घर वाली कहलाती हैं। इसलिए कि उनका अक्सर वक़्त घर में गुज़रता है। घर के सजाने-संवारने और उसकी ख़ूबसूरती का यही ख़्याल रखती हैं। घर इन्हीं की तरफ़ मन्सूब होता है। इसलिए मर्द से पूछते हैं कि घर वाली का क्या हाल है। तो औ़रतें घर वाली कहलाती हैं इसलिए जब शादी होती है तो औ़रत की बड़ी तमन्ना होती है कि मुझे अपना घर मिल जाए और जिसका कोई घर न हो कोई दर न हो वह धक्के खाती फिरती है, परेशान होती है कि काश! मुझे छत मिल जाती, मैं अपना सर छुपा लेती।

ऐ बहन! अगर दुनिया में तुझे घर की इतनी ज़रूरत है तो सोच आख़िरत में तो तुझे घर की ज़रूरत ज़्यादा है। अगर अल्लाह ने जन्नत में तेरे घर की अलाटमेन्ट (आवंटन) न की तो फिर तेरा क्या बनेगा? जहन्नम में जाकर क्या हाल होगा? इसलिए आज वक़्त है जन्नत के घर की अलाटमेन्ट करवाने का, और वह अलाटमेन्ट (आवंटन) कैसे होती है? कौनसा गुनाह आप करती हैं। जो-जो गुनाह करती हैं उन गुनाहों से सच्ची तौबा कर लें।

हमने एक फ़ेहरिस्त (सूची) बना दी है जिसमें सत्तर बड़े-बड़े गुनाह लिखे गये हैं। ये कबीरा गुनाह हैं। आप तन्हाई में बैठकर इन गुनाहों का जायज़ा लें और निशान लगायें कि इन गुनाहों में से कौन-कौनसा गुनाह आप करती हैं। जो गुनाह करती हैं उनसे सच्ची तौबा करें।

जब आप गुनाहों से सच्ची तौबा कर लेंगी अल्लाह तआला पिछले गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे, आईन्दा नेक कामों वाली ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा देंगे।

तो आज की इस महफ़िल में अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिए और अपने रब के सामने यह दुआ़ कीजिए कि ऐ अल्लाह! हमें जन्नत में घर अ़ता फ़रमा दे। जन्नत में अलाटमेन्ट (आवंटन) रमज़ान मुबारक के महीने में हो रही है। अल्लाह ने जन्नत के दरवाज़ों को खोल दिया है इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः तुम यह दुआ माँगोः

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल्-जन्न-त व अऊ़ज़ु बि-क मिनन्नारि

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से जन्नत को तलब करती हूँ और मैं आग से आपकी पनाह माँगती हूँ।

अब रमज़ान के जो दिन बाक़ी हैं, ख़ास तौर पर यह दुआ माँगें कि ऐ अल्लाह! जन्नत में घर अ़ता फ़रमा देना। यह औ़रत की बड़ी तमन्ना होती है। इसी पर बात को मुकम्मल करता हूँ। रब्बे करीम हमें गुनाहों से महफ़ूज़ फ़रमा दे और हमें जन्नत की नेमतें अ़ता फ़रमा दे। आमीन।

कबीरा गुनाहों की सूची

मुख़्तसर तौर पर हम हाफ़िज़ ज़हबी की किताब से कबीरा (बड़े-बड़े) गुनाहों की फ़ेहरिस्त (सूची) लिखते हैं:

१. शिर्क और शिर्क के अलावा वे अक़ीदे और आमाल जिन से कुफ़्र लाज़िम आता है। (कुफ़्र व शिर्क की कभी मग़फ़िरत न होगी। इसको अल्लाह तआ़ला ने कुरआन करीम के अन्दर बिल्कुल स्पष्ट तौर पर बयान फ़रमाया है)।

२. किसी बेगुनाह जान को जान-बूझकर क़त्ल करना।

३. जादू करना।

४. फ़र्ज़ नमाज़ को छोड़ना या वक़्त से पहले पढ़ना।

५. ज़कात न देना।

६. बिना शरई छूट के रमज़ान शरीफ़ का कोई रोज़ा छोड़ना या रमज़ान का रोज़ा रखकर बिना किसी उज़्र और मजबूरी के तोड़ देना।

७. फ़र्ज़ होते हुए हज किये बग़ैर मर जाना।

८. माँ-बाप को तकलीफ़ देना और उन बातों में उनकी नाफ़रमानी करना जिनमें उनका हुक्म मानना वाजिब है।

९. रिश्तेदारों से रिश्ता और संबन्ध ख़त्म करना।

१०. ज़िना करना।

११. ग़ैर-फ़ितरी (यानी कुदरत के बनाये नियम के ख़िलाफ़) तरीक़े पर औरत से सोहबत (संभोग) करना या किसी मर्द या लड़के से बदफ़ेली करना।

१२. सूद का लेन-देन क़रना, या सूद का लिखने वाला या गवाह बनना।

१३. ज़ालिमाना तरीक़े पर किसी यतीम का माल खाना।

१४. अल्लाह पर या उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर झूठ बोलना।

१५. मैदाने जिहाद से भागना।

१६. जो 'इक़्तिदारे-आला' (किसी बड़े ओहदे) पर हो, उसका रईयत और अपने मातहतों को धोखा देना और ख़ियानत करना।

१७. तकब्बुर करना।

१८. झूठी गवाही देना या किसी का हक़ मारा जा रहा हो तो जानते हुए गवाही न देना।

१९. शराब पीना या कोई नशे वाली चीज़ खाना पीना।

२०. जुआ खेलना।

२१. किसी पाकदामन औ़रत को तोहमत लगाना।

२२. माले-ग़नीमत में ख़ियानत करना।

२३. चोरी करना।

२४. डाका मारना।

२५. झूठी क़सम खाना।

२६. किसी भी तरह से जुल्म करना (मार पीटकर हो या ज़ालिमाना तरीक़े पर माल लेने से हो या ग़ाली-गलौज करने से हो)।

२७. टैक्स वसूल करना

२८. हराम माल खाना पीना या पहनना, या ख़र्च करना।

२९. खुदकुशी (आत्महत्या) करना या अपना कोई जिस्मानी अंग काट देना।

३०. झूठ बोलना।

३१. शरीअ़त के क़ानून के ख़िलाफ़ फ़ैसले करना।

३२. रिश्वत लेना।

३३. औ़रतों का मर्दों की या मर्दों का औ़रतों की मुशाबहत (शक्ल व सूरत और तौर-तरीक़ा) इख़्तियार करना (जिसमें दाढ़ी

मूँडना भी शामिल है)।

३४. अपने अहल व अ़याल (बाल-बच्चों और घर वालों) में गन्दे और अश्लील काम या बेहयाई होते हुए उसको दूर करने की फ़िक्र न करना।

३५. तीन तलाक़ दी हुई औ़रत के पुराने शौहर का हलाला करवाना और उसके लिए हलाला करके देना।

३६. बदन या कपड़ों में पेशाब लगने से एहतियात न करना।

३७. दिखावे के लिए आमाल करना।

३८. दुनिया कमाने के लिए दीन का इल्म हासिल करना और दीन की बात को छुपाना।

३६. ख़ियानत करना।

४०. किसी के साथ अच्छा सुलूक या कोई भलाई करके एहसान जताना।

४१. तक़दीर को झुठलाना।

४२. लोगों के ख़ुफ़िया हालात की टोह लगाना, जासूसी करना और कन्सूई लेना।

४३. चुग़ली खाना।

४४. लानत बकना।

४५. धोखा देना और जो अ़हद किया हो उसको पूरा न करना।

४६. काहिन और मुनज्जिम (ग़ैब की ख़बरें बताने वाले) की तस्दीक़ (यानी उसकी बात का यक़ीन और पुष्टि) करना।

४७. शौहर की नाफ़रमानी करना।

४८. तस्वीर बनाना या घर में लटकाना।

४६. किसी की मौत पर नौहा करना, मुँह पीटना, कपड़े फाड़ना, सिर मुँडाना, हलाकत की दुआ़ करना।

५०. सरकशी करना, अल्लाह का बाग़ी होना, मुसलमानों को तकलीफ़ देना।

५१. मख़्लूक़ पर हाथ उठाना।

५२. पड़ोसी को तकलीफ़ देना।

५३. मुसलमानों को तकलीफ़ देना और उनको बुरा कहना।

५४. ख़ास कर अल्लाह के नेक बन्दों को तकलीफ़ देना।

५५. टख़्ने पर या इससे नीचे कोई कपड़ा पहना हुआ लटकाना।

५६. मर्द को रेशम और सोना पहनना।

५७. गुलाम का आक़ा से भाग जाना।

५८. अल्लाह के अ़लावा किसी और के लिए ज़िबह करना।

५९. जानते बूझते हुए अपने बाप को छोड़कर किसी दूसरे को बाप बना लेना। यानी यह दावा करना कि फ़लाँ मेरा बाप है हालाँकि वह उसका बाप नहीं।

६०. फ़साद के तौर पर लड़ाई झगड़ा करना।

६१. (ज़रूरत के वक़्त) बचा हुआ पानी दूसरों को न देना।

६२. नाप-तौल में कमी करना।

६३. अल्लाह की पकड़ से बेख़ौफ़ हो जाना।

६४. औलिया-अल्लाह (अल्लाह के नेक बन्दों) को तकलीफ़ देना।

६५. नमाज़ बा-जमाअ़त की पाबन्दी न करना।

६६. बग़ैर शरई उ़ज़्र के जुमे की नमाज़ छोड़ देना।

६७. ऐसी वसीयत करना जिससे किसी वारिस को नुक़सान पहुँचाना मक़सूद हो।

६८. मक्र (फ़रेब) करना और धोखा देना।

६९. मुसलमानों के पोशीदा हालात की टोह लगाना और उनकी पोशीदा चीज़ों को ज़ाहिर करना।

७०. किसी सहाबी (नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथी) को गाली देना।